सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : सवक

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 15

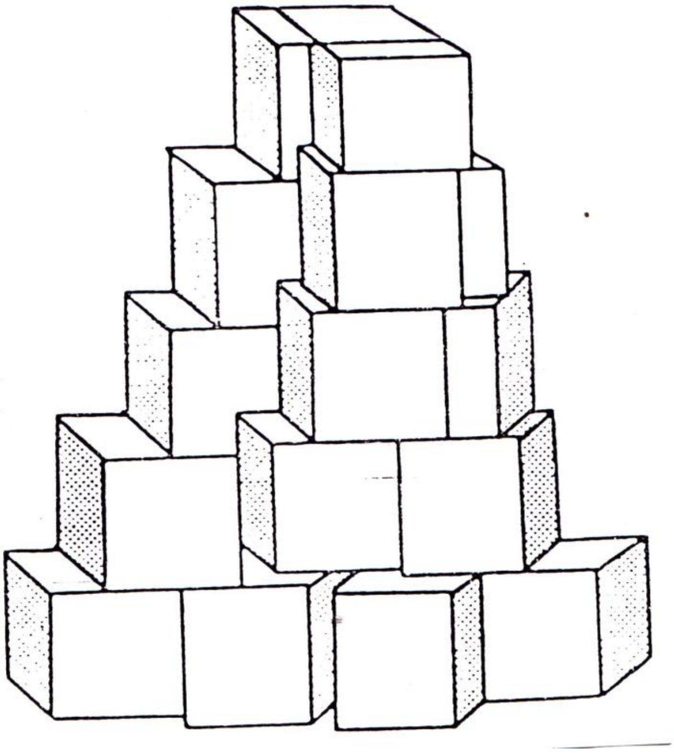

स्तरः

5. सवक

4. अगुवा / पास्टर

3. समूह या सेल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

<u>उद्देश्य:</u>

- उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

(विकसित होना / परिपक्व होना)

- यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

- 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

- 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

- कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

(गुणा / पुनरुत्पादन)

- 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

- 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

- इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

- 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

सिद्धान्त : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक नं.: 15

पृष्ठ

क्रमाँक

- आत्मा में सेवकाई - एक पुनरीक्षण 2351

- आज चंगाई की सेवकाई - एक पुनरीक्षण 2357

- छुटकारा और दुष्टात्माओं को निकालने की सेवकाई - एक पुनरीक्षण 2362

- काउंसलिंग - काउंसलिंग की सेवकाई का एक संक्षिप्त पुनरीक्षण 2365

- बाइबल के वरदानों का अध्ययन (3 अध्याय) 2377
  - प्रेरणात्मक वरदान (रोमियों 12)
  - सेवकाई के पाँच वरदान (इफिसियों 4)
  - प्रदर्शन वरदान (1 कुरिन्थियों 12)

- सेवकाई का नीतिशास्त्र (एक सेवक का अपने लिए आचरण की भक्तिपूर्ण संहिता स्थापित करने के लिए पेशावर आचार-शास्त्र और सिद्धान्तों के लिए एक मार्गदर्शक) (13 अध्याय) 2421
  - सेवक के व्यक्तिगत नीतिशास्त्र
  - सेवक का परिवारिक जीवन
  - सेवक और उसका काम
  - कलीसिया का अगवा और उपदेश मंच
  - कलीसिया के अगुवे की भूमिका
  - संघर्ष की स्थिति में सेवक
  - कलीसिया के अगुवे की पत्नि
  - समाज में कलीसिया का अगुवा
  - सेवक और दूसरी सेवकाइयाँ
  - कलीसिया का अगुवा और दूसरे सम्प्रदाय
  - सेवक एक समूह में
  - सेवक का अपना काम छोड़ना

- आज पास्टर के विचार और प्रेरित के कार्यो में अन्तर 2449

- अगुवाई के विश्वव्यापक सिद्धान्तः एक बाइबल का संदर्श 2451
  (ढक्कन, प्रभाव, प्रक्रिया, संचालन, हटन, ठोस आधार, आदर, अन्तर्ज्ञान, चुम्बकत्व, सम्बंध, भीतरी समुदाय,अधिकार देने, पुनरुत्पादन, स्वीकार करने, विजय, बड़ी गति, प्राथमिकता, बलिदान, समय, विस्फोटक वृद्धि, बपौती का नियम)

- उकाब मसीही - तनाव से बल तक 2492

- तनाव कम करने के कुछ उपयोगी नुसखे 2496

- सुसमाचार के सामर्थ्य से राष्ट्र बदले जा सकते हैं 2499

आत्मा में सेवा – एक पुनरीक्षण

’सेवा’ आजकल कलीसिया में सबसे सामान्य उपयोग होनेवाला शब्द है। हम विशेष पुरुषों और स्त्रियों के विषय में कहते हैं कि वे ’सेवक’ हैं, हम कहते हैं लोग ’सेवा कर रहे’ हैं, और उनकी ’सेवा’ के विषय में बात करते हैं। मसीही विश्वासियों का हर समूह सामान्यतः जानता है कि इन शब्दों का अर्थ क्या है, परन्तु दूसरे कलीसिया समूहों की भिन्न समझ होती है। उदाहरणार्थ, कुछ कलीसियाएँ ’सेवक’ शब्द पूर्णकालिक, पूर्ण-पगार वाले अगुवों के लिए यह शब्द उपयोग करती हैं, जबकि दूसरे इसे अधिक व्यापक रूप से उपयोग करते हैं। वैसे ही, कुछ कलीसियाएँ ’सेवा’ शब्द को एक सभा के एक भाग के लिए उपयोग करती हैं, जैसे कि जब वे लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं, जबकि दूसरे सेवकों के काम के लिए इसे सामान्यतः उपयोग करते हैं।

सेवा क्या है?

’आत्मा में सेवा’ का अध्ययन करने में, आवश्यक है कि हम यह समझते हुए आरम्भ करें कि बाइबल ’सेवा’ के विषय में क्या कहती है। नए नियम में तीन मुख्य यूनानी शब्द समूह हैं, जिन्हें हिन्दी में उसी प्रकार अनुवाद किया गया है। हर शब्द-समूह का एक भिन्न अर्थ है, और हम ’सेवा’ का बाइबल का महत्त्व इस शब्दों को समझ कर जान सकते हैं।

1. Diakonos

Diakonos ’एक साधारण, निजी घरेलू सेवक’ के लिए यूनानी शब्द है। यह उसका वर्णन करता था जो मालिक का घर साफ करता, खाना पकाता, खाना खिलाता, बरतन साफ करता है आदि।

Diakonos रोमियों 13:4; 15:8; 1 कुरिन्थियों 3:5; 2 कुरिन्थियों 3:6; 6:4; 11:15; गलातियों 2:17; इफिसियों 6:21; कुलुस्सियों 1:7, 23, 25; 4:7; 1 थिस्स. 3:2 और 1 तीमुथियुस 4:6 में ’सेवक’ अनुवाद किया गया है।

Diakoneo अक्सर ’सेवा करना’ अनुवाद किया गया है। घर साफ करने और खाना पकाने के लिए यूनानी शब्द मत्ती 20:28; 25:44; 27:55; प्रेरितों 19:22; रोमियों 15:25; 2 कुरिन्थियों 3:3; 2 तीमुथियुस 1:18; इब्रानियों 6:10; 1 पतरस 1:12 और 4:10-11 में आत्मिक क्रिया के लिए उपयोग किया गया है। Diakoneo संकेत देता है हमारा अपनी और अपनी सेवा की ओर एक दीन रवैया होना चाहिए।

Diakonia, ’’सेवा करना’, नए नियम में ’सेवा’ के लिए मुख्य शब्द है। लूका 10:39-41 घरेलू कामों के इसके सामान्य अर्थ को दिखाता है, परन्तु इसे आत्मिक सेवा दिखाने के लिए सामान्यतः उपयोग किया गया है। इसे यह दिखाने के लिए उपयोग किया गया है:

- प्रेरित - प्रेरितों 1:17, 25; 6:4; 12:25; 21:19; रोमियों 11:13
- विश्वासी - प्रेरितों 6:1; 11:29; रोमियों 12:7; 15:31; 1 कुरिन्थियों 16:15; 2 कुरिं. 8:4; 9:1, 12; इफिसियों 4:12; 2 तीमुथियुस 4:11
- पवित्र आत्मा - 2 कुरिन्थियों 3:8-9
- स्वर्गदूत - इब्रानियों 1:14
- प्रचारक और शिक्षक - प्रेरितों 20:24; 2 कुरिन्थियों 4:1; 6:3; 11:8; 1 तीमुथियुस 1:12; 2 तीमुथियुस 4:5; कुलुस्सियों 4:17

Diakonos शब्द-समूह दिखाता है कि ’एक सेवक’ एक मालिक नहीं है, कि ’सेवा करने’ का अर्थ आज्ञा देना नहीं है, और कि ’सेवा’ एक बड़ा पद या एक बड़ी प्रतिष्ठा का काम नहीं है। ’सेवा’ के बारे में बाइबल के समान सोचने में हमें यह समझना है कि ’एक सेवक’ निचली प्रतिष्ठा के घरेलू नौकर के समान है, और कि ’सेवकाई’ सफाई करने, कार की देखभाल करने और खाना पकाने के समान काम है।

2. Leitourgos

Leitourgos कभी-कभी नए नियम में ’एक सेवक’ के लिए उपयोग किया गया है, परन्तु इसका अर्थ diakonos से बिलकुल भिन्न है। Leitougos ’एक महत्त्वपूर्ण सरकारी अधिकारी, कोई जो अपने खर्चे पर एक लोक पद पर काम करता है’ के लिए यूनानी शब्द है।

Diakonia किसी की पूर्णकालिक, निचली प्रतिष्ठा, निजी सेवा का वर्णन करता है जिसे मालिक ने निर्देश किया है; जबकि leitourgia अंशकालिक, ऊँची प्रतिष्ठा, अवैतनिक, और लोक सेवा का वर्णन करता है।

नए नियम में, leitourgos, 'एक सेवक', leitourgeo, 'सेवा करना' और leitourgia, 'सेवा' को इनका वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है:

- मसीह - इब्रानियों 8:2
- पौलुस - रोमियों 15:16
- इपफ्रुदीतुस - फिलिप्पियों 2:25
- अन्ताकिया में नबी और शिक्षक - प्रेरितों 13:2
- गरीब यहूदी विश्वासियों की ओर अन्यजातीय कलीसियाओं का कर्त्तव्य - रोमियों 15:27
- एक दूसरे की ओर विश्वासियों की व्यावहारिक जिम्मेवारियाँ - 2 कुरिं. 9:12; फिलि. 2:17-20

नया नियम leitourgos को मसीही सेवकाई का वर्णन करने के लिए diakonos से कहीं कम उपयोग करता है, फिर भी 'ऊँची प्रतिष्ठा' का leitourgos से जुड़ा विचार आधुनिक मसीही सोच-विचार पर छाया हुआ है। नये नियम का बल दिखाता है कि सेवकों और सेवकाइयों की बाइबल की समझ diakonos पर आधारित होनी चाहिए, और कि हमें सेवकाई को मुख्य रूप से एक साधारण, निजी, प्रतिदिन का, 'नौकर' के काम के जैसा सोचना है।

फिर भी, leitourgos का अवसरिक उपयोग इस तथ्य को रेखांकित करता है कि हम अपने लाभ के लिए सेवा नहीं करते हैं, और हमें याद दिलाता है कि सेवा महत्त्वपूर्ण है, सार्वजनिक हो सकती है, और प्रतिनिधि प्रकृति की है।

3. Huperetes

यूनानी शब्द huperetes बाइबल के अनेक अनुवादों में 'सेवक' अनुवाद किया गया है। इसका अक्षरक्षः अर्थ है: एक 'अधीन खेवैया' और नए नियम के समय में एक लोकप्रिय या बोलचाल के शब्द के रूप में किसी भी मातहत के लिए उपयोग किया जाता था जो दूसरे व्यक्ति के निर्देश में काम करता था।

Huperetes, और hupereteo 'सेवा करना', नए नियम में इनका वर्णन करने के लिए उपयोग किए गए हैं:

- एक अराधनालय का परिचर - लूका 4:20
- मरकुस - प्रेरितों 13:15
- राजा दाऊद - प्रेरितों 13:36
- पौलुस - प्रेरितों 20:34; 26:16; 1 कुरिन्थियों 4:1

Huperetes का उपयोग इस बात पर जोर देता है कि सेवक ऐसे लोग नहीं हैं जो अपनी क्रियाओं के अधिकार में हैं, बल्कि वे ऐसे पुरुष और स्त्रियाँ हैं जो अधिकार के अधीन काम करते हैं। प्रेरितों 13:36 दिखाता है कि राजा दाऊद परमेश्वर का 'अधीन खेवैया' ही था, और 1 कुरिन्थियों 4:1 बताता है कि पहली सदी के कलीसिया के अगुवों को 'अधीन खेवैये' - मसीह की अगुवाई और निर्देश के अधीन लोग - समझा जाना और बर्ताव किया जाना चाहिए।

सेवा

जब हम इन तीन शब्द-समूहों को साथ लेते हैं तो समझते हैं कि बाइबल की सेवा का अर्थ है सेवा करना और कि एक बाइबल का सेवक एक सेवक है। हम सामान्यतः कह सकते हैं कि नया नियम diakonos को सेवकों और उनके काम में सम्बंध दिखाने, leitourgos को उनकी सेवा के प्रतिनिधिक स्वभाव पर बल देने, और hyperetes को उनके उच्च अधिकारी, मसीह के साथ उनके सम्बंध पर बल देने के लिए उपयोग करता है।

सेवा के विषय में बाइबल के अनुसार सोचने का सबसे सरल और उपयुक्त तरीका है इसे 'काम करना' शब्दों से बदल देना। नए नियम का मूल संदेश यह है कि एक 'सेवक' सदा एक 'नौकर' है, कि 'सेवा करना' सदा 'काम करना' है। सेवकाई का कोई भी विचार या नमूना या व्यवहार जो दीन काम करने से परे होता है, पवित्रशास्त्र में आधारित नहीं है।

दास और नौकर

जबकि हमें याद रखना है कि एक बाइबल का सेवक सदा एक नौकर है, और हमें यह भी स्पष्ट अनुभव होना चाहिए कि बाइबल के नौकर का हर संदर्भ एक सेवक (मिनिस्टर) के लिए नहीं है। यूनानी भाषा के दो शब्द-समूह नए नियम में 'नौकरों' का वर्णन करने के लिए उपयोग किए गए हैं परन्तु 'सेवक (मिनिस्टर)' अनुवाद नहीं किए गए हैं।

1) Doulous नौकर के लिए सबसे अधिक सामान्य यूनानी शब्द है और एक ऐसे नौकर के विषय में बताता है जो अपने मालिक की सम्पत्ति है, न कि अपने मालिक द्वारा नौकरी पर रखा गया है। नए नियम के दिनों में, doulous एक दास होता था। Doulous और Diakonos में मुख्य अन्तर यह है कि doulous एक सम्बंध का संकेत देता है जबकि diakonos एक क्रिया के विषय में है।
नए नियम में doulous यह दिखाने के लिए उपयोग किया गया है कि विश्वासी परमेश्वर का है और के नियंत्रण में हैं। यह इसे रोमियों 1:1; गलातियों 1:10; इफिसियों 6:6; फिलिप्पियों 1:1; तीतुस 1:1; याकूब 1:1; 1 पतरस 2:16; 2 पतरस 1:1 और यहूदा 1:1 में देखते हैं। क्योंकि हम परमेश्वर के हैं, हमें बुलाया गया है:

- परमेश्वर की सेवा करने के लिए - मत्ती 6:24; रोमियों 7:6; फिलिप्पियों 2:22
- मसीह की सेवा करने के लिए - प्रेरितों 20:19; रोमियों 12:11; 14:18; 16:18; इफिसियों 6:7; कुलुस्सियों 3:24
- एक दूसरे की सेवा के लिए - गलातियों 5:13

दासों को उनके मालिकों की आज्ञाओं का पालन करना होता है, इसलिए doulous सेवा करने के तरीके का संकेत देता है क्योंकि हम परमेश्वर के हैं। नौकरों को भी उनके मालिकों का कहना मानना होता है, परन्तु diakonos में उत्सुकता का एक तत्त्व अन्तर्निष्ट होता है - लोक सेवक स्वयंसेवक होते हैं और निजी सेवक जब चाहें उनके मालिकों के लिए काम करना बन्द कर सकते हैं। यह उत्सुकता ही diakonos 'सेवा' को doulous 'काम' से अलग करती है। हम कह सकते हैं कि एक सेवक एक ऐसा व्यक्ति है जो किसी भी तरीके से जैसा परमेश्वर चुनता है उसकी सेवा करने के लिए अपने आप को स्वेच्छा से परमेश्वर को उपलब्ध करते हैं।

2) Latris 'नौकर' के लिए दूसरा शब्द है जो 'सेवक (मिनिस्टर)' अनुवाद नहीं किया गया है। Latris का अक्षरक्षः अर्थ है: 'किराये का नौकर' और latreuo: नौकरी करना, और नए नियम में याजकों और लेवियों की विशेष आत्मिक सेवा का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है जिन्हें मन्दिर में सेवा करने के लिए वेतन मिलता था। हम इसे लूका 1:74; 2:37; प्रेरितों 7:7; 24:14; 27:23; रोमियों 9:4; 12:1; इब्रानियों 9:1 और 9:14 में देखते हैं।
हमें ध्यान देना है कि नया नियम विश्वासियों के समूह के बारे में न कि किसी व्यक्तिगत विश्वासी के बारे में याजकीय भाषा उपयोग करती है। इसका अर्थ है कि latris सेवा सामूहिक है न कि व्यक्तिगत। नया नियम इसे स्पष्ट करता है कि सब विश्वासियों को याजकों और लेवियों के समान प्रार्थना, स्तुति, धन्यवाद और आत्मिक बलिदानों के साथ परमेश्वर की सेवा / आराधना करने के लिए बुलाया गया है। परन्तु याजकों और लेवियों के समान, पवित्रशास्त्र हमें इस काम के लिए वेतन पाने की उम्मीद करने का प्रोत्साहन नहीं देते हैं।
हमें latris - किराए के सेवक होने के लिए नहीं बुलाया गया है जो मुख्य रूप से वेतन के लिए काम करते हैं। बदले में, हमें diakonos - स्वैच्छिक सेवक होने के लिए बुलाया गया है जो सेवा करते हैं क्योंकि हम अपने मालिक और उसके घराने से प्रेम करते हैं, और अतिरिक्त सेवा के लिए सदा स्वेच्छा से अर्पित करते हैं।

सेवा का नमूना

मत्ती 20:28 और मरकुस 10:45 स्पष्ट करते हैं कि यीशु सेवा देने न कि सेवा लेने आया था, सेवा करने न कि सेवा करवाने आया था। ये वचन क्रान्तिकारी थे जिन्होंने दानिय्येल 7:13-14को उलटा-पुलटा कर दिया। यहूदी लोग अपेक्षा कर रहे थे कि मनुष्य का पुत्र सब लोगों, राष्ट्रों और जातियों द्वारा सेवा लेने आएगा। यीशु ने मनुष्य का पुत्र होने का दावा किया, और वह था भी, परन्तु उसने स्पष्ट किया कि उसका अनन्त राज्य एक सेवक द्वारा चलाया जाएगा और उसकी विशेषता सेवा होगी।

यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि मत्ती 20:28 और मरकुस 10:45 में diakoneo, न कि leitourgos शब्द उपयोग किया गया है। यह दिखाता है कि:

- यीशु की सेवकाई का आधार, नमूना और शैली व्यक्तिगत, दीन 'घरेलू' सेवा है, और इसलिए, सबसे सच्ची मसीही सेवा है।
- सेवा करना सबके लिए मुमकिन है।

यदि इन वचनों में leitourgos उपयोग किया गया होता तो ऐसा लगता कि यीशु के समान विशेष लोग ही सेवा कर सकते हैं। इसे स्पष्ट कर देना चाहिए कि, diakoneo में उसकी सेवा के समान, हम सब उसके समान सेवा कर सकते हैं।

यह बड़े महत्त्व की बात है कि प्रेरितों 6:2 में भी diakoneo उपयोग किया गया है। यह कलीसिया का पहला लिखित उदाहरण है जहाँ सेवा के लिए लोगों को नियुक्त किया गया था, और उनकी सेवा का उद्देश्य 'खिलाने-पिलाने की सेवा' था।
यह भी महत्त्वपूर्ण है कि दो वचनों के बाद, diakoneo को प्रेरितों की वचन की सेवा का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है। यह इस बात पर बल देता है कि तथाकथित 'व्यावहारिक' सेवा और 'आत्मिक' सेवा में कोई अन्तर नहीं है। खिलाने-पिलाने की सेवा उतनी ही मसीह समान diakoneo सेवा है जितनी वचन सिखाने की सेवा है।

जब कभी भी हम प्रचार या प्रबंध द्वारा सेवा करते हैं, हमें मसीह के नमूना और उदाहरण का अनुकरण करना चाहिए जिसने दीन और प्रेमी भाव से सब लोगों की सेवा की थी।

<u>हम इस नमूने को सारे नए नियम भर में देख सकते हैं:</u>

- स्वर्गदूत यीशु की सेवा करते हैं - मत्ती 4:11; मरकुस 1:13
- स्त्रियाँ यीशु की सेवा करती हैं - मत्ती 27:55; लूका 8:3
- यीशु की जरूरतमन्दों के रूप में सेवा की जाती है - मत्ती 25:44
- विश्वासी एक दूसरे की सेवा करते हैं - रोमियों 15:25; 1 कुरिन्थियों 16:15; 2 कुरिं. 8:4; 9:1; इब्रानी 6:10; 1 पतरस 4:10
- सेवा सुसमाचार प्रकट करती है - 1 पतरस 1:12
- सेवा मेल-मिलाप करवाती है - 2 कुरिन्थियों 5:18
- सेवा करने की योग्यता परमेश्वर का एक वरदान है - प्रेरितों 20:24; कुलिस्सियों 4:17; 1 तीमुथियुस 1:12; 1 पतरस 4:11; रोमियों 12:7

एक आत्मिक वरदान

सेवा, diakonia का रोमियों 12:3-8 की आत्मिक वरदानों की सूची में सम्मिलित करना हमें समझने में सहायता करता है कि सेवा एक वरदान है न कि एक कर्त्तव्य, और कि यह परमेश्वर से आती है न हमारे भीतर से आती है। सेवा को भविष्यद्वाणी, सिखाने, उपदेश, देने, अगुआई और दया करने के साथ रखने के द्वारा, पौलुस यह भी प्रकट करता है कि 'सेवा' रोमियों 12 के दूसरे वरदानों से उतना ही भिन्न है जितना 'भविष्यद्वाणी' 'दया करने' से है और 'अगुआई' 'देने' से है। आधुनिक विश्वासी कभी-कभी पूछते हैं कि एक सभा में कौन सेवा कर रहा है, जबकि वे वास्तव में जानना चाहते हैं कि कौन प्रचार कर रहा है। रोमियों 12:3-8 संकेत देता है कि हमें सेवा - एक अधिक व्यापक तरीके से समझना चाहिए।

इफिसियों 4:7-16 आत्मिक वरदानों के विषय में एक और परिच्छेद है, और सेवकाई, diakonia का यहाँ दोबारा उल्लेख है। आयतें 10 और 11 बताती हैं कि प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर और शिक्षक कलीसिया के लिए स्वर्ग में गए मसीह के वरदान हैं; और आय. 12 उनके उद्देश्य प्रकट करती है। उन्हें इसलिए दिया गया है कि सब सन्त - परमेश्वर के सब लोग - सेवा के काम के लिए तैयार किए जाएँ जिससे मसीह की देह का निर्माण हो जाए।

<u>**यह** diakonia, **या सेवा के विषय में चार सुझाव देता है:**</u>

1. यह प्रेरितों, पास्टरों, भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों के बजाय साधारण सन्तों / विश्वासियों का काम अधिक है। अगुवों को सन्तों को सेवा करने के लिए तैयार करना है, उन्हें यह उनके लिए नहीं करना है।
2. यह सन्तों / विश्वासियों का उद्देश्य है। जैसे यीशु सेवा, diakonia करने आया था, वैसे ही अगुवे सन्तों को मुख्य रूप से सेवा करने के लिए तैयार करते हैं।
3. यह सिखाने, भविष्यद्वाणी करने, पास्टर का काम करने, प्रशिक्षण देने से भिन्न है जिसे अगुवे करते हैं।
4. यह सारी मसीही सेवा के लिए एक सामान्य अभिव्यक्ति, एक जातीय शब्द है। जैसे एक घरेलू नौकर को घर का कोई भी काम करने के लिए कहा जा सकता है और सबकुछ सेवा कही जाएगी, वैसे मसीही सेवा के आज्ञापालन के सारे कार्य सेवा कहे जाएंगे।

1 कुरिन्थियों 12:1-11 आत्मिक वरदानों के विषय में नए नियम का तीसरा परिच्छेद है। हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि diakonia का यहाँ भी उल्लेख है। आयतें 4-6 एक त्रित्ववादी ढाँचा अपनाता है और बताता है कि वरदान विभिन्न प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है; विभिन्न सेवा, परन्तु प्रभु एक ही है; विभिन्न कार्य, परन्तु परमेश्वर एक ही है। यह रेखांकित करता है कि सच्ची सेवा यीशु में आधारित है। सब सच्ची सेवा उसी में आधारित है, क्योंकि हमें उसी के समान सेवा करने के लिए बुलाया गया है। सारी मसीही सेवा का नमूना, बुनियाद और साधन वही है।

1 कुरिन्थियों 12:4-6 यह संकेत भी देता है कि जो 'सेवाएँ' प्रभु से मिलती हैं आत्मा के 'वरदानों' और परमेश्वर के 'कार्यों' से निकट से सम्बंधित हैं। आयतों 8-10 को परम्परा के अनुसार 'आत्मा के वरदान' कहा गया है, परन्तु पहले के वचनों से परिणाम निकलता है कि उन्हें 'प्रभु की सेवाएँ' और 'परमेश्वर के कार्य' कहना भी उतना ही उचित है।

आत्मिक वरदान यन्त्र हैं जो हमें संसार में मसीह की महिमा करने में योग्य करते हैं, और वे अलौकिक प्रदर्शन हैं जिन्हें पवित्र आत्मा सब विश्वासियों को उपलब्ध कराता है ताकि परमेश्वर का राज्य बढ़ाया जा सके। इसका अर्थ यह है कि सबसे पहले, बुद्धि, ज्ञान, विश्वास, चंगाई, सामर्थ्य के काम, भविष्यद्वाणी, आत्माओं की परख, अन्य भाषा और भाषाओं का अर्थ के वरदान हमें यीशु के समान सेवा करने के लिए दिए गए हैं; और दूसरा, हमारी सेवा की समझ पूरी तरह आत्मा की होनी चाहिए - यदि हमारी सेवा सच्ची होनी है तो इसे 'आत्मा में' होना चाहिए। सबकुछ जो यीशु ने किया आत्मा द्वारा प्रेरित, संचालित और समर्थ किया गया था; उसकी शिक्षा, उसकी प्रार्थना और उसकी सेवा सदा 'आत्मा में' सम्पूर्ण रूप से भरी हुई थी।

हमारे लिए भी ऐसा ही है। इससे कोई अन्तर नहीं कि हमारी सेवा आत्मिक है या व्यावहारिक, कि इसमें भोजन बाँटना है या दुष्टात्माओं को निकालना है, इसे आत्मा के सामर्थ्य और संचालन में होना है। यदि इसे प्रभावशाली होना है तो मसीही सेवा का हर एक कार्य 'आत्मा में' होना है।

हम ने देखा है कि प्रेरितों 6:2 में, diakoneo को व्यावहारिक सेवा का काय4 का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया था जिसे पहले सेवकों को करना था। अगली आयतें 3-7, बताती हैं कि किस प्रकार इस काम के लिए चुने गुए लोगों को 'पवित्र आत्मा से परिपूर्ण' होना था। हालाँकि उनकी सेवा मुख्य रूप से प्रबन्धकीय और व्यावहारिक थी, परन्तु इसे 'आत्मा में' होना अत्यावश्यक था।

सामान्य और विशेष

हम ने देखा है कि सेवा, हर उस तरीके के लिए जिससे हम परमेश्वर और एक दूसरे की सेवा करते हैं, एक सामान्य, 'सब-सम्मिलित' अभिव्यक्ति है। हम ने देखा है कि नया नियम आत्मिक और व्यावहारिक सेवा में कोई अन्तर नहीं दिखाता है, परन्तु हम ने यह भी देखा है कि रोमियों 12 'सेवा' को 'उपदेश' और 'भविष्यद्वाणी' जैसी क्रियाओं में भिन्न बताती है। इससे कुछ विश्वासियों को समस्या होती है। वे कहते हैं कि प्रेरितों 6 प्रेरितों की वचन की सेवा को 'सेवा' कहता है और इसलिए अचरज करते हैं कि रोमियों 12 सेवा को उपदेश से क्यों अलग करता है। वे पूछते हैं कि प्रेरितों का उपदेश देना सेवा और सेवा से भिन्न दोनों कैसे हो सकता है।

इसका सरल उत्तर यह है कि बाइबल अक्सर एक शब्द को एक बड़े और छोटे तरीके से उपयोग करती है - व्यापक रूप से और विशेष रूप से। उदाहरणार्थ, भविष्यद्वाणी को आत्मा द्वारा प्रेरित सब बोलने का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जा सकता है: इस तरीके से, बहुत प्रचार भविष्यद्वाणी कहा जा सकता है। फिर भी भविष्यद्वाणी एक सीमित तरीके से परमेश्वर से विशेष संदेशों के लिए जो विशेष व्यक्तियों को बोली जाती है, उपयोग की जा सकती है। किसी उपदेश को भविष्यद्वाणी कहना अनुचित नहीं होगा, हमें केवल यह स्पष्ट करना होगा कि क्या हम 'भविष्यद्वाणी' शब्द को एक व्यापक रूप से या विशेष रूप से उपयोग कर रहे हैं।

सेवा के साथ भी ऐसा ही है। हम इस शब्द के विषय में 'हर प्रकार से जो हम सेवा करते हैं' और 'विशेष व्यक्तिगत सेवा का कार्य' दोनों सोच सकते हैं। व्यापक रूप से उपयोग में, 'सेवा' हर उस सेवा के कार्य के विषय में है जो आत्मा में किया जाता है - इसलिए, प्रेरितों का प्रचार और डीकनों का भोजन परोसना दोनों 'सेवा' हैं। परन्तु, विशेष रूप से उपयोग में, 'सेवा' विशेष व्यक्तियों के लिए आत्मा द्वारा प्रेरित विशेष कार्य हैं - पहली सदी के घरेलू नौकर के भिन्न, व्यक्तिगत, निजी सेवा। इसका अर्थ है कि हम 'सेवा' को एक व्यापक रूप से यीशु के सारे जीवन और काम का वर्णन करने के लिए उपयोग कर सकते हैं, क्योंकि उसका सारा बोलना, प्रार्थना करना और सेवा करना 'आत्मा में' था और उसकी विशेषता दीन सेवा थी। परन्तु हम 'सेवा' को यीशु के उन कार्यों का वर्णन करने के लिए भी उपयोग कर सकते हैं जो व्यक्तिगत लोगों के लिए किए गए थे। यही कारण है कि प्रचार करना सीमित और अक्षरक्षः भाव में नहीं, परन्तु एक व्यापक रूप में ही सेवा है; और उदाहरणार्थ, उसी कारण से, कौंसलिंग, चंगाई और दुष्टात्माओं को निकालना दोनों व्यापक और विशेष रूप से सेवा हैं।

यह कोई व्यर्थ भिन्नता नहीं है, क्योंकि शब्दों का गलत उपयोग कलीसिया को अशक्त कर सकता है। इफिसियों 4:12 दिखाता है कि अगुवों को सब सन्तों को सेवा के काम के लिए तैयार करना है। परन्तु सन्त लोग बाइबल के अनुसार सेवा नहीं करेंगे यदि वे समझते हैं कि सेवा उपदेश और शिक्षा है, या सोचते हैं कि उन्हें उपयोगी सेवा के लिए ही बुलाया गया है।

हमें समझना चाहिए कि, क्योंकि हमारी सेवा diakonia है, इस का व्यक्तिगत उपयोग होना चाहिए, और कि इसलिए हमें विशेष व्यक्तियों की सेवा के लिए आत्मा की अगुवाई और सामर्थ्य पाना है। हमारी सेवा दृढ़तापूर्वक केन्द्रित होनी चाहिए।

एक सीमित, व्यक्तिगत भाव में, हमारी सेवा में एक बीमार व्यक्ति को चंगा करना, या एक दुष्टात्मा निकालना, या कौंसलिंग, या पैर धोना, या खरीदारी करना, या खाना पकाना, या प्रार्थना करना सम्मिलति हो सकता है। परन्तु, यह कैसी भी क्यों न हो, हमारी सेवा मूल रूप से, एक घरेलू नौकर के समान, व्यक्तिगत होनी चाहिए। और यह सदा पवित्र आत्मा द्वारा संचालित और समर्थ होनी चाहिए।

आज की चंगाई की सेवा – एक पुनरीक्षण

पुराने नियम में केवल कुछ चुने हुए लोग - नबी - जिन्हें पवित्र आत्मा का अभिषेक मिला हुआ था, चंगाई की सेवा के लिए योग्य होते थे। परन्तु, क्योंकि यीशु ने पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया था, इसलिए अब सब विश्वासियों के लिए चंगाई की सेवा में परमेश्वर की सेवा करना मुमकिन हुआ है। केवल एक ही अपेक्षा है कि हमें यीशु ने पवित्र आत्मा द्वारा अभिषेक किया हो।

मत्ती 28:18-20 का 'महान आदेश' कहता है कि हर देश के सब विश्वासियों को उन सब आज्ञाओं का पालन करना सिखाना है जिनकी आज्ञा मसीह ने प्रारंभिक बारह चेलों को दी थी। इसमें बीमारों को चंगा करने की उसकी आज्ञा भी सम्मिलित होनी चाहिए। बेशक, कुछ विश्वासी चंगाई में दूसरों से अधिक लगे होंगे। कुछ को एक विशेष चंगाई का वरदान मिलेगा। परन्तु परमेश्वर का हर जन उसकी चंगाई की सेवा कर सकता है। इसका अर्थ है कि हमें सभा के उन तरीकों से बचना चाहिए जो यह विचार देते हैं कि चंगाई की सेवा केवल कुछ विशेष ही कर सकते हैं।

रोमियों 12:6 बताता है कि हमें भविष्यद्वाणी का वरदान अपने विश्वास के परिमाण के अनुसार उपयोग करना है। यह संकेत देता है कि वरदान भिन्न लोगों में, या उसी व्यक्ति में समय के साथ लगभग पूरी शक्ति से विकसित किया जा सकता है। यही लगता है कि क्यों - 1 तीमुथियुस 4:14 और 2 तीमुथियुस 1:6 में - तीमुथियुस को याद दिलाया गया था कि वह वरदान के प्रति निश्चिन्त न रहे और अपने भीतर वरदान को उत्तेजित करे। यदि तीमुथियुस के लिए, सम्भवतः विरल उपयोग के कारण, अपने वरदान को कमजोर होने देना मुमकिन था, तो हमारे लिए भी चंगाई के सम्बंध में ऐसा हो सकता है। और यदि तीमुथियुस का वरदान इसे उपयोग करके मजबूत किया जा सकता था, तो हमें भी प्रभावशाली सेवा के लिए सब आत्मिक और उपयोगी निपुणता विकसित करनी चाहिए।

विशेष रूप से, हमें आत्मिक वरदानों में अनुभव और सुविज्ञता प्राप्त करने की आवश्यकता है जो मसीही चंगाई की सेवा करने के लिए आवश्यक है। यह जानते हुए कि पिता चंगा करनेवाला परमेश्वर है, और कि पुत्र चंगा करता है, और कि आत्मा चंगा करने के लिए हम में और हमारे साथ है, तो हमें चंगाई की सेवा करने के तरीकों को समझ लेने की आवश्यकता है।

सेवा करने की परमेश्वर की प्रेरणाएँ

आत्मा में सब सेवा आत्मा की प्रेरणाओं और निर्देशों को पहचानने पर निर्भर होती हैं। हो सकता है हम बाइबल के सारे सिद्धान्तों और प्रतिज्ञाओं को जानते हों, परन्तु हम तब तक प्रभावशाली तरीके से सेवा नहीं कर पाएँगे जब तक हम समझते नहीं कि परमेश्वर हमारे साथ आत्मा के द्वारा कैसे बातचीत करता है। पुराने नियम में नबी परमेश्वर के वचन, प्रभु के बोझ, और परमेश्वर के आत्मा के द्वारा बोलने और सेवा करने के लिए प्रेरित होते थे - और हम भी उसी प्रकार निर्देश पाने की अपेक्षा कर सकते हैं। परमेश्वर एक लम्बे समय तक हम से से बातें करता रहता है और उसके साथ सेवा करने के लिए हमें तैयार करता है। परन्तु वह हम से तब भी बात करता है जब वह चाहता है हम सेवा करें, और यह सामान्यतः उस तरीके से होता है जिसे 'ज्ञान के वचन' का आत्मिक वरदान कहा जाता है। यीशु और प्रेरित 'महसूस करते' थे कि परमेश्वर चाहता है वे एक विशेष व्यक्ति की सेवा करें, और - आत्मा की सहायता से वे भीड़ में व्यक्ति को पहचान लेते थे। उदाहरणार्थ, यीशु ने बैतहसदा के कुण्ड पर केवल एक व्यक्ति को चंगा किया, और पतरस जानता था कि परमेश्वर चाहता है कि वह मन्दिर के द्वार पर पड़े लंगड़े व्यक्ति को चंगा करे।

उसी प्रकार, हम अपनी आत्माओं में जान सकते हैं कि परमेश्वर लोगों को चंगा कर रहा है या चंगा करनेवाला है। उदाहरणार्थ, हम व्यक्ति या स्थिति का कुछ ब्योरा जिसे परमेश्वर चंगा करने वाला है 'महसूस' कर सकते हैं। कभी-कभी हम व्यक्ति का एक दृश्य प्रभाव पा सकते हैं, या दूसरे अवसरों पर - हम हमारे अपने शरीरों के संबद्ध भाग में एक दर्द, एक गरमाहट या एक झुनझुनी 'महसूस' कर सकते हैं। ये आत्मा के तरीके के कुछ संकेत हैं कि परमेश्वर एक स्थिति को चंगा कर रहा है।

सेवा के लिए परमेश्वर की इच्छा पहचानना

कई लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा जानना उनके मसीही जीवन का सबसे कठिन भाग है, परन्तु हमें परमेश्वर को सुनने की अपनी योग्यता को बढ़ाना है। क्योंकि हमारे लिए किसी के लिए भोजन ले जाने में आत्मा को सुनना और निर्देश पाना और उससे समर्थ होना उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना जब हम एक दुष्टात्मा निकालते हैं। जिस तरीके से भी हम सेवा करने के लिए अगुवाई पाएँ, हम उसी से निर्देश पाएँ।

परमेश्वर की आवाज को पहचानना सीखने का सबसे उत्तम तरीका परमेश्वर से निश्चित प्रश्न पूछना है। पहले, हमें परमेश्वर से पूछना है कि हम क्या करें या कहें; आगे, मानव कचड़े को उससे जो शुद्ध रूप से परमेश्वर का है अलग करके उन विचारों को जाँचना है: और तब जाँचे हुए विचारों को कार्य में लाना है।

परमेश्वर की चंगाई से सेवा करना आरम्भ करना

यहाँ दिए सुझाव ज्यों-के त्यों अनुकरण करने के लिए बाइबल के नियम नहीं हैं, बल्कि वे निर्देश हैं जिनके विषय में आत्मा से अर्थ पता लगाने और विभिन्न स्थितियों में लागू करने के लिए पूछना है।

प्रार्थना

सेवा में प्रभावहीनता का एक मुख्य कारण पर्याप्त प्रारंभिक प्रार्थना की कमी है। कम से कम उतना ही समय प्रार्थना में बिताया जाना चाहिए जितना समय हम सेवा में बिताने की अपेक्षा कर रहे हैं। इसमें साहस के लिए मध्यस्थता जैसे प्रेरितों 4:4:29-30 में है, और सेवा के विषय में परमेश्वर की प्रेरणा की प्रतीक्षा में शान्ति से सुनना जैसा प्रेरितों 9:40 में है, सम्मिलित होना चाहिए।

साझेदारी

साझेदारी सारी बाइबल में एक महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में पाई जाती है, और यह सुझाव देती है कि हमें साधारणतः जोड़ों या दल में चंगाई की सेवा करनी चाहिए। चेलों ने यीशु के साथ रहकर जब उसने चंगा किया था, सीखा था, इसलिए हमारे लिए दूसरे विश्वासी के साथ जुड़ना जो अधिक अनुभवी है अच्छी तैयारी और प्रशिक्षण है।
एक व्यक्ति की सेवा में तीन से अधिक लोग लगने से बचना अच्छा होगा, क्योंकि जैसा हम मत्ती 17:16 में पाते हैं, यह उलझन पैदा करता और प्रभावहीन हो सकता है। दूसरे विश्वासी जो सेवा में सम्मिलित होने के उत्सुक हैं शान्ति से और बिना बाधा डाले बैठ सकते हैं, और जो सेवा कर रहे हैं उनके मार्गदर्शन और सामर्थ्य के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।

धैर्य

2 कुरिन्थियों 6:3-4 दिखाता है कि सेवकों को बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है, क्योंकि हम विलम्ब, समस्याओं और कठिन लोगों से शीघ्र ही थक जाते हैं। बाइबल 'लोगों की ओर धैर्य' के लिए makrothumia, और 'परिस्थितियों की ओर धैर्य' के लिए hupomone दो कठिन शब्द उपयोग करती है, और उनके विषय में भिन्न चीजें सिखाती है। हमें makrothumia के लिए प्रार्थना नहीं करनी है, क्योंकि हमारे भीतर लोगों के लिए यीशु का धैर्य है। हम इसे गलातियों 3:27 और कुलुस्सियों 3:12 में देखते हैं। गलातियों 5:22 संकेत देता है कि इस प्रकार का धैर्य हमारे जीवनों में आत्मा के कार्य के एक पहलू के रूप में हम में स्वाभाविक रूप से विकसित होता है।
परन्तु बाइबल सुझाव देती है कि हमें hupomone के लिए प्रार्थना करनी है - जो 2 कुरिन्थियों 12:12 में प्रेरित का एक चिन्ह है। याकूब 1:2-4 दिखाता है कि परमेश्वर इसे हम में परीक्षाओं, प्रशिक्षणों और दुखों के द्वारा विकसित करता है। हमें hupomone की आवश्यकता है ताकि हम परिस्थितियों को सेवा में हमारी प्रतिक्रिया को आदेश देने से रोक सकें, और जब निराशा आती है तब टिके रहने में सहायता मिले।

दीनता

कुछ विश्वासी चंगाई की सेवा की ओर गलत कारणों से आकर्षित होते हैं। तरस और आज्ञापालन ने मसीह को प्रेरित किया था, और हमें भी पवित्र आत्मा की दीन, अनात्मशंसी गुमनामी की खोज में रहना चाहिए - किसी भी सम्बंधित महिमा को अपने वास्ते लिए बिना सारा ध्यान मसीह पर केन्द्रित करने को अपना लक्ष्य बनाना चाहिए। कोई भी मनुष्य दूसरे को चंगा नहीं कर सकता है। सबसे अधिक जिसे हम लक्ष्य बना सकते हैं वह है एक अयोग्य सेवक बनना जिसे परमेश्वर एक चमत्कार की पहले से जानकारी देता है।

प्रश्न

बाइबल का अध्ययन करने से पता चलता है कि चंगाई की सेवा की पहल, या तो किसी ने यह कहते हुए की थी, 'कृपया मुझे चंगा करो' या परमेश्वर ने कहा था, 'उस व्यक्ति को मेरी चंगाई दो।' नए नियम की चंगाई के चमत्कारों को बराबर बाँटा जा सकता है: आधे परमेश्वर की आज्ञा पर हुए हैं और आधे मनुष्य की विनती पर हुए हैं।

सेवा में, हमें परमेश्वर और जिस व्यक्ति की हम सहायता करने का प्रयास कर रहे हैं दोनों को सुनने की आवश्यकता है, और ऐसा शान्ति और एकान्त का वातावरण बना कर किया जा सकता है। बारम्बार, सुसमाचार दिखाते हैं कि किस प्रकार यीशु सेवा करने से पहले या तो शोर को शान्त करते थे या एकान्त स्थान में चले जाते थे।

यीशु केवल एक अलौकिक स्तर पर ही नहीं, परन्तु अवलोकन और अनुमिति के स्वाभाविक स्तर पर भी कार्य करते थे। मरकुस 5:9; 8:22-26; 914-29; लूका 18:40-43 और यूहन्ना 5:6 यीशु को पाँच प्रत्यक्ष प्रश्न पूछते हुए दिखाते हैं: <u>हमें भी अक्सर वैसे ही प्रश्नों को पूछने की आवश्यकता पड़ेगी:</u>

- 'तुम्हारा नाम क्या है?' यीशु ने यह प्रश्न एक दुष्टात्मा को किया होगा, परन्तु - हमारे लिए - एक अजनबी से यह प्रश्न पूछना स्वाभाविक है।
- 'तुम क्या चाहते हो मैं तुम्हारे लिए करूँ?' इससे व्यक्ति को अपने मन स्पष्ट होने में सहायता मिलती है कि उसे किस चीज की आवश्यकता है।
- 'क्या तुम चंगा होना चाहते हो?' इन दोनों बातों का पता लगाना आवश्यक हैं कि व्यक्ति गम्भीर है और चंगाई के परिणाम जानता है, और कि हम उन पर चंगाई जबरदस्ती नहीं थोप रहे हैं।
- 'यह दशा कब से है?' बीमारी का कारण पता लगाने के लिए समस्या की परिस्थितियों और पृष्ठभूमि की जाँच करना आवश्यक होगा।
- 'क्या तुम देख सकते हो?' हमें उसे सदा प्रमाणित करने का प्रयत्न करना चाहिए जो सेवा के दौरान हुआ है।

व्यक्ति से प्रश्न पूछने के साथ साथ, हमें परमेश्वर से भी पूछना चाहिए कि क्या कुछ और जानने की आवश्यकता है। हमें एक चित्र या शब्द 'महसूस' हो सकता है। हम प्रश्न या अशारीरिक कारण के जानकार हो सकते हैं। यदि परमेश्वर हमें कुछ नहीं बताता है तो व्यक्ति ने हमें सबकुछ बता दिया है जिसे जानने की हमें आवश्यकता है।

अबिमेलेक, मरियम, मालकुस, बैतहसदा के कुण्ड पर व्यक्ति और छत से निचे लाया गया व्यक्ति की बीमारियों का आरम्भ पाप में हुआ लगता है। आजकल कुछ अगुवे चंगाई के लिए प्रार्थना करने से पहले पश्चाताप और क्षमा पर जोर देते हैं, परन्तु यह बाइबल का नमूना नहीं है। कभी-कभार, जैसे याकूब 5:16 में है, पाप की स्वीकृति और चंगाई में संबंध होता है, परन्तु ऐसा सदा नहीं होता है।

दूसरे अगुवे सिखाते हैं कि हर रोग के पीछे दुष्टात्मा होती है, और जोर देते हैं कि चंगाई आने से पहले इसे निकालना होगा। हाँ, बाइबल दुष्टात्माओं से छुटकारे और शारीरिक चंगाई में भेद दिखाती है, और इस भिन्नता पर निरन्तर बल देना चाहिए।

सेवा

हमने देखा है कि यीशु और चेलों ने चंगाई के लिए भिन्न भिन्न कार्य किए थे, और हम उनके उदाहरणों का अनुकरण करके अच्छा करेंगे। <u>फिर भी, हमें तीन बाइबल के सामान्य सिद्धान्तों को याद रखना है।</u>

- सिर पर 'हाथ रखना' चंगाई के बजाय आशीष देने की सेवा से अधिक सम्बंधित है।
- सेवा से पहले प्रार्थना होती है: चंगाई की सेवा के साथ आज्ञा का शब्द या घोषणा होती है।
- परमेश्वर हमें व्यक्ति के करने के लिए एक कार्य का सुझाव दे सकता है।

<u>नीचे दिए सुझाव उन विश्वासियों के लिए हैं जो चंगाई की सेवा में अनुभवहीन हैं। उनमें, जैसे पवित्र आत्मा अपने तरीके से हमारा मार्गदर्शन करता है हेर-फेर हो सकता है।</u>

1. सब समय मसीह का प्रेम दिखाओ; मुस्कराओ और शान्त रहो, क्योंकि चंगाई करनेवाला परमेश्वर है।
2. एक साझेदार के साथ, धीमे से किसी पाप को स्वीकार करो और क्षमा माँगो।
3. पवित्र आत्मा को मार्गदर्शन, साहस और सामर्थ्य देने को कहो।
4. अपनी आँखें खुली रखो; व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं को देख कर उपयोगी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
5. परमेश्वर को सुनो और जो कुछ भी वह आपके मन में डालता है बोलो; उससे प्रश्न पूछते और उसके उत्तर सुनते रहो।

6. परमेश्वर से पूछो कि क्या व्यक्ति को छूने की आवश्यकता है; यदि जताए जाओ, तो शरीर के प्रभावित भाग के करीब कपड़े पर धीमे से हाथ रखो।
7. इस प्रकार के प्रश्न पूछो, 'क्या हो रहा है?' और 'क्या कुछ अनुभव कर रहे हो?'। निश्चय करो कि जो उनके साथ हो रहा है उसे वे आपको बताएँ।
8. शरीर की प्रतिक्रियाओं पर ध्यान दो; इनसे पता चल सकता है कि परमेश्वर काम कर रहा है, परन्तु वे तो परमेश्वर के कार्य की ओर शरीर की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है।
9. यदि शरीर कोई प्रतिक्रिया दिखाता है तो व्यक्ति को निश्चिन्त होने में सहायता करो, परन्तु सेवा में लगे रहो।
10. व्यक्ति को प्रोत्साहित करो और शान्त होने में उनकी सहायता करो; उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति, सामर्थ्य और प्रतिज्ञाओं की याद दिलाओ।
11. व्यक्ति, अपने साथी और परमेश्वर के साथ सेवा के प्रवाह को बनाए रखो।
12. जब अनिश्चित हो कि आगे क्या करना है, तब अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना अच्छा होगा: यह क्या है व्यक्ति को समझाओ।
13. जब व्यक्ति को चंगाई मिल जाए, या पवित्र आत्मा कहता है बन्द करो, या आप कुछ सोच नहीं पाते आगे क्या करना है, या व्यक्ति आपको बन्द करने के लिए कहता है, या जब सब थके हुए लगें तो सेवा समाप्त कर दो।
14. यदि व्यक्ति ने पूरी चंगाई नहीं पाई है तो निकट भविष्य में सेवा का प्रबंध करो जिससे आगे की तैयारी और प्रार्थना के लिए समय मिल सके।

अनुरक्षण

यीशु जब एक व्यक्ति की सेवा कर लेता था तो उसे अक्सर पिता की सलाह भी देता था। हम उसके उदाहरण का अनुकरण कर सकते हैं और जो कुछ भी उपयोगी सलाह पवित्र आत्मा देने को जताए दे सकते हैं। उदाहरणार्थ, वह हमें नीचे दी गई कुछ बातें कहने के लिए कह सकता है:

- व्यक्ति को स्तुति और धन्यवाद देने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- जब व्यक्ति दवाई ले रहा है, या वह डॉक्टर की देखरेख में है, तो उसे डॉक्टर से मिलने के लिए कहा जा सकता है।
- मसीही वचनबद्धता में उन्हें अगला कदम लेने की सलाह दो, जो पश्चाताप, पानी का बपतिस्मा, आत्मा पाना, या कलीसिया में जुड़ना हो सकता है।
- यदि बीमारी का कारण पाप था, या एक दुष्टात्मा का प्रभाव था, तो इसे पहचाना और छोड़ा जाना चाहिए।
- कभी-कभी और आगे सेवा आवश्यक होगी; इसे समझाओ और उपयुक्त प्रबंध करो।
- उनकी सततः चंगाई, सुरक्षा और बचाव के लिए प्रार्थना करो; शत्रु हराया गया है, परन्तु उससे पलट वार की अपेक्षा की जा सकती है।

चंगाई नहीं पाए हुओं की सेवा

यीशु ने उन सबको चंगा किया था जिन्होंने चंगाई माँगी थी, और जिन्हें पिता ने उसके पास भेजा था। परन्तु बाकी का नया नियम निरन्तर असफलता की एक तालिका नहीं है। गलातियों 4:13-14; फिलिप्पियों 2:27; 1 तीमुथियुस 5:23 और 2 तीमुथियुस 4:20 का तात्पर्य चंगाई की असफल या अप्रयासित सेवा नहीं है।
सब विश्वासी जो चंगाई की सेवा के लिए समर्पित होते हैं कुछ निराशा अवश्य अनुभव करेंगे। कुछ लोग होते हैं जिनकी हम सहायता करते हैं जो चंगा नहीं होते हैं, दूसरे हैं जिनकी आरम्भ की चंगाई रद्द हो जाती है, और कुछ होते हैं जो थोड़े चंगे होते हैं और फिर आगे नहीं बढ़ते हैं। कभी-कभी यह इसलिए होता है क्योंकि हमारे घमण्ड का इलाज परमेश्वर की कार्यसूची में पहले है। दूसरे उदाहरणों में, हो सकता है हम ने परमेश्वर को गलत सुना हो या मानवीय उत्साह या सांसारिक दबाव के कारण कार्य किया हो। और कभी ऐसे समय होंगे जब हम ने पर्याप्त प्रार्थना नहीं की है या सांसारिकता या व्यर्थ चिन्ता से ध्यान भंग हुआ हो। दुख की बात यह है कि कुछ विश्वासी - व्यंग से या लज्जा के कारण - परिणाम निकालते हैं कि निष्फल सेवा जिसकी सेवा की गई है उसकी जिम्मेवारी है। वे संकेत देते हैं कि व्यक्ति में पर्याप्त विश्वास नहीं था, या थोड़ा विद्रोही था, या पूरी तरह चंगा नहीं होना चाहता था। यह सब चीजें मुमकिन हैं, परन्तु यह बिरले ही सत्य होता है। कभी-कभी, जैसा पुराने नियम की काफी कहानियों के साथ हुआ है, चंगाई के स्वीकार में देर होती है। दूसरे समयों में, असली चंगाई धीरे-धीरे होती है - जैसा नामान और मरकुस 8 के अंधे व्यक्ति के साथ हुआ था। इस प्रकार के मामलों में बाइबल कहीं भी सुझाव नहीं देती है कि लोगों को ढोंग करने के लिए

आग्रह किया जाना चाहिए कि वे चंगा हो गए हैं। इन कहानियों में लोगों को केवल परमेश्वर के वचन का पालन करने को कहा गया था।

हमें पता होना चाहिए कि कहीं भी नहीं पाया जाता है कि मसीह ने किसी को कहा हो कि वे चंगा नहीं हो सके क्योंकि उनमें पर्याप्त विश्वास नहीं था। मत्ती 13:58 और 17:19-20 बिलकुल भिन्न सच्चाई सिखाते हैं।

जब काफी सेवा के बाद भी, चंगाई नहीं हुई है तो हम नीचे दी गई कुछ चीजें कर सकते हैं। जैसा दूसरे सुझावों के साथ था, हमें परमेश्वर से इन्हें अपनी परिस्थिति में लगाने के लिए पूछना चाहिए।

1. अपने साथी के साथ विचार-विर्मश करो और सेवा में उठाए कदमों की जाँच करो। पता लगाने का प्रयास करो कि क्या आपने हर प्रेरणा का पालन किया था; किसी भी भूल-चूक का पता लगाओ।
2. मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना और उपवास करो; परमेश्वर से पूछो कि व्यक्ति चंगा क्यों नहीं हुआ था।
3. किसी के साथ जो चंगाई की सेवा में अधिक अनुभवी है इस मामले पर बातचीत और प्रार्थना करो और उनके सुझाव माँगो।
4. व्यक्ति के साथ बिताए समय के लिए परमेश्वर की स्तुति करो; उन्हें याद दिलाओ कि चंगा करनेवाला परमेश्वर उनके साथ है और उनकी चिन्ता करता है।
5. घटना से जो सीखा गया है उसे स्थापित करो और व्यक्ति को भी समझाओ। पता लगाओ जो उन्होंने सेवा से सीखा है और पाई अन्तर्दृष्टि के लिए परमेश्वर की स्तुति करो।
6. यदि सहायता किया जानेवाला व्यक्ति विश्वासी है तो उसे दूसरों की चंगाई की प्रार्थना में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित करो।
7. याद रहे कि हम युद्ध में हैं, कि शत्रु दृढ़ता से चंगाई के विरोध में है, परन्तु कि वह क्रूस पर हराया गया था और अन्तिम दिन नष्ट कर दिया जाएगा।
8. निश्चय करो कि कोई भी चंगाई की कमी के कारण दोषी महसूस नहीं करे।
9. व्यक्ति को परमेश्वर की चंगाई की प्रतिज्ञाओं पर मनन करने और उसकी परिस्थिति में लागू करने के लिए प्रोत्साहित करो।

हलाँकि हमें लोगों को उनकी चंगाई के लिए प्रार्थना करते रहने, और चंगाई के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर दावा करते रहने के लिए आग्रह करना है, परन्तु हम उन्हें याद दिलाने को भूल न जाएं कि वे चंगाई के बजाय चंगा करनेवाले के लिए भूखे हों। अन्त में मानवजाति की महान आशा चंगाई नहीं, यीशु है।

हमारे दर्द और समस्याओं के बीच, भीतरी शान्ति और संतोष की हमारी एक मात्र आशा हमारा ध्यान दृढ़ता से यीशु पर, और हमारे लिए उसके अत्यधिक प्रेम पर रखना है। यदि हम चंगाई में ही विचारमग्न हैं, तो हम कभी भी सम्पूर्ण नहीं हो पाएँगे और कभी भी शान्ति पाएँगे। परन्तु यदि हमारा लक्ष्य परमेश्वर है, तो हम पाएँगे कि यहोवा रॉफा हमें अपनी कोमल चंगा करनेवाली बाहों में सिमट लेगा।

छुटकारा और दुष्टात्माओं को निकालने की सेवा – एक पुनरीक्षण

एक दुष्टात्मा को निकालने में विश्वासियों की सहायता के लिए नीचे कुछ निर्देश दिए गए हैं। ये पालन करने के लिए नियम नहीं, बल्कि विचार करने के लिए सुझाव हैं।

 # परिस्थितियों या लोगों द्वारा दबाव में मत आओ

हमारा बुलावा परमेश्वर का कहना मानना, उसकी इच्छा पूरी करना है, और लोगों के दबाव में आना नहीं है। आत्मा की प्रेरणा का पालन करने के कभी-कभी अर्थ एक पीड़ित की सहायता नहीं करना और निर्दयी दिखना हो सकता है; दूसरे समयों में इसका अर्थ तात्कालिक क्रिया होगा। हर परिस्थिति में हमें परमेश्वर के लिए उपलब्ध होना है, फिर भी धृष्ट नहीं - बल्कि निश्चय करें कि हम पवित्र आत्मा से पूछते हैं कि क्या वह हमें, या किसी को भी नहीं, किसी दूसरे व्यक्ति को उपयोग करना चाहता है।

 # डरो मत

संयम की उपद्रवी हानि के सामने सदा कुछ आशंका और कष्ट तो होगा ही। हमारी पहुँच जैसी मृत्यु और मरने की ओर होती है वैसी ही होनी चाहिए। मसीही मृत्यु से डरता नहीं है, जबकि मरने की प्रक्रिया बहुत अप्रिय हो सकती है। हमें दुष्टात्मा से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है - लूका 10:19 की प्रतिज्ञा हमारे साथ है - परन्तु दुष्टात्मा की मसीह की ओर प्रतिक्रिया दुखद हो सकती है। यदि हम डरते हैं तो हमें मसीह को हमारा डर निकालने और हमें अपने भरोसे से भरने को कहना चाहिए। भजन 124 और 125 जैसे परिच्छेद सहायक हैं।

 # अच्छी तैयारी करो

हमें निश्चित करना है कि हमारी सम्पूर्ण निर्भरता मसीह पर है, न कि किसी प्रणाली, शब्दों का ढंग या सेवा का नमूना है; और हम में कोई कड़ुवाहट, टूटे सम्बंध या पाप नहीं है जिससे निपटा नहीं गया है।
हमें निश्चय करना है कि हम ने प्रार्थना, उपवास किया है, और आत्मा की सहायता माँगी है; कि हमारा एक सेवा में हमारा एक साथी है और स्थानीय कलीसिया की प्रार्थना का सहयोग मिला हुआ है; हम में गहरा तरस, धैर्य और पीड़ित के लिए प्रेम है। हमें बाधाओं को रोकने के लिए जो कुछ आवश्यक हो करना है, और अपने आप को याद दिलाना है कि हो सकता है पाप स्वीकार, पश्चाताप और परमेश्वर की क्षमा पाना ही आवश्यकता हो।

 # पीड़ित को तैयार करो

यदि व्यक्ति अपने आप को नियंत्रण में रखे है तो हमें उसे शान्त होने में सहायता करनी चाहिए और उसे उन चरणों के विषय में समझाना चाहिए जो सेवा में हो सकता है। हमें उन्हें बताना चाहिए कि हम सेवा के दौरान उनसे नहीं दुष्टात्मा से बात करेंगे, और उन्हें छुटकारा केवल मसीह ही देगा।
अधिकाँश पीड़ित लोग स्वतन्त्र होना चाहते हैं, और उन्हें खुद भी दुष्टात्मा का सामना करने, स्वतन्त्रता की परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर दावा करने, और अधिकार की आज्ञाओं में अपने 'आमीन' मिलाने के लिए आग्रह किया जा सकता है। उन्हें इसमें भी प्रोत्साहित किया जा सकता है कि अनावश्यक प्रतिक्रियाओं जैसे कि चिल्लाना और अत्यधिक या आवृतीय शारीरिक गतियों में दे देने की परीक्षा का सामना करें। पीड़ित को संबद्ध नए नियम की कहानी या बाइबल का आश्वस्त करनेवाला वचन जैसे कि कुलु. 2:13-15 पढ़ने देने से भी सहायता मिलती है।

 # पाप स्वीकार और त्यागना

पीड़ित कभी-कभी तैयारी के समय नियंत्रण दुष्टात्मा को दे देते हैं: उदाहरणार्थ, प्रार्थना के समय, जब बाइबल पढ़ी जा रही है, या जब हम क्रूस या यीशु का नाम लेते हैं। यदि ऐसा होता है तो सीधे अधिकार के साथ आज्ञा देनी चाहिए। यदि नियंत्रण नहीं खोया गया है तो पीड़ित को उन पापों को स्वीकार करने जिन्हें पवित्र आत्मा मन में लाता है और परमेश्वर की क्षमा के सामर्थ्य और स्वतन्त्रता को ले लेने के लिए कहा जाना चाहिए। प्रेरितों 19:18 दिखाता है कि विश्वासियों की उनके शैतानी व्यवहारों की स्वीकृति

"विस्तार" में थी। इन सेवाओं को परमेश्वर की क्षमा घोषित करनी चाहिए, और व्यक्ति को परमेश्वर की क्षमा की सही शिक्षा देनी चाहिए।
इस समय, यदि मुमकिन हो तो, शैतानी व्यवहारों की स्वीकृति और क्षमा से सम्बंधिक कोई पुस्तकें, चीजें या कपड़े नष्ट कर दिए जाने चाहिए। यदि यह मुमकिन न हो तो, उन्हें पहले अवसर पर नष्ट करने का इरादा तय कर लेना चाहिए।

आधिकारिक आदेश

यदि एक दुष्टात्मा मसीह की उपस्थिति में प्रतिक्रिया दिखाता है, या यह स्पष्ट होता है कि दुष्टात्मा को निकालना है, तो कुछ आधिकारिक आदेश दिए जाने चाहिए। ये आदेश यीशु की ओर से दिए जाते हैं: हमें स्पष्ट होना चाहिए कि यीशु ही दुष्टात्माओं को निकालता है - ये सेवाएँ केवल उसके प्रतिनिधि हैं। इसका अर्थ है कि विशेष संकेत, शब्द, स्थान, वस्त्र और चीजों की कोई कीमत नहीं है। मसीह अपनी सांसारिक देह के द्वारा ही दुष्ट शक्तियों का सामना कर सकता है और हमें न तो कुछ अधिक करना है, और न ही हम कर सकते हैं, केवल वहाँ खड़े होकर 'यीशु के नाम में' परमेश्वर का आदेश दें।
कुछ अगुवे प्रभु की प्रार्थना या प्रभु भोज का उपयोग करने को बड़ा महत्त्व देते हैं। दूसरे सोचते हैं कि पवित्र आत्मा को विशेष निमंत्रण दिया जाना चाहिए। कुछ दूसरे लोग प्रतीकात्मक रूप से लहू इधर-उधर छिड़कते हैं, जबकि कुछ बल देते हैं कि केवल कुछ विशेष लोग ही सेवा कर सकते हैं। परन्तु बाइबल कोई भी विशेष तरीके नहीं सिखाती है। कुछ कलीसियाओं ने, पहले की गलतियों के कारण, दुष्टात्माओं को निकालने की सेवा के लिए कुछ नियम बनाए हैं, और बेशक उनका सम्मान किया जाना चाहिए। परन्तु कोई भी विश्वासी जो मसीह में है और पवित्र आत्मा से अभिषेक पाया है, दुष्टात्मा को निकालने का आदेश दे सकता है।

ये सब दुष्टात्माओं को निकालने की सेवा के लिए केवल कुछ सरल निर्देश हैं; सबसे महत्त्वपूर्ण बात पवित्र आत्मा को सुनना, और उसकी आज्ञा मानना है।

1. **दुष्टात्माओं को इस प्रकार के शब्दों द्वारा बाँधा या डाँटा जा सकता है:**
'मैं तुझे दुष्टात्मा, यीशु मसीह के नाम में और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में बाँधता हूँ। मैं तुझे शान्त होने का आदेश देता हूँ।'
दुष्टात्माएं अक्सर भंग या गड़बड़, एक मानसिक शून्यता या उनींदापन की भावना लाती हैं। 'बाँधना' इसे होने से रोकता है, या जब हो रहा है तो उसे रोकता है। यह दुष्टात्मा को पीड़ित को कष्ट पहुँचाने और सेवकों को प्रभावित करने से रोकता है।

2. **दुष्टात्मा को कुछ इस प्रकार कह कर निकलने का आदेश दिया जा सकता है:**
'मैं तुझे दुष्टात्मा, यीशु मसीह के नाम में और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में, इस व्यक्ति में से जिसे तुम ने बन्दी बना रखा है, निकलने का आदेश देता हूँ।'
जैसा यीशु और गिरासेनियों के दुष्टात्माग्रस्त के साथ हुआ था, हमें भी आदेशों को कई बार दोहराना आवश्यक होगा। यदि व्यक्ति अभी भी अपने नियंत्रण में नहीं है, तो कुछ संबद्ध वचन पढ़ना, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर दोबारा दावा करना, पीड़ित को छुड़ाने के लिए यीशु को पुकारना, और इन दो आदेशों को दोहराने से पहले कुछ देर अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना सहायक होगा।

3. **यदि इसके बाद भी कोई सुधार नहीं होता है तो दुष्टात्मा को उसकी पहचान बताकर समर्पण करने के लिए कहना उचित होगा।** जब इसने ऐसा किया है तो दुष्टात्मा का चरित्र पहचानने के लिए आदेश दोहराना होगा। उदाहरणार्थ, हम कुछ ऐसा कह सकते हैं:
'यीशु मसीह के नाम में और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में, मैं तुझे दुष्टात्मा जो इस व्यक्ति को चोट पहचाती है, उसमें से निकलने का आदेश देता हूँ।'
कुछ अगुवे सुझाव देते हैं कि हमें दुष्टात्माओं को सदा नहीं लौटने का आदेश देना चाहिए, और दूसरे दुष्टात्माओं को नरक या आग की झील में जाने का सदा आदेश देते हैं। यदि ऐसा आवश्यक लगता है कि दुष्टात्मा को कुछ ऐसा आदेश देना है, तो कुछ इस प्रकार कहना अच्छा होगा: 'मैं तुझे यीशु के हाथ में जैसा उसे ठीक लगता है निपटने के लिए करता हूँ।'

अनुरक्षण

छुटकारे की सेवा से सम्बंधित लूका 8:39 में यीशु के शब्द ही अनुरक्षण के विषय में उल्लेख किए गए हैं। उन्हें दोहराना हमारे लिए अच्छा होगा। परन्तु लूका 11:24-26 में उल्लेखित सम्भावना संकेत देती है कि पीड़ितों को कुछ अच्छी सलाह दी जानी चाहिए। यह बुद्धिमानी लगता है कि जिनकी सेवा की जाती है उन्हें मसीह की ओर फिरने, और विश्वास करने, बपतिस्मा लेने और पवित्र आत्मा पाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें शैतान द्वारा विशेषकर पुरानी कमजोरियों के सहारे प्रत्याक्रमण की निश्चितता के विषय में चेतावनी देनी चाहिए, और परीक्षा का सामना करना और परमेश्वर की सुरक्षा पाना सिखाया जाना चाहिए।

जब सेवा प्रभावहीन जान पड़ती है

कभी-कभी हम लूका 9:40 में चेलों से अच्छा नहीं कर पाते हैं। जब कुछ भी नहीं हुआ है, तब हमें स्वीकार करने से लजाना नहीं है, और न ही परमेश्वर से पूछने में कि हम क्यों प्रभावहीन हुए समय बिताने को अनदेखा नहीं करना है।
हो सकता है कि पीड़ित को एक डॉक्टर के पास जाने की आवश्यकता है, या मसीह ने दुष्टात्मा का हमारे जीवन में सामना नहीं किया था, और इससे पहले व्यक्ति का छुटकारा हो सके हमें हमारे पापों से शुद्ध होने की आवश्यकता है।

एक विश्वासी में से दुष्टात्मा निकालना

कोई जो मसीह का है दुष्टात्मा के नियंत्रण में नहीं हो सकता है। परन्तु हमारे जीवन के क्षेत्र दुष्टात्माओं के प्रभाव में आ सकते हैं - परन्तु तब ही जब हम ऐसा होने देते हैं। कुछ मामलों में, विश्वासियों के लिए छुटकारे की सेवा पाना आवश्यक हो सकता है जिसने दुष्टात्मा को निकालना सम्मिलित हो।
हालाँकि छुटकारे की सेवा कभी-कभार कुछ विश्वासियों को उनके पापी व्यवहारों से पूरी तरह स्वतन्त्र होने में सहायक हो सकती है, परन्तु 'दुष्टात्मा निकालने' की सेवा सामान्य पापी आदतों और शारीरिक अतिभोगों का कोई समाधान नहीं है। रोमियों 8:12-13 और इफिसियों 4:17-32 दिखाते हैं कि इन चीजों को निकाला नहीं जा सकता है; उन्हें 'उतारना' होता है, 'मारना' होता है, 'क्रूस पर चढ़ाना' होता है। यदि किसी विशेष आदत या स्थिति में एक अस्वाभाविक - एक आत्मिक या एक अलौकिक - आयाम है, और पवित्रीकरण के 'सामान्य' मसीही अनुशासन स्वतन्त्र होने में अपर्याप्त साबित हुए हैं, तो दुष्टात्मा को निकालना पड़ सकता है।
कुछ अगुवे तर्क करते हैं कि ऐसी छुटकारे की सेवा अनावश्यक है और बाइबल की नहीं है। वे कहते हैं कि विश्वासी मसीह में और आत्मा में हैं, इसलिए उनमें से दुष्टात्मा निकालने की आवश्यकता नहीं हो सकती है। इफिसियों 2:1-3 दिखाता है कि यीशु में विश्वास करने से पहले हम कैसे थे। हम परमेश्वर के लिए मरे हुए और संसार, शरीर और शैतान के लिए जीवित थे। परन्तु अब हम परमेश्वर के लिए जीवित, और संसार, शरीर और शैतान के लिए मरे हुए हैं। हम मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठे हुए हैं - हम छुटकारा पाए हैं। परन्तु मसीह में हमारी कानूनी स्थिति अपनेआप मसीह में हमारे वर्तमान अनुभव का वर्णन नहीं करती है। हमारे जीवनों में ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो हमारी स्वर्गीय स्थिति से सहमत नहीं हैं, और हर दूसरी आशीष के साथ साथ जो मसीह में हमारी है दुष्टात्माओं के प्रभाव से छुटकारा भी लिया जाना चाहिए। यदि एक विश्वासी अपनी स्वतन्त्रता को अपना नहीं बनाता है - या यदि वे अपने जीवन में पाप, महत्त्वहीनता या अवज्ञा के कारण शैतान को कुछ प्रभाव लेने देते हैं - तो सम्भावना हो सकती है कि दुष्टात्मा कुछ प्रभाव प्राप्त कर ले जिसका अर्थ होगा कि विश्वासी में से दुष्टात्मा निकालनी पड़ेगी।
प्रेरितों 19:10-20; 1 कुरिं. 10:14-22; 12:1-3; गलातियों 4:9; 5:19-21; इफिसियों 4:26-27; कुलु. 2:8; 1 तीमु. 4:1; 2 तीमु. 2:25-26 और 1 पतरस 5:8 सब संकेत देते हैं कि विश्वासियों के जीवनों के कुछ क्षेत्र विभिन्न दर्जे में दुष्टात्माओं के प्रभाव में हो सकते हैं। परन्तु हमें निश्चयपूर्वक कहना चाहिए कि कोई भी दुष्टात्मा और खुद शैतान भी किसी विश्वासी के जीवन पर सम्पूर्ण, या अन्तिम नियंत्रण नहीं पा सकता है।

सुरक्षा

लूका 10:19 एक बहुमूल्य प्रतिज्ञा है, परन्तु इसका लाभ तब ही है यदि दुष्ट प्राणी हैं जो उन्हें चोट पहुँचाने का काम करते हैं जो मिशन में वचनबद्ध हैं। भजन 91, 124 और 125 सिखाते हैं कि परमेश्वर हमें सुरक्षित रखता है, परन्तु यह आक्रमण में सुरक्षा है, आक्रमणों से रक्षा नहीं है। इफिसियों 6:17 परमेश्वर के सुरक्षा के टोप की बात करता है; परन्तु हमें समझना चाहिए कि टोप एक मार के प्रभाव को कम करता है - वह मार की सम्भावना को दूर नहीं करता है।
अन्त में, हमें समझ होनी चाहिए कि छुटकारे की सेवा दुष्टात्माओं के विषय में हमारी जानकारी पर निर्भर नहीं है, परन्तु कि क्या मसीह हमें जानता है। यह कमजोर, भ्रमशील विश्वासियों पर निर्भर है जो जानते हैं कि उनके मसीह ने शैतान से युद्ध लड़ा है और जीता भी है; जो जानते हैं कि मसीह के साथ संयोग में, वे उस जय में सहभागी हो सकते हैं; और वे पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में उनके आस-पास के पीड़ित लोगों की सेवा करने के लिए हर समय तैयार हैं।

कौंसलिंग – कौंसलिंग की सेवा का एक संक्षिप्त पुनरीक्षण

कौंसलिंग में सफलता

यह कुछ घटकों पर निर्भर है, जिनमें से कई हमारी शक्ति से बाहर हैं, जैसे कि व्यक्ति का दिन कैसा गया है या लोगों के पहुँचने से पहले आपके बच्चों का व्यवहार कैसा था। फिर भी, एक कौंसलर के रूप में हमारी प्रभावकारिता को बढ़ाने के लिए जो कुछ भी हम कर सकते हैं करना अच्छा होगा। यदि हम जानते हैं कि हम इस क्षेत्र में पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित नहीं हैं तो कुछ संबद्ध पुस्तकें पढ़ना या अतिरिक्त कौंसलिंग कोर्स करना बुद्धिमानी होगा। कौंसलिंग से पहले परमेश्वर के साथ सही सम्बंध में हो जाना महत्त्वपूर्ण है, और कि आरम्भ करने से पहले हम परमेश्वर को परिस्थिति में बुलाएँ।

कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण घटक जो सफल कौंसलिंग को मुमकिन करते हैं, ये हैं:

- व्यक्ति के लिए प्रभु को सुनने की हमारी योग्यता और कि हम परमेश्वर को कौंसलिंग मुलाकात में कितनी अच्छी तरह ला सकते हैं।
- व्यक्ति सहायता पाने के लिए कितना इच्छुक है।
- खुलापन और सम्बंध का कितना दर्जा प्राप्त किया गया था।
- सुनने, निकालने और समस्या के असली कारण को समझने की हमारी योग्यता।
- कौंसलिंग किए जाने वाले व्यक्ति की उनकी समस्या समझने और बताने की योग्यता।
- आपके द्वारा लाए गए समाधान या उत्तर की प्रभावकारिता।
- आवश्यकता पड़ने पर, कौंसलिंग किए जानेवाले व्यक्ति को सही व्यक्ति के पास भेजने की आपकी योग्यता।

अवलोकन

पास्तरीय स्थिति में इन चीजों को मन में रखना सहायक होगा:

- ईश्वरीय सलाह और मानवीय राय में अन्तर। हमें ईश्वरीय प्रकटीकरण को अच्छी सलाह से उलझाना नहीं है। पौलुस के समान, हमें इसे स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि क्या हम अपनी सलाह दे रहे हैं या ईश्वरीय प्रकटीकरण पेश कर रहे हैं (1 कुरिन्थियों 7:10, 12, 25; 2 कुरिं. 8:10)। हमारी अपनी सोची-विचारी गई राय जो हमारी परिपक्वता और ज्ञान पर आधारित है देने की भी कीमत है, परन्तु इसे 'प्रभु के वचन' के रूप में पेश नहीं किया जाना चाहिए। परन्तु, याद रखना आवश्यक है कि सच्ची पास्तरीय मुलाकात में परमेश्वर का वचन होना चाहिए। इस कारण यह इतना आवश्यक है कि हम स्वयं परमेश्वर से वचन सुनने और बताने की स्थिति में हों।

- क्या दूसरा व्यक्ति सत्य के लिए खुला या बन्द है। पास्तरीय कौंसलिंग में असली प्रश्न यह है कि क्या व्यक्ति परमेश्वर के वचन की ओर प्रतिक्रिया दिखानेवाला है। एक बार, यीशु ने अपने चेलों को उन लोगों को अकेला छोड़ देने का निर्देश दिया था जो सत्य के लिए खुले नहीं थे (लूका 10:10-12)। हमें केवल उस में सम्मिलित होना सीखने की अवश्यकता है जिसमें परमेश्प्वर चाहता है हम सम्मिलित हों और आवश्यकताओं के अनुसार चलाए न चलें।

- मुलाकात में कब तक लगे रहें जानकारी होने की आवश्यकता। उपयोगिता और समय की बर्बादी में अक्सर एक पतली लकीर होती है। पास्तरीय संचारण प्रभावशाली होने के विषय में है। किसी चीज का आत्मा में आरम्भ होना और शरीर में चलने लगना सरल होता है, जिससे मुलाकात मात्र बातचीत बन जाती है।

- यह आवश्यक है कि हम झूठी निर्भरताओं को बनने का अवसर न दें या स्वत्वात्मिकता को बढ़ने न दें। ऐसी घटना में, पास्तरीय संचारण का सारा उद्देश्य नष्ट हो जाता है, क्योंकि स्वतन्त्र होने के बजाय, दूसरा व्यक्ति एक और गहरे और अधिक खतरनाक प्रकार के बन्धन में आ जाता है। इस प्रकार की समस्या तब बन जाती है जब हम लोगों को ईश्वरीय सलाह देने के बजाय तर्क पर आधारित अपनी अच्छी सलाह देते हैं। यदि सलाह सहायता करती है, तो व्यक्ति हमारे पास आता रहेगा, यदि यह काम नहीं करती, तो अधिक समस्या में फँस जाएंगे और सम्भव है वे हमें दोष दें। कौंसलिंग पाने वाले चाहेंगे हम ऐसा करें, परन्तु उनकी खातिर, हमें इसका सामना करना है, क्योंकि नहीं तो वे अपनी समस्याओं को आप सम्भालना नहीं सीखेंगे और हम से

अपनी समस्याओं का हल करवाते रहेंगे। यह एक कच्चा, कमजोर, भावात्मिक रूप से निर्भर मसीही बनाता है जो कभी भी एक प्रभावशाली, शक्तिशाली, फलदायक मसीही नहीं बन पाएगा, जो परमेश्वर चाहता है वह बनें।

- जो हमारी सलाह ठुकराते हैं उन्हें नहीं ठुकराने की आवश्यकता। यदि लोग उनकी सहायता के हमारे प्रयासों की ओर प्रतिक्रिया नहीं दिखाते हैं तो हमें निराश नहीं होना है। यदि हम उनकी स्थिति में परमेश्वर की सलाह देते हैं और वे ठुकराते हैं, तो असल में वे परमेश्वर को ठुकरा रहे हैं। हमें निश्चय करना है कि स्थिति में जो हम अच्छा कर सकते हैं करें और पास्तरीय मुलाकात की सफलता को बढ़ावा दें, परन्तु यदि व्यक्ति अपने मार्ग पर चलने का पैसला करता है तो उन्हें उनके अपने फैसलों के हाल पर छोड़ दिया जाना चाहिए। किसी को परेशान करते रहना या उस स्थिति में बार-बार आते रहना जहाँ आपकी आवश्यकता नहीं है, प्रतिकारक हो सकता है। यदि हम व्यक्ति के लिए खुले रहें तो उनकी सहायता के लिए बाद में कभी आने की सम्भावना बनी रहेगी। हमें उन लोगों को जो हमारी सलाह ठुकराते हैं प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के हाथ में सौंपना है और फिर उसे उनकी सलाह जारी रखने देना है। हमें बस इतना करना है कि हम परमेश्वर और व्यक्ति के लिए उपलब्ध रहें।

कौंसलिंग की प्रक्रिया के लिए उपयोगी संकेत:

1) एक-एक कदम बढ़ाओ

हमें चीजों को सही संदर्श में रखना है; हमें पास्तरीय संचारण के विभिन्न स्तरों में से आगे बढ़ते जाना है; और हमें जब भी हम कर सकते हैं, जब यह पयुक्त है, वचनों को उपयोग करना है।

2) - सलाह में में जल्दबाजी मत करो।
   - अवास्तविकता को प्रोत्साहन मत दो।
   - स्थिति को महत्त्वहीन मत करो।

3) प्रार्थना करो

कभी भी, चाहे यह अन्तरिम कदम ही क्यों न हो, प्रार्थना करने में असफल मत रहा। क्योंकि यह आश्वासन और मार्गदर्शन प्रदान करता है: यह खुलेपन को प्रोत्साहन देता है; और यह चंगाई लाता है।

4) एक डायरी का उपयोग करो

लोगों के साथ भेंट का समय तय करने के लिए एक डायरी का उपयोग करो ताकि आप दो लोगों को एक ही समय न दे दो या किसी से मिलना भूल जाओ। परन्तु, अपनी डायरी के नियंत्रण में मत रहो। क्योंकि जो ऐसे होते हैं, एक संतुष्ट समाधान तक पहुँचने से पहले छोड़ देते हैं, क्योंकि जो समय उन्होंने निर्धारित किया था समाप्त हो गया है। इस क्षेत्र में हमें पवित्र आत्मा की अगुवाई की ओर संवेदनशील होना है।

5) पर्याप्त समय

निश्चय करो कि आप हाथ में लिए पास्तरीय स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त समय देते हो। इसका पता अनुभव से और जहाँ मुमकिन हो, पहले से समस्या के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करके ही लगाया जा सकता है। कौंसलिंग सत्रों को बहुत लम्बे नहीं करना बुद्धिमानी होगा। 30 से 60 मिनट तक का समय हो सकता है।

6) स्थान का चुनाव

यह इसलिए होना चाहिए ताकि कौंसलिंग पानेवाला व्यक्ति शान्त और सुविधा अनुभव करे। ऐसा स्थान चुनना जो कौंसलिंग के लिए शान्त और ऐकान्तिक है आवश्यक है। लोग अपना हृदय खोलेंगे नहीं यदि उन्हें लगे कि कोई दूसरा सुन रहा है। यदि प्रतिजाति के साथ निपटा जा रहा है तो इस नियम को टालना पड़ेगा, परन्तु सम्बंधित व्यक्ति की सहमति से ही।

7) लिख लो

यह तब ही करो जहाँ कौंसलिंग किए जा रहे व्यक्ति को कुछ समस्या नहीं है। उन्हें पूछो कि क्या उनको आपके लिखने में कोआ आपत्ति तो नहीं और उन्हें समझाओ कि इससे आपको ध्यान लगाने में मुख्य बातें याद रखने में सहायता मिलेगी। लम्बे समय तक चलनेवाली कौंसलिंग में लिख लेना आवश्यक है ताकि आप खुद को याद दिला सको कि आप कहाँ तक पहुँचे हैं और पिछली भेंटो में क्या हुआ है। इसका अर्थ यह है कि पास्तरीय भेंट के कुरन्त बाद आपको कुछ बातें लिख लेनी होंगी। व्यस्त अगुवों को

जो सप्ताह में कई लोगों के साथ कौंसलिंग करते हैं, यह अपेक्षा नहीं करनी है कि उन्हें पिछले कौंसलिंग के सत्रों की हर बात याद रहेगी; जबकि जिस व्यक्ति की आप कौंसलिंग कर रहे हैं सम्भावतः याद रखेगा और अपेक्षा करेगा कि आप भी रखे होंगे।

8) कब दूसरे के पास भेजना है

यदि आप अनिश्चित हैं या आपको पता नहीं क्या करना है, तो सहायता माँगो! कुछ समस्याएं होंगी जिनसे आपका पाला पड़ेगा आपके अनुभव के क्षेत्र से बाहर की हो सकती हैं और इसलिए इन लोगों को उनके पास भेजना जिन्हें इन क्षेत्रों में सुविज्ञता प्राप्त है बुद्धिमानी होगा। असल में, दूसरे की सहायता लेना सफल कौंसलिंग का एक महत्त्वपूर्ण भाग है। गम्भीर भावात्मिक व्याकुलता, जो एक व्यक्ति को एक सन्तुलित सामान्य जीवन जीने से रोकती है, से निपटने का प्रयास अच्छा करने के बजाय अधिक समस्या खड़ी कर सकता है, और ऐसे लोगों को मसीही पेशावरों के पास भेजना अच्छा होगा। जैसे कि मसीही मनोवैज्ञनिक, मनश्चिकित्सिक, या बहुत अनुभवी पास्टर या कौंसलर। विशेषकर मानसिक रूप से बीमारों के लिए, मनश्चिकित्सा या कौंसलिंग का कोई दूसरा तरीका, जिसके लिए आप पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित नहीं हो, कभी भी प्रयोग मत करो।

9) उन्हें संबद्ध वचनों के साथ भेजो

जब आप कौंसलिंग के समय के अन्त में पहुँचते हो तो व्यक्ति को बाइबल के 'उत्तेजित' संबद्ध वचनों के साथ विदा करना सहायक होगा। इससे सेवा को बन्द करने और प्रमाणित करने में मदद मिलती है और यह कुछ ऐसा है जिसके पास वे बाद में जा सकते हैं। हमें परमेश्वर से व्यक्ति के लिए एक वचन या चित्र आदि पाने के लिए, जिसे हम व्यक्ति को दे सकें, खुले रहने की आवश्यकता है।

कौंसलिंग की सेवा

यीशु ने व्यक्तिगत लोगों की चंगाई. छुटकारा और आशीष के द्वारा सेवा की थी। हमें पहचानने की आवश्यकता है कि उसने कौंसलिंग या उन्हें सलाह देकर भी उनकी सेवा की थी। हालाँकि सुसमाचार दिखाते हैं कि यीशु की अधिकाँश शिक्षा सामान्यतः छोटे समूहों और बड़ी भीड़ को दी गई थी, परन्तु यह विशेष व्यक्तिगत लोगों के साथ उसकी कौंसलिंग की भेंटों के विषय में भी बताती है। सच में, वह यशायाह 9:6 का अदभुत युक्ति करनेवाला था।

हालाँकि कौंसलिंग आत्मा में सेवा का एक महत्त्वपूर्ण भाग है, यह दूसरे प्रकार की सेवाओं से दो महत्त्वपूर्ण पहलुओं में भिन्न है:

1. चंगाई, छुटकारा और आशीष लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने को लक्ष्य बनाती हैं; कौंसलिंग परमेश्वर की सलाह प्रस्तुत करती है, यह लोगों के अनुकरण के लिए, परमेश्वर का अनुशंसित मार्ग उनके सामने रखती है।
2. चंगाई और छुटकारा एक तात्कालिक परिवर्तन लाते हैं; कौंसलिंग परमेश्वर की इच्छा के साथ दीर्घकालिक सम्बंध स्थापित करती है।

कुछ लोग सोचते हैं कि कौंसलिंग तब होती है जब विश्वासी सलाह देते हैं। परन्तु सच्ची कौंसलिंग तब होती है जब एक मसीह का अनुयायी परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य बताता है, क्योंकि कौंसलिंग परमेश्वर, सेवक और सहायता किए जा रहे व्यक्ति के बीच बातचीत है। हालाँकि 'कौंसलिंग' अपने आप में सेवा का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, यह चलते रहनेवाला अनुरक्षण भी है जो छुटकारे और चंगाई के बाद होना चाहिए। यह बिरले ही पर्याप्त होता है कि हम किसी की चंगाई या छुटकारे के लिए प्रार्थना करें, और फिर उन्हें छोड़कर किसी दूसरे की सेवा के लिए बढ़ जाएँ। हमें परमेश्वर से पूछना चाहिए कि वह व्यक्ति से क्या कहना चाहता है, क्या व्यक्ति ईश्वरीय कौंसलिंग से लाभ पाएगा, और कि आत्मिक उन्नति के लिए उन्हें आगे क्या करना चाहिए।

+ कौंसलिंग और शिष्यता

आत्मा में सब सेवा शिष्यता पर निर्भर करती है, और इसलिए हमें मसीह से सीखना और हर चीज में उसके उदाहरण का अनुकरण करना है। साधारणतः, कौंसलिंग है: शिष्यता, यह व्यक्ति की मसीह को सीखने और उनके अपने विचारों के बजाय उसके उदाहरण का अनुकरण करने में सहायता करना है।

हम ने देखा है कि आत्मा में सेवा आत्मा की सुनने की हमारी योग्यता उसकी प्रेरणाओं को परखने और पहचानने पर निर्भर है। हालाँकि यह सब सेवाओं के लिए सत्य है, यह कौंसलिंग में विशेषकर महत्त्वपूर्ण है। यदि जब हम एक व्यक्ति की चंगाई करने का प्रयास कर रहे हैं और अपने विचारों और राय के अनुसार करते हैं तो हो सकता है व्यक्ति की सहायता और चंगाई न हो, और दीर्घकालिक नकारात्मक परिणामों की सम्भावना नहीं होगी। परन्तु यदि हम कौंसलिंग के समय अपने विचार दे देते हैं, तब हम

व्यक्ति के जीवन के साथ परमेश्वर की इच्छा के बजाय अपनी इच्छा का एक दीर्घकालिक सम्बंध स्थापित कर रहे हैं - और इसके गम्भीर परिणाम हो सकते हैं।

+ कौंसलिंग और पवित्र आत्मा

नबी पुराने नियम के कौंसलर थे - 2 इतिहास 25:5-16 और यिर्मयाह 38:14-28 इस सम्बंध को चित्रित करते हैं। हम कह सकते हैं, भविष्यद्वाणी 'परमेश्वर का वचन देना' है, और कौंसलिंग 'परमेश्वर की बुद्धि देना' है। कोई भी पुराने नियम का यहूदी उचित सलाह दे सकता था, परन्तु केवल अभिषिक्त नबी ही परमेश्वर की बुद्धि दे सकता था। जैसे हम जानते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन, भविष्यद्वाणी, कौसंलिंग, चंगाई - आत्मा में सब सेवाएँ - केवल कुछ विशेष लोगों का परमाधिकार नहीं रहा। अब कोई भी विश्वासी जिसने आत्मा का अभिषेक पाया है, परमेश्वर के वचन बोल सकता है, आत्मा में सेवा कर सकता है, कौंसल दे सकता है।

+ कौंसलिंग और सलाह

हमें परमेश्वर की कौंसल से अच्छी सलाह का भेद पता होना चाहिए। दो यूनानी शब्द इन विचारों के विषय में बताते हैं। 'Boule' का अच्छा अनुवाद 'कौंसल' है और इसका अर्थ है: 'परमेश्वर की इच्छा की घोषणा', जबकि 'gnome' का अर्थ है: सलाह और तर्क, अनुभव और ज्ञान पर आधारित राय का जिक्र करता है।
1 कुरिन्थियों 7:25 में, पौलुस gnome देता है, जबकि 1 कुरिन्थियों 14:37 में boule घोषित करता है। दोनों में अन्तर स्पष्ट है: बाद वाले में, पौलुस जानता था कि मसीह की शिक्षा में एक स्पष्ट आ5 है जो हर स्थिति के लिए संबद्ध है; परन्तु पहले वाले में, वह कुरिन्थुस में एक विशेष स्थिति के विषय में अपनी प्रेरिताई का निर्णय दे रहा था। हम कह सकते हैं कि 7:25-40 में पौलुस की सलाह उसके लिए gnome थी, फिर भी उसके प्रेरिताई के पद के कारण कुरिन्थुस में इसे boule के रूप में लेना था। इसका अर्थ यह नहीं है कि मानवीय अनुभव और सहज बुद्धि को भाव नहीं देना है, केवल इतना कि उनके साथ वचन - यीशु या बाइबल से - में से एक स्पष्ट आज्ञा होनी चाहिए। हमारा अनुभव कौंसलिंग 'कैसे' करनी है जानने में हमारी सहायता कर सकता है, परन्तु केवल पवित्र आत्मा ही हमें बता सकता है 'क्या' कहना है।

नए नियम में boule और इसके इब्रानी प्रतिरूप 'etsah' का उपयोग, कौंसलिंग के लिए नीचे दिए गए मूल निर्देशों का सुझाव देता है। यह कौंसलिंग के विचारों का एक संक्षिप्त परिचय ही देते हैं, परन्तु वे हमें सही दिशा दिखाते हैं और हमारी देखने में सहायता करते हैं कि किस प्रकार कौंसलिंग आत्मा में सेवा के दूसरे तत्त्वों से सम्बंधित हैं।

1. परमेश्वर से माँगो

2 शमूएल 16:20-17:23 अहीतोपेल की कहानी बताता है। 16:23 में उसका वर्णन, हर विश्वासी का लक्ष्य होना चाहिए। हम जो सलाह देते हैं परमेश्वर से प्रार्थना में माँगकर और उसके वचन का अध्ययन करके की आनी चाहिए।

2. परमेश्वर की इच्छा को अस्पष्ट मत करो

ऐसे अवसर होंगे जब हम मसीह की स्पष्ट आज्ञा के विषय में अनिश्चित होंगे। इन हालातों में, हमें स्पष्ट करना चाहिए कि हमारे शब्द हमारी राय है: हम अय्यूब 38:2 की डाँट नहीं सुनना चाहेंगे।
1 कुरिन्थियों 13:9 में पौलुस की स्वीकृति कि भविष्यद्वाणी का वरदान अधूरा है, सुझाव देता है कि जब हम कौंसलिंग करते हैं तो हमें 'पवित्र झिझक' उपयोग करनी चाहिए। उदाहरणार्थ, 'परमेश्वर कहता है तुम यह करो' से 'मुझे लगता है परमेश्वर यह सुझाव दे रहा है' अच्छा है। बेशक, जब वचन सीधे व्यक्ति की स्थिति में लगता है तो हमें जोर देना है कि परमेश्वर के वचन का पालन किया जाए। परन्तु जब हमारी कौंसल भविष्यद्वाणी से आई है, तब हमें लोगों को याद दिलाना चाहिए कि हमारे शब्दों को ध्यानपूर्वक जाँचा और सावधानी से स्वीकार किया जाए।

3. याद रखो कि परमेश्वर की कौंसल अस्वीकार की जा सकती है

लूका 7:29-30 के अनुसार यूहन्ना बपतिस्मादाता परमेश्वर का नियुक्त और अभिषिक्त कौंसलर था। जो कौंसल उसने परमेश्वर से पाई थी और अपने सुननेवालों को दी थी, वह यह थी कि वे मन फिराएँ और बपतिस्मा लें, परन्तु फरीसियों ने इसे अस्वीकार किया

था। सारी बाइबल भर में, नबी अस्वीकार किए गए थे - यीशु को भी झूठा नबी कहकर पकड़ा और क्रूस पर चढ़ाया गया था। जो विश्वासी इन अभिषिक्त पदचिन्हों पर चलते हैं ऐसी ही अस्वीकृति का सामना करेंगे।

4. जब अस्वीकार किए जाओ, तो उदास मत हो जाओ

यदि हमारी कौंसल की उपेक्षा की जाती है, तो हमें 2 शमूएल 17:1-23 की अहीतोपेल की गलती को नहीं दोहराना है - जब उसकी सलाह के बदले एरेकी हूशै की सलाह मानी गई थी। अस्वीकृति उदासी का बहाना नहीं है, बल्कि यह जैसा परमेश्वर अनुभव करता है वैसा अनुभव करने और मसीह की दुखों में सहभागी होने का अवसर है। हमें केवल तब सेवा करनी है जब परमेश्वर प्रेरित करता है, न कि जब वे सुनना चाहते हैं जो हम कहते हैं।

5. कोई अतिरिक्त विचार मत जोड़ो

गिनती 22:2-24:25 में बालाक इस्राएलियों को शाप देने के लिए बिलाम पर जोर डालता है। परन्तु बिलाम दृढ़ खड़ा रहता है और, 22:8, 18, 38; 23:12 और 24:13 में स्पष्ट कर देता है कि वह अपनी सलाह जो परमेश्वर कहेगा उसी तक सीमित रख सकता है। परमेश्वर के प्रकटीकरण में जोड़ने, या बदलने का अक्सर प्रलोभन होता है। इनका सामना किया जाना चाहिए। हमें वही बोलना चाहिए जो परमेश्वर कहता है, और अपना कोई भी विचार नहीं जोड़ना चाहिए।

6. पीछे मत हटो

प्रेरितों 20:27 में, पौलुस कहता है कि वह परमेश्वर के सारे अभिप्राय को पूरी रीति से बताने से न झिझका था। 'Hupostello' एक यूनानी नाविक शब्द है जिसका अर्थ है: 'पाल उतारना' और सही अनुवाद है 'ढीले पड़ना' या 'पीछे हटना'।

पौलुस सदा 'डरते और काँपते' हुए बोलता था, फिर भी वह परमेश्वर के boule को बताने से पीछे नहीं हटता था। सेवा के समय, हम कभी-कभार सोचेंगे, 'मैं यह नहीं कह सकता हूँ।' हमें झिझकना नहीं है: यदि यह परमेश्वर का वचन है तो इसे - एक अभिषिक्त नबी के आत्मिक अधिकार और घरेलू नौकर के स्वाभाविक दीनता के साथ - कहना ही है।

7. इसे स्पष्ट करो

इब्रानियों 6:17 दिखाता है कि परमेश्वर ने शपथ खाई क्योंकि वह चाहता था कि उसकी कौंसल निश्चित और स्पष्ट दोनों हो। यीशु ने अपनी शिक्षा को सरल और स्मरणीय बनाने के लिए रोजमर्रा के दृष्टान्तों को उपयोग किया। और हमें परमेश्वर से माँगना चाहिए कि वह हमें हमारी कौंसलिंग को वैसे की रचनात्मक बनाने में सहायता करे। हालाँकि हमें आत्मा की सलाह दोहराने को कहा गया है, हमें अपने व्यक्तित्व, शब्द, चित्र, उदाहरण और सादृश्य उपयोग में लाने हैं। यदि व्यक्ति की परमेश्वर की कौंसल की समझ हमारी समझ से भिन्न है तो हमारी सेवा प्रभावहीन होगी। कौंसलिंग के समय, हम जो भी कहते हैं उसमें हमें स्पष्ट और सरल होना है ताकि परमेश्वर की बुद्धि के विषय में कोई उलझन न हो।

8. परिणाम भिन्न होंगे

परमेश्वर की कौंसिल के विभिन्न अभिप्रेत परिणाम होते हैं। उदाहरणार्थ, हम इसे प्रेरितों 2:23; यशायाह 23:8-9 और भजन 32:8-11 में देखते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम परमेश्वर की बुद्धि का केवल एक पहलू ही दे नहीं सकते हैं। उदाहरणार्थ, कौंसलिंग, गलती करने पर उन्हें डाँटना नहीं है, यह उनके लिए परमेश्वर के जीवन का मार्ग दिखाना है।

9. निश्चित परिणाम होने चाहिए

यशायाह 14:24, 27; 46:10-11 और इफिसियों 1:11 स्पष्ट करते हैं कि परमेश्वर के वचनों के निश्चित परिणाम होने चाहिए। परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य सर्व-सामर्थी हैं, और समय पर सबकुछ उसके boule के सदृश हो जाएगा। परन्तु, जब हम आत्मा में कौंसलिंग के द्वारा सेवा करते हैं, तो हम केवल भविष्य के लिए बीज बो रहे होते हैं। इसलिए, तात्कालिक परिणामों द्वारा निर्णय करना गलत होगा। हमें भूलना नहीं है कि आत्मा हमारे शब्द लोगों को बाद में कभी याद दिलाएगा।

ईश्वरीय कौंसलर

जैसे आत्मा में सेवा के हर पहलू में होता है, हम केवल पिता, पुत्र और आत्मा के काम में सहभागी होकर कौंसलिंग कर सकते हैं। कौंसलिंग कुछ ऐसा काम नहीं है जिसे हमें परमेश्वर से स्वतन्त्र - मार्गदर्शन के लिए केवल एक तात्कालिक प्रार्थना के साथ - करना है।

आत्मा में सब सेवाओं के समान, कौंसलिंग परमेश्वर द्वारा प्रारंभ की, परमेश्वर द्वारा बताई सेवा है। इसका अर्थ यह है कि हमें उसके काम के विषय में सीखने के लिए बाइबल में खोजना और परमेश्वर के अपने कौंसलिंग कार्यों की जाँच करनी चाहिए।

पिता

यशायाह 28:29 और अय्यूब 12:13 पिता को एक बुद्धिमान और अदभुत कौंसलर के रूप में प्रस्तुत करते हैं; उत्पत्ति 26:24; गिनती 22:20; 1 शमूएल 3:15, 16; 1 राजा 19; 2 इतिहास 1:7; 7:12; दानिय्येल 7; प्रेरितों 16:9 और 18:9 विशेष पुरुषों और स्त्रियों के लिए उसकी सेवा का वर्णन करते हैं।

उत्पत्ति 16:13; 1 शमूएल 2:3 और यिर्मयाह 32:18-20 दिखाते हैं कि परमेश्वर सबकुछ देखता और जानता है - और जब हम आत्मा में सेवा करते हैं तो वह हमें अंधेरे में नहीं रखता है। वह व्यक्ति की असली समस्या को देखता है और जानता है कि उनकी कठिनाई का कारण क्या है। उससे कुछ भी छिपा नहीं है और जो उसने गिनती 24:16 में बिलाम के लिए किया था हमारे लिए भी करेगा। वह अक्सर अपने ज्ञान का एक छोटा भाग हमें बताएगा ताकि हमें पता चले कि किसी मामले के विषय में वह क्या जानता है।

यदि हम ने आत्मा का अभिषेक पाया है तो कौंसलिंग के समय जो विचार हमारे मन में आते हैं हमें उन पर भरोसा करना है। वे मूर्खतापूर्ण लग सकते हैं, परन्तु वे परमेश्वर की बुद्धि हो सकते हैं। आत्मा में सब सेवाओं के समान, कौंसलिंग भी वचन और परमेश्वर की बुद्धि को पहचानने की हमारी योग्यता पर निर्भर है। भजन 119:24 दिखाता है कि पिता अपने कौंसलिंग सेवा में वचन उपयोग करता है, और उसका लिखित वचन कौंसलिंग में बहुत ही आवश्यक है।

पुत्र

यशायाह 9:6 एक जन्म लेनेवाले बालक के विषय में बताता है: वह बालक यीशु था, और वे सब नाम उसके हैं: वह अदभुत युक्ति करनेवाला है।

बाइबल यीशु की कौंसलिंग की सेवा का अच्छा चित्र प्रस्तुत करती है। उदाहरणार्थ, यीशु:

- क्लियोपास और उसके साथी को पवित्रशास्त्र बड़े धीरज के साथ समझाता है - लूका 24:13-25
- एक असंतुष्ट मार्था को नम्रता के साथ डाँटता है - लूका 10:38-42
- एक व्यभिचारी स्त्री के साथ बात करते समय विवेक, तरस, शिष्टाचार, क्षमा और नैतिक अखंडता दिखाता है - यूहन्ना 8:1-11
- अमीर नौजवान शासक के साथ निपटने में दृढ़ और अटल है - मरकुस 10:17-22
- एक भ्रष्ट अधिकारी के लिए अनावरण, स्वीकृति, आनन्द और उद्धार लाता है - लूका 19:1-10
- एक बीमार स्त्री की डरी हुई फिजूल बातें धीरज के साथ सुनता है, और फिर उसके जीवन में स्वास्थ्य और शान्ति लाता है - लूका 8:43-48

आत्मा

यशायाह 11:2 पवित्र आत्मा का एक महत्त्वपूर्ण वर्णन है जो दिखाता है कि कौंसल आत्मा के स्वभाव में मूल बात है। यूहन्ना 1416 में यीशु आत्मा का allos parakletos के रूप में वर्णन करता है। यह यूनानी शब्द दिखाते हैं कि :

- आत्मा दूसरा कौंसलर है जो यीशु के जैसा है
- आत्मा हमारे बगल में होता है, हमें बुलाने और हमारे लिए बुलाने के लिए

वह एक कौंसलर है जो निकट और घनिष्ठ दोनों है, जिसकी कौंसलिंग मनुष्य के कान में एक कोमल फुसफुसाहट के समान है। इसका अर्थ यह है कि हमें आत्मा के काम में सहभागी होना है, और जिनकी सहायता हम कर रहे हैं उनके बगल में आना है, और सब समय आत्मा की प्रेरणाओं पर निर्भर होना है।

आत्मा इतना अनात्मशंसी है कि उसने अपने कौंसलिंग के बहुत कम उदाहरण लिखे हैं। प्रेरितों 10 सम्भवतः सबसे स्पष्ट उदाहरण है:

- पहले, आत्मा ने कुरनेलियुस के पास एक स्वर्गदूत के पास भेजकर मार्ग तैयार किया, और उसे निर्देश दिया था कि वह एक मनुष्य शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला भेजे। (यह दिखाता है कि हमारी सेवा आत्मा के हर व्यक्ति के लिए भव्य कार्य का एक छोटा टुकड़ा है।)
- तब आत्मा ने अपना समय सावधानी से चुना। उसने प्रतीक्षा की जब पतरस प्रार्थना करना चाहता था परन्तु इतना भूखा था कि ठीक से प्रार्थना नहीं कर पा रहा था। उसने पतरस के मन में एक चित्र डाला और उसे निर्देश दिया कि वह उन पशुओं को मारे और खाए जिन्हें छूने की भी यहूदियों को अनुमति नहीं थी।
- अन्त में, आत्मा ने इस आदेश को तीन बार दोहराया, वह जानता था कि यह तीन-गुणा दोहराव पतरस के लिए कितना सार्थक होगा (यूहन्ना 18:27 और यूहन्ना 21:15-19)।
- जब कुरनेलियुस के लोग वहाँ पहुँचे तो पतरस इतना उलझन में था कि उनके बुलावे को सुन नहीं पा रहा था, तब आत्मा ने पतरस को उनके विषय में बताया और उसे उनके साथ जाने के लिए आज्ञा दी। इस समय पतरस ने आज्ञा मानी, और धीरे-धीरे उस चित्र का महत्त्व समझ गया जिसे आत्मा ने उसके मन में डाला था।

इस कौंसलिंग सेवा ने कलीसिया की गति बदल दी। आत्मा ने पतरस के साथ विवाद नहीं किया था; उसने अपनी बात आसपास के हालातों की सहायता से नम्रता से समझाई थी, जब तक पतरस आत्मा के शब्दों और चित्रों का ईश्वरीय प्रारंभ और अर्थ समझ नहीं गया था।

कौसंलिंग का आधार

नया नियम सात बात बताता है कि पुराने नियम की व्यवस्था दो सरल नियमों में बदली जा सकती है: 'प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय, मन और शक्ति से प्रेम कर' और 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर'।

1 यूहन्ना 4:8 सिखाता है कि परमेश्वर प्रेम है; 1 यूहन्ना 3:9-10 प्रतिज्ञा करता है कि उसके सन्तान उसके प्रेम को दोहराएँगे; और यूहन्ना 13:34 हमें आज्ञा देता है कि हम दूसरे चेलों से उसी प्रकार प्रेम करें जैसा यीशु ने हम से किया है। यह प्रेम आत्मा में सब कौंसलिंग - और सब सेवा - का आधार है। हम कौंसल करते हैं क्योंकि हम प्रेम करते हैं, क्योंकि हम परमेश्वर के प्रेम के द्वारा भरे और बदले गए हैं। नया नियम इस प्रेम के कई तात्पर्य दिखाता है जो कौंसलिंग की सेवा के लिए आवश्यक हैं।

= प्रेम आज्ञापालन करता है

यूहन्ना 14 प्रेम, आज्ञापालन और कौंसलिंग आत्मा को एक साथ रचता है। हमारे सारी कौंसलिंग का निश्चित आधार मसीह की ओर हमारा प्रेमभरा आज्ञापालन है; हमें वही करना चाहिए जो वह कहता है, वहीं जाना चाहिए जहाँ वह भेजता है, और वही बोलना है जो वह कहता है। हम ने देखा है कि सेवा के लिए बाइबल की पहल सदा या तो मनुष्य की विनती या ईश्वरीय निर्देश है। यह कौंसलिंग के लिए भी सत्य है। नबी भी परमेश्वर की बुद्धि तब ही देते थे जब कोई व्यक्ति कौंसल का अनुरोध करता था, उदाहरणार्थ, 1 राजा 22:5-28 और 2 राजा 3:11-20; और जब परमेश्वर ने उन्हें उसकी कौंसल देने के लिए भेजा था, उदाहरणार्थ, 2 शमूएल 12:1-15 और 1 राजा 20:13-14। कभी-कभार ही, जैसे 1 राजा 14:1-18 में था, उनको दोनों खोजा और भेजा गया था। यीशु ने इस नमूने को दोहराया। यूहन्ना 3:1-21 और मरकुस 10:17-22 में, जब लोग सलाह के लिए आए तो उसने उनको कौंसल किया; और लूका 7:36-49 और 24:13-32 में, वह लोगों के पास परमेश्वर की कौंसल देने के लिए गया था।

= प्रेम देता है

यूहन्ना 3:16 और 3:35 दिखाता है कि परमेश्वर प्रेम के साथ देनेवाला है और इफिसियों 5:2 और 1 यूहन्ना 4:10-11 उसके प्रेम और देने को जोड़ता है। परमेश्वर के प्रेम का अर्थ केवल दयालु शब्द ही नहीं, उदार कार्य भी है। इसका अर्थ यह है कि जब हम सेवा करते हैं तो हमें अनेक उपयोगी तरीकों से देने के लिए बुलाया गया है। हमें दूसरों की सेवा में अपने आप को देने, और बलिदान के साथ खर्च करने और खर्च हो जाने के लिए बुलाया गया है। हम यह मत्ती 5:42; यूहन्ना 15:13; रोमियों 5:8; 2 कुरिन्थियों 8:7-9, 24; 12:15 और 1 यूहन्ना 3:16 में देखते हैं।

= प्रेम प्रार्थना करता है

उन लोगों के लिए जिनकी हम सेवा करते हैं, एक सबसे महत्त्वपूर्ण काम जो हम कर सकते हैं वह है उनके लिए प्रार्थना करना। रोमियों 8:34-35 और इब्रानियों 7:25 दिखाता है कि अदभुत युक्ति करनेवाला अपने मित्रों के लिए विनती करता है; और, रोमियों 15:30 में, पौलुस जोर देता है कि उसके पाठक यदि वे उससे प्रेम करते हैं तो उसके लिए प्रार्थना करेंगे।

= प्रेम सच बोलता है

मरकुस 10:21 बताता है कि यीशु ने एक मनुष्य को देखा और उससे प्रेम किया, और इस प्रेम का अर्थ था कि यीशु ने एक बहुत कठिन सच्चाई बोली। हम परमेश्वर का सत्य सच्चाई से तब ही बोल सकते हैं जब मसीह के समान प्रेम करते हैं, क्योंकि जब हमारी कौंसल उसके प्रेम के द्वारा प्रारंभ और संतृप्त नहीं होती है तब यह परमेश्वर के प्रकार का सत्य नहीं रहता। जैसा मरकुस 10:22-23 में हम देखते हैं, परमेश्वर के प्रेमभरे, सत्य शब्दों के स्वीकार होने की कोई गारंटी नहीं होती।

यह प्रेम एक विश्वासी के लिए कैसे मुमकिन हो सकता है? 1 कुरिन्थियों 13 की अपेक्षाएँ निराशाजनक रूप से अलभ्य हैं। जब हम सेवा करते हैं तब हम पाते हैं कि लोग, परिस्थितियाँ और समस्याएँ हमारी प्रेम की कमी को बारम्बार प्रकट करते हैं। जब कभी हम यह प्रश्न 'कैसे?' पूछते हैं, तब बाइबल का उत्तर सदा वही होता है: 'पवित्र आत्मा: वह तुम पर उतरेगा।' यूहन्ना 17:26 में, यीशु प्रार्थना करता है कि पिता का प्रेम, जिसने पुत्र से प्रेम किया था, हमें भरेगा। उसने हमारे प्रेम के बढ़ने के लिए प्रार्थना नहीं की, परन्तु यह कि हमारा प्रेम पिता के प्रेम से बदल दिया जाए। 2 तीमुथियुस 1:7 सिखाता है कि परमेश्वर का वरदान प्रेम का आत्मा है, और रोमियों 5:5 आत्मा के इस प्रेम से भरने के काम की ओर संकेत करता है। जब हमारी सेवा वास्तव में 'आत्मा में' होती है तब हम पाते हैं कि हम पिता के प्रेम द्वारा प्रेरित और समर्थ होते हैं।

कौंसलिंग का मूल उपकरण

बाइबल कौंसलर की पाठ्य पुस्तक है। यदि आत्मा में कौंसलिंग लोगों को उनके जीवन परमेश्वर के साथ मेल में लाने के लिए है, तो कौंसलर को पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह जानना चाहिए। बहुत सारी पुस्तकें बाइबल के वचनों को विभिन्न मानवीय समस्याओं के लिए संविभाजित करती हैं। वे सहायक हैं, परन्तु बाइबल के साथ एक घनिष्ठ व्यक्तिगत पहचान के लिए वे सब दूसरी श्रेणी की चीज है।

पवित्रशास्त्र हर समस्या, परिस्थिति और आवश्यकता के लिए संबद्ध हैं। उदाहरणार्थ:

- हर भावना और हर परिस्थिति के लिए एक भजन है, और भजनसंहिता की पुस्तक सदियों से मसीही आराधना की मुख्य प्रेरणा रही है। परन्तु आज यह कुछ कलीसियाओं में लुप्त हो गई है।
- इफिसियों की पुस्तक को एकता का सुसमाचार कहा जा सकता है। यह दुखी सम्बंधों से निकलने का मार्ग है और इसमें संघर्ष के समयों में आत्मिक उत्तरजीविता का नुसखा है।
- नीतिवचन सार्वजनिक आराधना या व्यक्ति भक्ति में बिरले ही पढ़ी जाती है, फिर भी इसमें कौंसलिंग की निश्चित सामग्री है।
- मत्ती 5-7 का पहाड़ी उपदेश, उस तरीके का वर्णन करता है जिसके अनुसार यीशु चाहता है उसके चेले जीवन जीएँ। यह परमेश्वर की उपयोगी सलाह के भरा हुआ है।
- रोमियों 8, अनेक लोगों के लिए बाइबल का चरम है। इसमें आश्वासन, निर्देश, सान्त्वना, प्रोत्साहन और आशा है।

हमें बाइबल नियमित, बारम्बार, सावधानी से और सम्पूर्ण रूप से पढ़नी चाहिए। हमें अपने आपको सुसमाचारों से संतृप्त कर लेना चाहिए ताकि यीशु को अच्छी तरह जान सकें; और हमें लैव्यव्यवस्था और हबक्कूक: विलापगीत और सपन्याह: 2 इतिहास और नहूम जैसी भुलाई गई पुस्तकों को अनदेखा नहीं करना है।

कौन जानता है? कि किसी दिन पवित्र आत्मा हमें इन पुस्तकों में से किसी व्यक्ति को कौंसल करने के लिए एक वचन दे दे। और सोचो तो, कि जब हम हबक्कूक से स्वर्ग में मुलाकात करेंगे और स्वीकार करना पड़ेगा कि हमें उसके नाम की वर्तनी नहीं आती है और कि उसकी पुस्तक कभी ही नहीं पढ़ी, तो कितनी लज्जा महसूस करने पड़ेगी।

जब हम सेवा में वचन उपयोग करते हैं तो हमें ध्यान देना है कि हम सदा अपने प्रिय परिच्छेद ही उपयोग नहीं करते रहें। यीशु ने यूहन्ना 3:16 तब ही उपयोग किया जब वह निकुदेमुस को कौंसल कर रहा था, उसने इसे हर व्यक्ति के साथ उपयोग नहीं किया।

= आत्मा के वरदान और गुण

सब सेवाओं के समान, आत्मा में कौंसलिंग आत्मा के वरदानों और गुणों के ईर्द-गिर्द कार्य करती है। ये वरदान, 1 कुरिं. 12:1-11, और गुण, यशायाह 11:1-5, कुछ करने की योग्यताएँ नहीं है, परन्तु वे हमारे द्वारा प्रभु यीशु के कार्य हैं। वे विश्वासी की क्रियाएं नहीं, बल्कि आत्मा की शक्ति और व्यक्तित्व हैं।

1 कुरिं. 12:7 में, यूनानी क्रिया didomi, 'देना' ऐसे रूप में दिखता है जो संकेत देता है कि:

- परमेश्वर का विश्वासी को वरदान देना, एक ही बार का कार्य नहीं, बल्कि निरन्तर की क्रिया है।

- हर व्यक्ति एक बाहरी स्रोत, पवित्र आत्मा से वरदान प्राप्त करता है।

इसका अर्थ है कि जब एक वरदान प्रकट होता है, तो विश्वासी उसे अपने व्यक्तिगत साधनों से नहीं निकालते हैं, वे केवल जो उन्हें आत्मा से मिला है उसे दे देते हैं। जैसे हम आत्मा में और के साथ रहते हैं, तो वह हमें हर सेवा के अवसर के लिए जो कुछ चाहिए देता है। यशायाह 11:3-4 दिखाता है कि 11:2 के आत्मा के गुणों का कौंसलिंग में एक विशेष उपयोग है। ये गुण वरदान नहीं हैं जो नियमित दिए जाते हैं, परन्तु वे आत्मा के अस्तित्व का सार हैं जो उन में से स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होते हैं जिनमें वह रहता है। इसका अर्थ है कि जैसे हम उसमें और उसके साथ रहते हैं तो उसके गुण निरन्तर हम में से प्रवाहित होते रहते हैं। जब कभी हम आत्मा में कौंसल करते हैं, तो उसकी बुद्धि और समझ, उसकी व्यक्तिगत युक्ति और अन्तर्दृष्टि उन लोगों तक पहुँचती रहती है जिनकी हम सेवा करते हैं।

कौंसलिंग का उद्देश्य

कभी-कभी प्रभावशाली कौंसलिंग का अर्थ किसी को उनकी समस्याओं को उँडेलते हुए सुनना है। कई बार, हमें एक व्यक्ति से थोड़े समय के लिए ही बात करनी पड़ेगी - उसके बाद, परमेश्वर और कुछ करने को नहीं कहेगा। परन्तु, साधारणतः, परमेश्वर हमें एक लम्बे समय तक लोगों को कौंसल करने के लिए बुलाता है। ऐसे मामलों में, जब तक व्यक्ति के लिए परमेश्वर का लक्ष्य समझा और मन में रखा न गया हो तो सेवा एक लक्ष्यहीन गपशप बन कर रह जाएगी।
<u>मसीही कौंसलिंग का लक्ष्य परमेश्वर की इच्छा के साथ एक दीर्घकालिक सम्बंध बनाना है।</u> जब एक व्यक्ति से मिलने की तैयार हो रही होती है तब यह सोचना आसान होता है, 'मैं इस समस्या को कैसे हल कर पाऊँगा?' ऐसा सोच-विचार लापरवाह उत्तर लाता है। यह पूछना अक्सर अच्छा होगा, 'परमेश्वर यह परिस्थिति इस व्यक्ति को अधिक प्रभावशाली सेवा के लिए तैयार करने के लिए कैसे उपयोग करना चाहता है?'

दीर्घकालिक कौंसलिंग सेवा का सबसे उत्तम उदाहरण सम्भवतः यीशु का पतरस को सेवा के लिए तैयार करना था।

<u>यीशु का पतरस को कौंसलिंग करना</u>

इस अभिषिक्त सेवा की कहानी यूहन्ना 1:40-42; मरकुस 1:16-20; लूका 5:1-11; मरकुस 3:13-19; मत्ती 14:22-23; मत्ती 16:13-23; मरकुस 9:2-13; मत्ती 18:21-22; मत्ती 19:27-30; यूहन्ना 13:2-10; मत्ती 26:30-35; यूहन्ना 18:10-11; मरकुस 16:7; लूका 24:34; 1 कुरिन्थियों 15:1-5 यूहन्ना 21:1-23 में लिखी गई है।
तीन वर्ष की धैर्यवान कौंसलिंग के दौरान, पतरस को एक अविवेकी, अविश्वसनीय शमौन से एक विश्वसनीय पतरस में परिवर्तित कर दिया था, जिसने यहूदा के स्थानापन्न में पहल की, पिन्तेकुस्त के दिन श्रेष्ठ था, और याकूब और पौलुस के उभाड़ तक कलीसिया का अस्थाई अगुवा था। ऐसा जान पड़ता है कि जब यीशु ने अप्रशिक्षित और कौंसल नहीं किए हुए पतरस को मित्र बनाया तो उसके मन में एक स्पष्ट लक्ष्य था। शमौन को पतरस बनना था; उसका गुण एक चट्टान के समान संकल्प और विश्वसनीयता का होना था; उसे मनुष्यों को पकड़नेवाला मछुवा बनना था। यीशु आत्मा द्वारा दिए इस ज्ञान को पहने ही पास नहीं रखता है। उसने पतरस को आरम्भ में बता दिया था जो परमेश्वर उनकी सहभागिता के द्वारा प्राप्त करना चाहता था। यीशु ने निश्चित किया कि पतरस कौंसलिंग के लक्ष्य को जानता है।
हमें पहचानने की आवश्यकता है कि यीशु ने पतरस को तात्कालिक सेवा द्वारा बदलने का प्रयास नहीं किया। उसके उसके ऊपर हाथ नहीं रखे। उसने उसमें अविश्वसनीयता और अविवेक की आत्मा निकालने का प्रयास नहीं किया। उसने उसे भविष्यद्वाणी द्वारा 'चट्टान जैसी शक्ति से भर जा' कहकर आशीष देने का भी प्रयत्न नहीं किया। बदले में, यीशु ने पतरस को धीरे-धीरे धैर्यवान, अभिषिक्त कौंसलिंग द्वारा शुद्ध किया।
जब पहले पतरस यीशु के पीछे चलने लगा तो वह उसके साथ उसकी पृष्ठभूमि, उसकी बुरी आदतें, उसकी गलतियाँ, पूर्वधारणाएँ, गलत विचार, परिवारिक समस्याएँ और झूठा आत्म-विश्वास लाया था। हमारा सेवा का पहला लक्ष्य लोगों को मरना सिखाना होना चाहिए - संसार, शरीर और शैतान के लिए मरना। यीशु ने अपने मसीह होने की घोषणा नहीं की; उसने पतरस को उसका निष्कर्ष निकालने दिया। जब पतरस ने सही उत्तर दिया तब यीशु ने यह कहकर कि उसने आप पता नहीं लगाया है, उसके घमण्ड को छेदा। इसके तुरन्त बाद, यीशु ने पतरस को उसके साथ प्रतिवाद करने के लिए डाँटा। पतरस दुष्टात्माग्रस्त नहीं था, उसने मात्र शैतान की फुसफुसाहट को सुना था। यदि कौंसलिंग का लक्ष्य प्राप्त करना था, और पतरस को मनुष्यों का एक प्रभावशाली मछुवा बनना था,

तो उसे पिता की आवाज और शत्रु की आवाज में अन्तर सीखना था। यीशु उसे अन्तर समझने और कीमती जानने में कौंसलिंग कर रहा था।

यदि लक्ष्य प्राप्त करना है तो मध्यस्थता अत्यावश्यक है। लूका 22:32 प्रकट करता है कि यीशु ने पहले ही प्रार्थना की और सुना और भविष्यद्वाणी का संदेश लाया कि - पतरस गिरेगा, सुधरेगा और दूसरों को मजबूत करेगा। यीशु ने पतरस की एक गर्वीले मूर्ख के रूप में जिसे बेहतर पता होना चाहिए था, निन्दा नहीं की, बदले में उसने पतरस को अपने आपको पहचानने और समझने का अवसर दिया।

कौंसलिंग में हमें गलतियों की आलोचना नहीं करनी है, और न ही व्यक्ति के ईर्द-गिर्द बचाव-कोया बनाना है। बदले में, हमें उनका यीशु की ओर ध्यान लाना है और उसकी आवाज सुनने और अपना नहीं उसका मुख खोजने में उनकी सहायता करनी है।

उसके इन्कार के बाद, पतरस निराश हो गया। इसलिए दूसरे चेलों से मिलने से पहले, यीशु उससे अकेले में मिला। क्षमा और आनन्द की कैसी बातें हुई होंगी! जब उस व्यक्ति को जिसकी हम सहायता कर रहे हैं लगता है, कि उसने हमें धोखा दिया या निराश किया है, तब कौंसलरों के रूप में हमें तुरन्त सम्पर्क स्थापित करना और क्षमा देनी चाहिए। इसके बावजूद, पतरस अपने पुराने अड्डों और आदतों में लौट गया। तो परमेश्वर ने मछलियाँ पकड़ने में असफलता और पहले के दिनों के चमत्कार, जब पहले पतरस को यीशु के पीछे चलने के लिए बुलाया गया था, के दोहराव का प्रबंध किया। एक बार फिर, पतरस को कौंसल किया जा रहा था कि यीशु के सम्पूर्ण नियंत्रण के साथ ही सफलता प्राप्त हो सकती है।

अन्तिम सेवा का सत्र नाश्ते के समय हुआ। यीशु ने पतरस से तीन बात प्रश्न किया, जिससे मामले में से किसी भी प्रकार का संदेह दूर हो जाए, और इस प्रकार पतरस को उसके तीन इन्कारों को याद दिलाया और, जैसे कि, हर एक को मौत के घाट उतार दिया। यीशु संसार छोड़ने वाला था और उसे अपनी भेड़ों को योग्य हाथों में सौंपना था। उसने पहले ही पतरस को मनुष्यों का मछुवा होने के लिए बुलाया था और अब पतरस को एक और काम दिया गया था। लक्ष्य सामने ही था, इसलिए बुलावा स्पष्ट किया जा रहा था।

कौंसलिंग का लक्ष्य केवल समस्या हल करना ही नहीं है, परन्तु व्यक्ति को मसीह में परिपक्व प्रस्तुत करना है। इसका अर्थ व्यक्ति की देखभाल के लिए, बहुत वचनबद्धता हो सकती है। यीशु अक्सर पतरस के साथ बातें करता था, और यह दीर्घकालिक वचनबद्धता का एक उदाहरण है जो कौंसलिंग की सेवा में हो सकता है।

इस समय के अन्त में भी, पतरस को सुधार की आवश्यकता थी। जब उसने यूहन्ना के विषय में पूछा तब यीशु को उसे बताना पड़ा कि यह उसका काम नहीं है। पतरस सीखने में धीमा था; उसे लगे रहना था, और मसीह द्वारा कौंसलिंग किए जाने पर, वह अन्त तक लगा रहा। पतरस पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों का प्रवक्ता बना, और एक लंगड़े व्यक्ति को चंगा करने के कारण कैद भी किया गया। उसने और भी चंगाइयाँ कीं और दोबारा कैद किया गया। वह न्यायियों के सामने साहस के साथ बोला, सामरियों के लिए पवित्र आत्मा लाया, और शमौन जादूगर को चकरा दिया। पतरस ने एनियास को चंगा किया, तबीता को जीवित किया, और अन्यजातियों में उद्धार का सुसमाचार सुनाया। उसे तीसरी बार कैद किया गया; उसने पौलुस का विरोध किया, फिर उसके पत्रों का समर्थन किया। उसने अपने दो पत्र लिखे, और अन्त में, परम्परा के अनुसार, एक शहीद की मौत मरा - उलटा क्रूस पर चढ़ाया गया क्योंकि वह मानता था कि वह अपने प्रभु के समान मौत का हकदार नहीं था। उन तीन वर्षों की धैर्यवान कौंसलिंग की सेवा के दौरान, यीशु ने पतरस की उपयोगी सेवा का यह दर्शन सदा अपने सामने रखा था।

चाहे कोई भी समस्या क्यों न हो, व्यक्ति में चाहे कोई भी अभाव और कमियाँ क्यों न हों, हमें कौंसलिंग में परमेश्वर के लक्ष्य का पता लगाना है। जब हम सेवा करते हैं, तब हमें व्यक्ति की उपयोगी सेवा के दर्शन के बारे में पूछना है ताकि उसके लिए प्रार्थना कर सकें और उसकी पूर्ति के लिए कार्य कर सकें। धैर्यवान कौंसल के द्वारा ही पतरसों को स्वीकृति, असफलता और आत्म-दोष के दुख से छुड़ाया जा सकता है; नम्रता के साथ पुनःस्थापित किया जा सकता है, और फिर परमेश्वर के राज्य के लिए प्रभावशाली और उपयोगी सेवा के लिए तैयार किया जा सकता है।

परमेश्वर की कौंसल की सेवा आरम्भ करना

कई विश्वासियों के लिए, कौंसलिंग आत्मा में सेवा के लिए प्रवेश द्वार है। वे चंगाई और दुष्टात्माओं को निकालने जैसी अलौकिक सेवा में सम्मिलित होने में आशंकित अनुभव करते हैं, परन्तु कौंसलिंग के विषय में कम आशंकित हैं। परन्तु, कौंसलिंग से पहले आत्मा को सुनना सीखने के द्वारा, और कौंसलिंग में उसके वरदानों और शब्दों पर निर्भर रहने के द्वारा, वे आत्मा में विश्वास और सुविज्ञता विकसित कर लेते हैं जिससे चंगाई और छुटकारा जैसे क्षेत्रों में कार्य कर सकें। आरम्भ करने का सबसे अच्छा स्थान अपने मित्रों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों और अपनी कलीसिया के विश्वासियों के लिए प्रार्थना करना आरम्भ करना है। हम ने देखा है

कि परमेश्वर को प्रश्न पूछने की आदत विकसित करना सहायक होता है। उदाहरणार्थ, हम उससे पूछ सकते हैं, "क्या ऐसा कोई है जिसके पास मैं जाऊँ और उसे कौंसलिंग करूँ ?' या, 'क्या ऐसा कुछ है जो मैं कल श्रीमान् स. के साथ खाना खाते समय उसको बता सकूँ ?' परमेश्वर ऐसी प्रार्थनाओं को बड़ी गम्भीरता से लेता है - विशेषकर तब जब हम आत्मा से भरे हुए हैं और पहली सदी के घरेलू सेवक के समान अपने आपको दीन सेवा के लिए उपलब्ध किया है।

नीचे दिए सुझाव उनके लिए हैं जो कौंसलिंग में अनुभवहीन हैं और आरम्भ करना चाहते हैं। परन्तु याद रहे, वे gnome हैं न कि boule हैं।

गोपनीयता
लोगों को एक आश्वासन दिया जाना चाहिए कि सबकुछ जो वे कहेंगे गुप्त रहेगा। सेवकों को साधारणतः कुछ भी व्यक्ति की अनुमति के बिना बोलना नहीं चाहिए जो उन्होंने बताया है। यदि एक कौंसलर की उनके पति/पत्नी के साथ गहरी बोलचाल है, तो इसे पहले ही स्पष्ट कर दिया जाना चाहिए।

लिख लेना
हमें लिख लेना आवश्यक नहीं है जब हम एक मित्र को संयोग से कौंसल करते हैं। लिख लेना तब ही आवश्यक होता है जब हम अधिक लोगों के साथ काम करते हैं, और जब हमें जो हम ने किसी से कहा है याद रखने में कठिनाई होती है।
लिख लेने से पहले हमें अनुमति लेनी चाहिए, और बताना चाहिए कि हम ऐसा क्यों कर रहे हैं। जो व्यक्ति ने कहा है लिख लेने से अधिक उपयोगी जो सलाह हम ने दी है वह है, और कोई चीज जो हमें परमेश्वर से मिली है लिख लेना अधिक उपयोगी है।

लम्बाई
एक लम्बे सत्र से अक्सर अधिक सहायक कई छोटे छोटे सत्र होते हैं। यह कौंसलिंग पर विचार के लिए, और पवित्र आत्मा को इसे किसी दूसरे साधनों द्वारा रेखांकित करने का समय देता है।

निर्भरता
लोगों को भिन्न सलाह के लिए दूसरे कौंसलरों के पास नहीं जाने के लिए प्रोत्साहित करने, और व्यक्ति को प्रारंभिक कौंसलर पर बहुत अधिक निर्भर नहीं होने देने में एक ध्यानपूर्वक सन्तुलन बनाने की आवश्यकता है। कुछ कौंसलर उन लोगों के साथ जिनकी सेवा करने का प्रयास वे कर रहे हैं बहुत उत्साही हो जाते हैं। इससे बचना चाहिए क्योंकि मानवीय दबाव आत्मा के कार्य के प्रतिकूल होता है। हम दूसरों के जीवन नहीं जी सकते, उनकी समस्याएं नहीं हल कर सकते, या उनके फैसले नहीं ले सकते हैं।
परन्तु, हम उनकी उनके अपने कार्यों के लिए जिम्मेवारी लेने में सहायता कर सकते हैं, और अपने लिए परमेश्वर को सुनना सिखा सकते हैं ताकि वे हम पर निर्भर होना बन्द कर दें और दूसरों की सेवा करनेवाले बन जाएँ।

प्रार्थना
चंगाई, छुटकारा और आशीष की सेवा में, प्रार्थना सेवा से पहले अत्यावश्यक है, परन्तु सेवा के दौरान कम महत्त्वपूर्ण है। फिर भी, प्रार्थना सारे कौंसलिंग के सम्बंध में व्याप्त होनी चाहिए, और सेवा के समय से पहले, दौरान और बाद में की जानी चाहिए। जब कभी अनिश्चय सर उठाता है, कौंसलर को प्रार्थना के लिए रुकना चाहिए। सहायता किए जा रहे लोगों को भी उनकी समस्याओं के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए: जो जोर से या अपने आप से प्रार्थना करने में कठिनाई या अस्वाभाविक अनुभव करते हैं, उन्हें लिखित प्रार्थनाएं दी जा सकती हैं।
कभी-कभी अन्य भाषाओं में प्रार्थना बहुत सहायक होती है। वैसे ही, इससे पहले हम अन्य भाषा में प्रार्थना करें हमें व्यक्ति को पहले से समझा देना चाहिए कि हम क्या कर रहे हैं।

साझेदारी
हम ने देखा है कि साझेदारी बाइबल की सेवा का एक सामान्य सिद्धान्त है, फिर भी अक्सर अकेले कौंसलिंग करनी पड़ सकती है। परन्तु, केवल मूर्ख विश्वासी ही अपने आप प्रतिजाति के व्यक्ति को कौंसलिंग करेगा। स्थानीय कलीसिया के ज्ञान और प्रार्थनापूर्वक सहयोग के बिना कौंसलिंग करना भी कम सहायक है। अगुवों की सब सदस्यों के लिए एक सामान्य पास्तरीय जिम्मेवारी होती है और चाहें उन्हें सब बातें पता न भी चलें, उन्हें पता होना चाहिए कौन किस की सहायता कर रहा है।

आत्मा में सेवा

हम ने देखा है कि आत्मा में सेवा का काम इतना महत्त्वपूर्ण है कि सब कलीसिया के अगुवों को सन्तों / विश्वासियों को सेवा के लिए तैयार करने में व्यस्त रहना है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर चाहता है कि विश्वासियों की एक बड़ी संख्या उसके भविष्यद्वक्ता सेवक बन जाएं - उसके दीन सेवक जो उसके लिए कुछ भी, कहीं भी, किसी भी कीमत पर करेंगे। कलीसियाएं समस्याओं वाले लोगों से भरी पड़ी हैं, लोग, भारी तानाशाही के लिए नहीं परन्तु दीन सेवा के लिए प्रार्थना और प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्हें ऐसे किसी की आवश्यकता है जो उनकी सुनेगा और फिर भी उन्हें प्रेम करेगा; कोई जो उनके दुष्कर्मों की निन्दा नहीं बल्कि उनकी विपत्तियों को बाँटेगा; कोई जो मानवीय विचार नहीं थोपेगा बल्कि परमेश्वर का वचन देगा; कोई जो उनके बगल में आएगा और उनको सम्पूर्ण ध्यान देगा; कोई जो जोश के साथ प्रार्थना करेगा, उदारता से देगा और बलिदान के साथ प्रेम करेगा। उन्हें परमेश्वर की कौंसल सुनने की आवश्यकता है। और परमेश्वर चाहता है हम तैयार रहें और दे देने के योग्य हों।

हमारे आसपास के संसार में चोट खाए लोग भरे पड़े हैं जिन्हें परमेश्वर के चंगाई के सामर्थ्य की आवश्यकता है, जिन्हें शैतान के शिकंजे से स्वतन्त्र होने की आवश्यकता है, जिन्हें उनकी शापित स्थिति को परमेश्वर की आशीष से बदले जाने की आवश्यकता है। उन्हें आवश्यकता है ऐसे किसी की जो उद्धार पाया है और परमेश्वर के आत्मा से भरा हुआ है; कोई जो आवश्यकता से अधिक करने के लिए इच्छुक है; कोई जो हास्यास्पद दिखने से डरता नहीं, जो परमेश्वर के वचन बोलेगा और परमेश्वर के कार्य करेगा।

उन्हें ऐसे किसी की आवश्यकता है जो केवल आत्मा में सेवा करेगा - और परमेश्वर चाहता है हम ऐसे ही सेवक बनें, और और सेवकों को भी प्रशिक्षित करें, ताकि उसका प्रेमभरा राज्य हमारे देशों में फैलता जाए और पृथ्वी की छोर तक पहुँचे।

बाइबल के वरदानों का एक अध्ययन

यहाँ हम पवित्रशास्त्र में दिए विभिन्न वरदानों का गहराई से अध्ययन करेंगे।

परिचय

सम्पूर्ण त्रिएक

नए नियम में वरदानों के तीन मूल समूहन हैं। तीनों का उल्लेख 1 कुरिन्थियों 12:4-6 में किया गया है: 'वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है; और सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है; और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही हैं, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।"

1) "कई प्रकार के वरदान, परन्तु एक ही आत्मा" (आय. 4)। ये **प्रदर्शन के वरदान** हैं जिन्हें पवित्र आत्मा देता और चलाता है, 1 कुरिन्थियों 12:8-10 में सूचीबद्ध हैं।
2) "कई प्रकार की सेवा, परन्तु एक ही प्रभु" (आय. 5)। ये **सेवा के वरदान** हैं जिन्हें पुत्र यीशु मसीह ने दिया है, इफिसियों 4:11 में सूचीबद्ध हैं।
3) "कई प्रकार के प्रभावशाली कार्य, परन्तु एक ही परमेश्वर" (आय. 6)। ये **प्रेरणा के वरदान** हैं जिन्हें पिता परमेश्वर देता है, रोमियों 12:6-8 में सूचीबद्ध हैं।

तो हम देखते हैं कि सम्पूर्ण त्रिएक - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा - कलीसिया को वरदान देने में सम्मिलित हैं जिससे मसीह की देह जैसे इसे बनाया गया है कार्य कर सके।

नींव के वरदान

पिता परमेश्वर द्वारा दिए गए सात प्रेरणा के वरदान एक व्यक्ति के बुनियादी जीवन के उद्देश्य की विशेषता प्रकट करते दिखते हैं - दूसरे शब्दों में, जो एक व्यक्ति को प्रेरित करता है। ये सहज प्रवृत्तियाँ, जो सृष्टिकर्त्ता की अनोखी कारीगरी से हर व्यक्ति को दी गई हैं, हर व्यक्ति के प्रारंभिक वरदान हैं।

हम में से अधिकाँश कई प्रेरणा के वरदानों का 'मिश्रण' प्रकट करते हैं। परन्तु, अक्सर एक शक्तिशाली विशेषता होती है जो हमारा प्रमुख वरदान प्रकट करता है।

अगुवाई के वरदान

पुत्र परमेश्वर द्वारा दिए गए पाँच सेवा के वरदान कलीसिया की उचित वृद्धि और विकास के लिए आवश्यक हैं। इन पाँच प्रकार के अगुवों की सेवा देह को तैयार करने के लिए है:

1) आराधना में परमेश्वर की सेवा, के लिए,
2) उन्नति के द्वारा इसके विभिन्न सदस्यों की सेवा, के लिए,
3) सुसमाचार प्रचार और भले कार्यों के द्वार इसके आसपास के संसार की सेवा, के लिए।

किसी भी विश्वासी के लिए उपलब्ध वरदान

पवित्र आत्मा परमेश्वर द्वारा दिए गए नौ प्रदर्शन के वरदान कलीसिया के 'लाभ' के लिए हैं (1 कुरिं. 12:7)। कलीसिया इन्हें तब अनुभव करती है जब वे पवित्र आत्मा की अगुवाई में संवेदनशीलता के साथ, और एक दूसरे की ओर प्रेम में अधीन होते हैं। ये सब नौ वरदान यीशु मसीह में किसी भी विश्वासी को उपलब्ध हैं। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि देह के सब सदस्य सब नौ वरदानों का स्वागत करें और खोजें।

<u>मन में रखने के लिए कुछ बुनियादी सिद्धान्तः</u>

अ. हर विश्वासी की सेवा

यीशु मसीह में सब विश्वासियों को आत्मिक वरदान दिए गए हैं। परमेश्वर उनसे उन्हें उपयोग करने की अपेक्षा करता है। इन वरदानों को पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और स्थानीय कलीसिया में परमेश्वर द्वारा दिए अधिकार के ढाँचे की अधीनता में उपयोग करना है। विश्वासियों के वरदान सेवा के तीन सामान्य क्षेत्रों में उपयोग किए जाएँगे:

1) ऊपर - आराधना = प्रभु की सेवा
2) अंदर - प्रशिक्षण = मसीह की देह की सेवा
3) बाहर - गवाह = संसार की सेवा

सब विश्वासियों को नीचे दिए क्षेत्रों में बढ़ना चाहिए, और बढ़ सकते हैं: उनके वरदानों को उपयोग करने की उनकी योग्यता; उनकी समझ की गहराई कि उनके वरदानों को कैसे उपयोग करना है; और, उनके वरदानों के उपयोग के समय उनका परमेश्वर की ओर समर्पण। हम अगुवों को अपनी कलीसिया के लिए शिक्षणीय आत्मा और एक समर्पित हृदय का रवैया दिखाना है जो बढ़त के लिए आवश्यक है। अगुवे भी कलीसिया में विश्वासियों को उनके वरदान उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें। हमारी कलीसिया की देह को जो हर व्यक्ति दे सकता है चाहिए। इस प्रकार ही कलीसियाएँ भले काम करतीं और बढ़ती हैं (इफि. 4:16)। अगुवों को असुरक्षा और घमण्ड दोनों की जानकारी होनी चाहिए जो हमें 'एक-व्यक्ति-प्रदर्शन' होने और सारी सेवा स्वयं करने का प्रलोभन देंगी। परमेश्वर के आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति उन अगुवों के रवैये से अधिक बुझते हैं जो उनके घमण्ड या डर को परमेश्वर जो करना चाहता है उसके आड़े आने देते हैं।

आ. अपनी नाक को अपनी गुरदों से उलझाने की समस्या

यह एक हास्यकर शीर्षक लगेगा, परन्तु यह मसीह की देह में एक सामान्य और विध्वंसक समस्या को चित्रित करता है। आओ इसे इस प्रकार कहें, आपकी नाक श्रेष्ठ है। यह सरलता से देखी और प्रशंसा की जा सकती (या मजाक उड़ाया जा सकता) है। आपके गुरदे महत्त्वपूर्ण हैं। फिर भी वे देखे नहीं जा सकते हैं (जब तक आप शल्यक्रिया में न हों!)। प्रश्न उठता है: "आपकी नाक या आपके गुरदे - आप किसके बिना जी सकते हो?" प्रकट है हम अपनी नाक बिना जी सकते हैं परन्तु अपने गुरदों बिना नहीं जीवित रह सकते!

इसका मसीह की देह और आत्मिक वरदानों से क्या सम्बंध है? सरलता से कहा जाए तो, बहुत से विश्वासी सोचते हैं "अधिक श्रेष्ठ" का अर्थ है "अधिक महत्त्वपूर्ण", और 'कम श्रेष्ठ" का अर्थ है "कम महत्त्वपूर्ण"। फिर भी हमने देखा है कि यह मनुष्य के शरीर के विषय में सत्य नहीं है: गुरदे नाक से कम श्रेष्ठ दिखते हैं, परन्तु वे निश्चय ही नाक से कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं! मसीह की देह में भी ऐसा ही है। कम श्रेष्ठ, कम दर्शनीय "पर्दे के पीछे" वाले वरदान - जैसे कि सेवा करना, दया दिखाना, देना, प्रबंध करना - परमेश्वर की दृष्टि में, अधिक श्रेष्ठ, "प्रकट" वरदानों से - जैसे कि प्रेरित, भविष्यद्वक्ता या सुसमाचार प्रचार, निश्चय ही कम महत्त्व के नहीं हैं। हम अगुवों को अपनी कलीसिया के लोगों को सिखाना चाहिए कि सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जो वे कर सकते हैं - चाहे उनके पास एक "श्रेष्ठ" वरदान हो या नहीं - वह है जो परमेश्वर का आत्मा सेवा से सम्बंधित उनके करने के लिए उनकी अगुवाई करता है। परमेश्वर द्वारा दिया कोई भी वरदान महत्त्वहीन नहीं है। एक स्वस्थ्य कलीसिया के लिए सब आवश्यक हैं (1 कुरिन्थियों 12:14-27 देखो)।

इ. चरित्र या (आत्मिक) वरदान?

सही कहा गया है कि आत्मिक वरदान दो-धारी तलवारों के समान हैं। ये दो-धारी तलवारें दोनों ओर काट सकती हैं। उन्हें एक अच्छे तरीके से उपयोग किया जा सकता है और किया जाना चाहिए (1 कुरिं. 12:7)। परन्तु उन्हें नकारात्मक, अनियमित और हानिकर तरीकों से भी उपयोग किया जा सकता है (पौलुस का 1 कुरिन्थियों अध्याय 12-14 लिखने का कारण)। किस तरीके (सकारात्मक या नकारात्मक) से "तलवार" (वरदान) काटेगी, और किसी भी चीज से अधिक व्यक्ति के चरित्र और हृदय द्वारा निर्धारित होता है।

एक मसीह-समान चरित्र

परमेश्वर ने कलीसिया को वरदान दिए हैं। फिर भी उसकी हमारे लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता यह है कि हम में से हर एक मसीह के "स्वरूप" (चरित्र, नैतिक और आत्मिक समानता) के सृदश हो जाए (रोमियों 8:28-29; 12:1-2; 2 कुरिं. 3:18)। मसीह की देह में बहुत बार, विश्वासी (अगुवे भी) उनके चरित्र के विकास की परवाह किए बिना उनके वरदानों के प्रयोग की खोज में रहते हैं। परन्तु इसे कहना चाहिए कि परमेश्वर के संदर्श से, कोई भी वरदान मसीह समान चरित्र का स्थान नहीं ले सकता है। परमेश्वर की इच्छा है कि हमारे पास वरदान और मसीह समान चरित्र दोनों हों!

यदि हमारा मसीह समान चरित्र होगा तो हम पाएँगे कि आत्मिक वरदान अच्छा कार्य करते हैं। और क्योंकि हमारे जीवनों में अधिक अभिषेक होगा, वे दूसरों के जीवन में अधिक फल लाएँगे।

आजीवन खोज

हम मसीह समान चरित्र में कैसे बढ़ सकते हैं जिसमें सन्तुलन, अखंडता, और आत्मा का फल हो? आरम्भ करने के लिए यहाँ कुछ सरल सुझाव दिए गए हैं:

1) अपना हृदय परमेश्वर और दूसरे मसीहियों के अधीन करो;
2) एक दीन, शिक्षणीय आत्मा विकसित करो;
3) अपने जीवन में आत्मा के फल विकसित करने की खोज में रहो (गला. 5:16-26);
4) निरन्तर बाइबल का अध्ययन करो, सदा इसे अपने व्यक्तिगत जीवन में लगाओ;
5) पवित्र आत्मा को आपके हृदय के पापी स्वभाव के रवैयों को प्रकट करने दो। जब प्रकट होते हैं तो उनसे मन फिराओ और नए सिरे से मसीह के अधीन हो जाओ (रोमियों 13:14)।

और काफी कुछ भी किया जा सकता है। दूसरे मसीही अगुवों के साथ खुलेपन और आपसी उत्तरदायित्व के वातावरण में नियमित प्रार्थना के लिए मिलो। यदि आप ऐसे समूह के साथ मिल नहीं हैं तो एक ऐसी नियमित सभा का प्रबंध करने का प्रयास करो। एक सबसे खरतनाक चीज जो एक अगुवा कर सकता है, अपने आपको अलग करना। यहीं पर घमण्ड, पाप और धोखा प्रवेश करते हैं। दूसरे मसीही अगुवों से घिरे रहो, और एक दूसरे का बोझ उठाओ (गला. 6:1-3)। हम आशा करते हैं कि आप इन सुझावों को एक प्रोत्साहन के रूप में उपयोग करोगे, और मसीह के सृदश बनने की अपनी आजीवन खोज में अधिक परिश्रमी बनोगे।

अध्याय 1 – प्रेरणा के वरदान

पिता के वरदान (रोमियों 12:3–8)

हमारी बुनियादी प्रेरणाएँ

रोमियों 12:3-8 में सात प्रेरणा के वरदानों के नाम हैं। हम में से कम ही में उन में से केवल एक वरदान होता है। अधिकाँश बार, हम में से हर एक में उन में से कई एक का सम्मिश्रण होता है। फिर भी, अक्सर एक ऐसा वरदान होगा जो अधिक स्पष्ट होगा। जब हम यूनानी मूल-पाठ की जाँच करते हैं तो पाते हैं कि रोमियों 12 में की वरदानों की सूची का सम्बंध हमारी बनावट से है। ये वरदान हमारी मूल प्रेरणाओं को चित्रित करते हैं - यानि, हम जीवन और सेवा को कैसे देखते, समझते और उन तक पहुँचते हैं। ये मूल विशेषताएँ हमारे व्यक्तित्व में निर्माण की गई हैं, हमारे सृष्टिकर्त्ता ने उन्हें वहाँ रखा है। परन्तु वे व्यक्तित्व के गुणों से कहीं अधिक हैं। ये वरदान हैं जिन्हें हमारे स्वर्गीय पिता ने हम में से हर एक को दिया है।

परमेश्वर की सेवा के लिए दिए गए

हम इन परमेश्वर द्वारा दिए प्रेरणाओं का सामना करने का प्रयत्न कर सकते हैं; या हम उन्हें उसके लिए जिसने हमें दिए हैं सेवा में लगा कर सहयोग दे सकते हैं। हमारे लिए इन वरदानों में बढ़ना और शक्तिशाली होना मुमकिन है। यह हमारे जीवनों में परमेश्वर के सारे उद्देश्य पूरे करने के लिए हमारी सहायता करेगा। हम ऐसा मसीह की प्रभुत्व में निरन्तर समर्पित होते हुए और अपने सम्पूर्ण अस्तित्व उसके उपयोग के लिए प्रस्तुत करते हुए कर सकते हैं। हमें पवित्र आत्मा की अगुवाई में विश्वास और आज्ञापालन में चलना है, और अपने प्रभु को हमें बढ़ाने देना, अनुशासित करने देना, और हमें परिपक्व बनाने देना है। इस प्रकार, वह सबकुछ जो परमेश्वर ने हमें बनाया है हम पता लगा सकते हैं; और, उसकी सहायता से, वह जो चाहता है हम भविष्य में बनें, बन सकते हैं।

सात वरदान

आओ हम मिलकर रोमियों 12:3-8 पर ध्यान लगाएँ: "क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूँ कि जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे; पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे। क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं; वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं। जबकि उस

अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे; यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे; यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे; जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे; जो अगुआई करे, वह उत्साह से करे; जो दया करे, वह हर्ष से करे।"

आयतों 6-8 में सूचीबद्ध वरदानों की गहराई में जाने से पहले, हमारे समझने के लिए कुछ निर्णायक सिद्धान्त हैं। ये सिद्धान्त हमारे लिए आयतों 3-6 में दिए गए हैं। इन सिद्धान्तों को समझने से हमें इन वरदानों की सूची के महत्त्व को समझने में सहायता मिलेगी। हम मसीह की देह में हर व्यक्ति के अनोखेपन - फिर भी परस्पर निर्भरता - के महत्त्व को पूरी तरह समझेंगे।

1. **आपका "परिमाण के अनुसार विश्वास"** (**रोमियों** 12:3)

अ. सन्तुलित मन

परमेश्वर का आत्मा, पौलुस के द्वारा, हमें अपने विषय में "सही सोचने" के लिए उपदेश देते हुए इस भाग को आरम्भ करता है। पौलुस रोम की कलीसिया को याद दिलाता है कि वह एक प्रेरित है ("क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूँ...") और, इसलिए, अधिकार और ईश्वरीय नियुक्ति के साथ बोलता है। तब वह विश्वासियों को निर्देश देता है कि जैसा उन्हें अपने आप को समझना चाहिए उससे बढ़कर वे अपने आप को न समझें। यह धमण्ड और स्वार्थीपन की चालाकी के विरुद्ध चेतावनी से कुछ अधिक है। हाँ, यह है; परन्तु जब यह बाकी की आय. 3 से जुड़ता है तो इसका अर्थ बढ़ जाता है। पहले, हमें 'सन्तुलित सोचने' के लिए कहा गया है। यह पहले के वचन 12:2 से सम्बंध जोड़ रहा है, "इस संसार के सृदश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए।" नए मन से सन्तुलित सोचना एक स्पष्ट मन से सोचना है।

आय. 3 में उपयोग किया गया यूनानी शब्द 'Sophroneo' है। इस शब्द का अर्थ है: 'स्वस्थ्य मन या विवेक का होना, समझदार, संयमी, गम्भीर, सन्तुलित, नियंत्रित, अनुशासित, विचार करने योग्य।" यह दो यूनानी मूल-शब्दों से निकलता है: 'sozo' ('उद्धार करना') और 'phren' ('मन')।

पवित्र आत्मा हमें यहाँ सिखा रहा है कि उद्धार पाए विश्वासी को : 1) अभिमान के साथ नहीं सोचना है, कि मसीह की देह में वह दूसरों से अच्छा है; या 2) आत्मतिरस्कार के साथ नहीं सोचना है, कि वह मसीह की देह में दूसरों से कम कीमती है। दोनों प्रकार का सोचविचार अस्वस्थ्य है और बाइबल का नहीं है। बल्कि, हमें सच्ची दीनता और परमेश्वर की ओर कृतज्ञता वाले एक परिवर्तित मन से सोचना है।

आ. दीनता और कृतज्ञता क्यों ?

दीनता की उत्तम परिभाषा है: जो तुम असली में हो वही होना; न अधिक और न कम। हमें कृतज्ञ होना है, क्योंकि वरदान और उनकी उचित और प्रभावशाली कार्यवाही दोनों पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा परमेश्वर से मिलते हैं। सच में, हम तो मात्र मिट्टी के पात्र हैं - जो धन हम में है उसके कारण महत्त्व के पात्र हैं। (2 कुरिं. 4:7)। हम अपने प्रयास या चालाकी से परमेश्वर के वरदान कभी भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं। और चाहे हम कितनी भी इच्छा क्यों न रखें, हम उन वरदानों से भिन्न वरदान नहीं पा सकते हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमें दिया है। दीनता और कृतज्ञता में चलते हुए, हम मालिक के हाथों में अधिक सन्तुलित और अधिक उपयोगी बन जाते हैं।

विश्वासियों में, और विशेषकर अगुवों में, प्रतियोगी व्यवहार अक्सर सन्तुलित सोच की कमी से आता है। जब हम घमण्ड - या असुरक्षा - को हमारी सोच को चलाने देते हैं, तो हम धोखे और पाप में पड़ सकते हैं। कोई भी व्यक्ति दूसरे के वरदान के लालच के प्रलोभन में पड़ सकता है, या अपने वरदान के विषय में असुरक्षित हो सकता है। अपने हृदय की निरन्तर चौकसी (नीतिवचन 4:22) - और पवित्र आत्मा द्वारा नियमित जाँच और शुद्धता के समय ही - हमें एक ओर घमण्ड के आत्म-प्रवंचना, या दूसरी ओर झूठी मर्यादा का शिकार होने से बचा सकते हैं। हमारे परिवर्तित, सन्तुलित, स्पष्ट सोच का आधार यह है कि हम में से हर एक को परिमाण के अनुसार विश्वास दिया गया है।

इ. "परिमाण के अनुसार विश्वास" क्या है ?

आओ हम "परिमाण के अनुसार विश्वास" की परिभाषा बताएँ - यह क्या है और यह क्या नहीं है:

1. यह "परिमाण के अनुसार विश्वास" "उद्धार लानेवाला विश्वास" (विश्वास जो हमारे उद्धार से सम्बंधित है) नहीं है। कोई भी व्यक्ति दूसरे से अधिक उद्धार नहीं पा सकता है। आप या तो उद्धार पाए हैं, या नहीं पाए हैं। एक वरदान के होने, या इसके उपयोग, का अर्थ यह नहीं है कि एक व्यक्ति के पास दूसरे से अधिक उद्धार लानेवाला विश्वास है।

2. यह "परिमाण के अनुसार विश्वास" विश्वास की मात्रा नहीं है। परमेश्वर विश्वास को टुकड़ों में नहीं बाँटता है और फिर विभिन्न लोगों को बड़े या छोटे टुकड़ों में दे देता है। यह अधिक 'आत्मिक' होने के विषय में भी नहीं है ताकि आपके पास एक बड़ी मात्रा में विश्वास या अधिक वरदान हों।

3. यह "परिमाण के अनुसार विश्वास" ऐसे प्रकार का विश्वास है जो हर विशेष वरदान की कार्यवाही के लिए अच्छा उचित है। दूसरे शब्दों में, जिस किसी के पास देने का वरदान है, उसे उस प्रकार के विश्वास की आवश्यकता है जो बिना रोके रखे, उदारता से देने में उसे स्वतन्त्र करेगा। एक शिक्षक को उस प्रकार का विश्वास चाहिए जो उसे दूसरों के सामने खड़े होने और सत्य को सही सही प्रस्तुत करने में योग्य करेगा। पिता परमेश्वर ने हम सबको एक निश्चित तरीके से, निश्चित वरदानों के साथ बनाया है। उसने हमें उस प्रकार का विश्वास भी दिया है जो हमारे वरदानों के उपयोग के लिए आवश्यक है।

ई. सन्तुलित सोच

इसे मन में रखकर, सन्तुलित सोच का उपदेश अधिक प्रभाव उत्पन्न करता है। यदि हम सोचते हैं कि हमारे पास वरदान हैं जो हमें नहीं दिए गए हैं (या उन्हें पाने का प्रयास करते हैं), तो हमारा अपने विषय में गर्वित धारणा है। हम अपने और जो परमेश्वर ने हमें दिया है उसके विषय में बढ़कर (या केवल गलत) सोचकर पाप करते हैं। यदि हम उसका जिसे परमेश्वर ने हमारे जीवनों में रखा है महत्त्व कम करते हैं, तो हम झूठी दीनता के गुलाम हैं जो बहुत आत्मिक दिखती तो है परन्तु बिलकुल भी आत्मिक नहीं है (कुलु. 2:23)। हम परमेश्वर द्वारा दिए वरदानों पर संदेह करेंगे या इन्कार करेंगे, और कभी उठकर उन वरदानों को पूरी तरह उपयोग नहीं करेंगे। इस प्रकार, सबकुछ जो परमेश्वर हमारे जीवनों द्वारा प्राप्त कर सकता था, पूरा नहीं होगा, और मसीह की देह वह सब नहीं पा सकेगी जो हम दे सकते थे।

उ. अपने वरदानों में बने रहो

सन्तुलित सोच के विषय में एक और सीखने के लिए महत्त्वपूर्ण सबक है। जब आपको एक प्रेरणा का वरदान दिया गया है तो दूसरे वरदानों की चाह रखने के बजाय उस वरदान को उपयोग करके संतुष्ट बने रहो। यह एक बुद्धिमान व्यक्ति है जो सेवा के उस क्षेत्र में बना रहता है जिसके लिए परमेश्वर ने उसे सज्जित किया है, और ऐसा कुछ करने से बचता है जिसके लिए वह सज्जित नहीं है। सेवा में कुण्ठित और निराश होने का सबसे तेज तरीका सेवा के एक ऐसे क्षेत्र में कार्य करने का प्रयास करना है जिसके लिए आप सज्जित नहीं हो।

ऊ. प्रेरणा के वरदानों का अनोखापन

प्रेरणा के वरदानों के अनोखेपन को याद रखना महत्त्वपूर्ण है। वे 1 कुरिन्थियों 12 के प्रदर्शन के वरदानों के समान नहीं हैं, जहाँ विश्वासी जैसे पवित्र आत्मा उनकी अगुवाई करता है वे उन में से किसी भी वरदान में कार्य कर सकते हैं। न ही ये इफिसियों 4:11 के सेवा के वरदानों के समान हैं। प्रेरणा के वरदानों में जो परमेश्वर ने हमें बनाया है सम्मिलित है। ये वरदान हम जीवन को कैसे देखते हैं, और एक सेवा की स्थिति में हम लोगों की आवश्यकताओं की ओर कैसे प्रतिक्रिया दिखाते हैं उसे प्रभावित करेगा। हम में से हर एक, अपने प्रेरणा के वरदानों के साथ, एक परिस्थिति की ओर दूसरों से जिनके भिन्न वरदान हैं कुछ भिन्न प्रतिक्रिया दिखाएँगे। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हर वरदान दूसरों के समान महत्त्वपूर्ण है। और प्रभावशाली और सम्पूर्ण सेवा के लिए सब वरदान समान महत्त्व के हैं।

ए. हमारा मूल्य

वरदानों की किस्में मसीह की देह में, और परमेश्वर के लिए हमारा मूल्य निर्धारित नहीं करती हैं। क्योंकि हम सब एक देह हैं, और सही कार्य करने के लिए हमें एक दूसरे के विभिन्न वरदानों की आवश्यकता है। हम सब परमेश्वर के हैं क्योंकि हम सबको उसके स्वरूप में बनाया गया है और उसके पुत्र के लहू से मोल लिए गए हैं। यह तथ्य हमारी व्यक्तिगत कीमत और मूल्य स्थापित करते हैं। हमारी कीमत हमारे पास कैसे वरदान हैं, या हमारी सेवा के आकार पर आधारित नहीं हैं। हर व्यक्ति परमेश्वर और उसके राज्य के लिए वैसा ही कीमती है जैसा उसने उसे बनाया है। आओ हम सब गर्वीली मुद्राएँ और संघर्ष को निकाल फेकें। बदले में, आओ हम हृदयों में स्तुति लिए हुए उस सबको अपने में समेट लें जिसे पिता ने हम सबको देने का चुनाव किया है।

2. **हम एक देह हैं** (**रोमियों** 12:4-5)

यहाँ पौलुस की टिप्पणियाँ 1 कुरिन्थियों की टिप्पणियों से संक्षिप्त हैं, परन्तु अर्थ वैसा ही है। आय. 3 में पौलुस लिखता है, "परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है।" यहाँ आयतों 4 और 5 में, पवित्र आत्मा विश्वास के इन विभिन्न परिमाणों को सम्मिलित करने के लिए मानवीय शरीर का उदाहरण उपयोग करता है। जैसे हर मानवीय शरीर के विभिन्न सदस्य होते हैं, और हर एक के अपने विशेष कार्य होते हैं, उसी प्रकार मसीह की देह में भी है।
आयतों 4 और 5 में से दो महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त निकलते हैं।

* "हम मसीह में एक देह हैं।"

हम हर एक मसीह की देह के अंग हैं। हम केवल एक दूसरे के ही नहीं हैं। इसलिए देह के दूसरे अंग को तुच्छ जानना, या उसकी आलोचना करना, उसका इन्कार करना और उसमें रुकावट डालना है जिन विभिन्न कार्यों की परमेश्वर ने कलीसिया के लिए इच्छा की है। उसने हम हर एक को अनोखा और भिन्न बनाया है। कोई भी छोटा वरदान या व्यक्ति नहीं है। क्योंकि हम सब उसकी देह के सदस्य हैं, हमें एक दूसरे के साथ उस प्रकार की देखभाल और आदर का बर्ताव करना है जो प्रभु को प्रसन्न करेगा।

* "हम एक दूसरे के अंग हैं।"

विश्वासी न केवल एक देह के, बल्कि एक दूसरे के भी अंग हैं। इसका अर्थ है कि हम आपस में अन्योन्यश्रित हैं। देह तब ही ठीक से कार्य कर सकती है जब हर सदस्य उसका काम करता है। इसलिए, हर सदस्य / वरदान / कार्य को पहचानना बहुत महत्त्वपूर्ण है। हर एक को देह में सेवा करना सिखाना और प्रोत्साहित करना चाहिए। जैसे हर सदस्य हर वरदान की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति स्वीकार करता है जिन्हें परमेश्वर ने कलीसिया दिए हैं, तब देह के अन्दर भिन्नताएँ दूसरे सदस्यों को उपजाऊ बनाती हैं।

इन सिद्धान्तों को मन में रखते हुए, आओ हम रोमियों 12:6-8 में सूचीबद्ध सात प्रेरणा के वरदानों का विस्तार से अध्ययन करें। जैसे हम हर वरदान को देखेंगे, हम (अ) हर वरदान की विशेषता, और (आ) हर वरदान के बाइबल के उदाहरण की चर्चा करेंगे।

भविष्यद्वाणी का प्रेरणा का वरदान

आय. 6 – महसूस करनेवाला (अग्रगमन अन्तर्दृष्टि)

भविष्यद्वाणी के प्रेरणा के वरदान वाले व्यक्ति को एक 'अनुबोधक' व्यक्ति भी कहा जा सकता है। ऐसा व्यक्ति जो एक स्थिति के गहरे अर्थ को देखता और समझता है। हम प्रकटीकरण की बात नहीं कर रहे हैं, यानि, कुछ देखना जो पहले कभी नहीं देखा गया है। हम परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के आत्मा का प्रकाश होने की बात कर रहे हैं, जो एक स्थिति के सत्य को प्रकट करने के लिए व्यक्ति के मन में पवित्र प्रबोधन देता है। इस प्रेरणा के वरदान की विशेषता है:

1. सतही आभास के परे देखने या अनुभव करने की योग्यता,
2. एक स्थिति के विषय में सत्य पाने और घोषित करने की योग्यता,
3. लोगों या कार्यक्रमों के विषय में अन्तर्दृष्टि पाने और घोषित करने की योग्यता।

हमारे स्वर्गीय पिता से मिला यह रचनात्मक वरदान एक विश्वासी को स्थितियों और लोगों को अग्रगमन भविष्यद्वाणी अन्तर्दृष्टि के साथ देखने की योग्यता देता है। यह वरदान (रोमियों 12 में सूचीबद्ध दूसरे वरदानों के समान) किसी प्रकट सेवा या पद से स्वतन्त्र कार्य करता है। दूसरे शब्दों में, भविष्यद्वाणी के प्रेरणा के वरदान वाला व्यक्ति वही नहीं है जिसकी भविष्यद्वक्ता के वरदान की सेवा है।

कलीसिया के लाभ के लिए

जैसे किसी भी वरदान के साथ होता है, भविष्यद्वाणी का प्रेरणा का वरदान सहायक और लाभदायक तरीके से उपयोग किया जा सकता है - या इसे चोट पहुँचाने के लिए घुमाया और उपयोग किया जा सकता है। यह परमेश्वर द्वारा दिया गया है और उसकी महिमा और कलीसिया के लाभ के लिए उपयोग होना चाहिए।
यह वरदान एक व्यक्ति को नीचे दी चीजें करने के लिए प्रेरित कर सकता है

- मसीह की देह में टूटे सम्बंधों को सुधारना।
- एक व्यक्ति का परमेश्वर के साथ चलना सुधारना या बनाना।

इस वरदान वाले व्यक्ति मामले की तह तक पहुँचना चाहेंगे - चाहे यह लोगों में समस्या है या कलीसिया में एक आत्मिक चुनौती है। वे अक्सर उस सत्य को जिसे वे अनुभव करते हैं बोलना चाहेंगे, चाहे यह एक व्यक्ति के लिए है सारी कलीसिया के लिए है।

परन्तु, यह याद रखना बहुत महत्त्वपूर्ण है, कि भविष्यद्वाणी का प्रेरणा का वरदान होना आवश्यक नहीं आपको एक नबी बना देगा। कभी-कभार इस वरदान द्वारा प्रेरित व्यक्ति, एक शिक्षक भी हो सकता है। या वह व्यक्ति एक अच्छा कौंसलर हो सकता है। फिर भी यह मुमकिन है, और सम्भव भी है, कि भविष्यद्वाणी के प्रेरणा के वरदान वाला व्यक्ति परमेश्वर के आत्मा द्वारा भविष्यद्वाणी की सेवा (1 कुरिं. 12:10) में उपयोग किया जाए। उसमें भविष्यद्वक्ता की सेवा का वरदान हो सकता है। (इफि. 4:11)
इस प्रेरणा के वरदान वाले व्यक्ति उनके ढंग में सुस्पष्ट होते हैं। उनके लिए, कोई चीज या तो सत्य और सही है - या झूठी और गलत है; कोई मध्य मार्ग नहीं है, कोई अपवाद नहीं हैं। इस प्रेरणा के वरदान वाले व्यक्तियों को जैसे वे दूसरों को उपदेश, सुधार, शिक्षा और चेतावनी देते हैं तो उन्हें दयालु और नम्र होना सीखने के सन्तुलन की खोज करनी चाहिए।

इस वरदान का उचित उपयोग

आयत 6 "विश्वास के परिमाण के अनुसार" वाक्यांश उपयोग करता है। यह 'परिमाण के अनुसार विश्वास' के समान लगता है जिसे आय. 3 में कहा गया है, फिर भी यह भिन्न है। 'विश्वास के परिमाण' का सम्बंध सन्तुलित सोच से है (आय. 3), और प्रभाव के क्षेत्र से है जिसे हमारे प्रेरणा के वरदान हम में से हर एक को देते हैं। 'हमारे विश्वास के परिमाण के अनुसार' भविष्यद्वाणी के वरदान के उचित उपयोग के विषय में बात करता है। परिमाण के लिए यूनानी शब्द 'analogi' है, जो गणित की सीमाओं का वर्णन करने के लिए उपयोग होता है।
इस वरदान से सम्बंधित, analogi का अर्थ दो चीजें है:

(अ) जिस व्यक्ति में भविष्यद्वाणी का वरदान है, और परमेश्वर के शब्द बोलता है, वह उससे अधिक न बोले जो बोलने के लिए परमेश्वर ने उसे दिया है।

(आ) यही व्यक्ति पूरा सत्य जैसा परमेश्वर ने उसे दिखाया है, न रोके और न कम बोले।

हर वरदान का उचित उपयोग माँग करता है कि हम जिम्मेवार हों, और इसे ठीक-ठीक उपयोग करें। जिनके पास भविष्यद्वाणी का प्रेरणा का वरदान है वे उनके शब्दों को ध्यानपूर्वक उपयोग करें। उन्हें परमेश्वर ने जो कहने को दिया है उससे अधिक या कम न कहें। इसे भी कहा जाना चाहिए, कि सबकुछ जो एक भविष्यद्वाणी के आधार पर कहा जाता है परमेश्वर के लिखित वचन, बाइबल से जाँचा और तुलना किया जाना चाहिए। एक भविष्यद्वाणी का शब्द उससे कभी भी असहमत न हो जो पहले से बाइबल में कहा गया है। जो व्यक्ति भविष्यद्वाणी का शब्द सुनता है और जो व्यक्ति भविष्यद्वाणी का शब्द बोलता है, उन दोनों को यह तुलना करनी चाहिए। इस वरदान वाले व्यक्ति के लिए यह निश्चित कर लेना बहुत महत्त्वपूर्ण है कि जो वह अनुभव कर रहा है परमेश्वर के आत्मा से - न कि उसकी अपनी आत्मा से, या शैतानी प्रभाव से है।
परमेश्वर का आत्मा बोल रहा है या हमारी अपनी आत्मा, या एक दुष्टात्मा हम से बोल रही है में भेद पता लगाना सदा सरल नहीं होता है। जो व्यक्ति प्रभु में नया है उलझन में पड़ सकता है और गलती कर सकता है। उन गलतियों को दीनता से स्वीकार करना चाहिए, और प्रार्थना और परमेश्वर के वचन के अध्ययन द्वारा उसके अधीन होना चाहिए (2 पतरस 3:15-18)।

चेतावनी की बातें

यह प्रेरणा का वरदान अक्सर उन चीजों पर ध्यान केन्द्रित करता है जो चीजों गलत हैं। इसलिए, यदि आपके पास यह वरदान है तो आपको सावधान होना है कि आप नकारात्मक पर केन्द्रित न रहें। आपको ध्यान देना है कि आप पाप का, न कि जो व्यक्ति पाप में फँसा है उसका न्याय करें। व्यक्ति को आदर और संवेदनशीलता से बोलना है, ताकि लोगों को इतना नाराज न कर दें कि जो परमेश्वर उन से कहना चाहता है उससे वे चूक जाएँ।

भविष्यद्वाणी के वरदान का बाइबल का उदाहरण

यूहन्ना बपतिस्मादाता वास्तव में एक ऐसा मनुष्य था जिसे भविष्यद्वक्ता के वरदान की सेवा मिली हुई थी। उसका वरदान और सेवा पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं के बीच एक 'पुल' था। यूहन्ना बपतिस्मादाता का प्रमुख बुलावा एक भविष्यद्वक्ता की सेवा के वरदान द्वारा पूरा हुआ था (इफि. 4:11)। परन्तु, उसका जीवन और सेवा भविष्यद्वाणी के प्रेरणा के वरदान के कार्य में हमें कुछ अन्तर्दृष्टि दे सकते हैं:

1. उसके रूढ़ीमुक्त वस्त्र (मत्ती 3:4) दिखाते हैं कि वह बाहरी रूप-रंग की परवाह नहीं करता था।
2. उसे अपनी व्यक्तिगत अयोग्यता की जानकारी थी (लूका 3:16)। भविष्यद्वक्ता के वरदान वाले लोग अपने ऊपर कठोर होते हैं।

3. वह जानता था कि वह केवल परमेश्वर की आवाज है। उसकी सेवा पूरी तरह बाइबल पर आधारित थी जैसा हम लूका 3:3-6 में देख सकते हैं।

4. वह भीड़ का उनके पाप के विषय में सामना करने, न्याय की उन्हें चेतावनी देने, और उन्हें मन फिराने का उपदेश देने में स्पष्ट और सीधा था (लूका 3:7-9)।

5. उसने नकारात्मक की बात नहीं की। जब भीड़ में से लोगों ने पूछा कि वे क्या करें, तब उसने उन्हें उनके पापों से फिरने के सकारात्मक कदम बताए जो वे उठा सकते थे (लूका 3:10-14)।

6. वह पश्चाताप की खोज में था, यानि, लोगों की जीवन शैली में बदलाव (लूका 3:8)।

7. उसने सही (अच्छा) और गलत (बुरा) पर बहुत जोर दिया और अधिकारियों में बुराई को डाँटा (लूका 3:19)।

8. उसने लोगों के अभिप्रायों को भाँप लिया (लूका 3:7)।

सेवा का प्रेरणात्मक वरदान

आय. 7 – सेवा करनेवाला (सेवकपन की आत्मा)

'सेवा' के लिए यहाँ उपयोग किया गया यूनानी शब्द 'diakonia' है। यह 'सेवक' के लिए उपयोग किया गया एक यूनानी शब्द है। कुछ इस शब्द के उपयोग को केवल एक डीकन (जो 'diakonia' से निकला है) द्वारा की गई सेवा तक ही सीमित करते हैं। यह कोई अनुचित अर्थ नहीं है। परन्तु, बाइबल में इस शब्द का उपयोग अधिक विस्तृत है। 'Diakonia' नए नियम में लगभग सदा मसीही कलीसिया की, और में सेवा के सम्बंध में प्रकट होता है।

<u>इसे नए नियम में नीचे दिए तरीकों में उपयोग किया गया है:</u>

1) सामान्य सेवा, मसीह की देह की भलाई के लिए किए गए सेवा के सारे कार्य (इफि. 4:12)।
2) प्रेरिताई सेवा और वचन की सेवा (प्रेरितों 6:4; 20:24)।
3) डीकन के पद में और इसके सेवा के क्षेत्र (प्रेरितों 6:1-3)।

कुछ सेवा के क्षेत्र में विशेषकर वरदान पाए होते हैं। जब वे दूसरों की उपयोगी तरीके से सेवा करते हैं तो पूर्ति अनुभव करते हैं। परन्तु आपके वरदान के अलावा, यहाँ सीखने के लिए एक सबक है। <u>ऊपर दिए वचनों का तात्पर्य है - और कई दूसरे वचन विशेषकर बताते हैं - कि सबकुछ जो हम, और विशेषकर अगुवे, करते हैं और मसीहियों के रूप में हैं, सेवकपन की आत्मा द्वारा अंकित होना है।</u> चाहे आपके परमेश्वर द्वारा दिए वरदान, या परमेश्वर द्वारा दी गई सेवा का विस्तार कुछ भी क्यों न हों, आप कलीसिया के प्रभु से बड़े नहीं हो (यूहन्ना 15:20)। सबकुछ जो हम करते हैं उसकी और उसकी कलीसिया की सेवा में है। यदि आप उसके स्वरूप में ढलना चाहते हो - और उसने हमारे लिए अपना प्राण त्याग दिया है - आपके जीवन और सेवा की विशेषता एक मसीह समान, सेवक का हृदय होनी चाहिए (मत्ती 20:20-28)।

कार्य-अभिमुख

सेवा करना एक प्रेरणात्मक वरदान है जो पिता परमेश्वर हमें हमारी सृष्टि, हमारे जन्म के समय हमें देता है। सेवा करना उपयोगी सहायता और मदद देने पर केन्द्रित है। जिनके पास सेवा का वरदान है, वे अक्सर देह में एक आवश्यकता को पहचानने की योग्यता रखते हैं।

वे उस आवश्यकता को पूरा करने के लिए जो आवश्यक है आना चाहेंगे। वे उपयोगी आवश्यकताओं को पूरा करके और हाथों से सेवा और सहायता करके परमेश्वर का प्रेम दिखाएँगे। आप इन लोगों को अक्सर गरीब और कमज़ोरों की सहायता करते पाएँगे। सेवा का वरदान वाले अक्सर अपने हाथों से काम करने में प्रतिभाशाली होंगे और उनके शारीरिक शक्ति होगी। सेवा का वरदान कार्य के अभिमुख होता है।

सेवा करने का सम्मान

सेवा का यह प्रेरणात्मक वरदान अक्सर कम समझा जाता है और 'सांसारिक' माना जाता है। क्योंकि यह अक्सर भौतिक और शारीरिक लाभों पर केन्द्रित होता है, कई उनको तुच्छ समझते हैं जो इस तरीके से सेवा करते हैं। इस प्रकार, सेवा के वरदान की अक्सर उपेक्षा की जाती है और मसीह की देह में सम्मान नहीं होता है। परन्तु याद रहे, यह यीशु मसीह - परम सेवक - था जो इतना दीन था कि उसने उनके पाँव धोकर दूसरों की सेवा की (यूहन्ना 13:3-17)। और, 1 तीमुथियुस 3:8-13 में डीकन के लिए

जरूरी है कि ये 'सेवा करनेवाले' मसीह-समान और योग्य चरित्र के लोग हों। और जब सबसे पहले प्रेरितों ने डीकन का पद स्थापित किया था तो उन्होंने विशेष रूप से 'सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों' चुना था (प्रेरितों 6:1-7)। ये वचन प्रमाणित करते हैं कि एक सेवक होना परमेश्वर के राज्य में एक नीचा काम नहीं है। हो सकता है कि सांसारिक, शारीरिक लोग एक सेवक को नीचा मानते हैं, परन्तु एक सेवक परमेश्वर की दृष्टि में बिलकुल भी नीचा नहीं है (मत्ती 25:34-40 देखो)। एक गलत, शारीरिक मानवीय दृष्टिकोण से, हो सकता है यह वरदान महत्त्वपूर्ण नहीं लगे। यदि इस गलत दृष्टिकोण पर विश्वास किया जाता है तो, सेवा के प्रेरणात्मक वरदान वाला व्यक्ति अपने को महत्त्वहीन देखेगा, और उस अच्छे वरदान का इन्कार करेगा जो परमेश्वर ने उसे कलीसिया के लिए दिया है। यदि सेवा करना महत्त्वपूर्ण नहीं समझा जाता है तो व्यक्ति दूसरे वरदानों को लेना चाहेगा जो अधिक 'यशस्वी' और अधिक 'महत्त्वपूर्ण' दिखते हैं। यह गलत सोच और सेवा के वरदान की उपेक्षा एक कमी छोड़ देता है, जो नहीं तो एक मसीह की देह में एक उपयोगी और सन्तुलित सेवा होती। यह इस वरदान वाले उस व्यक्ति को भी खाली और कुण्ठित बनाएगा, और परमेश्वर ने जो उसे वरदान दिया है उससे बाहर सेवा की रिहाई पाने का व्यर्थ प्रयास करेगा।
यदि हम इस सेवक के वरदान की कमी के कारण कलीसिया के रोगी सदस्यों को बिना देखभाल के छोड़ दें, तो हमारे पड़ोस में हमारी गवाही नष्ट होगी। और जब अविश्वासी हमें अपने सदस्यों की सेवा और देखभाल नहीं करते हुए देखेंगे, तो सुसमाचार का संदेश उनके मन में अमान्य ठहरेगा।

एक अच्छी नेकनामी

सेवा करनेवाले की सेवा कीमती और सच में आत्मिक दोनों है, और मसीह की गवाही का एक महत्त्वपूर्ण भाग है। सेवा करनेवाला इस सेवा में अपने आप को आनन्द और भरोसे के साथ लगाए, क्योंकि 'जो सेवक का काम अच्छी तरह से करते हैं, वे अपने लिए अच्छा पद और उस विश्वास में जो मसीह यीशु पर है, बड़ा साहस प्राप्त करते हैं।" (1 तीमुथियुस 3:13)।

सेवा के वरदान का बाइबल का एक उदाहरण

मार्था एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है जिसमें सेवा का प्रेरणात्मक वरदान था। लूका 10:38-42 और यूहन्ना 12:2 इस वरदान के सकारात्मक और सम्भावित नकारात्मक दोनों परिणाम दिखाते हैं:

1. सेवा करनेवाले शब्दों के बजाय कार्यों से पूर्ति पाते हैं।
2. "मार्था सेवा करती थी।" सेवा करनेवालों में काम स्वयं करने की एक प्रवृति होती है।
3. सेवा करनेवाले सामान्यतः न तो संगठक और न आगे बढ़ानेवाले होते हैं। वे निर्देशों का पालन करने में अच्छे होते हैं।
4. "मार्था सेवा करते करते घबरा गई।" सेवा करनेवाले अक्सर चीजों में अधिक उलझ जाते और परेशान हो जाते हैं। और वे नए कार्यों को 'नहीं' कहना कठिन अनुभव करते हैं (लूका 10:40-41)।
5. सेवा करनेवाले सेवा करने में इतने व्यस्त हो सकते हैं कि उनके आत्मिक जीवन की उपेक्षा कर सकते हैं (लूका 10:42)।
6. परन्तु....सेवक महत्त्वपूर्ण हैं, किसी भी कलीसिया के कार्य के लिए आवश्यक हैं।

सिखाने का प्रेरणात्मक वरदान

आय. 7 – शिक्षक (सत्य का प्रदाता)

यह रचनात्मक वरदान समझ पर केन्द्रित होता है। इस वरदान वाले विश्वासी सत्य और सिद्धान्त को स्पष्ट करने, और सत्य के अर्थ और उपयोग की व्याख्या करने का प्रयास करेंगे। वे ज्ञान प्रदान करने और दूसरों को सत्य की समझ में ले चलने की इच्छा रखेंगे। सत्य की खोज करना और उसकी अभिपुष्टि करना इस वरदान से प्रेरितों के लिए उतना ही सार्थक होगा जितना दूसरों को इसे वास्तव में प्रदान करना होगा (1 तीमुथियुस 5:17)।

कलीसिया – और संसार में आवश्यक

कुछ विश्वासी महसूस करते हैं कि एक शिक्षक होना एक छोटा वरदान है और इसकी चाह नहीं करनी चाहिए। फिर हम से कितनों ने एक शिक्षक से कुछ कीमती सीखा है? आप यह शिक्षा पढ़ पा रहे हैं क्योंकि किसी ने आपको पढ़ना सिखाया है! यह बिरले ही होता है कि संसार शिक्षकों पर ध्यान देता है, परन्तु अधिकाँश सभ्यता शिक्षक जो करते और कहते हैं उस पर निर्भर करती है।

कलीसिया के प्रभु और सबसे महान शिक्षक, यीशु मसीह ने यह वरदान हमें दिया है क्योंकि कलीसिया को - आपको और मुझे - इसकी आवश्यकता है। परमेश्वर के राज्य में कोई छोटे वरदान या छोटे लोग नहीं हैं।

सिखाने के वरदान का बाइबल का उदाहरण

अपुल्लोस सिखाने के प्रेरणात्मक वरदान का एक उत्तम उदाहरण है (प्रेरितों 18:24-28; 1 कुरिं. 3:3-6):

1. शिक्षक 'सींचता' है (1 कुरिं. 3:6) - यानि, कलीसिया (विश्वासियों) को बढ़ने में सहायता करता है।
2. अपुल्लोस 'एक विद्वान पुरुष' था, यानि, एक वक्ता के रूप में वरदान पाया हुआ था।
3. अपुल्लोस 'पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह जानता था'। शिक्षकों को उनकी शिक्षा, और उनके उदाहरण और चित्र पवित्रशास्त्र पर आधारित करने है।
4. अपुल्लोस 'यीशु के वचन ठीक ठीक सुनाता और सिखाता था।' शिक्षक सामान्यतः वस्तुनिष्ठ होते हैं और किसी विषय पर बोलने से पहले सम्पूर्ण रूप से उसकी खोज करेंगे।
5. अपुल्लोस को प्रिस्किल्ला और अक्विला ने 'परमेश्वर का मार्ग और भी ठीक टीक बताया।' पवित्रशास्त्र कहते हैं कि शिक्षकों को भी शिक्षणीय होना चाहिए।
6. अपुल्लोस ने 'उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था।' शिक्षक तत्त्व (बुनियादी पवित्रशास्त्र) प्रदान करते हैं जिस पर अनुभव रखा जाता और पक्का किया जाता है। अपने आप से अनुभव मिट जाएंगे; वचन पर आधारित अनुभव स्थाई हैं।

उपदेश देने का प्रेरणात्मक वरदान

आय. 8 – उपदेशक (प्रोत्साहन के पुत्र)

जैसे सिखाने का लक्ष्य समझ होती है, उसी प्रकार उपदेश का लक्ष्य हृदय, विवेक और इच्छा-शक्ति होती है। एक विश्वासी के द्वारा कार्य करता हुआ यह वरदान दूसरों को उनके सम्पूर्ण आत्मिक परिपक्वता में आने के लिए आग्रह करेगा। इस वरदान का कार्य अक्सर उनकी ओर होता है जो कठिन परिस्थितियों और दुखी संकटों में हैं। उपदेश का प्रेरणात्मक वरदान दूसरे वरदानों, जैसे कि सिखाना, और भविष्यद्वाणी और प्रेरिताई सेवा के वरदानों के साथ मिलकर अच्छी तरह कार्य करता है (1 तीमु. 4:13; तीतुस 1:9; 1 कुरिं. 14:3; प्रेरितों 4:36)।

एक उपदेशक व्यक्तिगत विश्वासियों और सारी कलीसिया दोनों को धैर्यवान सहनशीलता, भाईचारे, और भले कामों के लिए उत्तेजित और प्रेरित करेगा (इब्रा. 3:13; 10:23-25)। उपदेशकों में दूसरों के विश्वास और व्यक्तिगत बढ़त को प्रेरित करने की महान योग्यता होती है।

उपदेश देने के वरदान के बाइबल के उदाहरण

बरनबास उपदेशक के वरदान, और कि यह वरदान उसके प्रेरिताई के साथ मिलकर कैसे कार्य किया था का एक उत्तम चित्रण है:

1. 'बरनबास' का अर्थ 'प्रोत्साहन या शान्ति का पुत्र' है (प्रेरितों 4:36)।
2. उपदेशकों के पास एक प्रोत्साहक संदेश होता है, यानि कि प्रभु के पीछे दृढ़-संकल्प के साथ चलें (प्रेरितों 11:22-24)।
3. उपदेशकों का संदेश विश्वासियों के प्राणों को मजबूत करता और विश्वास में बने रहने के लिए उन्हें आग्रह करता है (प्रेरितों 14:20-22)
4. उपदेशक सामान्यतः लोगों के विषय में सकारात्मक होते हैं और सरलता से उनके लिए आशा छोड़ते नहीं - जब दूसरों ने छोड़ दी होती है (प्रेरितों 9:26-27)।
5. उपदेशकों के पास लोगों को पहचानने की योग्यता होती है कि वे उनके आत्मिक बढ़त में कहाँ हैं और उस स्तर पर उनसे बात करते हैं (प्रेरितों 11:22-24)।
6. एक उपदेशक के लिए एक सकारात्मक रवैया बनाए रखना आवश्यक है।
7. यदि बरनबास ने प्रेरितों को शाऊल (पौलुस) को स्वीकार करने या पौलुस को मरकुस को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया होता तो लगभग आधा नया नियम - मरकुस का सुसमाचार और पौलुस के पत्र - कभी लिखे नहीं जाते (प्रेरितों 15:37-39; 1 तीमुथियुस 4:11 देखो)।

देने का प्रेरणात्मक वरदान
आय. 8 – देनेवाला (सम्पत्ति से सहायता करना)

इस वरदान में सम्पत्ति के साथ सहायता करने की विशेष योग्यता - और इच्छा - होती है। जिस देने की यहाँ चर्चा की जा रही है वह व्यक्तिगत साधन हैं - कलीसिया की चीजों को बाँटने की बात नहीं है। यह वरदान होने के लिए आपको अमीर होना जरूरी नहीं। परन्तु, ऐसा जान पड़ता है कि जिनके पास यह प्रेरणात्मक वरदान होता है उनके पास अक्सर भरपूर साधन होते हैं। ऐसा जान पड़ता है कि जितना अधिक वे देते हैं उतना अधिक उनके पास होता है। उनके पास चीजें संचय करने, सम्भालने और बाँटने की अनुकूल योग्यताएँ भी होती हैं। वे परमेश्वर के काम की आवश्यकताओं को पूरा होते और दूसरों की सेवा को सफल होते देखने की एक गहरी इच्छा में से देते हैं।
सब विश्वासी, और विशेषकर कलीसिया या सेवा के अगुवों को दशमांश और दान देना चाहिए। परन्तु जिनके पास देने का विशेष वरदान है अतिरिक्त उदारता से देंगे - तब भी जब गरीबी और तंगी में हैं (मरकुस 12:41-44)।

अभिप्राय की शुद्धता
'उदारता' शब्द यूनानी शब्द 'Iaplotetes' से मिलता है। इस शब्द का यहाँ पर अर्थ है, एकनिष्ठ हृदय, अभिप्राय या उद्देश्य की शुद्धता। क्योंकि देना व्यक्तिगत साधनों का होता है, देनेवाले का इसमें कुछ भी स्वार्थी अभिप्राय नहीं होना चाहिए। कभी-कभी अमीर एक दान देंगे और अपेक्षा करेंगे कि बदले में अपने लिए कोई प्रभाव या लाभ कमा सकें। ऐल्डर या प्रमुख पास्टर ऐसा कभी नहीं होने दे (याकूब अध्याय 2 देखो)। यदि एक अभिप्राय प्रतीत होता है तो अगुवाई देनेवाले को स्पष्ट कर दे कि उसे कोई भी लाभ नहीं मिलेगा। यदि देनेवाला समझता नहीं या सहमत नहीं होता, तो दान इन्कार कर दिया जाना चाहिए। परमेश्वर आपकी आवश्यकताओं को दूसरे साधन से पूरी करेगा। [उदाहरण के लिए, परमेश्वर अभिप्रायों के विषय में कैस महसूस करता है, प्रेरितों 5:1-11 में हनन्याह और सफीरा की कहानी पढ़िए।]

देनेवाले का एक बाइबल का उदाहरण
अब्राहम का जीवन इस वरदान के कार्य में हमें कुछ अन्तर्दृष्टि देता है:

1. देनेवालों को परमेश्वर अनेक चीजें सौंप सकता है (उत्पत्ति 13:1-2)।
2. देनेवाले एक उदार और दानी स्वभाव के होते हैं (उत्पत्ति 13:9-10)।
3. देनेवाले उनकी सम्पत्ति की सुरक्षा में बहुत उत्साही और उपायी हो सकते हैं (उत्पत्ती 14:14-16)।
4. देनेवाले परमेश्वर के काम और कारणों को पहचानते हैं, और अनुकूल हैं (उत्पत्ति 14:18-20 - मलिकिलिदक और दशमांश)।
5. देनेवाले अच्छी तरह समझते हैं कि उनके धन का स्रोत परमेश्वर है, और उसे महिमा देते हैं (उत्पत्ति 14:22-24)।
6. परमेश्वर देनेवालों को सही समय पर सही स्थान पर रखता है।

अगुआई करने का प्रेरणात्मक वरदान
आय. 8 – सेवक अगुवा – (अगुआई)

"अगुआई करे" के लिए यूनानी शब्द 'ho proistemi' है। इसका अर्थ है: "जिसे आगे रखा गया है", और अधिकार और जिम्मेवारी के पद का संकेत देता है। इन में से दोनों परमेश्वर के राज्य में साथ-साथ चलते हैं और एक सेवक के हृदय द्वारा मन्द किए जाते हैं। इस शब्द द्वारा वर्णन की गई 'अगुआई' को साधारण प्रबंधकौशल नहीं समझा जाना चाहिए। न ही यह एक वरदान की वर्णन करता है जो व्यक्ति को एक विशिष्ट सार्वजनिक सेवा में रखता है। बल्कि, देह के भले के लिए अगुआई का संकेत देता है जिसमें व्यक्तिगत जिम्मेवारी की एक भावना है। इसलिए, 'उत्साह से अगुआई' करने का उपदेश है। अनुवाद किया गया शब्द 'उत्साह' का अर्थ है: "तत्पर कार्यक्षमता", 'बिना विलम्ब', 'एक पवित्र शीघ्रता या उत्साह।' इस सब के लिए झुंड की स्थिति से सम्बंधित संयम और सावधानी की आवश्यकता है।

दूसरों के साथ साझेदारी
पौलुस का अगुआई के वरदान का वर्णन उनके विषय में लगता है जिनके पास ऐल्डर का पद है (1 थिस्स. 5:12) या अभिलाषा रखते हैं (1 तीमु. 3:1)। फिर भी, यह प्रेरणात्मक वरदान दूसरे कई सेवा के वरदानों के साथ साझेदारी में कार्य करता है - जैसे कि

प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, पास्टर और शिक्षक। जिनके पास यह वरदान है वे दूसरों के साथ और दूसरों के द्वारा कार्य करके अगुआई करेंगे। वे अक्सर दूसरों को जिम्मेवारी और अधिकार देकर काम करवाएँगे। एक अगुवा कार्य निर्धारित करेगा और अगुआई का सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान करेगा - और लक्ष्य पूरा करने में साथ देने के लिए दूसरों को मुक्त करेगा।

अगुवे के वरदान का बाइबल का उदाहरण

नहेम्याह श्रेष्ठ अगुआई के कौशल और हृदय के अभिप्राय का एक उदाहरण पेश करता है:

1. अगुवों को परमेश्वर के लोगों के उद्देश्य का एक विशेष ज्ञान होता है (नहेम्याह 1:1-4)।
2. अगुवों में, जो काम करना है उसका सर्वेक्षण करने और निर्धारित करने की योग्यता होती है (नहेम्याह 2:12-17)।
3. अगुवों में बड़े लक्ष्यों को छोटे छोटे निष्पाद्य कार्यों में तोड़ने की योग्यता होती है (नहेम्याह 3:1-32)।
4. अगुवे दबाव और विरोध ले सकते हैं और फिर भी चलते रहते हैं (नहेम्याह 4:1-23)।
5. अगुवे दूसरों के लिए चीजें 'सरल' करते हैं और एक व्यक्तिगत बोझ नहीं होते हैं (नहेम्याह 5:14-19)।
6. अगुवे जानते हैं कि दी गई जिम्मेवारी को पूरा करने के लिए अधिकार कैसे सौंपना है (नहेम्याह 7:1-2)।

दया का प्रेरणात्मक वरदान

आय. 8 – दया दिखानेवाला (तरस)

यह वरदान कुछ तरीकों से देनेवाले के प्रेरणात्मक वरदान के समान है। परन्तु, 'दया' शब्द, जो आवश्यकता में हैं उनके लिए एक अधिक सीधी, व्यक्तिगत सेवा सूचित करता है। यह वरदान वाले विश्वासियों में अपने सम्पर्क में आए हुओं की आवश्यकताओं और परेशानियों के साथ पहचान करने की एक योग्यता होगी। इस वरदान में एक व्यावहारिक, दयालु प्रेम होगा। यदि वे बुद्धि और अनुशासन उपयोग करें, तो वे बहुत अच्छे कौंसलर भी बन सकते हैं।

दूसरों में जान डालना

वचन उन्हें उपदेश देता है कि जिनके पास यह वरदान है वे हर्ष के साथ करे। यहाँ एक महत्त्वपूर्ण विचार दिया जा रहा है। दया का काम अक्सर कठिन हो सकता है, अप्रिय भी हो सकता है क्योंकि दया दिखानेवाले लोगों की उनकी बुरी स्थिति में सेवा करते हैं। समय के साथ, यह दया दिखानेवाले को दूसरों की सहायता करने में दुर्भाव या नाराजगी सो भर सकता है। यह नकारात्मक रवैया दया का उद्देश्य पराजित करता है। एक हँसमुख दया बीमार, प्राण में चोट खाए या निराश लोगों में जान डाल देती है। एक दुर्भाव वाली, अनिच्छुक दया पीड़ित व्यक्ति को तुच्छ महसूस करवाएगी। प्रसन्नचित रहने का सबसे उत्तम तरीका उसके पास जाना है जिसकी दया "प्रति भोर नई होती रहती है" (विलापगीत 3:22-23) और रोजाना उसके आत्मा से भरते रहना है। दया से भरे विश्वासी तब अच्छी तरह काम करते हैं जब वे रोजाना के आधार पर वचन और प्रार्थना द्वारा अपने आपकी उन्नति करते रहते हैं।

दया के वरदान का बाइबल का एक उदाहरण

लूका 10:29-37 में अच्छे सामरी के अलावा बाइबल में (परमेश्वर के अलावा) दया का कोई बेहतर उदाहरण नहीं हो सकता है:

1. दया दिखानेवालों में चोट खाए हुओं के लिए बड़ा तरस होता है (आय. 33)।
2. "उसने उसके पास आकर" (आय. 34)। दया दिखानेवाले टूटे हुए और जरूरतमंदों के पास खिंचे आते हैं।
3. दया दिखानेवाले उपयोगी तरीके से काम करते हैं: जो करने की आवश्यकता होती है वह करने के लिए और यदि आवश्यक हो तो अपने हाथ गंदे करने के लिए के लिए तैयार रहते हैं, जैसे सामरी ने पाड़ित के घावों पर पट्टियाँ बाँधीं और "उसकी सेवा टहल की" (आय. 34)।
4. दया दिखानेवाले लोगों की उपयोगी जरूरतों की ओर संवेदनशील होते हैं: सामरी ने पीड़ित का खर्चा उठाया (आय. 35)।

दया दिखाना काफी व्यक्तिगत असुविधा में डाल सकता है - फिर भी बड़ी पूर्ति लाता है। सबसे महत्त्वपूर्ण, दया के कार्य दूसरों को हमारे दयालु परमेश्वर का सच्चा हृदय दिखाते हैं।

प्रेरणात्मक वरदानों का एक सरसरी तुलना

हर प्रेरणात्मक वरदान की अनोखे विशेषता का अध्ययन करने के साथ, आओ हम देखें कि एक परिकल्पित स्थिति में ये वरदान कैसे कार्य करेंगे।
सात लोग एक मेज पर बैठे भोजन कर रहे हैं। ये सात लोग उनके जीवन में विभिन्न वरदानों से प्रेरित हैं। एक का झुकाव सेवा की ओर है तो दूसरे का देने की ओर आदि। किसी की कोहनी एक गिलास को लगती है और गिलास मेज पर से नीचे गिर पड़ता है और टूट जाता है।

सातों एक विभिन्न तरीके से प्रतिक्रिया दिखाते हैं:

1. **अनुभव** करनेवाला (भविष्यद्वाणी वाला व्यक्ति) कहता है: "मुझे पता था यह होने वाला है।"
2. **सेवा** करनेवाला (सेवक) कहता है: "लाओ, मैं साफ कर देता हूँ।"
3. **शिक्षक** कहता है: "अब, हम इसमें से एक सबक सीख सकते हैं। यदि आपने गिलास सही जगह पर रखा होता...।"
4. **उपदेशक** (प्रोत्साहक) उस व्यक्ति की ओर मुड़ता है जिसने गिलास गिराया है और कहता है: "बुरा मत मानो - यह सम्भवतः दोबारा नहीं होगा।"
5. "और चिन्ता मत करो," **देनेवाला** कहता है, "मैं इसकी कीमत चुका दूँगा।"
6. इसी बीच, **अगुवा** स्थिति को नियंत्रण में करता है, वेटर को साफ करने और दूसरा पानी का गिलास लाने को कहता है।
7. **दया** वाला व्यक्ति कहता है, "अरे, बड़ा बुरा हुआ। मुझे आशा है तुम अब ठीक हो।"

जैसे यह साधारण उदाहरण दिखाता है, हर व्यक्ति अपने अनोखे वरदान के कारण:
एक स्थिति को दूसरों से जिनका भिन्न प्रेरणात्मक वरदान है, एक विभिन्न दृष्टिकोण से देखेगा, और
उस स्थिति की ओर दूसरों से जिनका भिन्न वरदान है, एक भिन्न तरीके से प्रतिक्रिया दिखाएगा।
याद रखने के लिए यह महत्त्वपूर्ण बात है कि: हालाँकि हर वरदान अनोखा है, फिर भी सब वरदान एक साथ कार्य करने के लिए बनाए हैं। परमेश्वर ने उन्हें पारस्परिक, अन्योन्याश्रित बनाया है। दूसरे शब्दों में, उन्हें वह सबकुछ जो मसीह ने अपने देह - कलीसिया - के लिए इच्छा की है पूरा करने के लिए एक दूसरे की आवश्यकता है।

प्रेरणात्मक वरदानों के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त

जैसे हम ने वरदानों का साथ में अध्ययन किया है, तो सम्भवतः आपको प्रकट हो गया है कि यीशु मसीह अपने जीवन और सेवा में इन में से हर एक वरदान का सिद्ध साकार है (कुलुस्सियों 1:19; 2:9; इब्रानियों 1:3 देखो)। आशा की गई है कि वचन से यह भी प्रकट है कि हर विश्वासी में कम से कम एक वरदान है जिसमें वह प्रेरित है (1 पतरस 4:10); और इन वरदानों का उद्देश्य यह है कि मसीह की देह लाभ पाए (इफिसियों 4:16; 1 कुरिन्थियों 12:7; 14:12 देखो)। प्रेरणात्मक वरदानों पर विचार करने हुए, यह याद रखना आवश्यक है कि परमेश्वर इन वरदानों को हम में बनाता है। परन्तु, जैसा सब वरदानों के साथ है, उनका ठीक-ठीक कार्य करने के लिए मसीह का प्रभुत्व हमारे जीवनों में आवश्यक है। हमें इन वरदानों की उपेक्षा नहीं करनी है (1 तीमु. 4:14) परन्तु उलटे "प्रज्वलित" करना है (2 तीमु. 1:6) कि परमेश्वर उनको उसकी महिमा के लिए उपयोग कर सके। क्योंकि प्रेरणात्मक वरदान महत्ता और कीमत में बराबर हैं, हमें सदा विभिन्न वरदानों द्वारा दिखते दूसरे संदर्शों के लिए स्थान बनाना चाहिए। हम तब ही एक सन्तुलित और स्वस्थ्य देह हो सकते हैं जब हम में हर एक अपना भाग पूरा करता है। तब हमें, सबकी भलाई के लिए, हर दूसरे भाग को उनका योगदान देने देना है।

अध्याय 2 – पाँच सेवा के वरदान

पुत्र के वरदान (इफिसियों 4:7-11)

कलीसिया को क्या आवश्यकता है

मसीह की देह, कलीसिया एक परमेश्वर द्वारा विहित जीव है, न कि मनुष्य द्वारा बनाई एक संस्था है। यह एक जीवित, क्रियाशील, बढ़ती आत्मिक देह है। क्योंकि यह सत्य है, इसलिए कलीसिया को परमेश्वर द्वारा दी गई योग्यताएँ चाहिए जो परमेश्वर द्वारा नियुक्त सेवक-अगुवों को दी गई हों। हम कलीसिया की आवश्यकताओं को मानवीय शक्ति और बुद्धि द्वारा पूरा करने का प्रयास कर सकते हैं - परन्तु हम असफल होंगे। हम पवित्र आत्मा के अभिषक को हमारे अपने ज्ञान, निपुणताओं या चालाकी से बदलने का प्रयास कर सकते हैं। परन्तु यह चीजें परमेश्वर की इच्छा स्थापित करने और उसका जीवन उसके लोगों को देने के लिए कभी भी पर्याप्त नहीं होंगी। हमारा प्रभु शिक्षा के विरुद्ध नहीं है (नीतिवचन 4:7)। वह जानता है कि शैक्षिक उपलब्धी अपने में अपर्याप्त है (जकर्याह 4:6; 1 कुरिं. 8:1)।

नए नियम में देखा गया नमूना यह है कि परमेश्वर किसी भी पुरुष या स्त्री को सामर्थी रूप से उपयोग कर सकता है, चाहे वे शिक्षित हैं (जैसे, पौलुस, अपुल्लोस, लूका, मत्ती) या नहीं (जैसे, पतरस, याकूब, यूहन्ना)। यदि उनके हृदय और जीवन उसकी ओर और उसके आत्मा की ओर सम्पूर्ण रूप से समर्पित हैं तो वह उन्हें उपयोग करेगा।

पहली सदी की कलीसिया और आज की कलीसिया को उसी चीज की आवश्यकता है। उन दोनों को अलौकिक रूप से चुने, ईश्वरीय रूप से सज्जित किए, सेवक-हृदय वाले अगुवे चाहिए।

अ. यीशु सेवा के वरदानों को साकार करता है

कलीसिया के सिर, यीशु मसीह ने कलीसिया को वह सबकुछ दिया है जिसकी उसे आवश्यकता है। यह सेवक-अगुवा वरदान जो यीशु ने कलीसिया को दिया है पाँच सेवा वरदानों पर आधारित है। उनकी सूची इफिसियों 4:11 में है, "उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया।"

ये पाँच सेवा के वरदान प्रभु कुछ लोगों को अलौकिक रूप से देता है। ये वरदान मसीह का व्यक्ति और सेवा प्रतिबिम्बित करते हैं। विचार करो कि:

1. यीशु प्रेरित है

"इसलिए हे पवित्र भाइयो, तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं, ध्यान करो।" (इब्रानियों 3:1)

2. यीशु भविष्यद्वक्ता है

"यीशु नासरी के विषय में.... काम और वचन में सामर्थी भविष्यद्वक्ता था।" (लूका 24:19)

3. यीशु सुसमाचार प्रचारक है

"और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खींचूँगा।" (यूहन्ना 12:32)

4. यीशु पास्टर है

"अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है।" (यूहन्ना 10:11)

5. यीशु शिक्षक है

"हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू हो कर आया है, क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता।" (यूहन्ना 3:2)

यीशु इन सब सेवा के वरदानों की पूर्णता और मूर्त रूप है।

आ. कलीसिया को दिए गए पाँच सेवा के वरदान (इफि 4:7-11)

"पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है। इसलिए वह कहता है : 'वह ऊँचे पर चढ़ा और बन्दियों को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।' (उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया कि सबकुछ परिपूर्ण करे)। उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया।" यह परिच्छेद स्पष्ट करता है कि पिता की दाहिनी ओर सिंहासन पर बैठने के लिए (इफि. 1:20-23) स्वर्ग में चढ़ने के बाद (प्रेरितों 1:9), यीशु ने इन पाँच सेवा के वरदानों को कलीसिया को बाँट दिया। इन सेवा के वरदानों में से हर एक मसीह की अपनी सम्पूर्ण सेवा की आंशिक अभिव्यक्ति हैं। कोई एक व्यक्ति यीशु की सम्पूर्ण सेवा को ले नहीं सकता है। ये पाँच सेवा के वरदान हाथ की पाँच अंगुलियों के समान हैं। जब उनमें से कोई गायब हो या वे साथ मिलकर काम न करें, तो हमारी योग्यताएँ कमजोर हो जाएँगी।

पवित्रशास्त्र के इन वचनों से तीन महत्त्वपूर्ण सत्य निकलते हैं:

1. पाँच सेवा के वरदान केवल मसीह ने दिए हैं
वे मानवीय नियुक्ति या योग्यता से नहीं दिए जा सकते हैं। ये वरदान किसी भी व्यक्ति को जो उन्हें पाना चाहता है, नहीं दिए या लिए जा सकते हैं। ये पाँच सेवा के वरदान केवल मसीह ही दे सकता है। वही इन वरदानों को देता और समर्थ करता है।

2. पाँच सेवा के वरदान अनुग्रह से कार्य करते हैं
ये वरदान केवल पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन, नियंत्रण और सामर्थ्य में ही उचित रूप से कार्य करेंगे। यह परमेश्वर का आत्मा है जो परमेश्वर के अनुग्रह को हमारे जीवनों में लगाता है। परमेश्वर के वरदान पवित्र आत्मा का हमारी अगुआई और मार्गदर्शन किए बिना सम्पूर्ण रूप से या उचित रूप से कार्य नहीं कर सकते हैं।

3. पाँच सेवा के वरदान
सेवा के वरदानों के लिए सेवक के हृदय की आवश्यकता है। ये पाँच वरदान - प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर और शिक्षक - उपाधियाँ नहीं हैं। उन्हें नए नियम में उपाधियों के रूप में उपयोग नहीं किया गया था। उन्हें वास्तव में काम के वर्णन के रूप में कलीसिया में सेवा की एक भूमिका चित्रित करने के लिए उपयोग किया गया था।
मसीह के अपने शब्द याद रखो जिनसे उसने अपनी सेवा का वर्णन किया था, "जैसे कि मनुष्य का पुत्र; वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे।" (मत्ती 20:28)। आओ हम उपाधियों और बड़े बड़े पदों को लेने के चक्कर में न रहें। बल्कि, हमारा भी स्वभाव वैसा ही हो जैसा यीशु मसीह का था (फिलि. 2:1-8), और दूसरों की सेवा की इच्छा हो।

इ. पाँच सेवा के वरदानों का उद्देश्य

हम जानते हैं कि कलीसिया की उन्नति और मसीह की महिमा में मसीह की देह के सब सदस्यों को उनकी भूमिका निभानी है। फिर भी, स्वर्ग पर चढ़े मसीह ने इन पाँच सेवा के वरदानों को एक विशेष उद्देश्य से दिया है, जैसा इफिसियों 4:12 में हमारे लिए वर्णन किया गया है। "जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।" पाँच सेवा के वरदानों का उद्देश्य का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है: "परमेश्वर के लोगों को सेवा के कार्यों के लिए तैयार करना, ताकि मसीह की देह उन्नति कर सके।"
मसीह सेवा के वरदान कुछ विश्वासियों को इसलिए नहीं देता कि वे खुद सेवा के कार्य कर सकें - परन्तु इसलिए कि वे दूसरे विश्वासियों को सेवा के कार्यों के लिए भी तैयार करें। प्रेरित पौलुस ने भी सेवा का कार्य खुद करने का प्रयास नहीं किया; असल में, उसने पूरे तीन पत्र तीमुथियुस और तीतुस को: (1) सेवा के कार्य करने, और (2) दूसरों को सेवा के कार्य करने के लिए तैयार करने के लिए लिखे थे (1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस देखो)।
कुछ विश्वासियों के पास प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचारप्रचारक, पास्टर, शिक्षक के विशेष सेवा के वरदान हैं जो दूसरे विश्वासियों के पास नहीं हैं। परन्तु सब विश्वासियों को कलीसिया को बनाने और परमेश्वर के लोगों की उन्नति करने में करने के लिए एक सेवा है।

सब विश्वासियों को इन तीन क्षेत्रों में सेवा करनी है: ऊपर की ओर, अन्दर की ओर और बाहर की ओर:

1) ऊपर की ओर: प्रभु की सेवा - आराधना (भजन 150:6; इफि. 5:19)।
2) अन्दर की ओर: देह की सेवा - प्रशिक्षण (इफि. 4:16; प्रेरितों 2:42-46)।
3) बाहर की ओर: संसार की सेवा - गवाह (मत्ती 5:13-16; फिलि. 2:15)।

हम में से हर एक पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में चलने, और हमें दी गई सब सेवाओं को रोजाना पूरा करने के लिए अपने आप को समर्पित करे।
आओ अब हम इफिलियों 4:11 के पाँच सेवा के वरदानों में से हर एक पर गहरी नज़र डालें।

प्रेरित की सेवा का वरदान

अ. शब्द का अर्थ

"प्रेरित" शब्द (यूनानी - apostolos) का असली अर्थ है: "जिसे भेजा गया है।" उस समय की यूनानी संस्कृति में, यह शब्द चार विभिन्न तरीकों से उपयोग किया जाता था:

1. एक राजदूत के लिए - कोई जो उसकी सरकार का प्रतिनिधि है।
2. जहाजों का एक बेड़ा जिन्हें एक नई बस्ती स्थापित करने के लिए भेजा गया है।
3. नौसेनापति जिसका इस बेड़े पर अधिकार है।
4. बस्ती जिसे नौसेनापति ने स्थापित किया था।

चारों मामलों में, जिन्हें "भेजा" गया था "भेजनेवाले" की इच्छा पूरी करने में विश्वासयोग्य थे।

<u>इसलिए, एक प्रेरित एक लक्ष्य वाला व्यक्ति है। उसका लक्ष्य उसका प्रतिनिधि होना और उसकी इच्छा पूरी करना है जिसने उसे भेजा है। एक प्रेरित एक ऐसा व्यक्ति है जो दूसरे की ओर से बोलता और कार्य करता है। उसे उस उद्देश्य को मन में रखकर भेजा गया है।</u>

भेजनेवाले और भेजे गए के बीच सम्बंध

"भेजनेवाले" और "भेजे गए" में यह विशेष बन्धन महान प्रेरित, यीशु की सांसारिक सेवा में स्पष्ट रूप से देखा गया था। उसे पता था कि इस संसार में उसका कार्य उसके पिता को चित्रित करना और उसकी इच्छा पूरी करना है। "क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूँ....क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं कीं; परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूँ और क्या क्या बोलूँ। इसलिए मैं जो कुछ बोलता हूँ, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूँ।" (यूहन्ना 6:38; 12:49-50)। यह दिलचस्प बात है कि यीशु ने अपने चेलों को "प्रेरित" कहने का फैसला किया। वे उसके राजदूत बनने वाले - उसे यहाँ पृथ्वी पर चित्रित करने वाले थे। वे एक नई "बस्ती" - कलीसिया - स्थापित करनेवाले थे। यह परमेश्वर के राज्य के अधिकार द्वारा समर्थन पाई एक राजकीय बस्ती होगी। कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर की इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी होगी। "जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ" (यूहन्ना 20:21)। "जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है" (मत्ती 10:40)। "...और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे" (मत्ती 16:18)। "(तुम) प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो" (इफि. 2:20)।

आ. नए नियम में प्रेरितों के स्तर

नए नियम में प्रेरिताई सेवा के चार मुख्य स्तर हैं। इन चार समूहों में से, दो अब सक्रिय नहीं हैं। फिर बी, ये दो आज की प्रेरिताई कार्यों के आधार बनते हैं।

प्रेरिताई सेवा के चार मुख्य स्तर या समूह इस प्रकार हैं:

1. यीशु मसीह

यीशु प्रमुख प्रेरित था और है: "इसलिए हे पवित्र भाइयो, तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं, ध्यान करो।" (इब्रानियों 3:1)। उसे स्वर्ग से पृथ्वी पर उसके पिता की इच्छा पूरी करने को भेजा था (यूहन्ना 3:16, 20-21 देखो)। वह अपने पिता को हमारे लिए चित्रित करने आया था। उसने अपने पिता की ओर से बोला और कार्य किया। वह सारे संसार के लिए एक सच्चा और विश्वासयोग्य "राजदूत" था (यूहन्ना 4:34; 5:19; 5:30; 6:38; 8:28, 29, 42; 12:44-45 देखो)।

2. मेम्ने के बारह प्रेरित

यीशु ने बारह चेलों को सारी रात प्रार्थना करने के बाद चुना था। उन्होंने यीशु की सांसारिक सेवा के दौरान उसकी सेवा की और उसने उन्हें सिखाया। उन्हें मेम्ने के "प्रेरित" कहा जाता है और स्वर्ग में - और अनन्तकाल में - उनका एक विशेष स्थान है। उनके नाम पवित्र नगर की बारह बुनियादों पर लिखे हुए हैं (प्रकाशित. 21:14)। इन बारह पुरुषों ने परमेश्वर के मनुष्य के साथ कार्य के

नए युग का आरम्भ किया। जैसे कलीसिया का युग आरम्भ हुआ भविष्यद्वक्ताओं का युग समाप्त हुआ। (मत्ती 19:28)। पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं ने पवित्रशास्त्र लिखा था। नए नियम में प्रेरितों ने पवित्रशास्त्र लिखा है।

3. उत्तर-स्वर्गारोहण प्रेरित

(स्वर्गारोहण प्रेरित भी कहा जाता है)। जैसे हम ने इफिसियों 4:10-11 में देखा है, यीशु के स्वर्ग में लौटने के बाद, उसने प्रेरितों का एक और समूह दिया था। यह समूह सारी कलीसिया के युग में कार्य करेगा जब तक, "कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ" (इफि. 4:13)। ये प्रेरित मसीह की देह के एक महत्त्वपूर्ण भाग हैं। जब यह सेवा लुप्त होती है तो कलीसिया समस्त अगुआई की कमी की हानि उठाएगी। (1 कुरिं. 12:26-28)।

नया नियम अनेक लोगों के नाम बताती है जो प्रेरितों की इस श्रेणी में आते हैं। हमारे सूची में होंगेः अन्द्रुनीकुस (रोमियों 16:7), यूनियास (रोमियों 16:7), बरनबास (प्रेरितों 14:14), तीतुस (2 कुरिं. 8:23), याकूब (गलातियों 1:19), इपफ्रुदीतुस (फिलि. 2:25), तीमुथियुस (1 थिस्स 1:1; 2:6), सिलवानुस (1 थिस्स 1:1; 2:6), अपुल्लोस (1 कुरिं. 4:6, 9)।

4. जिनकी एक प्रेरित-प्रकार की सेवा है

उनके अलावा जो ऊपर की तीन श्रेणियों में हैं, एक दूसरा प्रेरितों का समूह है। ये सेवा करनेवाले लोग हैं जो कभी कभी कुछ प्रेरित के कार्य करते हैं। उन्हें आवश्यक नहीं प्रेरित कहा जाए, परन्तु वे अक्सर ऐसी सेवा करते हैं। एक अच्छा उदाहरण उन "सत्तर" चेलों का है जिन्हें यीशु ने सेवा के लिए भेजा था (लूका 10:1-17)। कुछ समय के लिए उनके पास वही सामर्थ्य और कार्य थे जो बारह चेलों को दिए गए थे। परन्तु उन्हें "प्रेरित" नहीं बुलाया गया था।

दुर्भाग्यवश, आज की कलीसिया में बहुत से लोग विश्वास नहीं करते हैं कि आज प्रेरित (या भविष्यद्वक्ता) हो सकते हैं। वे केवल मानते हैं कि सुसमाचार प्रचारक, पास्टर और शिक्षक के वरदान आज की कलीसिया में कार्य करते हैं। उनका तर्क यह है कि एक बार पहली सदी में जब कलीसिया स्थापित हो गई थी, तो अब हमें प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की आवश्यकता नहीं है। परन्तु क्या यह पवित्रशास्त्र से सहमत है? बाइबल इफिसियों 4:11-13 में पाँच सेवा के वरदानों का उद्देश्य और कारण स्पष्ट करती है। यह परिच्छेद स्पष्ट रूप से बताता है कि इन पाँच सेवा के वरदानों को तब तक कार्य करना है ("जब तक", आय. 13) हम सब के सबः (1) विश्वास में एक न हो जाएं; (2) परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएँ, और (3) एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएं।

आज की कलीसिया की एक साधारण और बिना-न्याय की जाँच शीघ्र प्रकट करेगी कि हम अभी तक "पहुँचे" नहीं हैं। इसलिए अभी भी प्रेरित के वरदान की आवश्यकता है। परन्तु क्या आज प्रेरित हैं? सबसे पहले यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि कलीसिया एक जीवित, बढ़ता हुआ जीव है और होना चाहिए - एक निर्जीव संस्था नहीं। यह बढ़ती रहती है। कलीसिया की नई सीमाएँ पृथ्वी की छोर तक पहुँच रही हैं। अभी भी लोग "अंधकार में बैठे" हैं जो "बड़ी ज्योति" देखने का इन्तज़ार कर रहे हैं। यीशु अभी भी उन्हें भेज रहा है जो उसके आत्मा के सामर्थ्य और अधिकार में बुलाए और नियुक्त किए गए हैं। उन्हें बाँधना और खोलना, सुसमाचार प्रचार करना, बीमारों को चंगा करना, और मरे हुओं को जीवित करना है - सबकुछ पुनरुत्थान हुए मसीह के सामर्थ्य के द्वारा।

पवित्रशास्त्र, कलीसिया के इतिहास और आधुनिक उदाहरण से प्रश्न का उत्तर हैः हाँ - प्रेरिताई की सेवा आज भी है और होनी भी चाहिए। "प्रेरित" की उपाधि आवश्यक नहीं। यह इसलिए है क्योंकि प्रेरिताई सेवा का प्रमाण एक प्रेरित के परिश्रम से उत्पन्न हुए फल में देखा जाता है - दूसरे शब्दों में, जो काम वह पीछे छोड़ जाता है। पौलुस ने जब कुरिन्थियों की कलीसिया को लिखा तो वह इसे समझता था, "तुम प्रभु में मेरी प्रेरिताई पर छाप हो।" (1 कुरिं. 9:2)।

इ. प्रेरितों की तैयारी

अपनी कलीसिया को बनाने का काम परमेश्वर के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण है। वह चाहता है कि उसके सेवक पूरी तरह सज्जित और तैयार हों। कभी-कभी विश्वासी दूसरों की सेवा करने में इतने उत्सुक होते हैं कि तैयार होने से पहले वे निकल पड़ते हैं। यह सब सम्बंधित लोगों को बहुत हानि पहुँचाता है। जब उसके सेवकों को बनाने की बात होती है तो परमेश्वर उतावली में नहीं है। चरित्र बनाने में समय लगता है। परमेश्वर के आत्मा के स्कूल में प्रशिक्षित होने के लिए समय लगता है। प्रेरित की सेवा की तैयारी में बहुत समय, प्रशिक्षण और परीक्षण लगता है। प्रेरित के बनने में परिपक्वता और अनुभव लगता है। इसमें सफलता और असफलता दोनों होते हैं। यदि हम अपनी कमजोरियों का सामना करना और उन्हें स्वीकार करना सीख लें तो हमारी असफलताएं आशीष बन सकती हैं। अपनी असफलताओं से हमें पता चलता है कि हम परमेश्वर की बुद्धि, अनुग्रह और सामर्थ्य के बिना कितना कम कर

सकते हैं। हमारी असफलताएं वह भूमि है जिसमें से दीनता के खुशबूदार फूल उगते हैं। दीनता दया और समझ उत्पन्न करती है। और प्रेम में समझदारी के साथ अगुआई करने के लिए दोनों की आवश्यकता है।

मूसा इस संसार की बुद्धि में बहुत प्रशिक्षण पाया हुआ था। इसलिए, मूसा को मिस्र में से निकालने के लिए 40 वर्ष लगे - और मिस्र को मूसा में से निकालने में और 40 वर्ष लगे। केवल तब ही वह परमेश्वर के लोगों को प्रतिज्ञा के प्रदेश में ले चलने की महान जिम्मेवारी के लिए तैयार हुआ था। प्रेरित पौलुस के लिए भी यही बात सच थी। स्वभाव और प्रशिक्षण के कारण वह एक घमण्डी और उत्साही फरीसी था। वह परमेश्वर की इच्छा - जैसे उसने इसे देखा, और जैसे उसने सोचा इसे पूरा किया जाना चाहिए - पूरी करना चाहता था। परमेश्वर को उसे दीनता के स्थान में लाने के लिए दमिश्क की सड़क पर मार कर नीचे गिराना पड़ा। तब वह हनन्याह के भविष्यद्वाणी के वचन के द्वारा अपने प्रेरित के बुलावे को स्वीकार करने के लिए तैयार हुआ। परन्तु पौलुस अभी भी तैयार नहीं था। उसे उसके बुलावे को पूरा करने के लिए एक भविष्यद्वाणी के वचन से अधिक की आवश्यकता पड़ी। और इससे पहले वह अपनी प्रेरित की सेवा आरम्भ करने के लिए तैयार होता, उसे कई वर्ष आत्मा के स्कूल और उपयोगी अनुभव में तैयार होने के लिए बिताने पड़े (प्रेरितों अध्याय 8, 9, 11, 13 देखो)।

बरनबास एक पुरुष था जो पिन्तेकुस्त के तुरन्त बाद मसीह में आया था। वह यरूशलेम की कलीसिया में प्रभु का एक दीन, आज्ञाकारी, निस्वार्थ सेवक था। परन्तु कुछ वर्ष के बाद उसे अंताकिया में वहाँ के काम को मजबूत करने के लिए भेजा गया। वह और प्रेरित पौलुस अन्यजाति संसार में जानेवाले पहले मिशनरी ("भेजे हुए") बने (प्रेरितों 4:36-37; 11:22-30; 13:1-3 देखो)।

एक प्रेरित के प्रशिक्षण का महत्त्वपूर्ण भाग

ऊपर के प्रेरितों की पृष्ठभूमि कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य प्रकट करती है।

कुछ महत्त्वपूर्ण चीजें हर प्रेरित के प्रशिक्षण का एक भाग लगती हैं:

1. एक प्रेरित का उसकी सेवा के लिए एक निश्चित बुलावा होगा।
2. एक प्रेरित पवित्रशास्त्र में अच्छी तरह प्रशिक्षित होगा।
3. एक प्रेरित का प्रशिक्षण कई वर्षों की अवधि में हुआ होगा। वह अपने आप को और अपनी सेवा स्थानीय स्तर पर प्रमाणित करेगा। यहीं पर वह परमेश्वर के अनुग्रह, बुद्धि और अनुभव में बढ़ेगा।
4. एक प्रेरित अक्सर दूसरे प्रेरितों की सेवा के अधीन कुछ समय के लिए प्रशिक्षण पाया होगा।
5. प्रेरित तब तक नहीं भेजा जाएगा जब तक उसका प्रशिक्षण पूरा नहीं हो जाता।
6. प्रेरित अक्सर भेजे जाने से पहले, और प्रेरिताई सेवा में कार्य करते समय, परमेश्वर द्वारा दूसरे पाँच-गुणा सेवाओं - भविष्यद्वक्ता, शिक्षक, पास्टर या सुसमाचार प्रचारक - में से एक में उपयोग किया जाएगा।
7. भेजनेवाली कलीसिया प्रेरित के साथ उस पर हाथ रखकर सम्बंध स्थापित करेगी।

ई. एक प्रेरित के लिए योग्यताएँ

ऐल्डरों के लिए आदर्श अधिकार के ऊँचे स्तरों के सब अगुवों पर लागू होंगे (1 तीमु. 3:7; तीतुस 1:5-9)। इसलिए, वे प्रेरित की सेवा में भी लागू होंगे।

ऊपर के सामान्य स्तरों के अलावा, कुछ विशेष योग्यताएं या गुण हैं जो हर प्रेरित में होने चाहिए:

1. एक प्रेरित में एक पिता का हृदय होना चाहिए (1 कुरिं. 4:15; फिलि. 2:22)। एक पिता के समान, वह परमेश्वर के लोगों का मार्गदर्शन करेगा, मुहैया करेगा, सुधार करेगा और सुरक्षा करेगा। वह प्रेम, सामर्थ्य और धैर्य के साथ बुद्धि से सेवा करेगा (इफि. 6:4; 1 थिस्स. 2:6-8, 11)।
2. एक प्रेरित परमेश्वर की कलीसिया की ओर प्रेम और वफादार होना चाहिए। कलीसिया के लिए उसका प्रेम उसकी अपनी सेवा के प्रेम से अधिक होना चाहिए।
3. एक प्रेरित धैर्यवान होना चाहिए (2 कुरिं. 12:12)। वह परिपक्वता और प्रकाशन का व्यक्ति होना चाहिए। इसलिए, उसे उनके साथ धैर्य रखना चाहिए जो मसीह में "शिशु" हैं।
4. एक प्रेरित आत्म-महिमा का भूखा नहीं होना चाहिए (1 कुरिं. 4:9; 2 कुरिं. 10:8; 1 थिस्स. 2:6)। वह लोगों को अपनी ओर नहीं बल्कि प्रभु के पास ले चले।
5. एक प्रेरित में सेवक का हृदय होना चाहिए (इफि. 3:7; फिलि. 1:1)। उसकी दिलचस्पी और इच्छा दूसरों का कल्याण होना चाहिए। उसे दीन, अपने आप का देनेवाला और विश्वासयोग्य होना चाहिए (1 कुरिं. 4:9; 2 कुरिं. 10:18; 11:22-23)।

6. एक प्रेरित दुख उठाने का इच्छुक होना चाहिए (प्रेरितों 20:17-24; 1 कुरिं. 4:7-12; 11:18-30)। उसमें सताव, कठिनाई, अस्वीकृति - और मृत्यु भी - सहने की उत्सुकता होनी चाहिए, और सब समय सुसमाचार फैलाने और नई टिकाऊ कलीसियाएँ स्थापित करने के लक्ष्य को बनाए रखना है।

उ. **एक प्रेरित की सेवा**

बाइबल में दिए प्रेरितों का अध्ययन प्रकट करता है कि वे कई विभिन्न तरीकों से सेवा करते थे।
कुछ कार्य जो उन सब में सामान्य थे, नीचे दिए गए हैं:

1. एक प्रेरित नई कलीसियाए स्थापित करता है और उन्हें उचित नींव पर रखता है (1 कुरिं. 3:9-14; 9:12; 11:34; इफि. 2:2-4)। वह पुरानी मण्डलियों को मजबूत करने और सलाह देने का काम भी करता है (रोमियों 1:11; कुलु. 2:5-7)।
2. एक प्रेरित खरी शिक्षा के विषय में बहुत ध्यान रखता है (प्रेरितों 2:42; 15:1-31)। जहाँ कहीं भी भ्रम पैदा होगा वहाँ वह तुरन्त सुधान लाएगा।
3. एक प्रेरित की सेवा में अक्सर चिन्ह और चमत्कार होते हैं (रोमियों 15:18-19; 2 कुरिं. 12:12)। ऐसे चिन्ह और चमत्कार दिखाते हैं कि परमेश्वर का सामर्थ्य और अधिकार उसके जीवन पर है। नया काम आरम्भ करने के लिए ऐसी सेवा की आवश्यकता होती है।
4. एक प्रेरित आवश्यकता पड़ने पर कलीसिया में अनुशासन लाता है (प्रेरितों 5:1-11; 1 कुरिं. 5)। ऐसे सुधार के काम अक्सर उन कलीसियाओं में होंगे जो उसने स्थापित की हैं।
5. एक प्रेरित नई कलीसियाओं में अगुआई नियुक्त करता है (प्रेरितों 6:1-6; 14:23; तीतुस 1:5)। यह ऐल्डरों, डीकनों और दूसरी सेवाओं के विषय में सच है।
6. एक प्रेरित अक्सर नए कार्यकर्त्ताओं को स्वयं सिखाता और प्रशिक्षित करता है (2 तीमु. 2:2)। इसमें दूसरी कलीसियाओं और स्थानों में विशेष कार्य और आना-जाना सम्मिलित हो सकता है (प्रेरितों 16:1-4; फिलि. 2:19-25; कुलु. 4:7-12)।
7. एक प्रेरित उन कलीसियाओं की दखभाल में सम्मिलित होता है जिन्हें उसने आरम्भ किया है (2 कुरिं. 11:28)। ऐसी सेवा स्थानीय कलीसिया को मसीह की देह के साथ सम्बंध बनाती है।
8. एक प्रेरित नए कार्यकर्त्ताओं को नियुक्त करने के लिए स्थानीय ऐल्डरों के साथ कार्य करता है (रोमियों 1:11; 1 तीमु. 1:18; 4:14; 2 तीमु. 1:6)। इसमें आत्मिक वरदानों और अनुग्रह के लिए उपवास, प्रार्थना और हाथ रखना सम्मिलित होता है।
9. एक प्रेरित परमेश्वर के समस्त परिवार में एक "पिता समान" होता है (1 कुरिं. 4:15)। वह तानाशाह के समान कार्य नहीं करता, बल्कि एक विश्वासयोग्य चरवाहे के समान कार्य करता है जो परमेश्वर के झुँड की निगरानी करता है (1 कुरिं. 16:12; 1 पतरस 5:2)।
10. एक प्रेरित में दूसरे चार सेवा के वरदानों के तत्त्व सम्मिलित हो सकते हैं। इसके कलीसिया आरम्भ करने, नींव रखने, निरीक्षण के कार्य में भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर और शिक्षक की सेवाओं के कुछ तत्त्वों की आवश्यकता पड़ेगी।
    - एक प्रेरित को नए विश्वासी बनाने के लिए एक **सुसमाचार प्रचारक** होना चाहिए।
    - उन्हें खरी शिक्षा देने के लिए उसे एक **शिक्षक** होना चाहिए।
    - उसे ईश्वरीय सामर्थ्य और अधिकार के साथ दिशा और सुधार लाने के लिए एक **भविष्यद्वक्ता** होना चाहिए।
    - उसे एक **पास्टर** होना चाहिए जो नए अभिषिक्त किए अगुवों के काम का निरीक्षण करेगा।

पाँच गुणा सेवाएँ मनुष्य के हाथ के समान हैं। हाथ में चार अँगुलियाँ और एक अंगूठा है। एक प्रेरित अँगूठे के समान है - यह दूसरे चार को सरलता से छू सकता है। फिर भी, प्रेरित की सेवा का वरदान दूसरों से भिन्न और अलग होता है (उदाहरण के लिए प्रेरितों की पुस्तक देखो)।

ऊ. **एक प्रेरित का बुलावा**

एक प्रेरित को कैसे बुलाया जाता है? सबसे प्रथम, एक प्रेरित को परमेश्वर बुलाता है। कोई भी व्यक्ति, यूँ ही अपने बल पर फैसला नहीं कर सकता कि वह अब एक प्रेरित (या एक भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर या शिक्षक) है। परमेश्वर फैसला करता है कि प्रेरित कहाँ, कब और कैसे सेवा करेगा।
उसके बुलावे का कैसे पता चलेगा? उसकी सेवा को कौन पहचानेगा और स्वीकृति देगा?
एक प्रेरित चार तरीकों से जाना और पहचाना जाएगा:

1. उसे अपने बुलावे को जानना, और उसके विषय में निश्चित होना चाहिए।

2. उसकी स्थानीय कलीसिया के अगुवों को उसके जीवन और परमेश्वर के उसके काम को देखकर पता चलना चाहिए कि वह एक प्रेरित है।

3. उसकी अपनी कलीसिया के लोग भी उसके सेवा की प्रेरिताई के गुण पहचान लेंगे।

4. उन कलीसियाओं के लोग जिन्हें उसने स्थापित किया है उसके परिश्रम के फल पर परमेश्वर के विशेष अनुग्रह की बात करेंगे। संक्षेप में, एक प्रेरित के रूप में उसका काम स्वयं बात करेगा।

इसका अर्थ यह नहीं कि वह विश्व भर की कलीसिया में एक प्रेरित के रूप में जाना या स्वीकार किया जाएगा। पौलुस नहीं किया गया था (1कुरिं. 9:1-3)। परन्तु, पौलुस को पता था कि वह एक प्रेरित के रूप में कहाँ स्वीकार किया गया था। और लोग भी जानते थे। पौलुस की सेवा का फल उसकी प्रेरिताई सेवा का प्रमाण था।

मसीह की देह में प्रेरित की सेवा जितना हम जानते हैं उससे कहीं अधिक है। सच में, यह कलीसिया में आज एक अत्यावश्यक सेवा है।

भविष्यद्वक्ता की सेवा का वरदान

पँच-गुणा सेवाओं की दूसरी सेवा भविष्यद्वक्ता की है। यह भी एक ऐसी सेवा है जो कलीसिया को परिपक्वता में लाने के लिए आवश्यक है। दुख की बात है कि भविष्यद्वाणी की सेवा हमारे दिन में ठीक से समझी नहीं गई है। कुछ कहते हैं कि यह सामर्थी प्रचार से अधिक नहीं है। परन्तु, पवित्रशास्त्र से स्पष्ट है कि भविष्यद्वक्ता अच्छे प्रचारकों से कहीं अधिक हैं। उनका मसीह की देह में एक विशेष स्थान और उद्देश्य है।

अ. शब्दों की परिभाषा

पुराना नियम

भविष्यद्वक्ता की सेवा का मूल पुराने नियम में है। "भविष्यद्वक्ता" के लिए दो मुख्य इब्रानी शब्द हैं:

(1) Nabi: पुराने नियम में यह "भविष्यद्वक्ता" के लिए मूल शब्द है। इसका अर्थ "प्रवक्ता" या "वक्ता" है। साधारणतः इसका अर्थ है कि एक भविष्यद्वक्ता एक ऐसा व्यक्ति है जो दूसरे के लिए बोलता है। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता, परमेश्वर के लिए बोलते थे।

(2) Hozeh (कभी-कभी roeh)। इन शब्दों का अर्थ है: "दर्शी", जो "देखना" शब्द में से निकालता है। भविष्यद्वक्ताओं को "संदेशवाहक", "परमेश्वर के सेवक" और "परमेश्वर के जन" कहा जाता था। एक भविष्यद्वक्ता के संदेश को "भविष्यद्वाणी" कहते हैं। परन्तु इसे एक दर्शन, बोझ, वाणी, या "प्रभु का वचन" भी कहते हैं।

नया नियम

यूनानी शब्द 'prophetes' नए नियम में "भविष्यद्वक्ता" के लिए एक ही शब्द है। यह शब्द दो यूनानी शब्दों से मिलता है: 'pro' का अर्थ है "पहले" या "सामने"; और 'phemi' का अर्थ है "अपने विचार दिखाना"। जब ये दो शब्द इकट्ठे किए जाते हैं तो वे भविष्यद्वक्ता की सेवा के वरदान का दो-गुणा कार्य दिखाते हैं:

1. परमेश्वर की ओर से एक वचन कहना (इब्रा. 1:1)।
2. पहले से बताना: परमेश्वर के विचारों को भविष्यद्वाणी के रूप में प्रकट करना।

यह दोनों पवित्र आत्मा द्वारा होनी चाहिए ताकि बाइबल की भविष्यद्वाणियाँ हो सकें।

<u>पहले से बताना दो तरीकों से हो सकता है:</u>

क) भविष्य की घटनाओं को बताना जिसकी जानकारी केवल परमेश्वर को ही होती है (प्रेरितों 21:10-14)

ख) मनुष्य के हृदय के विचारों, अभिप्रायों और उद्देश्यों को प्रकट करना (प्रेरितों 5:3)

Prophetes शब्द का अर्थ: "एक प्रेरित वक्ता" भी हो सकता है। परन्तु नया नियम का ब्योरा संकेत देता है कि भविष्यद्वक्ता की सेवा वाग्मितापूर्ण प्रचार से अधिक है। फिर भी, कभी-कभार प्रचार तब भविष्यसूचक बन जाता है जब एक सत्य या उपयोग पवित्र आत्मा की प्रेरणा में स्वेच्छा से आता है। यह एक पास्टर, शिक्षक या ऐल्डर के साथ भी हो सकता है जिनका भविष्यद्वक्ता की सेवा का वरदान नहीं है।

"भविष्यद्वक्ता" की एक अच्छी व्यवहार्य परिभाषा यह होगी: <u>एक भविष्यद्वक्ता परमेश्वर का हृदय या मन लोगों को प्रकट करेगा और घोषित करेगा, और वह सेवा के समय लोगों का हृदय और विचार परमेश्वर के सामने खोलेगा।</u>

आ. भविष्यद्वाणी के स्तर

पवित्रशास्त्र में कम से कम तीन स्तर की भविष्यद्वाणी हैं। हर स्तर का एक विशेष स्थान और उद्देश्य है।

1. पवित्रशास्त्र की भविष्यद्वाणी (2 पतरस 1:19-20)

पवित्रशास्त्र सबसे ऊँची प्रकार की भविष्यद्वाणी है। यह "परमेश्वर की प्रेरणा से दी जाती है" (2 तीमु. 3:16)। यह प्रारंभिक विवरण में बिना भ्रम के है, और अधिकार में सम्पूर्ण या अन्तिम है। इस स्तर की भविष्यद्वाणी आजकल नहीं दी जाती है (प्रकाशित. 22:18-19)। बाइबल पूर्ण है, और एक स्तर है जिससे सारी भविष्यद्वाणियाँ जाँची जाती हैं।

2. भविष्यद्वाणी का वरदान (1 कुरिं. 2:10)

यह आत्मा के नौ वरदानों में से एक है। यह सब वरदानों के लिए सामान्य निर्देशों के अधीन कार्य करता है। यह एक वरदान है जिसमें कोई भी विश्वासी समय समय पर कार्य कर सकता है (प्रेरितों 2:18)। सामान्य उपयोग में, यह मसीह की देह की उन्नति, उपदेश और शान्ति के लिए है। इससे कुछ भी अधिक भविष्यद्वक्ताओं की सीमा में हो। इस वरदान का उपयोग किसी को भविष्यद्वक्ता नहीं बनाता, जैसे हम शीघ्र ही देखेंगे (गिनती 11:29; 1 कुरिं. 14:24, 31)।

3. भविष्यद्वक्ता की सेवा (रोमियों 12:6; 1 कुरिं. 12:29; इफि. 4:11)

एक भविष्यद्वक्ता की सेवा व्यक्ति के बुलावे से सम्बंधित है। इसका उद्देश्य भविष्यद्वाणी के सामान्य वरदान की सीमाओं के परे है। भविष्यद्वक्ताः पुष्टिकरण, मार्गदर्शन, फटकार, न्याय, सुधार, चेतावनी और प्रकटीकरण के क्षेत्र में कार्य कर सकता है।

इ. भविष्यद्वक्ता की सेवा का आरंभ

सदा से परमेश्वर पृथ्वी पर अपनी आवाज भेजता रहा है। भविष्यद्वक्ता की सेवा के दिए जाने से पहले से वह भक्त अगुवों के द्वारा बोलता रहा है:

1. हाबिल (लूका 11:50, 51)
2. हानोक (यहूदा 14)
3. नूह (इब्रा. 11:7; 2 पतरस 2:5)
4. अब्राहम (उत्पत्ति 20:7)
5. इसहाक (भजन 105:9-15)
6. यूसुफ (उत्पत्ति 50:24)
7. मूसा (व्यवस्था. 34:10)
8. मरियम (निर्गमन 15:20)
9. हारून (निर्गमन 7:1)
10. दाबोरा (न्यायियों 4:4)

परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिए थे जिसके द्वारा सारे भावी भविष्यद्वक्ता परखे जाने थे (गिनती 12:6; व्यवस्था. 18:15-22; यशायाह 8:19-20; लूका 16:29)।

परन्तु भविष्यद्वक्ता की निश्चित सेवा पहले शमूएल के द्वार दी गई थी। वह आखिरी न्यायी और पहला भविष्यद्वक्ता था (प्रेरितों 3:24-25; 13:20; इब्रा. 11:32)।

यह शमूएल था जिसने भविष्यद्वक्ताओं के स्कूल आरम्भ दिए थे (2 राजा 2:3-15)। उसने पुरुषों का एक नया भविष्यसूचक क्रम बनाया था। उन्हें वचन सिखाया गया था। वे परमेश्वर के आत्मा की ओर संवेदनशील थे और वे प्रभु की आराधना आत्मा और सच्चाई से करते थे। हर भविष्यद्वक्ता उस आत्मिक परम्परा में भागी होता है।

इस्राएल के लगभग हर राजा के शासनकाल में, उसे सही पथ पर रखने के लिए एक भविष्यद्वक्ता खड़ा किया गया था। मसीह के आने के 400 वर्षों के दौरान, भविष्यद्वाणी की आवाज बन्द थी। तब यूहन्ना बपतिस्मादाता के होठों से एक भविष्यद्वक्ता की आवाज फिर सुनाई दी थी।

एक बार जब नए नियम की कलीसिया उत्पन्न हुई, भविष्यद्वक्ताओं की बाड़ सी आ गई। प्रेरितों की पुस्तक में कइयों का वर्णन है:

1. यहूदा और सीलास (प्रेरितों 15:32)
2. अगबुस (प्रेरितों 21:10-13)

3. हनन्याह (प्रेरितों 22:12-15)
4. अन्ताकिया में (प्रेरितों 13:1)
5. सूर में (प्रेरितों 21:3-4)
6. यरूशलेम में (प्रेरितों 11:27)
7. कुरिन्थुस में (1 कुरिं. 14:29)

परमेश्वर एक सेवा को लौटा ला रहा था जो एक लम्बे समय से शान्त थी।

ई. मसीहः एक आर्दश भविष्यद्वक्ता

मसीह को परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता कहा था (व्यवस्था. 18:15; प्रेरितों 3:22)। कई लोगों ने उसे भविष्यद्वक्ता के रूप में देखा (यूहन्ना 4:19; 6:14; 7:40; 9:17)। सच में मसीह ही पृथ्वी पर परमेश्वर का चुना हुआ भविष्यद्वक्ता था (इब्रा. 1:1-2)। उसने केवल उन चीजों को कहा जो उसने पिता को कहते सुना था (यूहन्ना 12:49; 14:10, 24; 17:8)। उसने आनेवाली बातों की भविष्यद्वाणी भी की (मत्ती 24:3-51; लूका 11:49)। बेशक, मसीह सबसे बड़ा भविष्यद्वक्ता था। मसीह की सेवा नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं के रूप में उसकी कलीसिया को दी गई थी (इफि. 4:11-13)। वह हम सब के लिए आदर्श या नमूना है।

उ. भविष्यद्वक्ता का कार्य

हमें नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं के विभिन्न कार्यों का पता लगाने के लिए पवित्रशास्त्र में चलना होगा।
<u>हम पाएँगे कि एक भविष्यद्वक्ता की सेवा के विषय में कम से कम सात मुख्य चीजें हैं:</u>

1. एक भविष्यद्वक्ता की सेवा भविष्यद्वक्ता से भविष्यद्वक्ता तक भिन्न होगी

कोई भी दो सेवाएँ बिलकुल समान नहीं होती हैं। इसे भविष्यद्वक्ताओं को दिए गए विभिन्न नामों या उपाधियाँ में देखा जा सकता है: "दर्शी" (1 शमूएल 9:9); "संदेशवाहक" (2 इतिहास 36:16); "परमेश्वर के जन" (1 राजा 12:22); "सेवक" (आमोस 3:7; जकर्याह 1:6)। उन्होंने उनके "प्रकटीकरण" भी भिन्न तरीकों से पाए थे। कुछ ने चाजों को आत्मा में देखा। यहेजकेल, दानिय्येल और जकर्याह ने दर्शन देखे। दूसरे बेसुध हुए - जैसे वे उनके शरीरों को छोड़ गए थे। दानिय्येल, पौलुस और यूहन्ना के इस प्रकार के अनुभव थे। कुछ ने चाजें आत्मा में सुनीं। मीका, यशायाह और दूसरे सुननेवाले भविष्यद्वक्ता थे।
भविष्यद्वक्ताओं ने लोगों को उनके संदेश विभिन्न प्रकार से दिए। कुछ ने परमेश्वर के वचन उसके लोगों को बोले (यशायाह 21:6) या लिखे (यिर्मयाह 30:2)। कुछ ने परमेश्वर के शब्दों को अभिनय करके दिखाया (यहेजकेल 4:1-3; प्रेरितों 21:11)। होशे और योएल के सम्पूर्ण जीवन दृष्टान्त या कहानियाँ थे जिन्हें परमेश्वर का संदेश उसके लोगों तक लाने के लिए उपयोग किया था। इस सब से हम स्पष्ट अनुभव कर सकते हैं कि भविष्यद्वक्ता की सेवा बहुत सारे अन्तर होंगे। सच में, कोई दो भविष्यद्वक्ता एक से नहीं होंगे।

2) नए नियम के भविष्यद्वक्ता की सेवा में प्रकटीकरण सम्मिलित होगा

प्रकटीकरण कई किस्मों के होते हैं:

1) <u>परमेश्वर के मन या शब्द के विषय में अलौकिक अन्तर्दृष्टि</u>

नए नियम के लिखे जाने से पहले, पवित्र आत्मा ने कई प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को कलीसिया स्थापित करने के लिए उपयोग किया था (इफि. 2:20)। इस स्थापना की प्रक्रिया में, परमेश्वर ने प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को उद्धार की योजना और दूसरे सिद्धान्तों को प्रकट करने के लिए उपयोग किया, जो कलीसिया के लिए बुनियादी थे। ये भविष्यद्वाणी के प्रकटीकरण, जो इन प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा लिखे पत्रों के भाग थे, बाद में नए नियम में पत्रों के रूप में मिला लिए गए थे। इफिसियों 3:4-5 का यही अर्थ है, "जिससे तुम पढ़कर जान सकते हो कि मैं मसीह का वह भेद कहाँ तक समझता हूँ, जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रकट किया गया है।"
परन्तु, क्योंकि बाइबल एक पूर्ण रचना है, इसमें न तो कुछ और जोड़ा जा सकता है और न ही निकाला जा सकता है। यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि नए नियम के लेखकों के यीशु के साथ जब वह पृथ्वी पर सेवा कर रहा था, प्रत्यक्ष अनुभव हुए थे (1 यूहन्ना 1:1-4 देखो)। पौलुस इस प्रत्यक्ष अनुभव में एक अपवाद था, परन्तु उसकी जीवित प्रभु के साथ एक सीधी मुलाकात हुई थी (प्रेरितों 9)।

हालाँकि परमेश्वर हमें अपने आत्मा के द्वारा यह जानने में ले चलता है कि कैसे जीना और उसकी कलीसिया बनाना जारी रखना है, फिर भी नए नियम में रेखांकित बुनियादी सिद्धान्त अपरिवर्तनशील हैं।

1 कुरिन्थियों 3:10-11 में, पौलुस घोषित करता है कि परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उसने नींव रखी है और दूसरे इस पर बनाएँगे। परन्तु वे ऐसा ध्यानपूर्वक करें क्योंकि वह "नींव" यीशु मसीह है। एक अच्छी नींव केवल एक बार ही रखी जानी चाहिए (इफि. 2:20-22)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक स्पष्ट चेतावनी के साथ समाप्त होती है कि इसकी विषय-वस्तु को बदला नहीं जाए (प्रकाशित. 22:18-19)। यह परमेश्वर का पवित्र, प्रेरित वचन है और यह सम्पूर्ण है। यही चेतावनी बाइबल की सारी पुस्तकों के विषय में भी उपयोग की जानी चाहिए क्योंकि वे सब परमेश्वर द्वारा प्रेरित और पूर्ण हैं।

आज भी प्रेरित और भविष्यद्वक्ता की सेवा के वरदान कार्य कर रहे हैं। परन्तु, जो कुछ भी उन वरदानों के एक उचित पवित्र आत्मा के संचालन में कहा या किया जाता है, वह कभी भी परमेश्वर के लिखित वचन (बाइबल) के विरोध में नहीं आएगा या अवहेलना करने का प्रयास नहीं करेगा। कुछ भी जो बाइबल का विरोध करता, या अवहेलना करने या जोड़ने का प्रयास करता है, परमेश्वर के आत्मा से नहीं है और अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।

2) <u>लोगों के जीवनों में विशेष अन्तर्दृष्टि</u>

जो तथ्य दूसरों के लिए गुप्त हैं प्रकट किए जाएँगे (प्रेरितों 5:1-11; 1 कुरिं. 14:25)। एक व्यक्ति के हृदय के गुप्त विचारों, उद्देश्यों और अभिप्रायों का प्रकट किया जाना उस व्यक्ति की सेवा के उद्देश्य से है। यह सेवा कोमल हो सकती है या ताड़ना हो सकती है। परन्तु यह भविष्यद्वक्ता को घमण्ड का कारण देने के उद्देश्य से नहीं है, और न ही यह भविष्यद्वक्ता को दूसरों को क्या करना है बताने का कारण दे।

3) <u>भविष्य की घटनाओं में विशेष अन्तर्दृष्टि</u>

अगबुस ने प्रेरितों 21 में, जो पौलुस के साथ यरूशलेम में होनेवाला था, उसके विषय में भविष्यद्वाणी की। परन्तु पौलुस ने उस भविष्यद्वाणी के वचन के परिणामस्वरूप अपनी योजनाओं को नहीं बदला। पौलुस ने उसे जो वह समझता था उसके भविष्य के लिए परमेश्वर की योजना थी, बदला नहीं। अगबुस की भविष्यद्वाणी ने मात्र उसकी पुष्टि की जो पौलुस पहले से जानता था, कि यहूदी यरूशलेम में उसके लिए मुसीबत खड़ी करेंगे। यह हमें सिखाता है कि एक भविष्यद्वक्ता को अगुवों या कलीसियाओं पर नियंत्रण (शासन) नहीं प्रयोग करना चाहिए। एक भविष्यद्वक्ता के शब्दों को उसकी पुष्टि करनी चाहिए जिसे परमेश्वर ने पहले ही बोला या एक व्यक्ति के हृदय में डाला है।

3) एक भविष्यद्वक्ता की सेवा में उपदेश सम्मिलित होगा

"उपदेश" देने का अर्थ है: आग्रह करना, कार्य के लिए उत्तेजित और प्रेरित करना। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता हाग्गै और जकर्याह ने लोगों को टूटे स्थान को बनाने और मन्दिर को पुनःस्थापित करने का उपदेश दिया था (एज्रा 5:1-2; 6:14)। नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के लोगों को उसकी कलीसिया बनाने का उपदेश देना चाहिए (1 कुरिं. 14:3-4; र्फि. 4:11-12)।

4) एक भविष्यद्वक्ता की सेवा में चेतावनी सम्मिलित होगी

परमेश्वर अक्सर उसके भविष्यद्वक्ताओं को कुछ प्रकट करता है ताकि वे उसके लोगों को आनेवाले संकट के विषय में चेतावनी दे सकें। चेतावनी लोगों को भविष्य की घटना के लिए समझदारी के साथ तैयारी करने में सहायता करती है (प्रेरितों 11:27-30; 21:8-11)।

5) एक भविष्यद्वक्ता की सेवा परमेश्वर के लोगों को एक दर्शन प्रदान करेगी

जब परमेश्वर उसके लोगों पर और उनके द्वारा कार्य करना चाहता है तो वह उसके भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा निर्देश देगा। भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के लोगों को उसकी इच्छा और उनके लिए उसके मार्गों के विषय में सूचना देगा और प्रेरित करेगा (नीतिवचन 29:18; आमोस 3:7; इफि. 3:5)।

6) एक भविष्यद्वक्ता की सेवा नई कलीसियाओं को बनाने में कार्य करती है

प्रेरित और भविष्यद्वक्ताओं दोनों का नई मण्डलियों को बनाने में हाथ होता है (इफि. 2:20; 3:5)। वे स्थानीय कलीसियाओं को मजबूत करने और सहयोग देने को जाते हैं (प्रेरितों 15:32, 41)। वे दूसरी सेवाओं को मिशनरी उद्देश्य से भेजने में भी कार्य करते हैं (प्रेरितों 13:1-3)।

7) एक भविष्यद्वक्ता अकसर दूसरे भविष्यद्वक्ताओं (और प्रेरितों) के साथ दल में सेवा करता है

सम्मति देनेवालों की बहुतायत सुरक्षा लाती है (नीतिवचन 11:14)। भविष्यद्वक्ताओं के एक दल की सेवा परमेश्वर के संदेश में सन्तुलन लाता है (प्रेरितों 11:27-30; 13:1)। यह मानवीय भ्रम के विरुद्ध बचाव भी है, क्योंकि भविष्यद्वक्ता एक दूसरे के शब्दों को जाँचेंगे (1 कुरिं. 14:29)।

ऊ. भविष्यद्वक्ता की सेवा के विषय में चेतावनियाँ

पवित्रशास्त्र भविष्यद्वक्ता की सेवा के विषय में दो प्रकार की चेतावनियाँ देता है। एक लोगों के लिए, और दूसरी भविष्यद्वक्ताओं के लिए।

1 – परमेश्वर की उसके लोगों को चेतावनियाँ

अ) भविष्यद्वक्ता की सेवा स्वीकार करो (मत्ती 10:41)।
कभी-कभी एक भविष्यद्वक्ता अपने लोगों में ठीक से स्वीकार नहीं किया जाता है (मत्ती 13:57; मरकुस 6:4)। यह दुख की बात है क्योंकि भविष्यद्वक्ता की सेवा के बिना, कलीसिया वैसे नहीं बढ़ेगी जैसे उसे बढ़ना चाहिए (इफि. 4:11-13)।

आ) झूठे भविष्यद्वक्ताओं के प्रति सावधान रहो (यिर्मयाह 5:30-31; 14:13-18; 23:9-40; यहेजकेल 13:1-23; मत्ती 7:15; मत्ती 24:11, 24)।
हम एक भविष्यद्वाणी को इसके ऊँचे, लम्बे या उत्तम या जोरदार शब्दों से परख नहीं सकते हैं। यदि कोई संदेह है तो इसे परमेश्वर के वचन, परमेश्वर के आत्मा, और दूसरे भक्त अगुवों द्वारा परखा जाना चाहिए (यशायाह 8:20; 1 थिस्स. 5:20-21; 1 यूहन्ना 4:1)।

2 – परमेश्वर की उसके भविष्यद्वक्ताओं को चेतावनियाँ

अ) उन्हें अपने आप को नियंत्रण में रखने की चेतावनी दी थी।
केवल संयम के द्वारा वे परमेश्वर के लोगों की सही सही उन्नति कर सकते हैं। उन्हें परमेश्वर के आत्मा के प्रति संवेदनशील होना है और ईश्वरीय क्रम में सेवा करनी है (1 कुरिं. 14:32)।

आ) उन्हें चेतावनी दी गई थी कि उन्हें उनकी सेवा को परखने देना है (1 कुरिं. 14:29)।
ऐसा कोई नहीं जो गलतियाँ नहीं करता। बाइबल सिखाती है कि सब भविष्यद्वाणियों को परखना चाहिए।
नीचे दिए सात प्रश्न भविष्यद्वाणी की सेवा को परखने में सहायता करेंगे (1 यूहन्ना 4:1):

1. क्या भविष्यद्वाणी परमेश्वर के वचन से सहमत है? (यशायाह 8:20)
2. क्या भविष्यद्वाणी अच्छे हृदय से दी गई है? (1 कुरिं. 13:2)
3. क्या भविष्यद्वक्ता के शब्द पूरे होते हैं? (व्यवस्था. 18:22)
4. क्या भविष्यद्वक्ता भक्तिपूर्ण जीवन जीता है? (यिर्मयाह 23:13-16)
5. क्या पवित्र आत्मा गवाही देता है कि भविष्यद्वाणी सच्ची है? (2 पतरस 1:21)
6. क्या दूसरे भक्तिपूर्ण अगुवे सहमत होते हैं कि भविष्यद्वाणी सच्ची है? (2 कुरिं. 13:1)
7. क्या भविष्यद्वक्ता के शब्द लोगों को प्रभु के पास लाते हैं या प्रभु से दूर ले जाते हैं? (व्यवस्था. 13:1-4)

भविष्यद्वक्ता की सेवा परमेश्वर के वचन का प्रतिबिम्ब है।
यदि कोई भविष्यद्वक्ता बल देता है कि आप बिना प्रश्न किए उसके पीछे चलें, तो समझ लीजिए कि वह एक झूठा भविष्यद्वक्ता है।

सुसमाचार प्रचार की सेवा का वरदान

मसीह की देह में अनेक लोगों को प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के कार्य के विषय में एक स्पष्ट विचार नहीं है। परन्तु, वे मानते हैं कि वे सुसमाचार प्रचारक, पास्टर और शिक्षक के कार्यों को समझते हैं। दुख की बात है कि एक ऐसा विचार हो सकता है जो परमेश्वर के वचन के बजाय परम्परा - या व्यक्तिगत विचार - से बना हो। बाइबल में सुसमाचार प्रचार की सेवा से अधिक इफिसियों 4:11

की दूसरी चार सेवाओं के विषय में लिखा गया है। यीशु के अलावा, फिलिप्पुस ही नए नियम में सुसमाचार प्रचारक का एक अच्छा उदाहरण है। फिर भी, इस स्रोतों से हमारे लिए इस अध्ययन को सार्थक बनाने के लिए पर्याप्त जानकारी है।

अ. शब्दों की परिभाषा

यहाँ तीन मुख्य यूनानी शब्द हैं जो सुसमाचार प्रचारक की सेवा से सम्बंधित हैं। वे सब, जैसे हम देखेंगे, उसी मूल-शब्द में से निकलते हैं:

1. Euaggelizo: इस शब्द का अर्थ है: "शुभ संदेश का प्रचार करना या को घोषित करना"। यह उसके विषय में बताता है जो सुसमाचार प्रचारक करता है - उसकी सेवा क्या है (प्रेरितों 13:42; रोमियों 10:15; 2 कुरिं. 10:16; इफि. 3:8; कुलु. 1:27-28; इब्रा. 4:2)। यह मसीह की सेवा के लिए अकसर उपयोग होता था (मत्ती 11)5)। एक भाव से, यह बुलावा हम सब का है। परन्तु, सुसमाचार प्रचारक के लिए, यह उसके जीवन की मुख्य सेवा है।

2. Euaggelion: इस शब्द का अर्थ है: "सुसमाचार या शुभ संदेश"। यह हमें सुसमाचार प्रचारक के संदेश के विषय में बताता है। यह परमेश्वर के उद्धार के अनुग्रह का शुभ संदेश है। यह हमारे उद्धारकर्त्ता - यीशु के जन्म, जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में है (मत्ती 24:14; प्रेरितों 20:24; रोमियों 1:16; 1 कुरिं. 4:15; इफि. 1:13)।

3. Euaggelistes: इस शब्द का अर्थ है: "शुभ संदेश का प्रचारक या दूत"। यह हमें उस व्यक्ति के विषय में बताता है जो सुसमाचार का प्रचार करता है। इसे "सुसमाचार प्रचारक" अनुवाद किया जाता है। यह नए नियम में केवल तीन बार उपयोग किया गया है:

   अ. यह फिलिप्पुस के लिए उपयोग हुआ है (प्रेरितों 21:8)
   आ. यह पँच-गुणा सेवाओं में है (इफि. 4:11)
   इ. यह तीमुथियुस के लिए उपयोग हुआ है (2 तीमु. 4:5)

आ. मसीहः आदर्श सुसमाचार प्रचारक

लूका का सुसमाचार यीशु को एक सुसमाचार प्रचारक के रूप में प्रकट करता है। लूका हमें बताता है कि मसीह के आने का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना था (लूका 4:43)। लूका हमें मसीह की सुसमाचार प्रचार की सेवा की प्रकृति के विषय में भी बताता है (लूका 4:18-19), जब यीशु ने नासरत के आराधनालय में यशायाह 61:1-2 पढ़ा था:
"प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने मेरा अभिषेक किया है:

1. कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए,
2. बन्दियों को छुटकारे का सुसमाचार प्रचार करने के लिए,
3. अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करने के लिए,
4. कुचले हुओं को छुड़ाने के लिए,
5. प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करने के लिए।"

एक सुसमाचार प्रचारक की सेवा की यह कितनी सुन्दर तस्वीर है। और यही सेवा मसीह ने कलीसिया को दी है। आश्चर्य नहीं कि अपने चेलों को उसकी अन्तिम आज्ञा थी, जाओ और संसार को सुसमाचा सुनाओ: "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" (मरकुस 16:15)

इ. सुसमाचार प्रचारक की सेवा

फिलिप्पुस - प्रेरितों की पुस्तक और पत्रों में एक मात्र ऐसा व्यक्ति है जिसे वास्तव में "सुसमाचार प्रचारक" कहा गया है (प्रेरितों 21:8)।

<u>हम उसके जीवन और सेवा से चार महत्त्वपूर्ण चीजें सीख सकते हैं:</u>

1. **सुसमाचार प्रचारक की तैयारी** (प्रेरितों 6:1-6)।

पवित्रशास्त्र फिलिप्पुस की सेवा की पृष्ठभूमि के विषय में कुछ दिलचस्प तथ्य पेश करता है:

अ. वह एक स्थानीय कलीसिया का सदस्य था।
आ. वह एक अच्छे चरित्र का व्यक्ति था।
इ. वह पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण था।
ई. उसमें प्रेम का सेवक का हृदय था।
उ. उसने पहले एक डीकन के रूप में खुद को प्रमाणित किया था।

ऊ. वह भक्तिपूर्ण अधिकार के अधीन था।

ए. उसने जाने के लिए परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा की (प्रेरितों 8:1-5)।

2. **सुसमाचार प्रचारक की सार्वजनिक सेवा** (प्रेरितों 8:5-25)।

फिलिप्पुस की सुसमाचार की वर्णित सेवा सामरिया में हुई थी। कुछ समय पहले यीशु और कुँए की स्त्री ने वहाँ बीज बोया था (यूहन्ना 4)। परन्तु अब फसल आनन्द के साथ काटी जा रही थी।

सुसमाचार प्रचारक के रूप में फिलिप्पुस की सेवा में, कई महत्त्वपूर्ण बातों पर ध्यान दिया जा सकता है:

अ. उसका प्रचार यीशु पर केन्द्रित था (प्रेरितों 8:5-12)।

आ. उसके के साथ चिन्ह और चमत्कार होते थे (प्रेरितों 8:6-7)।

इ. उसके प्रचार से कई नए विश्वासी उत्पन्न हुए थे (प्रेरितों 8:12)।

ई. उसने नए विश्वासियों को उनके विश्वास के चिन्ह के रूप में पानी का बपतिस्मा दिया (प्रेरितों 8:12)।

उ. उसने पतरस और यूहन्ना को बुला भेजा, जिन्होंने पवित्र आत्मा के बपतिस्मा में उनकी अगुआई की (प्रेरितों 8:14-17)।

ऊ. नए विश्वासियों को स्थानीय कलीसिया बनाया गया। (सामरिया के साथ साथ, सारी प्रेरितों की पुस्तक में यही नमूना देखा गया है - प्रेरितों 9:31 देखो।)

ए. वह तब तक वहाँ से गया नहीं जब तक प्रभु ने उसे ऐसा करने को न कहा (प्रेरितों 8:26)।

हम देख सकते हैं कि फिलिप्पुस की सेवा "उद्देश्यपूर्ण सुसमाचार प्रचार" था। उद्देश्य नए विश्वासी बनाना और फिर दूसरी सेवा के वरदानों के साथ मिलकर कलीसिया स्थापित करना था (प्रेरितों 8:14-17)। फिलिप्पुस उसके प्रयासों पर दूसरी सेवकाइयों के बनने का इच्छुक था। इस प्रकार, नई और बढ़ती हुई मण्डलियों के रूप में उसके परिश्रम का फल बना रहेगा।

हम इस नमूने को प्रेरितों में देखते हैं: जब प्रेरिताई सेवा के सीधे कार्य के बिना कुछ धर्मान्तरित बनाए गए थे, तो प्रेरितों को पुष्टि करने और एक स्थानीय कलीसिया स्थापित करने के लिए भेजा गया था। ऐसा ही सामरिया में भी हुआ था (प्रेरितों 8:4-25; इस नमूने को प्रेरितों 11:19-26 में भी देखो)।

सुसमाचार प्रचार की सेवा के वरदान को मसीह की "बाँह" कहा गया है, जो हमारे संसार के उद्धार-नहीं-पाए हुओं को इकट्ठा करने के लिए उन तक पहुँचती है। सुसमाचार प्रचारक की सेवा के फल को विद्यमान स्थानीय कलीसियाओं में इकट्ठा किया जाना चाहिए। या एक नई कलीसिया स्थापित की जानी चाहिए जहाँ दूसरी सेवा के वरदानों को मसीह की देह के लिए उपलब्ध करायाजा सकता है। यदि हम इस नमूने को अनदेखा करें तो हम कई नए विश्वासियों के ठोकर का कारण बन सकते हैं। बिना उचित नींव के बनाई नई कलीसियाएँ असन्तुलित या पवित्रशास्त्र-विरुद्ध बन सकती हैं। फिलिप्पुस की सेवा सब सुसमाचार प्रचारकों के लिए जो उसके पदचिन्हों पर चलेंगे, एक सुन्दर उदाहरण है।

3. **सुसमाचार प्रचारक की व्यक्तिगत सेवा** (प्रेरितों 8:26-40)।

एक सुसमाचार प्रचार को एक भीड़ को प्रचार करने, या एक-एक व्यक्ति को सुसमाचार सुनाने योग्य होना चाहिए। एक सुसमाचार प्रचारक जहाँ कहीं भी हो, दिल से मनुष्यों को जीवनेवाला है। यह फिलिप्पुस के विषय में सच था, जैसे गाजा की सड़क पर खोजे की कहानी से पता चलता है। एक बार फिर, कई महत्त्वपूर्ण बातें देखी जा सकती हैं:

अ. वह प्रभु की आवाज की ओर संवेदनशील और आज्ञाकारी था (प्रेरितों 8:26-30)।

आ. उसे परमेश्वर के वचन की अच्छी समझ थी (प्रेरितों 8:35)।

इ. वह मसीह के द्वारा परमेश्वर के उद्धार के मार्ग को स्पष्टतः समझा सकता था (प्रेरितों 8:35)।

ई. उसने उसकी सेवा की जिसका हृदय परमेश्वर ने तैयार किया हुआ था (प्रेरितों 8:30)।

उ. उसने उसे मसीह को अंगीकार करने में अगुआई की - एक व्यक्तिगत फैसले का स्थान (प्रेरितों 8:37)।

ए. उसने पानी के बपतिस्में के द्वारा नए विश्वासी के फैसले पर मोहर लगाई (प्रेरितों 8:38)।

एक बार फिर हम फिलिप्पुस में मनुष्यों को जीतने का अदभुत उदाहरण देखते हैं।

4. **मसीह की देह में सुसमाचार प्रचारक का कार्य** (इफि. 4:11-13)।

कलीसिया में सुसमाचार प्रचारक का कार्य दो-गुणा है:

अ. उन स्थानों में जाना और सुसमाचार प्रचार करना जिन्होंने परमेश्वर के उद्धार के विषय में नहीं सुना है।

आ. अपनी स्थानीय कलीसिया में दूसरों को सुसमाचार सुनाने की शिक्षा और प्रशिक्षण देना। यह पहले अपने शहर या गाँव में हो, तब सारे संसार भर में हो। (प्रेरितों 1:8)।

नए नियम में हम कभी भी एक सुसमाचार प्रचारक को एक स्थानीय कलीसिया में खोए हुओं को प्रचार करता हुआ नहीं पाते। कलीसिया की सभाएँ वचन की शिक्षा, और परमेश्वर की आराधना के लिए थीं।

विश्वासियों की कलीसिया में उन्नति होती थी ताकि वे:

अ. स्तुति और आराधना में परमेश्वर की सेवा करें।

आ. भाईचारे के प्रेम में एक दूसरे की सेवा करें।

इ. आत्मा के सामर्थ्य में खोए हुए संसार की सेवा करें।

सेवा के वरदान चरित्र के साथ-साथ विश्वासी के जीवन में बनते हैं, बिलकुल वैसे ही जैसे एक-एक ईंट से इमारत बनती है। यदि एक अविश्वासी एक सभा में आता है तो, जो कुछ वह देखता और सुनता है उसके द्वारा परमेश्वर उससे बात कर सकता है (1 कुरिं. 14:24-25)। इसका अर्थ यह नहीं है कि उनके लिए जो मसीह के लिए फैसला करना चाहते हों, एक अपील नहीं की जानी चाहिए। इसका अर्थ यह है कि, जब विश्वासी इकट्ठे होते हैं तो उनका मुख्य उद्देश्य सुसमाचार प्रचार नहीं है। हर सदस्य की, उनके रोजाना के जीवन में, गवाही द्वारा सुसमाचार प्रचार होना चाहिए। ऐसे रोजाना के सुसमाचार के प्रयासों के द्वारा, परमेश्वर सामर्थी सुसमाचार प्रचार की सेवाओं को खड़ा करेगा। और आज के संसार में ऐसों की आवश्यकता भी है; क्योंकि, सच में, फसल पक चुकी है (यूहन्ना 4:35)।

पास्टर की सेवा का वरदान

बाइबल में, परमेश्वर के लोगों को अकसर भेड़ों का एक झुँड कहा गया है (यशायाह 40:11; यिर्मयाह 13:17; मत्ती 26:31; यूहन्ना 21:15; 1 पतरस 5:2)। असल में, भेड़ों में कई गुण होते हैं जो हमें प्रभु में बढ़ रहे नए मसीहियों की याद दिलाते हैं।

1. वे सम्पूर्ण रूप से अपने चरवाहे पर निर्भर होते हैं (उत्पत्ति 4:2; 1 शमूएल 17:20, 28)।

भेड़ों को चरागाह और पानी तक ले जाना पड़ता है। वे जब थक जाती हैं तब उन्हें विश्राम देना पड़ता है, जब चोट खाती हैं चंगा करना पड़ता है। उनके सम्पूर्ण जीवन उनके चरवाहे की देखभाल पर निर्भर हैं।

2. उनकी दिशा-संवेद बड़ी कमजोर होती है (भजन 119:176; यशायाह 53:6; यिर्मयाह 50:6; यहेजकेल 34:12)।

यदि भेड़ों को अकेला छोड़ दें तो वे भटक जाती हैं और खो जाती हैं। साधारणतया, वे घर का पता नहीं लगा पाती हैं। चरवाहे को उन्हें खोजकर भेड़शाला में लाना पड़ता है।

3. उनके बचाव के कुछ साधन नहीं हैं (मत्ती 10:16; गिनकी 32:24)।

भेड़ों के नुकीले पंजे या दाँत नहीं होते। वे तेज नहीं भाग सकती हैं। यदि उन्हें उन पर छोड़ दिया जाए तो बच नहीं सकेंगी। वे शीघ्र जंगली जानवरों के शिकार हो जाएँगी। वे तब ही सुरक्षित होती हैं जब भेड़शाला में इकट्ठी होती हैं। वे उनकी सुरक्षा के लिए उनके चरवाहे पर निर्भर होती हैं।

फिर भी, भेड़ों के कुछ बहुत अच्छे गुण होते हैं। वे गोश्त, दूध और ऊँन उत्पन्न करती हैं - जो भोजन, पेय और कपड़े देते हैं। उनमें उनके चरवाहे को सुनने और उसके पीछे चलने की योग्यता होती है जैसी और किसी दूसरे जानवर में नहीं होती। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग ये अच्छे गुण उनके जीवनों में प्रकट करें। वह अगुआई, भोजन और सुरक्षा की हमारी आवश्यकताओं को जानता है। इसलिए, उसने कलीसिया में चरवाहे-समान "पास्टर" की सेवा दी है।

अ. शब्दों की परिभाषा

Poimen: यह शब्द उसके विषय में बताता है: जो झुँड या भेड़ों की देखभाल करता है - एक चरवाहा। यह शब्द भेड़ों के असली चरवाहों के लिए दस बार उपयोग किया गया है (मत्ती 9:36; 25:32; मरकुस 6:34; लूका 2:8, 15, 18, 20; यूहन्ना 10:2)। यह प्रमुख चरवाहे के रूप में यीशु के लिए आठ बार उपयोग किया गया है (मत्ती 26:31; मरकुस 14:27; यूहन्ना 10:11, 12, 14, 16; इब्रानियों 13:20; 1 पतरस 2:25)। इसे एक ही बार, कलीसिया में एक व्यक्ति की सेवा का वर्णन करने के लिए, 'पास्टर" अनुवाद किया गया है (इफि. 4:11)।

Poimaino: शब्द का अर्थ है: झुँड की देखभाल करना, सम्भालना, अगुआई करना और चारा देना। यह दो बार असली भेड़ों के लिए उपयोग किया गया है (लूका 17:7; 1 कुरिं. 9:7)। इसे एक बार इस्राएल की देखभाल कर रहे यीशु के लिए उपयोग किया गया है (मत्ती 2:6)। इसे उस देखभाल का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है जिसे चरवाहों को महान चरवाहे, यीशु के अधीन झुँड को देखना है (यूहन्ना 21:16; प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 5:2)। इसे झूठे चरवाहों के लिए भी उपयोग किया गया है जो केवल अपना पेट भरने और अपने देखभाल करने में रुचि रखते हैं (यहूदा 12)।

<u>शब्द की संज्ञा और क्रिया दोनों में दो मुख्य विचार हैं:</u>

1. **<u>अगुआई:</u>** एक चरवाहा वह व्यक्ति है जो भेड़ों की अगुआई करता और उन्हें आत्मिक निरीक्षण प्रदान करता है। वह सीमित अधिकार वाली जिम्मेवारी की स्थिति में है (प्रेरितों 20:28-31; 1 थिस्स. 5:12, 13; इब्रा. 13:7, 17; 1 पतरस 5:2-3; ऐल्डरों के लिए 1 तीमु. 5:17-18 देखो)।

ये वचन कलीसिया की अगुआई के लिए परमेश्वर के स्तर स्पष्ट रूप से दिखाते हैं। प्रेरितों 20:28-31 में, उनसे, जो पास्तरीय अगुआई में हैं, कई मुख्य सिद्धान्त प्राप्त होते हैं:

अ) "अपनी चौकसी करे" (आय. 28): अर्थ है 'ध्यान देना'। एक चरवाहे को नियमित रूप से अपना हृदय, अपने अभिप्राय, रवैये, व्यवहार और चरित्र जाँचना है। उसे पवित्र आत्मा को परमेश्वर के सत्य के प्रकाश को निरन्तर उस पर चमकने देना है। इस से 'एक अधिक मसीह-समान हृदय और जीवन निश्चित' करने में सहायता मिलेगी।

आ) "पूरे झुँड की चौकसी करो" (आय. 28): एक कलीसिया के अगुवे को कलीसिया के लोगों की आवश्यकताओं पर ध्यान देना है। तब वह ठीक-ठीक प्रार्थना और अधिक प्रभावशाली तरीके से सेवा कर सकेगा।

इ) "पवित्र आत्मा ने ठहराया है" (आय. 28): परमेश्वर के अगुवे स्वयं नहीं बनते, उन्हें परमेश्वर का आत्मा नियुक्त और अभिषेक करता है। अगुवों को प्रभु की सहायता और योग्य बनानेवाला सामर्थ्य की बहुत आवश्यकता होती है; यह घमण्ड को कोई स्थान नहीं देता।

ई) "अध्यक्ष" (आय. 28): यह शब्द उसी मूल शब्द से अनुवाद किया गया है जो लूका 1:35 में "छाया करेगी" है। यह संकेत देता है कि अध्यक्ष होने का अर्थ है झुँड पर छाया करना ताकि उनमें आत्मिक जीवन विकसित हो सके।

उ) "कलीसिया, जिसे उसने मोल लिया है" (आय. 28): सम्पूर्ण कलीसिया, और हर स्थानीय मण्डली, परमेश्वर की है, क्योंकि उसने इसे अपने पुत्र के लहू से खरीदा है। इसलिए, एक स्थानीय कलीसिया के अगुवे को ऐसे नहीं करना है जैसे कि कलीसिया उसकी है; परन्तु एक भण्डारी के समान जिसे प्रभु की कीमती सम्पत्ति की देखभाल सौंपी गई है।

आयतों 29-31 में, विरोध के रूप में, पौलुस उन झूठे अगुवों के गुण दिखाता है जिन्हें वह "फाड़नेवाले भेड़िए" कहता है।

<u>तीन प्रकार के अगुवे जिनसे बचना चाहिए, हैं:</u>

1) आय. 29 - जो केवल अपने में दिलचस्पी रखते हैं और झुँड को व्यक्तिगत लाभ पाने के उपयोग की नज़र से देखते हैं (मत्ती 7:15)।

2) आय. 30 - झूठे चरवाहे टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे ताकि लोगों को यीशु से कहीं ले जाएँ।

3) आय. 31 - ये गलत प्रेरणाओं से भरे अगुवे, तत्काल परिणामों की खोज में रहते हैं जिसमें कम काम, समय या व्यक्तिगत बलिदान लगता है। जैसे आप प्रेरितों 20:31 पढ़ते हैं तो पाएँगे कि पौलुस इस प्रकार का अगुवा नहीं था।

2. **<u>सेवा:</u>** एक चरवाहा ऐसा व्यक्ति है जो झुँड की देखभाल करता है। वह अपनी भेड़ों को चारा देता, पानी पिलाता, विश्राम दिलाता, चंगा करता और रक्षा करता है। वह झुँड के कल्याण के लिए अपने आप को - मृत्यु तक भी - दीन सेवा में दे देता है (यूहन्ना 10:11-15; 21:15-17; प्रकाशित. 7:17)।

यह बड़े ध्यान देने योग्य बात है कि ये दो सिद्धान्त एक दूसरे के साथ बँधे हुए हैं। <u>सच में, आत्मा से चलनेवाला अगुवा एक सेवकअगुवा है।</u> परमेश्वर ने पास्टर को दूसरे विश्वासियों को नियंत्रण में रखने के लिए नहीं बुलाया है। पास्टर की सेवा एक विश्वास का परमेश्वर के साथ सम्बंध का स्थान लेने के लिए नहीं है। जब मसीह क्रूस पर मरा था, तब मन्दिर के पर्दे के दो भाग हो गए थे (मत्ती 27:51)। इसका अर्थ था कि अब से लोगों को परमेश्वर के सामने प्रतिनिधित्व करने के लिए एक मानवीय याजक की आवश्यकता नहीं है। अब उन सब की जो विश्वास करते हैं परमेश्वर के सामने सीधी पहुँच है। <u>पास्टर की सेवा लोगों को प्रभु के साथ गहरे सम्बंध में ले चलने के लिए है।</u>

आ. मसीह: आदर्श पास्टर

कलीसिया "ईशतन्त्र" है, लोगों पर परमेश्वर का शासन। परमेश्वर अकसर अपने आप को एक चरवाहा कहता है (उत्पत्ति 49:24; यहेजकेल 34:12-14)। उसने अपने लोग, इस्राएल, की एक चरवाहे के समान सेवा की:

1. उसने उनका मार्गदर्शन किया (भजन 23:3)।
2. उसने उनको खिलाया (यिर्मयाह 50:19)।
3. उसने उनको विश्राम दिया और पानी पिलाया (भजन 23:2; यशायाह 40:11)।
4. उसने उनकी रक्षा की (भजन 23:4)।

5. उसने भटके हुओं को बुलाया और इकट्ठा किया (यशायाह 56:8; जकर्याह 10:8)।
6. वह मेम्नों को अपनी गोद में उठाए फिरा (यशायाह 40:11)।
7. वह बच्चे वालियों को धीमे धीमे ले चला (यशायाह 40:11)।

जब यीशु आया, तो उसने परमेश्वर का चेहरा दिखाया। लोग सुन और देख सकते थे कि उनका ईश्वरीय चरवाहा कैसा है। पतरस ने यीशु को "प्रधान चरवाहा" कहा है (1 पतरस 5:4)। यीशु परमेश्वर के "चरवाहे के हृदय" का सिद्ध आदर्श बना। प्रधान चरवाहे, यीशु के अधीन काम कर रहे चरवाहों को ध्यानपूर्वक प्रधान चरवाहे के हृदय और प्रेरणा का अध्ययन करना चाहिए। हालाँकि हमारी सेवा यीशु की सेवा के जैसी नहीं है, फिर भी हमारे रवैये और प्रेरणाएँ यीशु के रवैयों और प्रेरणाओं के सृदश होने चाहिए।

हर चरवाहे में यीशु का चरवाहे जैसा हृदय होना चाहिए:

1. उसमें परमेश्वर के लोगों के लिए प्रेम और तरस था (मरकुस 6:34)।
2. वह हर भेड़ को बहुमूल्य जानता था (लूका 15:4)।
3. वह भेड़ों के लिए अपना जीवन त्याग देने को तैयार था (यूहन्ना 10:11, 15)।

परमेश्वर के झुँड के लिए अपने प्रेम के कारण, यीशु को बहुत चिन्ता थी कि उसके जाने के बाद उनकी उचित देखभाल हो। इसलिए, उसने उसकी अनुपस्थिति में उसकी भेड़ों की रखवाली के लिए "पास्टर" दिए (इफि. 4:11-13)। कलीसिया में दूसरे सब एल्डरों के समान, हर पास्टर भी एक अधीन-चरवाहा है। वह परमेश्वर के लोगों की उसकी सेवा के लिए सीधा यीशु को उत्तरदायी है (1 पतरस 5:1-4)। उसे अपनी सेवा की दिशा और समर्थन के लिए, अच्छे और महान चरवाहे के रूप में सदा यीशु की ओर देखना चाहिए। एक पास्टर होना एक महान जिम्मेवारी है, परन्तु यह एक उच्च और धन्य बुलावा भी है।

इ. एक पास्टर के लिए आदर्श

एक ऐल्डर के स्तर से अधिक, एक पास्टर के लिए कुछ विशेष स्तर हैं। वे नीचे दिए गए हैं:

1. एक पास्टर भेड़ों को ले चलने योग्य होना चाहिए (यूहन्ना 10:4)।

हम दूसरों को समझदारी और सुरक्षित उन्हीं मार्गों पर ले जा सकते हैं जिन पर हम स्वयं पहले गए हैं। इससे पहले पास्टर दूसरों को परमेश्वर के मार्गों में ले चले, उस का परमेश्वर के साथ अपना एक घनिष्ठ और परखा हुआ सम्बंध होना चाहिए। यदि एक पास्टर चाहता है कि उसके लोग प्रार्थना करें, दशमाँश दें, वचन पढ़ें और दूसरों तक पहुँचें, तो उसे उदाहरण पेश करना है। उसकी जीवन-शैली ऐसी होनी चाहिए जिसका भेड़ें अनुकरण कर सकें (1 कुरिं. 11:1; इब्रा. 13:7; 1 पतरस 5:2-3)।

2. एक पास्टर भेड़ों को चारा दे सकने योग्य होना चाहिए (यिर्मयाह 3:15; 23:4; यहेजकेल 34:1-3; प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 5:2-3)।

एक पास्टर वही दे सकता है जो उसके पास है। परमेश्वर के वचन की सेवा करने के लिए, उसे वचन में होना - और वचन उसमें होना जरूरी है। इसमें प्रार्थना, अध्ययन, मनन और आज्ञापालन (उपयोग) सम्मिलित है। परमेश्वर के वचन का सत्य हमारे अपने जीवनों में कार्य कर रहा होना चाहिए, इससे पहले यह दूसरों के जीवन में डाला जा सके (यिर्मयाह 10:21; प्रेरितों 6:4)। पास्टर को एक इतने स्पष्ट और सरल तरीके से सिखाने योग्य होना चाहिए कि सब समझ सकें। उसे लोगों के साथ आवश्यकता के स्थान और परिपक्वता के स्तर पर सम्बंध बना सकने योग्य होना चाहिए। उनका आत्मिक "आहार" ताजा और विविधता द्वारा सन्तुलित होना चाहिए (प्रेरितों 20:27)। कभी-कभी यह अतिथि प्रचारकों और शिक्षकों को लाने के द्वारा किया जा सकता है।

3. पास्टर का भेड़ों के साथ व्यक्तिगत सम्बंध होना चाहिए (यूहन्ना 10:27)।

यीशु लोगों का आदर खोए बिना उनके निकट हो सकता था। वह उन्हें उनके नाम से जानता था - और वे उसे जानते थे। यह एक अच्छे चरवाहे की निशानी है (यूहन्ना 10:3)। केवल तब ही वह उसके लोगों की गहरी आवश्यकताओं की सेवा कर सकेगा। पास्टर की उसके भेड़ों के साथ पहचान होनी चाहिए। वह उनके साथ - जहा वे हैं - उठे, बैठे, और बातें करे। वह लोगों को जानने दे कि वह केवल एक चरवाहा ही नहीं बल्कि उनमें से एक है - परमेश्वर के झुँड की एक भेड़। केवल तब ही वह प्रेम, अनुग्रह, बुद्धि और तरस के साथ सेवा कर सकता है (2 कुरिं. 1:3-4)।

4. एक पास्टर को भेड़ों के लिए अपना जीवन दे देने के लिए तैयार होना चाहिए (यूहन्ना 10:15; 1 यूहन्ना 3:16; प्रकाशित. 12:11)।

पास्टर और उसके लोगों दोनों को यह पता होना चाहिए कि पास्टर की सेवा एक नौकरी नहीं है बल्कि जीवन का एक बुलावा है। वह प्रेम और वफादारी में परमेश्वर के झुँड की ओर वचनबद्ध है।

परमेश्वर के लोगों की ओर वचनबद्धता में कई चीजें सम्मिलित हैं:

अ. उसका जीवन और शक्ति उँडेल देना (यूहन्ना 10:11)।

आ. आवश्यकता के समय भेड़ों की देखभाल करना (यहेजकेल 34:4; यूहन्ना 10:13)।

इ. संकट के समय भेड़ों के साथ रहना (यूहन्ना 10:12)।

ई. भेड़ों के घर मिलने जाना (जकर्याह 10:2-3)।

उ. उनकी सुरक्षा का ध्यान रखना (इब्रा. 13:17)।

ई. पास्टर की सेवा

एक पास्टर की सेवा की अधिकाँश चाजें ऊपर बताई जा चुकी हैं।
हम उसके काम को चार मुख्य शब्दों में बता सकते हैं : **खोजना**, **ध्यान रखना**, **देखभाल करना और सुधारना**:

1. एक पास्टर सदा खोई हुई भेड़ों को खोजता रहता है (लूका 15:4)।

बहुत सारी भेड़ें भटकती रहती हैं और गुमराह हो जाती हैं। एक चरवाहा उसे छोड़ नहीं देता जो अपनी राह भटक गई है। बल्कि, वह जिद्दी भेड़ों के लिए प्रार्थना करता, बुलाता, उपदेश देता और प्रोत्साहित करता रहता है।

2. एक पास्टर सदा उन चीजों का ध्यान रखता है जो झुँड को हानि पहुँचा सकती हैं (लूका 2:8)।

इसका अर्थ है बाहर के "भेड़ियों" - और अन्दर के "पाखण्डियों" पर नज़र रखता है। भेड़ों को झूठे शिक्षकों और झूठे नबियों से सुरक्षित रखने की जरूरत है। उन्हें उन से बचा कर रखने की जरूरत है जो मुसीबत और विभाजन पैदा करेंगे (यूहन्ना 10:12; प्रेरितों 20:29)।

3. एक पास्टर सदा उनकी देखभाल करता है जो आवश्यकता में हैं (यूहन्ना 10:11-13)।

आवश्यकताएँ आत्मिक, मानसिक, भावात्मिक या शारीरिक हो सकती हैं। उनमें परिवार, नौकरी, स्कूल या रोजमर्रा के जीवन की दूसरी चीजें हो सकती हैं। एक पास्टर बीमारों, मर रहे, अपंगों, गरीबों, विधवाओं, अनाथों, और सब जो चोट खाए हैं, उनको सान्त्वना और सम्मति देता है। जहाँ हो सकता है, वहाँ सहायता करना और चंगा करना चरवाहे का स्वभाव होता है।

4. एक पास्टर उन्हें सुधारने का प्रयास करता जो भ्रम में हैं (भजन 23:4)।

चरवाहे का सोंटा भटके हुओं तक पहुँचने और छुड़ाने के लिए उपयोग होता है। लाठी को संकट में पड़ी भेड़ों का बचाव करने के लिए उपयोग किया जाता है। जब भेड़ें भ्रम या विद्रोह में होती हैं तब उन्हें सुधारने के लिए भी इसका उपयोग होता है। अनुशासन या सुधार सबसे कठिन जिम्मेवारी है जिसका पास्टर को सामना करना पड़ता है। इसे प्रेम और बुद्धि के साथ करना चाहिए - परन्तु करना चाहिए। यह उस भेड़ के लिए जिसे सुधार चाहिए और झुँड दोनों के लिए अच्छा है। जो चरवाहा भेड़ों को चेतावनी नहीं देता, सुधार या अनुसासित नहीं करता अच्छा चरवाहा नहीं है। प्रेम आवश्यकता पड़ने पर अनुशासित करने को तैयार रहता है (इब्रा. 12:5-7)।

उ. पास्टर को चेतावनियाँ

परमेश्वर जानता है कि जिन्हें उसने पास्टर होने के लिए बुलाया है विशेष प्रलोभन और परीक्षणों का सामना करेंगे। उनकी भी वही कमजोरियाँ हैं जो हम सब की हैं। इसी कारण से, परमेश्वर ने अधीन-चरवाहों को कुछ चेतावनियाँ दी हैं।

1. एक पास्टर को अपने आत्मिक विकास की उपेक्षा या अनदेखा नहीं करना है (यिर्मयाह 2:8; 1 तीमु. 4:15-16)।

कितनी ही बार, अगुआई में लोग उनके व्यस्त कार्यक्रमों के नियंत्रण में जीते हैं। उनके लिए प्रभु के साथ उनके व्यक्तिगत सम्बंध को अनदेखा करना सरल होता है (प्रेरितों 6:2-4)। पास्टरों को महान चरवाहे, यीशु मसीह के साथ समय बिताना चाहिए। पास्टर शैतान के आक्रमणों के शिकार होते हैं। और यदि चरवाहे को मारा तो भेड़ें बिखर जाएँगी। इसलिए, पास्टरों को भी सुरक्षा की आवश्यकता है जो केवल प्रभु की उपस्थिति ही ला सकती है (जकर्याह 13:7; मत्ती 26:31)।

2. एक पास्टर को व्यक्तिगत लाभ के लिए काम नहीं करना है (1 तीमु. 3:3; 1 पतरस 5:2)।

जब यीशु ने यूहन्ना 10:1-13 में झूठे चरवाहों की चेतावनी दी तो उसने तीन दिलचस्प शब्दों का उपयोग किया: चोर, डाकू और मजदूर।

अ) एक चोर धूर्त, गुप्त तरीकों से चुराता है।

आ) एक डाकू बल और उपद्रव से चुराता है।

इ) एक मजदूर वह है जिसे उसके काम के लिए पैसा दिया जाता है, उसे भेड़ों की कोई चिन्ता नहीं है। वह काम पूरा किए बिना जाने की जल्दी में होता है।

इन तीनों मामलों में, पैसा और लालच अभिप्राय होता है जिसका परिणाम झुँड की बड़ी हानि होती है।

3. **एक पास्टर को सांसारिक शक्ति की खोज में नहीं होना चाहिए (यहेजकेल 34:4; लूका 22:24-27; 1 पतरस 5:3)।**

दुख की बात है कि कुछ लोग सोचते हैं कि एक पास्टर की सेवा दूसरों पर अधिकार जताने का एक तरीका है। वे ताकत और अधिकार की स्थिति में होना चाहते हैं।

यह सच है कि एक पास्टर आत्मिक अधिकार की स्थिति में होता है। परन्तु यह सबसे पहले महान जिम्मेवारी और दीन सेवा की एक स्थिति है। एक सच्चा पास्टर दूसरों को वश में करने के बजाय उनकी सेवा करेगा।

4. **एक पास्टर को भेड़ों को थकाना नहीं चाहिए (उत्पत्ति 33:13)।**

एक अगुवा उनके आगे हो जिनकी वह अगुआई करता है। इसलिए, परमेश्वर ने उसे अन्तर्दृष्टि का वरदान, और नए सत्य को उपयोग में लाने की योग्यता दी है। वह शीघ्रता औस प्रसन्नता से प्रतिक्रिया दिखाता है। कभी-कभी पास्टर के लिए समझना कठिन होता है कि दूसरे उतनी शीघ्रता और उत्सुकता के साथ क्यों प्रतिक्रिया नहीं दिखाते। एक चरवाहे को उसके भेड़ों के साथ धैर्यवान होना चाहिए। वह उन्हें एक ऐसी गति से ले चले जिससे वे पीछे चल सकें। यदि वह ऐसा नहीं करता, तो कई पीछे रह जाएँगे - और कुछ तो छूट भी जाएँगे।

5. **एक पास्टर को बाइबल वाली परिवार की प्राथमिकताओं को बनाए रखना है (इफि. 5:25)।**

यह महत्त्व की बात है कि कोई भी पास्टर या ऐल्डर, और उसके झुँड के सदस्य, परमेश्वर की प्राथमिकताओं का क्रम याद रखें। पास्टर का प्रभु यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बंध उसके जीवन की पहली और सबसे ऊँची प्राथमिकता होनी चाहिए। यीशु आत्मिक जीवन का सच्चा स्रोत है, और उसके बिना जीवन या सेवा में "हम कुछ भी नहीं कर सकते" हैं (यूहन्ना 15:5)।

अगली प्राथमिकता पास्टर की उसके परिवार के लिए जिम्मेवारी है। परमेश्वर बहुत रुचि रखता है कि एक पास्टर या ऐल्डर कैसे अपनी पत्नि और बच्चों के साथ सम्बंध रखता है। यह प्रभु की आज्ञा है कि एक पति अपनी पत्नि से वैसे ही प्रेम करे जैसे मसीह ने कलीसिया से किया और अपने को उसके लिए दे दिया (इफि. 5:25)। एक पति का उसकी पत्नी के लिए प्रेम विश्वासयोग्य और बलिदान के साथ होना चाहिए। एक पत्नी के लिए, उसकी प्राथमिकता अपने पति का आदर करना और प्रेम करना, और अपने बच्चों को प्रेम करना है (इफि. 5:33; तीतुस 2:4)। जब इन प्राथमिकताओं को पहले बनाया रखा जाता है तब अगुवा दूसरों की सेवा कर सकता है।

बाइबल सिखाती है कि यदि एक कलीसिया का अगुवा अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता, तो वह कलीसिया में एक अच्छा अगुवा नहीं होगा (1 तीमु. 3:5; 5:8)। एक भक्तिपूर्ण अगुवा अपने आप को पहले परमेश्वर को देगा, तब अपनी पत्नी और बच्चों को देगा, और तब दूसरों की सेवा में देगा। इन सब की उसकी अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं या अभिलाषाओं से ऊँची प्राथमिकता है।

ऊ. विश्वासघाती पास्टरों का न्याय

पास्टरों को सदा याद रखना है कि उनकी जिम्मेवारी की भेड़ें परमेश्वर की हैं - उनकी अपनी नहीं हैं (यिर्मयाह 23:1-2)। केवल एक ही भेड़शाला है, और एक ही प्रधान चरवाहा (यिर्मयाह 23:2-3; यूहन्ना 10:16)। हर पास्टर को अपनी सेवा के लिए परमेश्वर को हिसाब देना है। यदि वह विश्वासयोग्य रहा है, तो वह इनाम पाएगा। यदि वह विश्वासघाती रहा है, तो उसका न्याय होगा।

विश्वासघाती पास्टरों के कई तरीकों से न्याय होते हैं:

1. भेड़ें उन से ले ली जाएँगी और विश्वासयोग्य पास्टरों को दे दी जाएँगी (यिर्मयाह 10:21; 23:1-4)।
2. परमेश्वर का भारी न्याय उन पर पड़ेगा (यिर्मयाह 12:10-13; 22:22; 23:1-5; 25:34-38; 50:6-7; जकर्याह 10:3; 11:17)।

एक पास्टर की सेवा का बुलावा एक महान और बड़ी जिम्मेवारी का बुलावा है। यह प्रमुख सेवा है जिसके ईर्द-गिर्द स्थानीय कलीसिया बनती है। इसी कारण से, पौलुस इन शक्तिशाली और गम्भीर शब्दों को एक पास्टर की सेवा के खोजियों से कहता है।

"इसलिए अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है। मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएँगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे -ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे। इसलिए जागते रहो, और स्मरण करो कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा-बहाकर हर एक को चितौनी देना न छोड़ा। और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्र किए हुए लोगों में साक्षी करके मिरास दे सकता है। मैं ने किसी के चाँदी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया। तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएं पूरी कीं। मैं ने तुम्हें सबकुछ करके दिखाया कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना और प्रभु यीशु के वचन स्मरण रखना अवश्य है, जो उसने आप ही कहा है : 'लेने से देना धन्य है'। यह कहकर उसने घुटने टेके और उन सबके साथ प्रार्थना की। तब वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले लिपट कर उसे चूमने लगे। वे विशेषकर इस बात से शोकित थे जो उसने कही थी कि तुम मेरा मुँह फिर न देखोगे। तब उन्होंने उसे जहाज तक पहुँचाया।" (प्रेरितों 20:28-38)।

शिक्षक की सेवा का वरदान

मसीह ने - उसके स्वर्ग लौटने के पहले - उसके चेलों को यह महान आज्ञा दी थी कि वे सारे संसार में सुसमाचार को ले जाएँ (मरकुस 16:15)। परन्तु इतना ही नहीं था। उसने उनको कहा कि वे और चेले भी बनाएँ और उनको वे सब बातें मानना सिखाएँ जो उसने उन्हें दी हैं (मत्ती 28:19-20)। कलीसिया का हर अगुवा उसके कार्यों के लिए उत्तरदायी होगा। हम मसीह की इस आज्ञा में सिखाने के महत्त्व को देखते हैं। कलीसिया के निर्माण में सिखाना आधारीय है। इसी कारण से परमेश्वर ने मसीह की देह में शिक्षक दिए हैं। वे आवश्यक हैं ताकि हम उसमें सब चीजों में बढ़ते जाएँ (इफि. 4:11-15)।

अ. शब्दों की परिभाषा

सिखाने की सेवा के सम्बंध में उपयोग किया गया मुख्य यूनानी शब्द didasko है। मूल शब्द का सरल अर्थ है: "शिक्षा देना" या "सिखाना"। यह कुछ समझाने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के द्वारा, ज्ञान या शिक्षा दूसरे को दी जाती है।

आ. सेवा का आरम्भ

परमेश्वर के लोगों के बीच किसी न किसी रूप में सदा से शिक्षक हुए हैं। माता-पिता उनके बच्चों को सिखाते थे। मूसा ने इस्राएल के अगुवों को सिद्धान्त सिखाए जिनके द्वारा वे लोगों का न्याय कर सकते। याजक लोगों को परमेश्वर के मार्ग सिखाते थे। बेबिलोन की बन्धुआई के बाद, इस्राएल के लोगों को शास्त्री आराधनालयों में सिखाया करते थे। पवित्रशास्त्रों का अध्ययन करना और समझाना शास्त्रियों का कार्य था। मसीह के दिनों में, शास्त्रियों को बड़ा सम्मान मिला हुआ था।

इ. मसीह: प्रधान शिक्षक

पवित्रशास्त्र में कई स्थान पर मसीह को "स्वामी" या "शिक्षक" कहा गया है (यूहन्ना 3:2; 13:13)। हम इसका कारण सरलता से देख सकते हैं: यीशु ने अपना काफी समय लोगों की भीड़ को सिखाने में बिताया था (मत्ती 4:23; 5:2; 9:35; 11:1; 13:54; 21:23; 22:16; मरकुस 10:1; लूका 20:21)।

यीशु की शिक्षा के विषय कुछ था जो काफी भिन्न था। उसने सामर्थ्य, अधिकार और पवित्र आत्मा के अभिषेक के द्वारा सिखाया (मत्ति 7:28-29)। उसके शब्द आत्मा और जीवन थे क्योंकि वह वही बोलता था जो उसे पिता से मिलता था (मत्ती 6:63; 7:16; 8:28)। एक प्रधान शिक्षक के रूप में, यीशु अपने पिता के शब्दों और आत्मा के कार्य पर निर्भर था। यह उसकी सेवा की कुंजी थी। यह आज भी हर उस के लिए लिए कुंजी है जो परमेश्वर के वचन का एक सफल शिक्षक बनना चाहता है।

ई. नए नियम में सिखाने के स्तर

हर विश्वासी को मसीही जीवन के विषय में दूसरों को सिखाना चाहिए (मत्ती 28:20; कुलु. 3:16)। परन्तु, यह हर विश्वासी को कलीसिया में एक शिक्षक नहीं बनाता है। हर पिता और हर ऐल्डर (1 तीमु. 3:2) दूसरों को परमेश्वर की मार्गें की शिक्षा दे सकने योग्य होना चाहिए। परन्तु, एक बार फिर, इसका अर्थ यह नहीं है कि वे सब मसीह की देह में शिक्षक हैं। कलीसिया में शिक्षकों की

एक विशेष बुलावा और सेवा है। यह पँच-गुणा सेवा के वरदानों में से एक वरदान है जो अगुआई के स्तर पर कार्य करता है (इफि. 4:11; 1 कुरिं. 12:28-29)। ऐसा जान पड़ता है कि प्रेरित बनने से पहले पौलुस एक शिक्षक था (प्रेरितों 11:26; 18:11; 2 तीमु. 1:11)। जब वह प्रेरिताई की सेवा में सक्रिय नहीं था, वह सिखाने का कार्य करता था (प्रेरितों 15:35)। हम यह भी जानते हैं कि अन्ताकिया की कलीसिया में दूसरे शिक्षक भी थे (प्रेरितों 13:1)।
प्रारम्भिक कलीसिया में शिक्षक एक बहुत महत्त्वपूर्ण सेवा थी। इसे गम्भीरता से लिया जाता था, और इसके साथ जिम्मेवारी की एक बड़ी भावना भी थी (याकूब 3:1)।

उ. शिक्षक की सेवा के वरदान पर एक विशेष टिप्पणी

इफिसियों 4:11 के वाक्य की बनावट से हम देख सकते हैं कि पास्टर और शिक्षक की सेवा के वरदानों में एक निकट सम्बंध है। परन्तु, ये दो वरदान एक ही चीज नहीं हैं हालाँकि कुछ अंशछादन तो है। जैसा दूसरे वरदानों के साथ है, इन दोनों सेवा के वरदानों के बीच भी साझेदारी और पारस्परिक निर्भरता है। शिक्षक को विश्वासियों को चेला बनाने के काम में सहायता के लिए पास्टर या स्थानीय ऐल्डर के साथ कार्य करना चाहिए। पास्टर को शिक्षा की सेवा वालों को परमेश्वर का वचन सिकाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। ऐसा सोचने की प्रवृति हो सकती है कि केवल भविष्यद्वक्ता अलौकिक रूप से बोलता है, जबकि शिक्षक केवल स्वाभाविक विद्वता और अध्ययन से बोलता है। परन्तु अन्तर अलौकिक और स्वाभाविक का नहीं है, बल्कि कि पवित्र आत्मा इन दो सेवा के वरदानों के द्वारा कैसे कार्य करता है। भविष्यद्वक्ता आत्मा द्वारा एक अधिक प्रेरणात्मक या तात्कालिक तरीके से कार्य करता है। शिक्षक एक अधिक परिमित तरीके से, सरलता से समझ पाने के लिए परमेश्वर के वचन के सत्य को स्पष्टतः प्रकाशमान करता है।

ऊ. शिक्षक की सेवा

पवित्रशास्त्र सिखाने के वरदान के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण और विशेष बातें प्रकट करता है:

1. **एक शिक्षक को सीखना कभी भी बन्द नहीं करना चाहिए** (रोमियों 2:21)।

एक शिक्षक का जीवन एक सततः अध्ययन और तैयारी है। परमेश्वर के पवित्र आत्मा के स्कूल में दैनिक सबक सीखने के लिए होते हैं (1 कुरिं. 2:13)।

2. **एक शिक्षक को परमेश्वर का वचन पता होना चाहिए** (मरकुस 12:24)।

उसकी सेवा का आधार परमेश्वर का वचन है। वह उसे सिखा नहीं सकता है जिसे वह आप नहीं जानता - या जिसे उसने अपने जीवन में लगाया नहीं है।

- अ) उसे कठिन प्रश्नों के उत्तर देना आना चाहिए (मत्ती 22:16-46)।
- आ) उसे बाइबल के सत्य को जीवन की परिस्थितियों में लगाना आना चाहिए (मरकुस 9:14-29)।
- इ) उसे नए विश्वासियों को वचन में दृढ़ और स्थापित करना आना चाहिए (इब्रा. 5:12)।

3. **एक शिक्षक को उदाहरण द्वारा सिखाना चाहिए** (यूहन्ना 13:13-14)।

यदि एक शिक्षक जो वह सिखाता है उसके द्वारा नहीं जीता, तो वह एक फरीसी से बेहतर नहीं है (मत्ती 23:1-3)। यीशु ने सदा वही किया जो वह दूसरों को सिखाता था (प्रेरितों 1:1)। हमारे सबसे महान संदेश, जो हम कहते हैं उसमें से नहीं - बल्कि जो हम हैं उसमें से निकलते हैं।

4. **एक शिक्षक को स्पष्टतया और ठीक-ठीक सिखाना चाहिए** (2 तीमु. 2:15)।

एक शिक्षक परमेश्वर के वचन का सच्चा अर्थ और उद्देश्य स्पष्टतया बतलाए। इस वरदान में दूसरों को ठीक-ठीक सिखाने की जिम्मेवारी है।

5. **एक शिक्षक दूसरों को अपनी समझ के स्तर तक लाना चाहता है** (मत्ती 10:24-25)।

पौलुस ने परमेश्वर के सारे अभिप्राय को जैसा वह इसे समझता था, उन्हें सिखाया जो उसकी देखरेख में थे। जो उनके लाभ का था उसे उसने अपने पास नहीं रखा (प्रेरितों 20:20, 27)।

6. **एक शिक्षक का सबसे बड़ा इनाम परमेश्वर के वचन के द्वारा दूसरों के जीवन बदलते हुए देखना है** (व्यवस्था. 4:5, 14; 31:12-13)।

परमेश्वर का वचन जब यह सिखाया, स्वीकार किया और पालन किया जाता है, तो बड़े-बड़े चमत्कार करता है।

7. **एक शिक्षक को उनका समर्थन मिलना चाहिए जिनकी वह सेवा करता है** (गलातियों 6:6)।

एक शिक्षक को अपनी सेवा में पूरे समय कार्य कर सकने का समय मिलना चाहिए। प्रार्थना करने, परमेश्वर का वचन का अध्ययन करने, तैयारी करने और सिखाने में समय लगता है। और एक मजदूर को उसकी पगार मिलनी चाहिए। यदि एक शिक्षक को परमेश्वर के लोग उचित रूप से सहयोग नहीं देते, तो सारी कलीसिया की भारी हानि होगी।

ए. झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनियाँ

एक अच्छे शिक्षक का लोगों पर काफी अधिकार हो सकता है। वह अपने शब्दों के द्वारा उनके हृदयों और मनों दोनों तक पहुँच सकता है। एक शिक्षक न केवल तथ्य और जानकारी देता है, बल्कि अपने रवैये और नैतिक मूल्य भी। उसमें अपने विद्यार्थियों को भलाई - या बुराई - के लिए बनाने और नियंत्रण करने की योग्यता है।

इसी कारण से, परमेश्वर झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी देता है।

तीन प्रकार के झूठे शिक्षक हैं जिनके विषय में हमें पता होना चाहिए:

1. <u>जो झूठी शिक्षा देते हैं</u> (2 तीमु. 4:3-4; 2पतरस 2:1)।

झूठी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जो परमेश्वर के सारे अभिप्राय से सहमत नहीं है। अधिकाँश झूठी शिक्षा में कुछ सच्चे मसीहियों को भी आकर्षित करने के लिए काफी सच्चाई होती है। एक शिक्षा कई कारणों से झूठी हो सकता है:

- अ) यह सत्य का विरोध करेगा (2 पतरस 2:1)।
- आ) यह सत्य में जोड़ेगा (प्रकाशित. 22:18)।
- इ) यह सत्य में से घटा लेगा (प्रकाशित. 22:19)।

झूठे शिक्षक अपने लाभ के लिए पवित्रशास्त्र को विकृत करना जानते हैं। वे अकसर लोगों के हृदय में छिपी किसी स्वार्थी या शारीरिक इच्छा को आग्रह करते हैं। कुछ लोग जो नया और अलग दिखता है उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं।

2. <u>जो मनुष्यों की परम्पराओं को परमेश्वर का वचन करके सिखाते हैं</u> (मरकुस 7:7)।

जिन चीजों पर हम पैदा होते विश्वास करते आए हैं हम उन्हें अकसर बिना प्रश्न स्वीकार कर लेते हैं। कभी-कभी मनुष्यों ने सुसमाचार में अपनी राय और व्यवहार - विचार और तरीके मिला लिए हैं। ऐसी "परम्पराएँ" परमेश्वर की हैं कहा जाता है, परन्तु वे असल में मनुष्यों की बनाई हुई हैं। सच्ची शिक्षा परमेश्वर के वचन के साथ सदा सहमत होगी। हमें हर शिक्षा को पवित्रशास्त्र के सत्य से परखने के लिए कहा गया है (प्रेरितों 17:11)।

3. <u>जो गलत अभिप्राय से सिखाते हैं</u> (1 कुरिं. 4:15)।

दुख की बात है कि ऐसे कुछ हैं जो केवल लाभ, अधिकार या पद के लिए सिखाते हैं। वे केवल इसमें दिलचस्पी रखते हैं कि वे सेवा से क्या प्राप्त कर सकते हैं (तीतुस 1:10-11; 2 पतरस 2:3)। ऐसे शिक्षक अकसर कलीसिया के भक्त अगुवों की ओर जिम्मेवार नहीं होते हैं। वे दूसरों की स्वीकृति के लिए अपनी सेवा को समर्पित नहीं करते हैं। सम्भवतः वे किसी स्थानीय कलीसिया के सदस्य न भी हों। ऐसों से सावधान रहो।

झूठे शिक्षकों के विरुद्ध सबसे बड़ी सुरक्षा सच्ची सिखाने की सेवाओं से मिलती है जिन्हें परमेश्वर ने उसकी कलीसिया को दिया है। उनके जीवन और उनकी सेवाएँ दोनों सन्तुलित और फलदायक होती हैं। उनके शब्द मसीह की देह में जीवन, शान्ति और दिशा लाते हैं (यशायाह 30:20-21)।

पँच-गुणा सेवाओं का ऐल्डरों के साथ सम्बंध

पँच-गुणा सेवाओं का हर वरदान एक विशेष उद्देश्य और कार्य के लिए कलीसिया को दिया गया है।

<u>हमें उनका सार इस प्रकार दिखा सकते हैं:</u>

1. **प्रेरित** की **शासन** के लिए आवश्यकता है।
2. **भविष्यद्वक्ता** की **मार्गदर्शन** के लिए आवश्यकता है।
3. **सुसमाचार प्रचारक** की **इकट्ठा करने** के लिए आवश्यकता है।

4. **पास्टर** की **रखवाली करने** के लिए आवश्यकता है।
5. **शिक्षक** की **स्थापित करने** के लिए आवश्यकता है।

प्रेरित और भविष्यद्वक्ता मुख्य रूप से अपनी कलीसिया से दूर सेवा करते हैं। भविष्यद्वक्ता और शिक्षक भी उनकी सेवा के लिए यात्रा कर सकते हैं, परन्तु वे अपनी स्थानीय कलीसिया में भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं। पास्टर तो मुख्य रूप से अपनी स्थानीय कलीसिया में सेवा करता है। समय के साथ, वह एक प्रेरिताई सेवा में कार्य कर सकता है।
[नोटः कुछ बाइबल के विद्वान महसूस करते हैं कि इफिसियों 4:11 की भाषा पास्टर और शिक्षक को, दो कार्यों वाली एक सेवा में जोड़ते हैं। ऐसा लगेगा कि हर पास्टर को अपना चरवाहे का कार्य करने के लिए शिक्षक भी होना है। परन्तु, ऐसा जान पड़ता है कि पवित्रशास्त्र शिक्षक को एक भिन्न सेवा के रूप में भी पेश करता है (याकूब 3:1)।]

स्थानीय ऐल्डरों का अधिकार

नया नियम पँच-गुणा सेवा और स्थानीय ऐल्डरों के बीच के सम्बंध के विषय में सीधे से कुछ नहीं कहता है। परन्तु, कई तथ्य हैं जो हमें देखने में सहायता करते हैं कि वे कैसे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

1. नया नियम "पँच-गुणा सेवा" शब्द उपयोग नहीं करता है।

"पँच-गुणा सेवा" शब्द इफिसियों 4:11 में दी गई सेवाओं के लिए उपयोग किया गया है। पवित्रशास्त्र में यही एक स्थान है जहाँ ये पाँच सेवाएं एक साथ सूचीबद्ध की गई हैं। उनमें से कुछ दूसरे स्थानों - और दूसरी सेवाओं के साथ भी सूचीबद्ध की गई हैं (1 कुरिन्थियों 12)। परन्तु, उनकी प्रकृति के कारण, पौलुस ने उन्हें मसीह की देह के लिए "निरीक्षण" के वरदानों के रूप में सूचीबद्ध किया था। उन में से हर एक का कलीसिया की अगुआई के स्तर में स्थान है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि वे "सेवाओं" के वरदान हैं - "पद" नहीं हैं।

2. जैसा ऊपर कहा गया है, बाइबल के कई विद्वान मानते हैं कि नए नियम की कलीसिया में केवल दो पद हैं (फिलि. 1:1)।

आपको याद होगा, ये दो पद, ऐल्डरों और डीकनों के हैं। ये दो पद ही हैं जिनका उनके विशेष स्तरों के साथ विस्तार से विवरण दिया गया है। वे दोनों मिलकर परमेश्वर के घराने में की व्यवस्था और ढाँचे की मूल आवश्यकताओं को पूरा करते हैं (1 तीमु. 3:1-15)।

3. पवित्रशास्त्र कहता है कि केवल "ऐल्डर" ही स्थानीय कलीसिया में "अभिषिक्त" किए जाएँ (प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5)।

नए नियम में ऐसा कोई ब्योरा नहीं है कि किसी ने एक प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर या शिक्षक को उनकी सेवा में 'अभिषेक किया' था। परमेश्वर ने कई लोगों को विभिन्न सेवाओं में बुलाया है परन्तु उनका एक पद के लिए एक औपचारिक तौर पर 'अभिषेक' नहीं किया गया था। वे प्रार्थना, उपवास और हाथ रखने के द्वारा 'नियुक्त किए गए' या 'भेजे गए' थे। परन्तु अनेक विश्वास करते हैं कि यह कलीसिया में पद के लिए "अभिषेक" करने जैसा नहीं है।

4. ऐल्डरों की स्थानीय कलीसिया में जिम्मेवारी और अधिकार का पद था।

1 तीमु. 5:17 में, पौलुस उन ऐल्डरों की चर्चा करता है जो "अच्छा प्रबंध करते" हैं, जो एक स्थानीय कलीसिया की अगुआई में एक जिम्मेवारी और अधिकार का पद है। अनेक मामलों में, ऐल्डरों के अलावा किसी को भी एक स्थानीय कलीसिया में अधिक जिम्मेवारी और अधिकार नहीं है। हम इसके बाइबल में कई उदाहरण देखते हैं।

अ. जब पौलुस इफिसिया की कलीसिया को निर्देश देना चाहता था तो उसने कलीसिया के प्राचीनों को बुलवाया (प्रेरितों 20:17)। यह इसलिए था कि वे कलीसिया में प्रबंध के लिए जिम्मेवार होंगे।

आ. जब प्रेरित पौलुस यरूशलेम कलीसिया के अगुवों को मिलने गया तो वहाँ "सब प्राचीन इकट्ठे थे" (प्रेरितों 21:18-19)।

इ. जब बरनबास और शाऊल (पौलुस) के द्वारा कुछ सहायता यरूशलेम को भेजी गई, तो यह "प्राचीनों" को दी गई थी (प्रेरितों 11:30)।

स्पष्ट है कि नए नियम के समयों में स्थानीय कलीसिया में ऐल्डरों को नियुक्त और अभिषेक किया जाता था।

5. पँच-गुणा सेवाओं में से कुछ को ऐल्डरों के रूप में अभिषेक किया जा सकता है।

समय के साथ, एक स्थानीय कलीसिया में पास्टर, भविष्यद्वक्ता और शिक्षक की सेवाएँ होनी चाहिए। "पास्टर" शब्द जैसे यह आज उपयोग किया जाता है, प्रमुख या "अधिष्ठाता" ऐल्डर की बात करता है। वास्तव में, उसमें एक चरवाहे का हृदय, एक भविष्यद्वक्ता का दर्शन, और एक शिक्षक की बुद्धि होनी चाहिए। परन्तु, दूसरे ऐल्डर भी इन विशेष सेवाओं में कार्य करेंगे।
प्रेरित, सुसमाचार प्रचारक, सफरी भविष्यद्वक्ता या शिक्षक का एक अपना कलीसिया का आधार होना चाहिए। असल में, ऐसी सफरी सेवाएँ "स्थानीय" ऐल्डरशिप में से ही विकसित होती हैं। इससे बेहतर तैयारी और नहीं हो सकती है। सच में, ऐल्डरशिप ही वो व्यवस्था और अधिकार लाते हैं जो कलीसिया में सब सेवाओं के उचित कार्य के लिए आवश्यक हैं। इसमें पँच-गुणा सेवाएँ ही नहीं बल्कि दूसरी भी सम्मिलित हैं।

निष्कर्ष

ऐल्डर, डीकन और पँच-गुणा सेवाएं स्थानीय कलीसिया के पूर्ण कार्य के लिए आवश्यक नींव और व्यवस्था प्रदान करते हैं। परमेश्वर ने उन्हें दिया और स्थान में रखा है ताकि विश्वासी प्रभु में बढ़ें और उनकी सेवा के स्थान को पा सकें। केवल तब ही हर सदस्य सेवक बन सकेगा। केवल तब ही यीशु मसीह की कलीसिया - परमेश्वर, परमेश्वर के लोगों, और संसार की अपनी सेवा पूरी कर पाएगी।

अध्याय 3 – प्रदर्शन के वरदान

आत्मा के वरदान (1 कुरिन्थियों 12:8–10)

पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया को कहा "हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अनजान रहो" (1 कुरिं. 12:1)। परमेश्वर नहीं चाहता कि आज के विश्वासी भी अनजान रहें। बाइबल में कई आत्मिक वरदानों का जिक्र है (रोमियों 12:8-10, 28-30; इफि. 4:11)। इस संक्षिप्त अध्ययन के लिए, हम 1 कुरिं. 12:8-10 में दिए नौ आत्मा के वरदानों पर ही ध्यान देंगे। उनके अध्ययन को सरल करने के लिए, हम उन्हें तीन वर्गों में वर्गीकरण करेंगे:

1. – वाणी के वरदान

1. अन्य भाषा
2. भाषाओं का अर्थ
3. भविष्यद्वाणी

2. – प्रकटीकरण के वरदान

4. बुद्धि का वचन
5. ज्ञान का वचन
6. आत्माओं की परख

3. – योग्यता के वरदान

7. विश्वास का वरदान
8. चंगा करने का वरदान
9. सामर्थ्य के काम करने की शक्ति

ऐसे वरदानों के प्रयोग में आत्मा किसे उपयोग करेगा?

1. देह का कोई भी सदस्य उपयोग हो सकता है (1 कुरिं. 12:7, 11; 14:26, 31)।
2. हमें आत्मिक वरदानों के विषय में अनजान नहीं रहना है (1 कुरिं. 12:1)।
3. हमें आत्मिक वरदानों की धुन में रहना है (1 कुरिं. 14:1)।

4. हमें देह के लिए सच्चे प्रेम (1 कुरिं. 13) और देह की उन्नति की शुद्ध इच्छा से प्रेरित रहना है (1 कुरिं. 14:12)।

5. हमें कलीसिया की उन्नति के उद्देश्य से वरदानों के प्रयोग में श्रेष्ठ होना है (1 कुरिं. 14:12)।

वाणी के वरदान

1. अन्य भाषा का वरदान (1 कुरिं. 12:10)

अन्य भाषा के वरदान के दो कार्य हैं:

अ. उपयोग कर रहे व्यक्ति की उन्नति।

आ. मात्र व्यक्तिगत विश्वासी ही नहीं, बल्कि सारी कलीसिया की उन्नति (जब भाषाओं के अर्थ के वरदान के साथ उपयोग किया जाता है)।

अन्य भाषा के वरदान का उपयोग:

अ. प्रेम से प्रेरित होना चाहिए (1 कुरिं. 13:1)

आ. भाषाओं के अर्थ के साथ होना चाहिए (1 कुरिं. 14:5, 13, 28)

इ. किसी एक सभा में तीन उच्चारण तक ही सीमित हो (1 कुरिं. 14:27)

आत्मा में समर्पित होने का प्रयत्न करो। किसी विशेष सभा में आत्मा क्या करने या कहने का प्रयत्न कर रहा है, उसकी ओर एक संवेदनशीलता विकसित करो। जब पवित्र आत्मा आपके द्वारा एक अन्य भाषा लाना चाहता है तो आपके बोलने से पहले आप सामान्यतः आपने अन्दर इसका ज्ञान अनुभव करने लगेंगे। यह आपके आत्मा में अकसर एक नम्र हलचल, एक बढ़ती उत्तेजना और पूर्वाभास होता है। बोलने के सही समय का शान्ति से प्रतीक्षा करो। पवित्र आत्मा आपको स्पष्टता से प्रेरित करेगा। वह उसे रोकेगा नहीं जो पहले ही सभा में हो रहा है। वह उलझन पैदा नहीं करेगा, क्योंकि वह गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है (1 कुरिं. 14:33)। एक सामान्य परन्तु स्पष्ट श्रव्य आवाज में बोलो। आपको चिल्लाने की जरूरत नहीं है। आत्मा के साथ, जो आपको उच्चारण दे रहा है, कार्य करो। जब उच्चारण पूरा हो जाए तब सब अर्थ के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा करें। अर्थ अकसर दूसरे विश्वासी को दिया जाएगा; परन्तु जब ऐसा नहीं होता है तब जिसने अन्य भाषा बोली थी वह धीमें धीमें प्रार्थना करे कि उसे अन्य भाषा का अर्थ दिया जाए (1 कुरिं. 14:13)।

2. अन्य भाषा का अर्थ (1 कुरिं. 12:10)

यह अन्य भाषा के वरदान का साथी वरदान है, और सदा उसके साथ उपयोग होता है। यह पवित्र आत्म द्वारा दी गई अलौकिक योग्यता है जिसके द्वारा बोली गई अन्य भाषा के अर्थ सभा की भाषा में बताया जाता है। अन्य भाषा का अर्थ अनुवाद का वरदान नहीं है। अर्थ बतानेवाला अकसर बोली गई अन्य भाषा को नहीं जानता है। आत्मा के इस वरदान के द्वारा, जिसे अर्थ दिया जा रहा है जान जाता है कि अन्य भाषा में क्या कहा गया था, और उसे सभा को सरल शब्दों में बता देता है, जिससे वे उसे स्वीकार करके उससे उन्नति पाते हैं।

इस वरदान को कौन उपयोग कर सकता है?

अन्य भाषा का अर्थ "वही एक आत्मा कराता है" (1 कुरिं. 12:11)। पवित्र आत्मा किसी भी आत्मा से भरे विश्वासी को एक भाषा का अर्थ बताने के लिए चुन और अभिषिक्त कर सकता है। आरम्भ में जब आप बोलने लगें, तब सम्भव है आपके पास एक ही वाक्य, और आगे क्या आनेवाला है का एक संक्षिप्त विचार ही होगा। आत्मा के दूसरे वरदानों के समान, यह भी विश्वास से कार्य करता है। जैसे आप वह बोलने लगें जो आत्मा आपको दे रहा है, तो ध्यान दो कि "विश्वास के परिमाण से बढ़कर" कुछ मत बोलो (रोमियों 12:6)। अर्थ में किसी व्यक्तिगत विचार या भावना को घुसने देने से बचो। जब अर्थ समाप्त हो गया है, और आपको लगता है जो कुछ आत्मा बोलना चाहता था बोल चुका है, तब चुप हो जाओ। अब लोगों को यह मत बताने लगो कि आपके विचार में अर्थ क्या हो सकता था। अर्थ बताने के बाद शान्त हो जाओ जबकि दूसरे इस अर्थ को परखें। यदि ऐसे कोई विश्वासी उपस्थिति हैं जिन्हें वाणी के वरदानों में नियमित उपयोग किया जाता है तो उन्हें परखना चाहिए कि क्या ये शब्द परमेश्वर की ओर से थे। इसे परखने का स्तर वही होना चाहिए जिसे हम भविष्यद्वाणी परखने के लिए उपयोग करते हैं।

3. भविष्यद्वाणी का वरदान (1 कुरिं. 12:10)

भविष्यद्वाणी शब्द का सरल अर्थ है: "प्रेरित शब्दों को बोलना"। 1 कुरिं. 14:31 के अनुसार, जैसा आत्मा चाहता है, सब विश्वासी इस वरदान को कभी न कभी उपयोग कर सकते हैं। सब एक-एक करके, भविष्यद्वाणी कर सकते हैं, और एक सभा में तीन से अधिक न करें (1 कुरिं. 14:29-33)।

1 कुरिं. 14:3 के अनुसार, भविष्यद्वाणी का उद्देश्य हो सकता है:

अ. कलीसिया की उन्नति: इसका अर्थ है विश्वासियों की उन्नति करना और मजबूत करना।

आ. उन्हें उपदेश देना: विश्वासियों को उत्तेजित करना; उनका सामना करना और चुनौती देना।

इ. उन्हें शान्ति देना: प्रोत्साहन, और शान्ति के शब्द बोलना।

अकसर एक भविष्यद्वाणी में ये तीनों चीजें सम्मिलित हो सकती हैं।

भविष्यद्वाणी के विषय में तीन गलतफहमियाँ

1. इसे प्रचार के साथ उलझाना नहीं है।

आजकल कई बल देकर कहते हैं कि भविष्यद्वाणी का वरदान अच्छा प्रचार करने की योग्यता है। परन्तु, प्रचार और शिक्षा अकसर परमेश्वर के वचन का प्रार्थनापूर्वक मनन, और ध्यानपूर्वक तैयारी का परिणाम होते हैं। बदले में, भविष्यद्वाणी का वरदान ध्यानपूर्वक अध्ययन का परिणाम नहीं है। यह आत्मा के द्वारा स्वतः बोलना है (हालाँकि इसके बोलने का समय भविष्यद्वक्ता के नियंत्रण में होता है)।

2. भविष्यद्वाणी का वरदान भविष्य बताने के लिए नहीं है।

यह वरदान भविष्य बताने के लिए नहीं है बल्कि बोलने के लिए है। इसका उद्देश्य उन्नति, उपदेश और शान्ति है - भविष्य की घटनाओं को बताने का प्रयत्न नहीं। जब कभी भी एक भविष्यद्वाणी में भविष्य की घटनाओं का जिक्र होता है तो यह अकसर इसलिए है क्योंकि इसके साथ एक दूसरा वरदान (ज्ञान या बुद्धि का वचन) कार्य कर रहा है।

3. यह वरदान व्यक्तिगत मार्गदर्शन के लिए नहीं है।

यदि हमें व्यक्तिगत मार्गदर्शन की आवश्यकता है तो हमें सीधे यीशु से पूछना चाहिए (याकूब 1:5)। हम ऐसे मार्गदर्शन को बाइबल के पन्नों में भी खोज सकते हैं। यह भविष्य के निर्देशों के साथ हमें भविष्यद्वाणी का वचन मिलता है तो इसका उद्देश्य उसकी पुष्टि करना होना चाहिए जो परमेश्वर ने पहले से हमें दिखाया है।

भविष्यद्वाणी के वरदान की बाइबल की शिक्षा

1. यह अलौकिक रूप से मनुष्यों से बोलने के लिए है (1 कुरिं. 14:3) - इससे प्रभु का मन कलीसिया को प्रकट किया जाता है।
2. भविष्यद्वाणी के लिए अर्थ की आवश्यकता नहीं है।
3. भविष्यद्वाणी अशिक्षित या अविश्वासियों को कायल करती है (1 कुरिं. 14:24-25)।
4. भविष्यद्वाणी कार्य करती है ताकि विश्वासी सीख सकें (1 कुरिं. 14:31)।
5. सब को इस वरदान की इच्छा और धुन होनी चाहिए (1 कुरिं. 14:1, 39)।
6. वरदान कार्य में लानेवाला व्यक्ति इसके उपयोग या दुरूपयोग के लिए जिम्मेवार है (1 कुरिं. 14:32)।

भविष्यद्वाणी कोई अनियंत्रित उच्चारण नहीं है। न ही भविष्यद्वाणी बोलनेवाला किसी प्रकार की बेसुधी में होता है। वह अपनी इच्छा के विरुद्ध न तो कुछ कर रहा है और न ही कुछ बोल रहा है।

7. क्योंकि मानवीय तत्त्व भ्रमशील होता है, भविष्यद्वाणियों को परख जाना चाहिए (1 कुरिं. 14:29)।

एक भविष्यद्वाणी को कैसे परख जाए?

<u>एक सच्ची, आत्मा से भरी भविष्यद्वाणी:</u>

अ) कभी भी परमेश्वर के वचन का खण्डन नहीं करेगी। इसलिए हर भविष्यद्वाणी के उच्चारण को परमेश्वर के वचन से परखा जाना चाहिए। परमेश्वर भविष्यद्वाणी के द्वारा आपको ऐसा कुछ भी करने के लिए नहीं कहेगा जिसे उसका वचन मना करता है।

आ) यह सदा यीशु मसीह को ऊँचा करेगी, और कभी भी उसे बदनाम नहीं करेगी।

इ) यह विश्वासियों से उन्नति, उपदेश और शान्ति की बातें करेगी। यह कभी भी उन्हें उलझन, व्यथित और अनिश्चित न छोड़ेगी।

ई)	इसे अधिकाँश उपस्थित विश्वासियों को "प्रमाण" देना चाहिए - विशेषकर अधिक परिपक्व विश्वासियों को जिन्हें आप भी वाणी के वरदानों में नियमित उपयोग किया जाता है।
उ)	यह सभा की आत्मा के नहीं तोड़ेगी, हालाँकि हो सकता है यह इसकी दिशा को बदल दे।
ऊ)	यदि इसमें भविष्यसूचक तत्त्व है तो वह पूरा होगा।
ए)	"फल की परीक्षा" (मत्ती 7:16)। यीशु ने कहा, "उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।" हमें ऐसी किसी भी भविष्यद्वाणी को अस्वीकार कर देना चाहिए जो ऐसे व्यक्ति से आती है जिसका जीवन और व्यवहार मसीह के नाम के लिए भर्त्सना हैं।

प्रकटीकरण के वरदान

4. ज्ञान का वचन (1 कुरिं. 12:8)

एक ज्ञान का वचनः परमेश्वर के ज्ञान का अंश या छोटी चीज है, जिसे पवित्र आत्मा एक व्यक्ति को देता है। यह जानकारी व्यक्ति को पहले पता नहीं थी, और यह ज्ञान स्वाभाविक साधनों से प्राप्त नहीं किया जा सकता था। इसे परमेश्वर देता है।
बाइबल के उदाहरण:

अ.	यीशु की सेवा में: यूहन्ना 1:47-50; 4:16-19, 39-42
आ.	प्रारंभिक कलीसिया में: प्रेरितों 9:10-20
इ.	पुराने नियम से उदाहरणः 2 शमूएल 12:1-14

ज्ञान का एक वचन बौद्धिक शिक्षा से नहीं प्राप्त किया जा सकता है। इसे पुस्तकों का अध्ययन करके या स्कूल या कालेज का शस्त्रीय कोर्स का अध्ययन करके नहीं प्राप्त किया जा सकता है। न ही यह बाइबल का अध्ययन या समझने या अर्थ बूझने की योग्यता है।

पवित्रशास्त्र में उपयोग किए गए ज्ञान के वचन

अ.	पाप उघाड़ने के लिए (2 शमूएल 12:1-10; प्रेरितों 5:1-11)
आ.	लोगों को परमेश्वर के पास लाने के लिए (यूहन्ना 1:47-50; 4:16-19; 39-42)
इ.	मार्गदर्शन और दिशा देने के लिए (प्रेरितों 9:11)
ई.	निराशा के समय प्रोत्साहन देने के लिए (1 राजा 19:9-18)
उ.	भविष्य की घटनाओं का ज्ञान देने के लिए (यूहन्ना 11:11-14)
ऊ.	गुप्त चीजों को प्रकट करने के लिए (1 शमूएल 10:22)

इस वरदान का प्रयोग:

अ.	यह चरित्र में अलौकिक है - तर्क, अनुमिति, विवेचन, या स्वाभाविक इंद्रियों से प्राप्त नहीं होता।
आ.	यह विश्वास से कार्य करता है - प्रकटीकरण पाने वाला व्यक्ति विश्वास से करता है।
इ.	प्रकटीकरण व्यक्ति की आत्मा में प्राप्त होती है - बुद्धि या भावनाओं में नहीं।
ई.	यह वाणी का वरदान नहीं है (प्रेरितों 9:10-11)। यह शान्ति से और अश्रव्य रूप से व्यक्ति के आत्मा में प्राप्त होता है।
उ.	इसे तब स्वर मिलता है जब इसे दूसरों को बताया जाता है (यूहन्ना 4:18)।
ऊ.	कोई भी आत्मा से भरा मसीही जो परमेश्वर को सुनना चाहता है इस वरदान को अनुभव कर सकता है।
ए.	कौंसलिंग की सेवा में यह एक बहुमूल्य गुण है।
ऐ.	एक व्यक्ति की सेवा में इस वरदान के होते रहने के लिए आज्ञाकारी क्रिया और प्रतिक्रिया आवश्यक हैं।

5. बुद्धि का वचन (1 कुरिं. 12:8)

यह वरदान बड़े महत्त्व का है। यह हमें ईश्वरीय बुद्धि के साथ बोलने और कार्य करने में योग्य करता है, और इस प्रकार दूसरे वरदानों के उचित उपयोग और प्रयोग को निश्चित करता है। बुद्धि का वचन ईश्वरीय बुद्धि का अंश है जिसे पवित्र आत्मा अलौकिक रूप से प्रदान करता है। यह व्यक्ति को तात्कालिक बुद्धि देता है कि किसी परिस्थिति में उसे क्या कहना या करना है। परमेश्वर अकसर इस वरदान को ज्ञान के वचन के साथ देता है, ताकि विश्वासियों को पता चले कि ज्ञान के वचन को सही-सही

कैसे प्रयोग में लाना है। परमेश्वर ने एक ज्ञान के वचन के द्वारा शाऊल का अता-पता और स्थिति हनन्याह पर प्रकट की (प्रेरितों 9)। उसने उसे बुद्धि के वचन के द्वारा यह भी बताया कि इस कठिन परिस्थिति में उसे क्या करना है।
याकूब 1:5 में बुद्धि के वचन (logos) का, न कि बुद्धि के वरदान का जिक्र है।

<u>बुद्धि का वचन नहीं है:</u>

- स्वाभाविक बुद्धि
- शैक्षिक उपलब्धि से पाई बुद्धि
- अनुभव से पाई बुद्धि
- बाइबल को समझने की बुद्धि

बुद्धि का वचन है:

- स्वभाव में अलौकिक
- जैसा पवित्र आत्मा चाहता है देता है (1 कुरिं. 12:11)
- एक विशेष आवश्यकता या स्थिति के लिए दी जाती है

बाइबल के कुछ उदाहरण:
लूका 4:1-13; 20:22-26; यूहन्ना 8:3-11; प्रेरितों 6:1-5; 15:28; 27:23-24
बुद्धि के वचन की प्रतिज्ञा आवश्यकता के समय मसीह के सब चेलों से की गई है (लूका 21:14-15)।

6. **आत्माओं की परख** (1 कुरिं. 12:10)

आत्माओं की परख तीसरा प्रकटीकरण का वरदान है; बुद्धि का वचन और ज्ञान का वचन दूसरो दो हैं। यह पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया एक ईश्वरीय वरदान है ताकि हम <u>शैतान की आत्मा (दुष्टात्मा), परमेश्वर के आत्मा, और मनुष्य की आत्मा में भेद दिखलाने के लिए आत्मिक क्षेत्र को बेध सकें।</u>

अ. वरदान का कार्य

आत्माओं के परख का वरदान व्यक्ति को आत्माओं के स्वभाव और क्रियाओं की अलौकिक समझ देता है। कभी-कभी शैतान के आत्मा के कार्यों और परमेश्वर के आत्मा के कार्यों में आसानी से उलझन पैदा हो जाती है। शैतान पवित्र आत्मा के कार्यों की सदा नकल करने की कोशिश करता है (2 कुरिं. 11:14)। शैतान धोखेबाज, झूठ का पिता, और साँप के नाम से जाना जाता है। ये सब नाम धूर्त, चालाक कपट हैं जिन्हें वह जहाँ कहीं भी वह हो, बुराई लाने के लिए उपयोग करता है।
प्रेरितों 16 में उस लड़की की कहानी में जिसमें भावी कहनेवाली आत्मा थी, पौलुस ने उसे चुनौती दी जो परमेश्वर के दूसरे सेवकों को बड़ी सरलता से धोखा दे गई होती। लड़की ने बिलकुल सच्ची बात कही थी जब उसने कहा, "ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं", परन्तु बोलनेवाली आत्मा दुष्टात्मा थी।

आ. वरदान का आज कार्य और आवश्यकता

यदि कलीसिया को अपना मिशन पूरा करना है और शैतान के कार्यों को नष्ट करना है तो आत्माओं के परख का वरदान बिलकुल आवश्यक है। आज भी संसार में उतनी ही दुष्टात्माएँ हैं जितनी तब थीं जब प्रभु यीशु पृथ्वी पर चले थे और प्रारंभिक कलीसिया के दिनों में थीं। उनका उद्देश्य उतना ही प्रकट रूप से बुरा है। यह अलौकिक वरदान मिशनरियों और कार्यकर्त्ताओं के लिए विशेषकर आवश्यक है जो प्रेतात्मवाद, शैतान-पूजा और गुह्यविद्या के बीच सेवा करते हैं।

इ. आत्माओं के परख का वरदान कैसे कार्य करता है

इस वरदान का पहला और सबसे प्रत्यक्ष कार्य लोगों या कलीसियाओं के जीवन में दुष्टात्माओं की उपस्थिति प्रकट करना है। परन्तु, यह एक भविष्यद्वाणी के संदेश, एक विशेष शिक्षा, या कोई अलौकिक प्रदर्शन के स्रोत का पता लगाने का कार्य भी करता है। इस वरदान को प्रयोग करनेवाला व्यक्ति बता सकेगा कि संदेश या कार्य का स्रोत शैतानी, ईश्वरीय, या मात्र मानवीय है।

ई. आत्माओं की परख को दूसरे वरदानों के साथ कार्य करना चाहिए

हालाँकि आत्माओं के परख का वरदान प्रभावशाली छुटकारे के लिए आवश्यक है, यह अपने आप में पर्याप्त नहीं है। इसे विश्वास और सामर्थ्य के काम के वरदानों के साथ कार्य करना है। जो इन वरदानों के साथ कार्य करते हैं अकसर दुष्टात्माओं को निकालने में बड़ी सफलता अनुभव करते हैं।

योग्यता के वरदान

7. **विश्वास का वरदान** (1 कुरिं. 12:9)

क्योंकि विश्वास भविष्य और अदृश्य से - चीजें जो शारीरिक रूप से अनुभव नहीं होतीं - सम्बंध रखता है, इसलिए विश्वास का वरदान किसी को दिया गया विशेष दान है जिसे विशेष विश्वास का प्रयोग करने के लिए बुलाया जाता है। परमेश्वर उसे किसी भी संदेह से खाली कर देता है, और उसे विशेष विश्वास से भर देता है। इससे उसे जीवन की हर विरोधी और खण्डनक परिस्थिति के बावजूद परमेश्वर के उद्देश्य पूरे करने की योग्यता प्राप्त होती है।

सामान्य विश्वास उद्धार के आरम्भिक विश्वास में से बढ़ता है जिसे परमेश्वर ने हमारे हृदयों में डाला है (रोमियों 1:17 देखो)। सामान्य विश्वास की श्रेणी विश्वासी के विकास के चरण के साथ बदलती है ("कम विश्वास', 'बड़ा विश्वास', आदि)। सामान्य विश्वास वचन का मनन करके, जीवन के हालातों में प्रयोग में लाकर, और समान चीजों से बढ़ता है।

परन्तु, विश्वास के वरदान का सामान्य विश्वास के सबसे ऊँची श्रेणी से भी श्रेष्ठ कार्य है। कुछ अनुवादकों ने विश्वास के वरदान को "विशेष वरदान" कहा है। यह एक ऐसे विश्वास का संकेत देता है जिसे पवित्र आत्मा ने विशेष और लघूकारी परिस्थितियों में हमारी आवश्यकता को पूरा करने के लिए दिया है। इससे आगे पता चलता है कि विश्वास का वरदान कई विश्वासियों में स्थाई रूप से स्थित नहीं रहता है, परन्तु कि हर प्रदर्शन एक अलग विश्वास का वरदान है। एलिय्याह के जीवन से एक घटना इसे चित्रित करती है, जब उसने राजा आहाब को घोषित किया कि उसके बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी (1 राजा 17:1)। उसके विश्वास के वरदान ने उस भविष्यद्वाणी को चमत्कारी रूप से पूरा किया। इसके विपरीत, यह असामान्य विश्वास लापता था जब वह झाऊ के पेड़ के नीचे, भयभीत और निराश बैठा, मरना चाहता था, क्योंकि इस समय इसकी आवश्यकता नहीं थी (1 राजा 19:4)। उसने परमेश्वर या उसके वचन में अपना खोया नहीं था।

<u>परमेश्वर चाहता है आप जान लो कि आप यह जानते हुए भरोसे के साथ आगे बढ़ सकते हो कि जब आपके ऊपर विशेष माँगे की जाएँगी, तब वह आपको उसका उद्देश्य पूरा करने के लिए विशेष विश्वास अलौकिक रूप से देगा।</u>

विश्वास का वरदान कैसे कार्य करता है?

दानिय्येल की शेरों से रक्षा (विश्वास के वरदान का एक निष्क्रिय उदाहरण) शिमशोन के शेर को मारने के निरोध में दिखता है, जो परमेश्वर के सामर्थ्य (यह सामर्थ्य के काम का एक उदाहरण हो सकता है) में व्यक्ति के सक्रिय सम्मिलित होने का उदाहरण है। यह विचार कि विश्वास का वरदान निष्क्रिय रूप से कार्य करता है, इसलिए है क्योंकि यह अकसर अधिक नाटकीय वरदानों (जैसे कि, सामर्थ्य के काम, चंगा करने का वरदान) के साथ कार्य करता है।

विश्वास का वरदान विश्वास के शब्द बोलकर भी प्रयोग में लाया जाता है - "मैं ने विश्वास किया, इसलिए मैं बोला" (2 कुरिं. 4:13) - जब ऐसे शब्द एक परमेश्वर का जन आत्मा से प्रेरणा पाकर बोलता है तो परमेश्वर उन्हें अपने शब्दों के रूप में समर्थन देता है। यह वरदान कई तरीकों से कार्य कर सकता है (जैसे कि, आशीष देने के लिए, शाप देने के लिए, रचने के लिए, नष्ट करने के लिए आदि)। विश्वास के वरदान के यहोशू 10:12-14; 1 राजा 17:1; प्रेरितों 13:11 में बोले गए शब्दों के द्वारा कार्य करने के कुछ उल्लेखनीय उदाहरण हैं।

<u>पवित्रशास्त्र विश्वास के वचन का सिद्धान्त सिखाते हैं:</u>

मरकुस 11:22-23: "परमेश्वर पर विश्वास रखो" के आदेश के साथ "जो कहता हूँ हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा"।

महत्त्वपूर्ण बात: हम एक शब्द बोलकर परमेश्वर को हमारे लिए कुछ करने के लिए विवश नहीं कर सकते हैं जब तक कि:

अ) इसके होने की परमेश्वर की इच्छा नहीं है, और

आ) परमेश्वर ने हमें, विश्वास के वरदान के द्वारा, एक विश्वास का वचन बोलने के लिए नहीं कहा है।

यदि इसके होने की परमेश्वर की इच्छा नहीं है - तो चाहे हम कैसा भी क्यों न महसूस करें - यह नहीं होगा। "यदि यहोवा ने आज्ञा न दी हो, तब कौन है कि वचन कहे और वह पूरा हो जाए? विपत्ति और कल्याण, क्या दोनों परमप्रधान की आज्ञा से नहीं होते।" (विलापगीत 3:37-38)।

8. **चंगा करने का वरदान** (1 कुरिं. 12:9)

1 कुरिन्थियों 12:9, 28, 30 में यूनानी शब्द 'charismata iamaton' हैं। दोनों शब्द बहुवचन में हैं, जिससे इस वरदान का सही अनुवाद होगा, "चंगा करने के वरदान"। चंगा करने के वरदान बीमारियों और कमजोरियों को बिना किसी स्वाभाविक साधनों से अलौकिक रूप से चंग करने के लिए कार्य करते हैं। पवित्र आत्मा का सामर्थ्य एक व्यक्ति के ऊपर आता है, जिससे बीमारी लुप्त हो जाती है और दर्द चला जाता है, और वह चंगा हो जाता है। यहाँ बहुवचन संज्ञा का उपयोग पीड़ित मानवजाति के लिए परमेश्वर के चंगा करने के वरदानों की भरपूरता पर जोर देता है। यह इस बात पर भी बल देता है कि यीशु की चंगाई हर बीमार, कमजोरी, महामारी, विकृति और विपत्ति से छुटकारा देती है। इसका अर्थ यह भी है कि इस वरदान के बहुत विविध प्रदर्शन हैं (1 कुरिं. 12:4-7)।

चंगा करने के वरदान का प्रयोग वरदान पाए व्यक्ति को सब बीमारों को सब समय चंगा करने की योग्यता नहीं देता है। कुछ लोगों ने इसे गलत समझा है और प्रश्न किया है कि क्यों न हम अस्पतालों और ऐसे दूसरे स्थानों में जाएँ और सब बीमारों को चंगा कर दें। यीशु ने भी ऐसा नहीं किया: वह एक ऐसे स्थान में एक बार गया था जो आज के अस्पताल के समान है - वह बैतहसदा के कुण्ड को गया, जहा बहुत से बीमार लोग पड़े रहते थे. तब भी, उसने उन सब में से केवल एक को चुना और चंगा किया।

कई बार हम पढ़ते हैं कि एक बड़ी भीड़ उनके बीमारों को लेकर यीशु के पास आए, और हमें बताया गया है कि उसने सबको 'चंगा किया।" ईश्वरीय चंगाई का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि व्यक्ति को, विश्वास और सहयोग के रूप में, यीशु के पास आना है।

चंगा करने के वरदानों का उद्देश्य

अ. बीमारों और दुखियों को चंगा करना, और मनुष्य के शरीरों में से शैतान के कार्यों को नष्ट करना (1 यूहन्ना 3:8; प्रेरितों 10:38; लूका 13:16)।

आ. मसीह के परमेश्वर का पुत्र होने के दावे को प्रमाणित करना (यूहन्ना 10:36-38)।

इ. वचन प्रमाणित करना (मरकुस 10:17-20)।

ई. लोगों को सुसमाचार की ओर आकर्षित करना (मत्ती 4:23, 25)।

उ. परमेश्वर को महिमा लाना (मरकुस 2:12; लूका 13:13; 18:43; यूहन्ना 9:2-3)।

दूसरे सब वरदानो के समान, चंगा करने का वरदान न केवल दिया जाना चाहिए, बल्कि स्वीकार भी किया जाना चाहिए। जिस प्रकार इन वरदानों के प्रयोग से सम्बंधित विश्वास का एक सिद्धान्त है, उसी प्रकार उन्हें कैसे स्वीकार करना है, इसके लिए भी एक सिद्धान्त है। हिजकिय्याह को चंगाई स्वीकार करने में कठिनाई हो रही थी जिसे परमेश्वर ने उसके लिए भेजा था। उसके विश्वास को एक विशेष तरीके से बनाने की आवश्यकता थी जैसे 2 राजा 20:8-11 में दिया गया है। चंगाई के लिए अकसर विश्वास का दोगुणा कार्य लगता है: चंगाई पाने के लिए विश्वास और चंगाई के वरदान की सेवा करने के लिए विश्वास। चंगा करने की परमेश्वर की इच्छा बहुत भरपूर है। फिर भी, हर बीमार व्यक्ति प्रार्थना करने पर तुरन्त चंगा नहीं हो जाता है; और कभी-कभी तो व्यक्ति अपने जीवन भर में चंगा होता ही नहीं है।

कभी-कभी परमेश्वर चंगाई के वरदान चंगाई के सामान्य माध्यमों से देता है; और कभी-कभी, अपनी इच्छा के अनुसार, असाधारण साधनों से देता है (जैसे कि, पतरस की छाया, प्रेरितों 5:15-16)।

9. **सामर्थ्य के काम** (1 कुरिं. 12:10)

सामर्थ्य के काम करने का वरदान तब कार्य करता है जब परमेश्वर हमें, मनुष्य की योग्यता से बाहर कुछ करने के लिए, पवित्र आत्मा का सामर्थ्य प्रदान करता है। वह हमें इसे एक विशेष उद्देश्य से एक विशेष समय पर देता है।

चमत्कार पुनरुत्थान का अखण्डनीय प्रमाण देते हैं

यदि यीशु जीवित नहीं होते, तो उसके नाम में बीमार को चंगा करने और चमत्कार करने का सामर्थ्य नहीं होता (प्रेरितों 4:31)। पतरस ने अविश्वासी यहूदियों को यीशु के पुनरुत्थान और उनके मन फिराने की आवश्यकता के विषय में इस सच्चाई की शक्ति के बल पर कायल किया कि यीशु के नाम में अभी भी चंगा करने और चमत्कार करने की सामर्थ्य थी।

सामर्थ्य के काम:

अ. मसीह का प्रचार करने के लिए विश्वासियों को साहस देते हैं (प्रेरितों 4:29-30)।
आ. विश्वासियों की परमेश्वर के लिए भूख बढ़ाते हैं (प्रेरितों 4:31-32)।
इ. परमेश्वर के अखण्डनीय सामर्थ्य के विषय में लोगों को कायल और दोषसिद्ध करता है (प्रेरितों 4:13-16;5:28-33)।
ई. चंगाई का चमत्कार देखकर और परमेश्वर के वचन का प्रचार सुनकर एक दिन में पाँच हजार लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास किया (प्रेरितों 4:4, और 5:12-14 भी देखो)।
उ. सब लोगों ने जो हुआ था उसके लिए परमेश्वर की महिमा की (प्रेरितों 4:21)।
ऊ. इससे सुसमाचार शीघ्रता से फैलने लगा (प्रेरितों 5:14-16)।

यीशु के चमत्कार करने से पहले, कोई भीड़ उसके पास नहीं आई थी। उसने कई बार आराधनालय में प्रचार किया होगा, क्योंकि लूका 4 कहता है यह उसकी रीति थी। परन्तु जब लूका 4:33-37 में चमत्कार होने लगे तो "इस प्रकार चारों ओर हर जगह उसकी चर्चा होने लगी"। तब से लेकर, भीड़ की भीड़ उसे सुनने के लिए और उसके चमत्कार देखने के लिए उस पर गिरी पड़ती थी। "एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बीमारों पर दिखाता था वे उनको देखते थे" (यूहन्ना 6:2)। हर जगह जहाँ चेलों ने प्रचार किया, बीमारों को चंगा किया, दुष्टात्माओं को निकाला और चमत्कार किए, भीड़ की भीड़ यीशु की ओर फिरने लगी। आप ऐसे कुछ विवरण प्रेरितों 5:12-16; 8:6; 9:34-35; 9:40-42; 14:8-18; 28:8-9 में पढ़ सकते हो।
सामर्थ्य के काम पवित्र आत्मा की शक्ति है जो परमेश्वर के बदले विश्वासी को एक चमत्कार करने की योग्यता देता है। इस प्रकार कई लोगों ने जिन्होंने यह वरदान नहीं पाया है, परन्तु अदभुत चमत्कारों को उनके जीवन में अनुभव किया है जिन्हें परमेश्वर ने किया था। यह परमेश्वर का सीधा सामर्थ्य है जो चमत्कार करता है। हम केवल जैसा प्रभु चाहता है उसे कार्य करने देते हैं।

कुछ उदाहरण:

अ. छुटकारे के चमत्कार, जैसे कि प्रेरितों 5:17-20 में पतरस का और प्रेरितों 12:1-10 में भी। पौलुस और सीलास का प्रेरितों 16:15-30 में।
आ. स्थानान्तरण का चमत्कार (प्रेरितों 8:39)। "प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, और खोजे ने उसे फिर न देखा।"

ये और दूसरी भी, चमत्कार हैं जिन्हें परमेश्वर ने विश्वासियों के जीवन में किया था, कभी-कभी ये विश्वासी के सहयोग के बिना किए गए थे। इसलिए, ये वो घटनाएँ नहीं हैं जहाँ सामर्थ्य के काम का वरदान कार्य कर रहा था। उनके विपरीत, तीन ऐसे उदाहरण हैं जहाँ वरदान कार्य कर रहा था:

1. प्रेरितों 19:11: "परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ्य के अनोखे काम दिखाता था।"
2. प्रेरितों 9:36-40: पतरस ने दोरकास को मरे हुओं में से जीवित किया।
3. प्रेरितों 20:9-12: पौलुस ने यूतुखुस को जीवित किया।

वरदान के व्यावहारिक कार्य

सामर्थ्य के काम के वरदान के कार्य में चाहिए:

अ. विशेष विश्वास और अधिकार बनाने के लिए पवित्र आत्मा का अभिषेक।
आ. विश्वास और अधिकार के साथ बोला गया वचन। एलिय्याह ने कहा कि जो परमेश्वर आग से उत्तर देगा इस्राएल का प्रभु है। जो आग ऊपर से गिरी सामर्थ्य के काम का एक उदाहरण था।

1 कुरिन्थियों 12:31 पर अतिरिक्त लेख:

"बड़े से बड़े" वरदान?

इस परिच्छेद के अन्त में, वरदानों की ओर एक सन्तुलित और सही ढंग बनाए रखने के लिए पौलुस एक मुख्य उपदेश देता है। लिखा है: "तुम बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो।" यहाँ उपयोग किए गए शब्द, देह के सादृश्य को उपयोग करके, वरदानों के विषय में पौलुस की पहले कही गई बातों के विरोध में लगते हैं (आय. 12-27)। उन वचनों में, वह बड़े जोर के साथ कहता है कि देह का कोई भी अंग दूसरे अंग से अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है। जब मानवीय शरीर का हर अंग अपना भाग ठीक से निभाता है, तो सारा शरीर बिलकुल ठीक से कार्य करता है। यही बात दूसरे वरदानों के विषय में भी सच है। एक स्थानीय कलीसिया में किसी भी

एक वरदान पर अधिक जोर, उसका अधिक उपयोग, या उसे अधिक कीमती नहीं मानना चाहिए। तब, पौलुस क्यों ऐसा संकेत देगा कि ऐसे "बड़े बड़े वरदान" हैं जिनकी धुन में हमें रहना चाहिए?

सही समय के लिए सही वरदान

1 कुरिन्थियों 12:31 के वचन का सही अर्थ इस प्रकार होगा: "सेवा के उचित समय के लिए बड़े से बड़े वरदान की धुन में रहो।" दूसरे शब्दों में, हमारी इच्छा केवल इतनी ही नहीं होनी चाहिए कि हम परमेश्वर से कोई भी वरदान माँगे जिसे फिर बार बार उपयोग करते रहें। बल्कि, हमारी इच्छा ऐसी होनी चाहिए कि परमेश्वर हमें उपयोग करे, और आवश्यक सेवा के उचित समय के लिए सही वरदान दे। भविष्यद्वाणी के शब्द अदभुत और प्रेरणात्मक होते हैं, परन्तु यदि किसी को चंगाई की आवश्यकता है तो एक भविष्यद्वाणी उसके काम की नहीं है। यह एक साधारण उदाहरण है, परन्तु यह दिखाता है कि किस प्रकार हमें बहुविध आवश्यकताओं के लिए बहुविध वरदान चाहिए। यह दिखाता है कि हमें उपलब्ध रहना चाहिए ताकि परमेश्वर जैसा चाहे हमें उपयोग कर सके। हमें पहले से ही सोच नहीं लेना चाहिए कि परमेश्वर हमें कैसे उपयोग करे; केवल इच्छा हो कि वह हमें उपयोग करे।

तैयार रहो

इसके लिए हमें हर समय, विशेषकर कलीसिया की सभाओं में, तैयार रहने की आवश्यकता है। इसका यह भी अर्थ है कि हमें पवित्र आत्मा की अगुआई में समर्पित रहना है और जैसे वह मार्गदर्शन दे हमें कदम उठाना है। यदि आपका हृदय ऐसा ही है, तब प्रार्थना और बाइबल के अध्ययन के द्वारा तैयार रहो - क्योंकि परमेश्वर आपको उपयोग करेगा।

सेवा का नीतिशास्त्र – पेशावर नीतिशास्त्र के लिए एक मार्गदर्शक और एक सेवक का अपना भक्तिपूर्ण व्यवहार–संहिता स्थापित करने के लिए सिद्धान्त

परिचय

एक कलीसिया का अगुवा, क्योंकि वह यीशु मसीह का एक सेवक है, अपने जीवन के लिए ऊँचे स्तर का आचरण स्थापित करने का प्रयत्न करेगा। प्रभु के अनुयायियों के रूप में, हम पर उसके समान जीने का दायित्व है। "जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूँ, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था" (1 यूहन्ना 2:6)। हम नैतिक व्यवहार के सिद्धान्तों के अनुसार जीना चुनते हैं जो समाज के प्रबल स्तरों और हमारे कलीसिया के सदस्यों से अकसर ऊँचे होते हैं। कलीसिया के अगुवों को दी गई परमेश्वर की आज्ञाओं का एक लक्ष्य है। "आज्ञा का सारांश यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपटरहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो।" (1 तीमु. 1:5)।

यह शिक्षा एक मसीही सेवक (पास्टर या अगुवा) की उसकी सेवा के लिए नीतिशास्त्र पर सम्पूर्ण रूप से विचार करने में सहायता करती है - तब अपने लिए व्यक्तिगत और पेशावर व्यवहार-संहिता की एक संगत और व्यापक प्रणाली स्थापित करेगा। यहाँ उठाए विषय एक सेवक की उस ऊँचे स्तर को स्थापित करने की उसकी खोज में मार्गदर्शन कर सकते हैं जिसकी अपेक्षा मसीह, कलीसिया और संसार एक कलीसिया के अगुवे से करता है। यदि एक सेवक भी इस शिक्षा को पढ़ने से ठोकर खाने या गिरने से बचाया जाए तो इसका उद्देश्य पूरा हो गया है।

एक मसीही कलीसिया के अगुवे के लिए बाइबल में बताए व्यवहार के स्तर 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1 में दिए हैं। इस स्तरों से कम पड़ने वाले आचरण सेवा की आलोचना पाएँगे, मसीह के नाम की निन्दा लाएँगे, और अनिवार्य रूप से कलीसिया की बढ़त को रोकेंगे। यह शिक्षा पौलुस द्वारा सूचीबद्ध किए 21 स्तरों का एक विस्तार हैं। 2 पतरस 1:1-11 की अदभुत प्रतीज्ञा हमारा शक्तिशाली आश्वासन है कि हम उस सीमा तक ईश्वरीय चरित्र (स्वभाव) के सहभागी हो सकें कि हमें कभी भी "ठोकर" न खानी पड़े। इस प्रतीज्ञा की दो शर्तें हैं:

(1) कि हम अपने बहुमूल्य विश्वास में चरित्र के आवश्यक नैतिक गुण जोड़ें; और

(2) कि हम इन गुणों को बढ़ाते जाएँ।

इस शिक्षा का उद्देश्य मसीह-समान चरित्र के इन नैतिक गुणों में उस बढ़त को प्रेरित करना है। कलीसिया के अधिकारियों को एक सूचना जो इसे पढ़ रहे होंगे: काल्पनिक अपेक्षा मत रखो कि आपका पास्टर सबकुछ जो यहाँ लिखा है उसका एक सिद्ध उदाहरण होगा। हम में से कोई भी नए नियम में चित्रित किए मसीही जीवन को पूरी तरह दोहराता नहीं है। अपने पास्टर को, उसकी मानवीय सीमाओं को पहचानते और स्वीकार करते हुए, उस कठिन और आवश्यक काम में जो उसे करना है, समझो और सहयोग दो। उसके लिए अकसर प्रार्थना करो। इन सिद्धान्तों को मण्डली में एक अगुवे के रूप में स्वयं जीने का प्रयत्न करो। अपने पास्टर को मसीह का एक अधिक प्रभावशाली सेवक बनने के लिए प्रेरित करने में यह आपका उत्तम प्रोत्साहन होगा। इस प्रकार सेवक और लोग सब "मसीह के पूरे डील-डौल तक" बढ़ते जाएंगे (इफि. 4:14-16)। कोई भी अगुवा इस शिक्षा से मिली अन्तर्दृष्टियों को अपने पास्टर पर आक्रमण करने या दोष लगाने में सफाई के रूप में उपयोग न करे (जब तक खुली नैतिक असफलता, रुपये-पैसे के प्रबंध में बेइमानी, या कोई दूसरा गम्भीर अपराध न हो)। जब परमेश्वर के सेवकों की व्यक्तिगत रुचियों के कारण जिनसे दूसरे असहमत हैं आलोचना होती है तो वह अपने सेवकों को आप शिक्षा देता, ताड़ना देता और बचाव करता है। हारून और मरियम का मूसा का एक कूशी से ब्याह करने के कारण (गिनती 12) विरोध करने की कहानी हमारे लिए एक चेतावनी हो।

सुलेमान ने अपने बेटों के लिए नैतिक जीवन में निर्देश की मनसा से नीतिवचन पुस्तक लिखी थी। इस प्रकार उसने आशा की कि वे उस व्यवहार का ज्ञान पाएँगे और उसकी नकल करेंगे जो "...परमेश्वर और मनुष्यों दोनों का अनुग्रह पाएगा" (नीतिवचन 3:4)। यह मेरी उत्सुक प्रार्थना है कि यह शिक्षा उनके लिए एक सहायक मार्गदर्शक सिद्धान्त बनेगा जो यीशु के लिए अच्छा करना चाहते हैं। मैं आशा करता हूँ कि यह कमियाँ-खोजनेवाले, फरीसी जैसे कर्मकाण्डवादियों के हाथ में न पड़े जो इसे कानूनों, नियमों, और निर्बन्धनों की पुस्तक के रूप में उपयोग करेंगे। यदि ऐसा हुआ तो वे इसे परमेश्वर के सच्चे सेवकों को आँकने, न्याय करने, दोष देने और दण्ड देने के लिए उपयोग करेंगे, क्योंकि वे सिद्ध नहीं हैं।

प्रस्तावना: सेवा – एक नैतिक व्यवसाय

सेवा उन्हें दी जाती है जिन्हें परमेश्वर ने पवित्र (कामुक, पापी कामों से अलग किए गए और परमेश्वर के लिए अलग किए गए) होने के लिए बुलाया है। एक कलीसिया के अगुवे को उसके बुलावे की, उसके जीवन की ऊँची नैतिक उत्तमता के द्वारा, और जिसका वह लोगों के सामने प्रचार करता है उसे व्यक्तिगत जीवन में उपयोग में लाने की वचनबद्धता के द्वारा प्रशंसा पानी है। एक सेवक परमेश्वर के एक सच्चे सेवक के रूप में अपनी प्रशंसा पाएँ (2 कुरिं. 6:3-10; 7:1-2), ज्योती के समान जीए, एक ऐसा जीवन जो सब मामलों, नैतिक और आर्थिक में बदनामी से दूर हो। आज के संसार में मसीह का एक चेला होने का अर्थ क्या होता है, एक कलीसिया का अगुवा उसका एक उदाहरण हो।

मसीह का एक चेला

1. विश्वासयोग्य सेवा

एक सेवक को अपना समय मसीह की सेवा में विश्वासयोग्यता और पूर्ण रूप से उपयोग करना चाहिए। उसे लोगों की सच्ची आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उचित अपेक्षा के बुलावे से बढ़कर उपलब्ध होना चाहिए। कलीसिया का अगुवा जो एकान्त के परमाधिकारों पर कड़ाई से जोर देता है या काम का समय कड़ाई से निर्धारित करता है, महत्त्वपूर्ण पास्तरीय अवसरों को खो देनेवाला है। इससे ऐसा लगेगा कि सेवक लोगों के बजाय अपने और अपनी सुविधाओं के विषय में अधिक परवाह करता है। (अब यहेजकेल 34 पढ़ने में समय लगाओ।)

2. सच्चा अधीन-चरवाहा

एक कलीसिया के अगुवे को न केवल अपने लोगों को प्रचार करना है; उसे उन्हें प्रेम करना, उनकी देखभाल करनी, अगुआई करनी और पोषण देना है। इसे व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा किया जाना चाहिए। आपको अच्छे चरवाहे के एक सच्चे अधीन-चरवाहे के अपने कार्य को पूरा करना है। एक सेवक को अपने लोगों की रुचियों को अपने कल्याण, व्यक्तिगत सुरक्षा और सुविधा से पहले रखना है। "क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे। क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की।" (फिलि. 2:20-21)। उसे कठिनाई और खतरे, चिन्ता और दुख में अपने लोगों के साथ होना चाहिए। परन्तु ऐसा करते हुए उसे स्वार्थी दावा करनेवाले लोगों की तरंगों के गुलाम नहीं होना है।

3. उचित व्यवहार

अ) एक कलीसिया के अगुवे को शालीनता और प्रतिष्टा के साथ व्यवहार करना चाहिए, और सब समय आदर के योग्य होना चाहिए।

आ) एक सेवक सब अवसरों पर, जैसे क्षेत्र के मौसम के अनुसार स्वीकार्य है, औचित्य से कपड़े पहने हुए होना चाहिए, परन्तु विशेषकर प्रचार के समय।

इ) व्यक्तिगत सुव्यवस्था, घर और गाड़ी की साफ-सफाई परमेश्वर को महिमा लाते हैं और एक कलीसिया के अगुवे के लिए आवश्यक भी हैं, क्योंकि कई अवसरों पर वह दूसरों का प्रतिनिधित्व करता है, और उसे समाज के सब प्रकार के लोगों के साथ सम्बंध बनाए रखने का प्रयत्न करना चाहिए।

4. निष्पक्ष

एक सेवक कभी भी पक्षपाती नहीं होना चाहिए, न जातीय पक्षपात का दोषी हो, न पक्षपात से काम करे, न एक व्यक्ति की कीमत उसके धन-दौलत से लगाए, और न ही प्रभावशाली या उदार के उपकार की चाह रखे। वह कभी भी आर्थिक प्रतिफल को उसके निर्णय दूषित नहीं करने दे या लोगों के साथ उसके सम्बंध पर प्रभाव पड़ने दे (1 तीमु. 5:21)।

5. ध्यान भंग से स्वतन्त्र

एक कलीसिया के अगुवे को व्यापार और आर्थिक चिन्ताओं के अपने आपको मुक्त रखना चाहिए, उसी प्रकार जैसे एक सिपाही संसार के कामों में फंसने से इन्कार करता है ताकि प्रभु के व्यवसाय की ओर एकनिष्ठ भक्ति के साथ वह अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न कर सके (2 तीमु 2:4)। निसन्देह, अपवाद वह सेवक है जो सांसारिक नौकरी के द्वारा अपनी आवश्यकताएं पूरी करता है।

6. सब चीजों में सत्यनिष्ठ

एक कलीसिया का अगुवा बोलचाल में सच्चा, रिपोर्ट देने में परिशुद्ध, आँकड़ों में वास्तविक, और मालिकों के लिए चरित्र प्रमाणपत्र लिखने में ईमानदार होना चाहिए (1 तीमु. 5:22)।

7. गैर-अन्तर्वेधी

एक सेवक को दूसरे पेशावर व्यक्तियों के क्षेत्र में घुसने से सावधान रहना चाहिए। आत्मिक आवश्यकताओं के अलावा दूसरी आवश्यकताओं वाले लोगों को उनके पास भेजना जो व्यवसायिक रूप से योग्य हैं बुद्धिमानी होगा। एक कलीसिया के अगुवे को सहायता / चंगाई के पेशों में दूसरे कार्यकर्त्ताओं के साथ एक अच्छा कार्यकारी सम्बंध विकसित करना चाहिए। उदाहरणार्थ, यदि कोई गम्भीर रूप से बीमार है और विश्वास की प्रार्थना से राहत नहीं मिली है तो उसे एक सुयोग्य डॉक्टर के पास ले जाने से उसका जीवन बच सकता है।

8. शान्तिप्रिय, परन्तु निडर

एक सेवक को एक शान्ति प्रिय व्यक्ति, न विद्वेषी न झगड़ालू, परन्तु सबकी ओर कृपालु और कोमल होना चाहिए। फिर भी, उसे धार्मिकता और पीड़ितों का पक्ष लेने में निडर होना चाहिए, और जब बुराई प्रबल हो रही हो तब भी भयभीत होने या चुप होने से इन्कार करना चाहिए।

9. मसीह के दुखों को गले लगाना

हम मसीह के क्रूस के शत्रु बने बिना, अपने जीवनों में "क्रूस की कीमत" से बच नहीं सकते हैं (फिलि. 3:18)। मसीह को जानने का अर्थ है उसके दुखों को गले लगाना, उसकी मृत्यु में स्वेच्छा से सहभागी होना, ताकि उसके पुनरुत्थान के सामर्थ्य को अनुभव कर सकें। हम अपने ध्यान को मसीह के बुलावे और "इस संसार के ईश्वर' की चीजों में बाँट नहीं सकते हैं (2 कुरिं. 4:4)। हमें "महिमा, सोना, स्त्रियों" के प्रलोभन में कभी नहीं पड़ना है (फिलि. 3:18)।

10. पवित्रता के लिए भूख

पवित्र जीवन जीने के लिए भूखा हृदय भीतरी मार्गदर्शकों को निर्धारित करेगा जो परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाली जीवन शैली बनाते हैं। इस शिक्षा को पढ़ने के द्वारा एक कलीसिया के अगुवे को अपने नैतिक स्तर निर्धारित करने चाहिए। फिर भी कोई भी लिखे गए नियम या विनियम एक पवित्र हृदय नहीं बना सकते हैं। पवित्रता के लिए एक भूखा हृदय ही अपने हृदय की मूर्तों को देख और तोड़ सकता है (यजेहकेल 14)।

11. विश्वासयोग्य

हमारा परमेश्वर एक विश्वासयोग्य पुरुष की खोज करता रहता है, ऐसा व्यक्ति जो वह सबकुछ करेगा जो परमेश्वर के मन में है, जो अपना जीवन त्याग देगा, केवल परमेश्वर की सेवा और महिमा करेगा, और परमेश्वर के साथ पवित्र सम्बंध में जीवन जीएगा। परमेश्वर को ऐसा सेवक चाहिए जो उसकी भेड़ों को आत्मा और वचन को पोषण देगा।

12. परमेश्वर का अनुग्रह

और ऐसे बुलावे के योग्य कौन है? कोई भी जीवित पुरुष या स्त्री परमेश्वर के अनुग्रह के बिना नहीं (रोमियों 5:17; 1 तीमु. 1:12-14)। हमारी योग्यता सम्पूर्ण रूप से अनुग्रह से है (इफि. 3:7; प्रेरितों 26:22; 1 कुरिं. 15:10; 2 तीमु. 4:7-8)। हमारी योग्यता सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर के अनुग्रह से है (2 कुरिं. 3:5)। 'परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह प्रभु को जानता और समझता है', और उसके अनुग्रह की महानता को भी (यिर्मयाह 9:23-24)। सेवक को उन चीजों में सम्मिलित होने से बचना है जिनमें उसे ज्ञान नहीं है। उसे दूसरो को सहायता करने देना है।

अध्याय 1 – सेवक का व्यक्तिगत नीतिशास्त्र

एक सेवक होने के लिए आपके जीवन परमेश्वर और मनुष्य दोनों के सामने खुले होने चाहिए। नैतिक व्यवहार का सोता व्यक्तिगत अखंडता है। यीशु के शत्रुओं ने भी अनिच्छा से स्वीकार किया कि वह "सच्चा" है (अर्थात्, अखंड पुरुष) (मत्ती 22:16)। व्यक्तिगत अखंडता एक कलीसिया के अगुवे के अन्दर सम्पूर्णता है जो मसीह के चरित्र के साथ मेल खाती है।
नीचे दी गई बातें उन गुणों को सामने लाएँगी जिन्हें मसीह का आत्मा हम में उत्पन्न करना चाहता है। वे उसे भी पहचानने में हमारी सहायता करेंगी जो शैतान या शरीर की बातें हैं।

1. अखंडता के लिए उत्साह

राजा दाऊद ने भजन 101:2 में कहा, "...मैं अपने घर में मन की खराई के साथ चलूँगा।"
"हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा? वह जो खराई से चलता और धर्म के काम करता है, और हृदय से सच बोलता है...जो कोई ऐसी चाल चलता है वह कभी न डगमगाएगा" (भजन 15)। धार्मिकता से हमारा दूर जाना एक विचार से आरम्भ होता है। यह एक रवैये - हृदय में बेरोक और निर्विवाद एक पाप - में विकसित हो जाता है। यह बीज के समान छोटा पाप हो सकते है। हर बीज में बढ़ने और हमें नष्ट करने की क्षमता होती है। जब हम प्रार्थना करते हैं, तब परमेश्वर प्रतीक्षा करता है कि हम अपने पाप को उसकी शुद्ध आँखों से जाँचे जाने के लिए बाहर लाएँगे। "सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन् जिस से हमें काम है, उसकी आँखों के सामने सब वस्तुएँ खुली और प्रकट हैं। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।" (इब्रा. 4:13, 15)।
परमेश्वर के साथ बातचीत में, हमारे अन्तरतम विचार प्रकट होते हैं; वह उन छोटे-छोटे निरर्थक "बीजों" को हमारे ध्यान में लाता है जो हमें पाप में ले जा सकते हैं। इन आत्मा (मन) के पापों के बारे में हमारी जानकारी और उनको स्वीकार करने और मान लेने की हमारी उत्सुकता प्राण (भावनाएँ-स्नेह) के पापों में हमारे उतार को रोकेगा, और इस प्रकार हम शरीर (शारीरिक अभिलाषाएँ) के पाप करने से बच जाएँगे। "जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाएगी" (नीतिवचन 28:13)। क्योंकि परमेश्वर इन में से हर अनर्थकारी अनुक्रम में हस्तक्षेप करता है, इसलिए हमें उसकी "शान्त धीमी आवाज" सुनने में ध्यान देना है। यदि जलूस रोका नहीं जाता है तो यह अन्त में शर्मनाक नैतिक पतन में ले जाएगा। तब हम परमेश्वर के सवकों का अपना ऊँचा पद खो देंगे। "इसलिए जो समझता है, मैं स्थिर हूँ, वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े" (1 कुरिं. 10:12)। "परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ" (1 कुरिं. 9:27)।

1.1 परमेश्वर जो पवित्र है, पवित्र बनाता है (यूहन्ना 17:17–19)

परमेश्वर हमें अपने पवित्र आत्मा से पवित्र बनाता है। पवित्रता का आत्मा कई अदृश्य, अशुद्ध, अनियंत्रित विचारों और बुरे अभिप्रायों से जिन्हें हम बिना सोचे अपने मन और हृदय (भावनाओं) में आने देते हैं, बलपूर्वक पीछे हटता है। परमेश्वर हमारे विवेक को तेज करता है। वह हमारे अन्दर, इससे पहले परीक्षा पाप का अवसर पाए, उससे कहीं पहले एक आत्मिक बेचैनी उत्पन्न करता है। हमें परमेश्वर से स्वीकर करना चाहिए कि पाप हमारे हृदय में है और हम ने इस पर विचार किया है। हमें अपने पाप को पाप करके मान लेना चाहिए; मान लेना चाहिए कि यह हमारे हृदय में है (मरकुस 7:21-23 पढ़ो)। जब दूसरा पाप में पकड़ा जाता है तो परमेश्वर हमें दिखाता है कि हमें अपने आप को भी वैसे ही बीजों के लिए जाँचने की आवश्यकता है। पाप जब बीज ही है उसे परमेश्वर के सामने स्वीकार कर लो। यदि हम अपने जीवन में पवित्र आत्मा के पवित्र करने के काम का विरोध करते, इन्कार करते, अनदेखा करते हैं तो हम पवित्र आत्मा को बुझाते हैं (1 थिस्स. 5:19), उसे शोकित करते हैं (इफि. 4:30), उसे पीछे हटने में मजबूर करते हैं (न्यायियों 16:20; भजन 51:11); और अन्त में वह चला जाता है (उत्पत्ति 6:3; इब्रा. 10:26-31; 12:14-17)...और हम गिरते हैं।

1.2 परमेश्वर प्रबंध करता है, परन्तु हमें अखंडता का मार्ग चुनना चाहिए

अखंडता सम्पूर्णता है; सच्ची सम्पूर्णता पवित्रता है। अखंडता में चलने का फैसला करो। परमेश्वर के सामने हृदय खुला रखने का फैसला करो। पाप के आरम्भ से ही उसे बताने और हमारे हृदयों को शुद्ध करने दो। (यिर्मयाह 17:9-10 पढ़ो)। हृदय की पवित्रता परमेश्वर का स्तर है। जीवन की बातें हमारे हृदय में से ही निकलती हैं (नीतिवचन 4:23)। जो मनुष्य में है बाहर आएगा। जो मनुष्य में से बाहर आता है उसे अशुद्ध करता है। बुरे काम बुरे विचारों में से जो जड़ समेत निकाले नहीं गए हैं, निकलते हैं।

जैसे आप पढ़ते जाओगे, तो ऐसा मत सोचो कि आप इन पापों से मुक्त हो क्योंकि आप अभी तक उन चीजों में परखे नहीं गए जो। उन लोगों ने अकसर कहा है जो लोग पाप में गिरे हैं "मैं ने कभी सोचा नहीं था मैं इस पाप में गिरूँगा...।" अपने विवेक को पाप के सब बीजों की ओर सुग्राही करने का प्रयास करो, इन क्षेत्रों में अपनी अखंडता और रक्षा की जाँच करो:

* लौंगिक अखंडता - कामुकता का प्रेम
* अगुआई में अखंडता - शक्ति का प्रेम
* आर्थिक अखंडता - पैसे का प्रेम
* मूल नैतिक अखंडता - धार्मिकता का प्रेम

2. लौंगिक अखंडता

"परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है" (याकूब 1:14)। व्यभिचार हृदय और मन में आरम्भ होता है, और मसीह उसे वहीं पर शुद्ध करे। कामुक विचार आ सकता है, परन्तु उसे बढ़ने से रोका जाना चाहिए।

2.1 व्यभिचार से भरी आँखें (2 पतरस 2:14)

एक सेवक दूसरे व्यक्ति की ओर लौंगिक उत्तेजना के लिए नहीं देखे (इसमें अश्लील विज्ञापन, टीवी या सिनेमा में स्पष्ट लौंगिक दृश्य, अश्लील चित्र देखना सम्मिलित है)। "मैं किसी ओछे काम पर चित न लगाऊँगा..." (भजन 101:3)। व्यभिचार दस में से पाँच आज्ञाओं को तोड़ता है, परन्तु वे अकसर एक-एक करके तोड़ी जाती हैं।

2.2 एक स्त्री को बुरी नज़र से ताकना

ताकना मन में चुमकारना है। सेक्स की इच्छा से दूसरी बार देखना और यदि आँखें मिलें तो चाह और उपलब्धता प्रकट करेगा। कामुकता गर्भ धारण करेगा। यीशु ने कहा यह व्यभिचार हो चुका - मन में व्यभिचार। अब तो केवल अवसर की ही कमी है। शरीर के पाप से पहले आत्मा का पाप होता है (मत्ती 5:28)। आपके आत्मा का यह पाप पवित्र आत्मा को शोकित करता है। यह मृत्यु लाता है (नीतिवचन 6:25-26; याकूब 1:15-16)। "...जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहिन जानकर समझा दे" (1 तीमु. 5:2)। अय्यूब की धार्मिकता पाने के लिए अपनी आँखों के साथ अय्यूब की वाचा बाँधो (अय्यूब 31:1)।

2.3 अपने शरीर को पवित्र रखो

शारीरिक पवित्रता का प्रयत्न करो। हर नैतिक रूप से भ्रष्ट करने वाली परिस्थिति और कार्य से, हस्तमैथुन आदि के साथ, बचो (1 कुरिं. 6:18-20; 1 थिस्स. 4:38 देखो)।

3. आर्थिक अखंडता

यह समृद्धि नहीं है जो कलीसिया के अगुवे को दूषित करती है, परन्तु यह धन का लालच है जो उसकी आत्मा को दूषित करता है। परमेश्वर हमारे हृदयों में प्रतिद्वन्द्वी नहीं रहने देगा, सोने की मूरतें तो बिलकुल नहीं। रुपया-पैसा और चीजें यह खरीद सकता है उसकी चाह, उसका प्रेम और लालच मूर्तिपूजा है। परमेश्वर इससे घ्रणा करता है। और हमें भी करनी है। "इसलिए अपने उन अंगों को मार डालो जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा, और लोभ को जो मूर्तिपूजा के बराबर है" (कुलु. 3:5)।

3.1 धन का प्रेम और लालसा

अपने हृदय को जाँचकर देखो कि क्या "इस जीवन में बहुतायत" की इच्छा लालच के लिए नकाब तो नहीं। क्या आप रुपये-पैसे से प्रेम करते हो? उस प्रेम को पाप मान लो। इसका सामना करो: आपका पाप लालच है। मन फिराओ और अपने हृदय में लालच और इसकी सब किस्मों को कठोरता से उखाड़ फेंको (लूका 12:15; 1 तीमु. 6:9-10)। लालच को पाने की अपेक्षा के बिना उदारता से देते हुए मार डालो (लूका 6:35)। दसमाँश दो, उससे बढ़कर दान दो, गरीबों को नियमित दो आदि (लूका 6:38)।

3.2 लालच और भक्ति

जो आपके पास अभी है उसमें संतुष्टी की कीमत जानो। एक भक्त मनुष्य का लक्ष्य संतोष है। "और!" अभक्त की कामना है। यदि परमेश्वर चाहता है तो उसे आपके जीने का स्तर बढ़ाने दो (1 तीमु. 6:5-8)। यदि वह देखता है कि आप धन सम्भाल सकते हो तो उसे देने दो (1 तीमु. 6:17-18; भजन 119:36)।

3.3 व्यवसायी लेन-देन में ईमानदारी के ऊँचे स्तर

यह हर सेवक की छाप होनी चाहिए। उसे सावधानी के साथ ईमानदार होना चाहिए, अपने सब दायित्वों को चुकाए और अपने बिल अदा करने और समय पर अदा करने को सम्मान की बात बनाए। मण्डली के अन्दर लोगों के ऋणी होने से बचना चाहिए।

3.4 दो मालिकों की सेवा करना नामुमकिन है

एक कलीसिया के अगुवे को पैसा बनानेवाली योजनाओं में पड़ने से बचना चाहिए, और अपने ध्यान को व्यवसायी रुचियों और सेवा में बँटने नहीं देना चाहिए। यीशु ने कहा, "तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते" (मत्ती 6:24)।

3.5 आर्थिक मामलों में सार्वजनिक उत्तरदायित्व

यह एक सेवक की प्रमुख उत्तरदायित्व है। एक कलीसिया के अगुवे को, परमेश्वर की नज़र में और सब मनुष्यों की नज़र में, सही करता हुआ दिखने के लिए परिश्रम करना चाहिए। "हम इस बात में चौकस रहते हैं कि इस उदारता के काम के विषय में जिसकी सेवा हम करते हैं, कोई हम पर दोष न लगाएक्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं हम उनकी चिन्ता करते हैं" (2 कुरिं. 8:20-21)। "... जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिन्ता किया करो" (रोमियों 12:17)। सार्वजनिक उत्तरदायित्व इस प्रकार होना चाहिए:

अ) कलीसिया के सब आर्थिक लेखा मासिक या वार्षिक प्रकाशित होने चाहिए; या

आ) मण्डली को बताना कि कलीसिया के लेखा-बही सदस्यों के निरीक्षण के लिए हर समय उपलब्ध हैं; या

इ) कलीसिया के लेखा-बही का नियमित स्वतन्त्र लेखा-परीक्षा।

3.6 एक सेवक कलीसिया की निधि को व्यक्तिगत उपयोग के लिए कभी नहीं उपयोग करे

अपनी अत्यधिक व्यक्तिगत आवश्यकता के समय में भी, एक कलीसिया का अगुवा कलीसिया की निधि उधार लेने की न सोचे। यदि एक ऐसी परिस्थिति खड़ी होती है जहाँ कलीसिया अपने सेवक की एक कर्ज़ द्वारा सहायता करना चाहती हा, तो इसे एक बैंक के द्वारा करना बुद्धिमानी होगा। यदि नहीं, तो इसे आधिकारिक कर्ज़ दस्तावेजों के द्वारा किया जाना चाहिए, जिन्हें सही बनाया और कानूनी तौर पर दर्ज किया जाना चाहिए, और उनमें आवश्यक चीजें जैसे कि, रकम, तारीख और ब्याज सही सही लिखा गया होना चाहिए। ऐसे मामलों में, हालातों की पूरी जानकारी पहले मण्डली या अगुआई के दल को दी जानी चाहिए और उनकी पूर्व मंजूरी प्राप्त की जानी चाहिए।

3.7 एक सेवक को रिआयत की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए

इसमें विशेष छूट, उपहार आदि सम्मिलित हैं। जब दिए जाते हैं तो उनका खुशी से आभार माना जाना चाहिए। व्यक्तिगत सदस्यों या कलीसिया से रिआयतों, उपहारों या विरासतों को स्वीकार करने के विषय में सेवकों के विचारों में काफी अन्तर हो सकता है। फिर भी यह एक खतरे का स्थान है जहाँ शत्रु हानि पहुँचा सकता है या दोषारोपण कर सकता है। एक कलीसिया के अगुवे को वसीयतों और इच्छापत्रों से निपटते समय अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करने में विशेष सावधानी बर्तनी चाहिए।

4. अगुआई में अखंडता

एक सेवक का हृदय बना कर अधिकार के प्रेम के प्रलोभन को जीत लो। सेवकों को परमेश्वर के लोगों में उनके सेवकों के रूप में होना है, उनके लिए अपनी जान दे देनी है। अपने हृदयों में अधिकार, प्रतिष्ठा, उत्कर्ष, लोकप्रियता या पद का प्रेम सहन करना स्वयं की मूर्तिपूजा है। यह हमारे सेवक-मालिक का विश्वासघात है। पतरस सेवकों को चेतावनी देता है, "जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ।" (1 पतरस 5:3; लूका 22:24-27)। पौलुस की गवाही हमारी भी होनी चाहिए: "यह नहीं कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं; परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं क्योंकि तुम विश्वास ही से स्थिर रहते हो।" (2 कुरिं. 1:24)।

4.1 अधीन-चरवाहे सौंपे गए अधिकार हैं
एक सेवक को आलोचना किए जाने पर प्रतिकार नहीं करना चाहिए। आक्रमण किए जाने पर, झुँड की ओर कटु या रक्षात्मक न बन जाओ। यदि परमेश्वर चाहे तो उसे रक्षा करने दो (गिनती 12:1-11; रोमियों 12:17-21)। परमेश्वर एक सेवक के हृदय के रवैयों की अपने स्तरों से तुलना करता है (यहेजकेल 34:1-16)। एक सच्चा अधीन चरवाहा स्वेच्छा से (मजबूरी में नहीं) भेड़ों के लिए अपना जीवन त्याग देता है (1 यूहन्ना 3:16; यूहन्ना 10; प्रेरितों 20)।

4.2 प्रतियोगी रवैये ईर्ष्या, डाह के बीज के समान और एक ऊँचे स्थान की इच्छा के बीज के रूप में हृदय में आरम्भ होते हैं। कभी-कभार यह हमारी अपनी अपर्याप्तता की भावना, और दूसरी बुराइयों को छिपाने का हमारा एक तरीका है। पौलुस प्रतियोगी रवैयों के विरुद्ध सलाह देता है (1 कुरिं. 3:1-9, 21-22; 4:1-7; गलातियों 6:3-5। "संख्या का खेल" (आपकी कलीसिया में कितने लोग आते हैं की शेखी मारना) प्रतियोगिता की एक भयंकर किस्म है। यह सेवकों के बीच खुली सहभागिता को नष्ट कर देता है। प्रतियोगिता हमें बड़ी सरलता से उनसे अलग कर देती है जिन्हें परमेश्वर ने हमारी सहायता करने के लिए हमारे निकट रखा है। यदि हम उन्हें नाराज करें तो हमारी आवश्यकता के समय वे हमारे निकट नहीं होंगे। जिन्हें हम चोट पहुँचाते हैं सम्भव है वही हैं जिन्होंने हमारे संघर्षों को समझा होता और कठिन समयों में हमें प्रोत्साहित किया होता।
मित्रों के बीच सकारात्मक प्रतियोगिता की किस्में हो सकती हैं जो हम दोनों को परमेश्वर के लिए अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित करें (2 कुरिं. 9:2-3 देखो)। परन्तु तब भी खतरे हैं। यदि गलतफहमियाँ पैदा हों या एक अगुवा गतिरोधों का सिलसिला अनुभव करे, तब असंवेदनशील प्रतियोगिता से दुख होगा। मित्रों में सहभागिता बन्द हो जाती है, "मैत्रीपूर्ण" प्रतियोगिता वो अन्तिम दुखदायी पहलू हो सकता है जो एक बहुमूल्य मित्रता को नष्ट कर देगा।

4.3 कार्यकारिणी समितियों में पद की इच्छा
इसकी प्रेरणा अधिकार की इच्छा से मिली हो सकती है। एक सेवक को परमेश्वर के सामने उसके अभिप्रायों को जाँचना चाहिए। यदि आपको दूसरों पर अधिकार और सामर्थ्य जताना अच्छा लगता है, तब तो विवेक की खातिर ऐसे पदों को इन्कार करो। सेवकों को उनके अधिकार को समझदारी के साथ प्रयोग करना सीखना चाहिए और अधिकार और प्रतिष्ठा के प्रेम में अपने आपको नहीं दे देना चाहिए।

4.4 अधीनता एक हृदय का रवैया है
अधीनता स्वीकार करने से प्रेम करो। यहाँ तक स्वाधीन मत हो जाओ कि किसी भी आत्मिक अधिकार के अधीन न रहो। स्वाधीन होने का एक पवित्र भय हो। आड़ में आ जाओ। अधीन होने के लिए अधिकार खोजो। एक वरिष्ठ पास्टर का हृदय और कुछ भी इतना नहीं दुखाता जितना एक छोटे सेवक के वशवर्ती हृदय की कमी दुखाता है। वह गुमराह पुत्र के बड़े भाई के समान, ईमानदारी से आज्ञाकारी हो सकता है, परन्तु एक सम्बंध स्थापित करने में अयोग्य हो जिससे आनन्द प्राप्त कर सके (लूका 15:29)। एक स्वाधीन आत्मा गहरे सम्बंध नहीं स्थापित कर पाती है। यदि हमें अगुवे होना है तो हमारे पास भी परिपक्व, भक्त अगुवे हों जिनके हम अधीन रह सकें (इब्रा. 13:7, 17)। परिपक्व, भक्त अगुवे हमें हमारे अपने हृदयों में पाप और बुराई के धोखे से रक्षा करते हैं। हमें उनकी प्रार्थनाओं की विनती करनी चाहिए, और जब कभी अपने जीवन में कुछ संदेह हो तो उनके स्नेही जाँच के लिए अपने जीवन खोलने चाहिए। जब हम परिपक्वता में बढ़ रहे हों तो हम ताड़ना और सुधार का भी स्वागत करेंगे (नीतिवचन 27:5-6, 17)। हमारे भक्त अगुवे शत्रु की चाल और हमारे अपने हृदयों की दुष्टता से हमें सुरक्षा देते हैं। हर कलीसिया का अगुवा एक परिपक्व, भक्त वरिष्ठ सेवक के पास जाने से और उसके सुधार और सलाह के स्वागत से लाभ पाएगा। ऐसों को सहयोग, प्रोत्साहन और शान्ति लाने दो जो अनुशासन लाता है (रोमियों 13:1-2; 1 पतरस 5:5)।

4.5 एक स्वाधीन आत्मा
हालाँकि पश्चिमी संस्कृति व्यक्तिवाद को समर्थन देता है, परन्तु परमेश्वर एकता को कीमती मानता है। एक अधिक स्वाधीन आत्मा वाला कलीसिया का अगुवा वह है जिसने अधीनता के हृदय का इन्कार किया है। वह किसी को भी धार्मिकता में उसे डाँटने, सुधारने, या शिक्षा देने नहीं देता है। उसके हाथ में परमेश्वर की तलवार की एक धार - जो उसके अपने व्यक्तिगत जीवन में काटती है - खत्म हो गई है। "मैं केवल परमेश्वर के अधीन होता हूँ" धोखे का चिन्ह है जो पहले से ही अच्छी तरह विकसित है। कोई भी सेवक अधिकार नहीं ले सकता है यदि वह आप अधिकार तले नहीं है। "मैं पराधीन मनुष्य हूँ, और सिपाही मेरे हाथ में हैं; और जब एक को कहता हूँ, जा, तो वह जाता हूँ; और दूसरे से कहता हूँ, आ, तो आता है; और अपने किसी दास को कि, यह कर, तो वह उसे करता है" (लूका 7:8)। सूबेदार अपने सिपाहियों को आदेश देता था तो वे आज्ञा मानते थे, क्योंकि वह आप अधिकार

तले था। सूबेदार ने पहचान लिया था कि उसके समान यीशु भी अधिकार तले है। इसलिए वह जानता था कि यीशु बोलेगा, और जो वह कहेगा पूरा होगा - उसका सेवक चंगा हो जाएगा। अधीनता हमारे विवेक को हम से जोर से बोलने के लिए स्वतन्त्र करता है। सेवा में एक अकेला व्यक्ति एक असुरक्षित व्यक्ति है, और उसकी सेवा उन चीजों के लिए भेद्य है जिन्हें वह आप नहीं देख सकता है।

5. मूल नैतिक अखंडता

मूल नैतिक अखंडता पवित्र होने की भूख है। यह स्वयं-धार्मिकता के पाखण्डी ढोंग की घृणा है। अखंड व्यक्ति परमेश्वर के राज्य है और मसीह की धार्मिकता को व्यक्त करने की खोज करता है। एक कलीसिया के अगुवे में मूल नैतिकता आवश्यक है। समाज इसकी अपने सेवक के जीवन में अपेक्ष करता है। नीचे दिए गए मूल नैतिक मूल्य नीतिपरक व्यवहार के न्यूनतम स्तर हैं।

5.1 सत्य बोलो

ईमानदारी से सच्चे बनो। आधा-सच और "सफेद झूठ" (असत्य प्रशंसा और चापलूसी) से बचो। असत्यता से घृणा करो। झूठे प्रभाव मत दो, या चापलूसी प्रभावों को बने मत रहने दो। सत्य से प्रेम करो। पाखण्ड से बचो, यह खमीर है जो सम्पूर्ण मनुष्य में फैलकर उसे दूषित कर देता है (मरकुस 8:15)। परमेश्वर और लोगों के साथ ज्योती में चलो (1 यूहन्ना 1:5-7)। अपने नकाब निकालने और पारदर्शी बनने का प्रयास करो - उस व्यक्ति के समान जो ज्योती में चलना पसन्द करता है जो उस प्रकार की सहभागिता उत्पन्न करती है जैसा पिता की पुत्र के साथ है।

5.2 अपने वचन के पक्के बनो

ऐसा व्यक्ति बनो जो अपने वचन का पक्का है। आपके शब्द आपका बन्धन हैं जो आपको उतना ही मजबूत बनाता है जितनी परमेश्वर से मानी गई मन्नत है या आपका हस्ताक्षर किया गया एक कानूनी अनुबन्ध है (गिनती 30:2; भजन 15:4। आपकी "हाँ" "हाँ" हो, और आपकी "नहीं" "नहीं" हो (याकूब 5:12)। अपने मुँह से पाप मत करो (भजन 17:3)। आपके शब्द कम हों, आप बोलने में धीमे हों (याकूब 1:19; 3:1-2, 6)।

5.3 अपने बिल चुकाओ

किसी के ऋणी मत बनो। पैसा मत माँगो (रोमियों 13:8-9)। प्रभु ने आपकी आर्थिक आवश्यकताएँ कैसे पूरी कीं की "गवाहियाँ" देने से, और अपनी आवश्यकताओं के विषय में संकेत देने से बचो। कभी किसी को भी आपके कलीसिया की निधि, या सौंपी या निदिष्ट की गई निधि के प्रबंध में आपकी ईमानदारी पर संदेह प्रकट करने का आधार न मिले (रोमियों 12:17)।

5.4 स्वयं के लिए मरो

"अपने प्राण को अप्रिय जानना" यीशु की एक चेले के लिए न्यूनतम शर्त है। अपने स्वार्थ से पहले परमेश्वर की आज्ञा मानने का चुनाव करो। आत्म-पूर्ति और आत्म-संतोष के साथ विषयासक्ति को मौत के घाट उतार दो। अन्तिम दिनों में, कलीसिया में सुखविलास और धन के चाहनेवालों के साथ "अपने आप से प्रेम करनेवाले" शैतान के सेवक हैं (2 तीमु. 3:2-4)।

5.5 परमेश्वर का भय

बुद्धि तब आरम्भ होती है जब एक कलीसिया के अगुवा को स्पष्ट अनुभव होता है कि हमारा अनुग्रह का परमेश्वर एक भस्म करनेवाली आग भी है। श्रद्धा परमेश्वर का अच्छा भय है। उसकी प्रवित्रता, और उसके पुत्रों में पवित्रता उत्पन्न करने के उसके अधिकार का आदर करो। समझो कि:

- अ) परमेश्वर सबकुछ देखता है (नीतिवचन 5:21);
- आ) परमेश्वर विश्वासियों का न्याय करता है (रोमियों 14:10; 2 कुरिं. 5:10);
- इ) परमेश्वर हर पुत्र को जिससे वह प्रेम करता है ताड़ना देता है (प्रकाशित. 3:19; इब्रा. 12:10); और
- ई) परमेश्वर स्वर्ग से पाप और अवज्ञा वर्जित करता है।

परिवर्तित होने और उसके समान पवित्र बनने के परमेश्वर के आदेश का पालन करो। परमेश्वर अगुवों को दुगुना उत्तरदायी मानता है। वह सेवकों से फरीसियों से अधिक धार्मिकता के ऊँचा स्तर की माँग करता है ((मत्ती 5:20; 2 पतरस 3:11, 14; तीतुस 1 और

1 तीमुथियुस 3 भी देखो)। "हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे।" (याकूब 3:1)।

5.6 शराब नहीं, गर्द नहीं

कोई भी सेवक गर्द (नुसखे में लिखी हुई के अलावा) न ले, न सिगरेट पीए, और न किसी प्रकार की शराब पीए। एक आत्मिक नाज़ीरों के रूप में, प्रभु के लिए पवित्र ठहरने का आदर्श बने (गिनती 6:1-8)।

5.7 परमेश्वर को उत्तरदायी

अपने विवेक का तिरस्कार मत करो जिसके द्वारा परमेश्वर आपको शुद्ध रखता है। अपनी आत्मा की संवेदनशीलता को मन्द मत करो। अपने आप को उस चीज से दूषित मत करो जो दूसरा सेवक करता हो। अपने स्तर कम मत करो और आत्मा को शोकित मत करो (इब्रा. 4:13)। हम सब को अपने रुपये-पैसे के प्रबंध का, अपने समय का (लूका 16:2), अपने अभिप्रायों का (नीतिवचन 16:2; 1 थिस्स. 2:3), और उसके झुँड के प्रबंध का (यहेजकेल 34:10) लेखा परमेश्वर को देना होगा (रोमियों 14:12)।

5.8 मनुष्य को उत्तरदायी

परमेश्वर हमें मनुष्य को भी उत्तरदायी ठहराता है (रोमियों 12:17)। एक कलीसिया के अगुवे को अपने नाम, जो बाहरवालों का अच्छा विचार है, को भी बहुत मूल्यवान समझना चाहिए (1 तीमु. 3:7)। एक सेवक को ईमानदारी के एक स्तर में कार्य करना है जो कलीसिया की समिति को, सारी मण्डली को, साथी सेवकों, और संसार को स्वीकार्य है।

5.9 पेटूपन से दूर रहो

अतिसेवन निश्चय ही पाप में ले जाता है। अत्यधिक भोजन, समय बर्बादी, सुखविलास, मूर्ख या घटिया मजाक के शरीर के अतिसेवन से बचो। दूसरों की आलोचना मत करो या उन पापों और अतिक्रमणों की खोज मत करो जिनको संसार गुप्त में करता है (इफि. 5:12)।

5.10 अपनी पत्नी से प्रेम करो

अपनी पत्नी से प्रेम करने का आनन्द लो। पौलुस विवाह की सलाह देता है और, जब व्यक्ति विवाहित है तो एक अच्छा सेक्स का जीवन व्यभिचार के विरुद्ध सुरक्षा है (1 कुरिं. 7:2)। यह विशेषकर उन सेवकों के लिए सत्य है जो सेवा में परिश्रम करते हैं (1 कुरिं. 7:29-31; नीतिवचन 5:18-19)।

5.11 आलसी मत बनो

अपना समय जिम्मेवारी के साथ उपयोग करो। उतना समय काम में लगाओ जितने की एक समर्पित व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है। कार्यकुशलता के साथ काम करो। अपने शारीरिक, भावात्मिक और आत्मिक साधनों का एक विश्वासयोग्य, भरोसेमन्द भण्डारी बनो (मत्ती 25:19, 26)। उनका एक अच्छा प्रबंधक बनो जो आपकी देखरेख में हैं।

5.12 अपनी सफाई मत दो या बहाना मत बनाओ या बचाव मत करो

(लूका 16:15)। अपनी सफाई देना अपने आप को धोखा देना है। डाँट को साहस के साथ स्वीकार करो। मनोहर और कृतज्ञ भी बनो कि कोई आपकी इतनी चिन्ता तो करता है कि आपको सुधारता है। जब आपको सुधारा जाता है तब सुनो, और पहचानो कि आपका क्रोध पाप है। यदि आप गलत हो तो ऐसा कहो। उस व्यक्ति से कहो जो आपको सुधार रहा है (2 शमूएल 12:13; 24:10)। अपना बचाव मत करो। परमेश्वर यदि चाहे तो उसे बचाव करने दो (गिनती 16:5)।

5.13 हर ज्ञात पाप से दूर रहो

बाइबल में दी गई पापों की हर सूची को पढ़ो और 1 कुरिन्थियों 6:7-11; गलातियों 5:13-26 और इफिसियों 4:20-5:21 में सूचीबद्ध में से अपने जीवन में हर पाप के आरम्भ को पवित्र आत्मा के साथ जाँच करो। ये चीजें उन पर उदाहरण की रीति पर पड़ी थीं, और हमारी चेतावनी के लिए लिखी गई हैं।

5.14 प्रतिक्रिया मत करो, प्रतिकार मत करो या बदला मत लो

आपके शब्द कम, और प्रेम से भरे हों (मत्ती 12:36-37; याकूब 1:19)। कसम मत खाओ (मत्ती 5:36-37) या अपने मुँह से हानिकर शब्द मत निकलने दो (इफि. 4:29)। यदि आक्रमण हो, निन्दा की जाए या चोट पहुँचाई जाए, तो मन में दुर्भाव मत रखो, आत्म-रक्षा के लिए पीछे मत हटो, बुराई का बदला बुराई से मत दो (रोमियों 12:17-21)।

5:15 अपने अगुवों की बुराई मत करो

दूसरे की बुराई करना या आलोचना करना, विशेषकर दूसरे के सेवक की (प्रेरितों 23:5) पाप है, चाहे वे राजनीतिक नेता हों जिन्हें परमेश्वर ने हमारे देश पर रखा है, नागरिक नेता, पोलीस (रोमियों 13:1-5) या अपनी या दूसरी कलीसिया के अगुवे हों (याकूब 2:12-13)।

5.16 कभी भी पक्षपात मत दिखाओ

पक्षपात के साथ कुछ भी मत करो। उचित और न्यायसंगत व्यवहार सुखी परिवारिक जीवन और सुसंगत कलीसिया के जीवन के आवश्यक भाग हैं (1 तीमु. 5:21; याकूब 2:1-13)।

5–17 बहुत प्रार्थना करो

हर दिन प्रार्थना करो। नियमित समयों में प्रार्थना करो। हर समय प्रार्थना करो। सब मनुष्यों के लिए प्रार्थना करो। अपने उच्च अधिकारियों के लिए प्रार्थना करो। अपने अधीन हर व्यक्ति के लिए नाम लेकर प्रार्थना करो।

अध्याय 2 – सेवक का परिवारिक जीवन

एक कलीसिया के अगुवे का सार्वजनिक चित्र और प्रभावकारीता उसके परिवार में संगत और मसीह समान सम्बंधों द्वारा बढ़ती है। एक सेवक को सर्वप्रथम अपनी पत्नी से प्रेम करना है जैसे मसीह कलीसिया, अपनी दुल्हिन से करता है। उसे सेवा में अपना स्वयं का जीवन और स्वार्थी अभिलाषाओं को उसके लाभ के लिए बलिदान कर देना है। यह पास्टर को मसीह की दुल्हिन, कलीसिया की निस्वार्थीपन से अगुवाई करने के योग्य बनाएगा।

1. एक सेवक के अपने परिवार के सदस्य कलीसिया परिवार के सबसे महत्त्वपूर्ण सदस्य हैं। एक कलीसिया के अगुवे को परिवार की एकान्तता और घनिष्ठता, और उसके परिवार की कलीसिया के जीवन में भाग लेने की आवश्यकता में एक सुखी सन्तुलन का प्रयास करना है।

2. एक सेवक निरन्तर अपनी पत्नी को आश्वासन दे कि वह उसके लिए सेवा में एक साझेदार के रूप में ही नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में भी कितनी महत्त्वपूर्ण है। यदि एक कलीसिया का अगुवा सप्ताह के दौरान उसकी भावात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय नहीं दे पाता है तो उसे अपनी प्राथमिकताओं को पुनःव्यवस्थित करना चाहिए। सेवा की माँगे इसे इतना आवश्यक कर देती हैं कि एक सेवक अपने विवाह पर गहरे सोच-विचार और प्रेम की निरन्तर खुली अभिव्यक्तियों के साथ काम करे। घर में कम से कम एक दिन और एक शाम आवश्यक न्यूनतम हैं। एक कलीसिया का अगुवा और उसकी पत्नी गहरे मित्र होने चाहिए, क्योंकि वे दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं। परन्तु, दोनों को कलीसिया के बाहर भी अपने-अपने मित्र बनाने हैं। कलीसिया में विशेष मित्रता का मण्डली में कुछ लोग पक्षपात के रूप में गलत अर्थ निकाल सकते हैं।

3. सेवक, उसकी पत्नी और उसके बच्चे कलीसिया और संसार के लिए उदाहरण हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है एक मसीही परिवार कैसा होना चाहिए। परन्तु उन्हें दूसरे लोगों की अपेक्षाओं के अनुसार जीने के सूक्ष्म दबावों का सामना करना चाहिए। बदले में, यह देखा जाए कि वे एक दूसरे की उपस्थिति का आनन्द लेते हैं, परिवार का इकट्ठे होने को बहुमूल्य मानते हैं, और उनके परिवारिक सम्बंधों में पूर्ति की ओर निरन्तर कार्य कर रहे हैं।

4. कलीसिया के अगुवे को उसके हर एक बच्चे के साथ समय बिताना चाहिए। उसे पास्टर के काम और उसके बच्चों की उसके अविभाजित ध्यान और स्नेह की आवश्यकता में एक अच्छा सन्तुलन बनाए रखना चाहिए। सेवकों के बच्चों को सेवा के

लिए सम्मान और जो काम उनके माता-पिता करते हैं उसमें गर्व महसूस करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यदि सेवक अपने बच्चों के सामने अपनी तकदीर के बारे में निरन्तर शिकायत करता रहता है, और कलीसिया के लोगों की आलोचना करता या उन्हें दोष देता रहता है तो यह नहीं होगा। और यह तब भी नहीं होगा यदि एक कलीसिया का अगुवा कलीसिया का काम करने में इतना व्यस्त है कि उसके बच्चे अनावश्यक बलिदान के कारण उपेक्षित या वंचित महसूस करते हैं।

5. एक सेवक को धरेलू जिम्मेवारियों में भाग लेना चाहिए, विशेषकर तब जब उसके बच्चे छोटे हैं। यदि वह घर से काम करता है, तो उसे घरेलू और परिवारिक कामों को उसके पास्टर के काम में हस्तक्षेप नहीं करने देना है। यदि कलीसिया के अगुवे की पत्नी बाहर संसार में नौकरी करती है क्योंकि कलीसिया पर्याप्त खर्चा नहीं देती, तब उसके लिए उसके छोटे बच्चों की देखभाल करना जब पत्नी घर पर नहीं है उचित सिद्ध होगा। इसे वे लोग गलत समझ सकते हैं जिन्हें ऐसी नम्यता नहीं मिलती। यदि ऐसा हो तो उन्हें समझाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

6. एक कलीसिया के अगुवे को अपने आत्मिक जीवन को निरन्तर विकसित करते रहना है। जिस प्रकार परिवार की माँगें सेवक को उसके परिवार से दूर ले जा सकती हैं, उसी प्रकार मण्डली की माँगें उसे यीशु मसीह के साथ निकट सहभागिता से उसे दूर ले जा सकती हैं। एक स्वस्थ्य, सकारात्मक, आशावादी और आनन्दित आत्मिक जीवन उस व्यक्ति का एक अत्यावश्यक गुण है जो अपने परिवार को परमेश्वर के मार्ग में ले जाना चाहता है और परमेश्वर के झुँड को पालना चाहता है। आपके परिवार और लोगों को उनके अगुवे में एक भक्त जीवन देखने की आवश्यकता है जिसे मसीह के साथ सहभागिता में समय बिता कर विकसित और पुष्ट किया गया है।

7. सेवा एक दबाव वाला पेशा है जिसमें तनाव अनिवार्य है। एक सेवक को सप्ताह में 50 से 55 घंटे काम करने के लिए अपना कार्यक्रम बनाना चाहिए, और एक सप्ताह में कम से कम एक दिन परिवार के साथ विश्राम करने के लिए निकालना चाहिए। एक बुद्धिमान कलीसिया का अगुवा अपने जीवन में तनाव पैदा करनेवाले तत्त्वों का पता लगाएगा और उन्हें कम करना सीखेगा।

अध्याय 3 – सेवक और उसकी सेवा

सुसमाचार का एक सेवक होना और परमेश्वर के लोगों के एक झुँड का रखवाला होना एक महान विशेषाधिकार है। यदि कलीसिया का अगुवा उन कुछ आवश्यक सीमाओं का पालन ध्यानपूर्वक करता है जिन्हें उसका कार्य और पद उसके ऊपर लगाते हैं, तो सेवक और लोगों में गहरे और स्नेही सम्बंध बन सकते हैं।

1. सेवक और उसकी पत्नी उस कलीसिया के ही सदस्य होने चाहिए जिसका वह पास्टर है। वे भी उस स्थानीय कलीसिया के सदस्य हैं जिसका सिर मसीह है।

2. एक कलीसिया के अगुवे को सब सदस्यों में बराबर दिलचस्पी लेनी चाहिए। "क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता" (रोमियों 2:11)। जिस प्रकार परमेश्वर पक्षपात नहीं करता उसी प्रकार एक सेवक को भी पक्षपात नहीं करना है। "पर यदि तुम पक्षपात करते हो तो पाप करते हो..." (याकूब 2:9)। कलीसिया के अगुवे को वहाँ होने का प्रयास करना चाहि जहाँ उसकी बहुत आवश्यकता है और सबके लिए बराबर उपलब्ध होना चाहिए। जब दलबन्दी कलीसिया के बँटवारे करती है तब भी उसे पक्ष नहीं लेना चाहिए, परन्तु मेल-मिलाप के लिए निष्पक्षता की खोज करनी चाहिए। उसे कलीसिया के अधिकारियों, सहकर्मियों और समिति के साथ करीबी सुमेल के साथ काम करना चाहिए, और सब लोगों के साथ शान्तिपूर्ण और स्नेही सम्बंध बनाने का प्रयत्न करना चाहिए, और सारी मण्डली में प्रेम उत्पन्न करना चाहिए।

3. सेवकों को सब लोगों के साथ, परन्तु विशेषकर प्रतिजाति के साथ, उनके व्यवहार में निर्दोष होना चाहिए। अस्थिर, अनैतिक लोग एक व्यक्ति की सेवा को खतरे में डाल सकते हैं और मसीह के काम को हानि पहुँचा सकते हैं। हर कलीसिया का अगुवा प्रतिजाति के सदस्यों के साथ उनके व्यवहार में विवेकी, शिष्ट और शिथिल होना चाहिए। किसी प्रकार के उलझाव से सावधान रहो। प्रतिजाति के सदस्यों की कौंसलिंग अकेले में या रात देर में नहीं की जानी चाहिए। व्यक्तिगत मामलों की पूछताछ

मत करो। धनिष्ठ मामले उसी जाति के व्यक्ति ही सही से निपट सकते हैं। एक कलीसिया का अगुवा प्रतिजाति के सदस्य को अकेले ले जाने से दूर रहे; या यदि और कोई साथ में नहीं आता है तो उसे कार के पीछे बैठाए।

4. एक सेवक अपने पास्टर के काम के भरोसे को बनाए रखने के लिए बिलकुल भरोसेमन्द होना चाहिए। लोगों के पापी व्यवहारों के स्वीकरण और कौंसलिंग के दौरान गोपनीय बातों को एक पवित्र भरोसे के रूप में मानना चाहिए। यदि सम्बंधित व्यक्ति के प्रकट होने का यदि थोड़ी भी सम्भावना हो तो, एक कलीसिया के अगुवे को कौंसलिंग की बातों को सबके सामने कहने से बचना चाहिए। कौंसलिंग में सकारात्मक दिखने वाले व्यक्ति के उदाहरण भी पहले व्यक्ति से स्पष्ट कर लेने चाहिए।

5. एक सेवक को न तो अफवाहें फैलानी चाहिएँ और न ही किसी के विषय में निन्दात्मक चीजें दोहरानी चाहिएँ। उसे कोमलता परन्तु दृढ़ता से दूसरों को भी ऐसा करने से रोकना चाहिए। कभी भी किसी के विषय में, विशेषकर कलीसिया में, आलोचनात्मक बातें मत कहो। एक कलीसिया के अगुवे की अविवेकी बात उसके सबसे अच्छे उपदेश के भूलने के काफी बाद भी याद रहेगी।

6. एक सेवक को जिनको वह हर सप्ताह प्रचार करता है उनके साथ नियमित सम्पर्क बनाए रखना चाहिए। प्रभु अपने चेलों को सदा दो दो करके भेजता था। जब आप किसी सदस्य के घर जाते हो तो आपके साथ कोई होना चाहिए। जब लोगों से मिलने गए हों तो अगुवे को जल्दी में नहीं दिखना चाहिए। उसे व्यक्ति की बातों को सुनना, उन्हें सलाह देना, बाइबल पढ़ना और उनके साथ प्रार्थना करनी चाहिए। यदि वे बीमार हैं तो, वह तेल से उनका अभिषेक करे और विश्वास की प्रार्थना करे ताकि बीमार चंगा हो जाए और परमेश्वर की महिमा करे। जैसे कलीसिया बढ़ती जाएगी, तो सेवक के लिए सबसे खुद मिलने जाना नामुमकिन हो जाएगा, तो इसलिए उसे एक प्रणाली बनानी पड़ेगी जिससे यह अत्यावश्यक पास्तरीय जिम्मेवारी पर्याप्त रूप से और अच्छी तरह पूरी की जाएगी।

7. जब भेंट के समय के बाद अस्पताल में मरीजों से मिले जाते हैं तो कलीसिया के अगुवे को प्रभारी व्यक्ति से अनुमति लेनी चाहिए। एक सेवक को ध्यान देना है कि जो समय उचित है उससे अधिक समय वहाँ न बिताए।

8. एक कलीसिया का अगुवा एक मर रहे व्यक्ति को उसकी स्थिति के विषय में बताने की जिम्मेवारी तब ही ले जब करीबी रिश्तेदार और डॉक्टर सहमत हों। एक विश्वासयोग्य सेवक मर रहे व्यक्ति को परमेश्वर से मेल करने, लोगों को क्षमा करने और मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करने को आग्रह करने के लिए परमेश्वर की ओर से बाध्य है। यह सब सम्मिलित लोगों को नम्रता और संवेदनशीलता के साथ सुसमाचार बताने का एक अवसर हो सकता है।

9. दफन का प्रबंध करने और शोकार्तों सी सेवा करने में, एक कलीसिया के अगुवे को सहानुभूति-शील, शिष्ट और विश्वासयोग्य होना चाहिए। ये परिस्थियाँ अकसर पास्तरीय कार्य में सबसे अर्थपूर्ण होती हैं। शोकार्तों से एक सप्ताह, एक महिने के बाद और मृतक की बरसी से थोड़ा पहले मिलने जाओ।

10. एक सेवक को यह निश्चित करने के लिए कि उसका संदेश सच्चा, संबद्ध और वर्तमान समझ के अनुसार है, गम्भीर अध्ययन में पर्याप्त समय बिताना चाहिए। उसे उस काम के लिए जो वह करता है बेहतर सज्जित होने, और उसकी आत्मिक और बौद्धिक क्षमताओं को विकसित करने के लिए पढ़ना और अध्ययन के पाठ्यक्रम लेने चाहिए।

11. सामान्य परिस्थितियों में, एक कलीसिया के अगुवे को अपना ध्यान और समय मुख्य रूप से अपने पास्तरीय जिम्मेवारियों में लगाना चाहिए। उसे पहले उसकी समिति के विचार और मंजूरी पाए बिना बाहर के काम, सम्मानार्थ पद नहीं स्वीकार करने चहिए, या परिश्रमिक नहीं लेना चाहिए।

12. सेवकों को कलीसिया की निधि सम्भालने से दूर रहना चाहिए। प्रारंभिक चरणों में, जब यह अनिवार्य होता है, तब उसे कलीसिया की निधि के अपने प्रबंध का सही-सही और विस्तार से ब्योरा रखना चाहिए। जितनी जल्दी यह व्यवहार्य हो, उसे इस जिम्मेवारी को कलीसिया में दूसरे भरोसेमन्द और सुयोग्य व्यक्तियों को सौंप देनी चाहिए। परन्तु पास्टर तब भी एक अच्छे मैनेजर के रूप में जिम्मेवार है। उसे कलीसिया के वित्त की स्थिति की जानकारी होनी चाहिए। वह कलीसिया के सब प्रभागों का एक सही

सन्तुलित मासिक आर्थिक विवरण माँगे और यह निश्चित करने के लिए कि दूसरे बजट का पालन कर रहे हैं उसका ध्यानपूर्वक निरीक्षण करे।

13. एक कलीसिया के अगुवे की उन सब अधिकारियों की भी अन्तिम जिम्मेवारी है जो कलीसिया की निधि का प्रबन्ध करते हैं। एक अच्छी नीति सेवक या कोषाध्यक्ष के लिए सीमा निर्धारित करना होगा कि समिति के पूर्व अनुमति लिए बिना वे कितना खर्च कर सकते हैं। एक मध्यम आकार की कलीसिया एक अधिकतम रकम तय करे......, जो एक महिने में दो बार से अधिक न घटित हो।

14. एक कलीसिया के अगुवे को पैसा बनानेवाली योजनाओं में सम्मिलित होने से दूर रहना चाहिए। उसे मण्डली में व्यापार करने को समर्थन या अनुमति नहीं देनी चाहिए। क्योंकि ये कितनी भी "मसीही" क्यों न दिखें, ये उलझनें समस्या खड़ी करेंगी। एक सेवक को व्यापारिक लेन-देन या धंधे में भाग लेने से, या कलीसिया के सदस्यों को बेचने या उनसे खरीदने से दूर रहना चाहिए (2 तीमु. 2:4)।

15. कलीसिया के किसी घर में परिवर्तन करने से पहले एक कलीसिया के अगुवे के पास कलीसिया की समिति की पूर्व मंजूरी होनी चाहिए। कलीसिया के लिए चीजें या सम्पत्ति खरीदने से पहले उसे अनुमोदन की आवश्यकता है।

16. एक सेवक को पेशावर भिखारियों या चालबाजों को अपने ऊपर थोपने नहीं देना है। उसे ऐसे लोगों को दूसरे कलीसिया के अगुवे के पास भेजकर उनसे पीछा नहीं छुड़ाना है, बल्कि दूसरे सेवकों को सावधान करना चाहिए। फिर भी, एक सेवक को सच्ची आवश्यकता वालों की सहायता करने के लिए सदा तैयार रहना है। बाइबल के समयों में कलीसिया बूढ़ी विधवाओं और अनाथों की सहायता करने का विशेष ध्यान रखती थी। पौलुस ने स्पष्ट निर्देश दिए कि हमें किस की सहायता करनी चाहिए। "उसी विधवा का नाम लिखा जाए जो साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही पति की पत्नी रही हो, और भले काम में सुनाम रही हो, जिस ने बच्चों का पालन-पाषण किया हो; अतिथियों की सेवा की हो, पवित्र लोगों के पाँव धोए हों, दुखियों की सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो।" (1 तीमु. 5:9-10)।

17. एक कलीसिया का अगुवा किसी गुप्त संघ या संस्था का सदस्य न हो।

18. अभिलाषी कलीसिया की इमारतों की परियाजनाएँ एक खतरे का क्षेत्र हों सकती हैं यदि परिकल्पना, उत्साह या अह्म को विश्वास समझा जाए। जब आप अपने वर्तमान स्थान में रविवार की दो सभाएँ चला रहे हों तब बढ़ाने की योजना बनाओ। यदि आवश्यक हो तो तब तक तीसरी सभा आरम्भ करो जब तक आप एक बड़ा स्थान बना या खरीद नहीं लेते। वर्तमान मण्डली की वास्तविक संख्या के अनुसार, और वास्तविक कीमत के अनुसार आकार की इमारत बनाना बुद्धिमानी होगा, और उसमें बढ़त के लिए तर्कसंगत ध्यान रखो।
इससे पहले कि अनुबन्ध पर हस्ताक्षर किए जाएँ, निधि इकट्ठा करने के तरीकों और कलीसिया कितना कर्ज़ ले सकती है के प्रक्षेपण पहले वरिष्ठ पुरुषों द्वारा समर्थित किए जाने चाहिए। कुछ मण्डलियाँ एक सेवक द्वारा छोड़े गए कर्ज़ के बोझ तले दुख उठाती हैं जिसने एक स्मारक बनाना आरम्भ किया तो था परन्तु समाप्त नहीं कर सका था (लूका 14:30)।

अध्याय 4 – कलीसिया का अगुवा और प्रचार-मंच

एक सेवक एक प्रेमी चरवाहा, प्रचार करने और सभाओं का संचालन करने योग्य होना चाहिए ताकि लोग उद्धार पाएँ, पवित्र आत्मा से भर जाएँ, और उसकी व्यक्तिगत और सार्वजनिक सेवा के द्वारा मसीह के स्वरूप में बढ़ते जाएँ।

1. मंच में और और कहीं भी, एक कलीसिया के अगुवे के लिए नीतिपरक और नैतिक आचरण के सबसे ऊँचे स्तर ही उपयुक्त हैं। वह लोगों के सामने मसीह का प्रतिनिधि है। उसकी भाषा, प्रतिष्ठा, शालीनता और खरा व्यवहार निदोर्ष होने चाहिए (1 तीमु. 3:1-7; 1 पतरस 2:12)।

2. एक सेवक को ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जिससे मंच में ध्यान उसकी ओर अनावश्यक खींचा जाए। उसे ऐसे व्यावहारिकताओं और आदतों से दूर रहना चाहिए जो ध्यान भंग, कष्टप्रद, अप्रिय या आत्म-समर्थन करनेवाली हैं। मंच में कौतुककला अस्वीकार्य है और बाइबल की नहीं है। हमारा आचरण यीशु मसीह पर केन्द्रित होना चाहिए। क्योंकि एक कलीसिया का अगुवा उस प्रकार अपने आप को नहीं देख सकता है जैसे दूसरे उसे देखते हैं, उसे सलाह दी जाति है कि वह एक विवेकी मित्र या अपनी पत्नी की राय ले। रचनात्मक समीक्षा को स्वीकार करने के लिए तैयार रहो।

3. मंच अकसर वरिष्ठ पास्टर की जिम्मेवारी होती है। परन्तु, अस्वीकृत अतिथि प्रचारक या अतिथि प्रचारकों का बहुत अधिक आना-जाना कलीसिया की सहायता करने के बजाय इसे चोट पहुँचा सकता है।

4. एक कलीसिया के अगुवे को मंच के सामर्थ्य के द्वारा लोगों को कभी भी चालाकी से प्रभावित नहीं करना है, न ही व्यक्तियों को सरल निशाना बनाना है, और न ही लोगों में अनुपयुक्त भावनाओं को जगाना है। मंच पवित्र होता है, इसका उपयोग मसीह के उद्देश्यों के लिए ही किया जाना चाहिए, उस सेवक द्वारा जो राजा के एक विश्वासयोग्य सेवक के रूप में काम करता है।

5. एक कलीसिया के अगुवे पर संदेशवाहक और संदेश दोनों को ध्यानपूर्वक तैयार करने का नैतिक कर्तव्य है। आराधना की सभाओं का संचालन इस प्रकार करो कि परमेश्वर के लोग परमेश्वर की आराधना सच्चाई और आनन्द के साथ करने के लिए उन्नत और प्रोत्साहित हों। उन्हें परमेश्वर को जानने और उसकी उपस्थिति का आनन्द लेना सिखाओ।

6. डुबकी के बपतिस्मे की सभा के अनोखे स्वभाव के कारण, हर सम्भव प्रयास किया जाना चाहिए कि शालीनता बनाई रखी जाए। बपतिस्में के समय निश्चित किया जाए कि बपतिस्मा के कपड़े भिगने के बाद पारदर्शी हों। सभा अकसर आनन्द का उत्सव होता है। उन लोगों को बुलाया जाना चाहिए जिनका सुसमाचार के साथ सम्पर्क नहीं हुआ है। जब सभा सुरुचिपूर्ण और आनन्दपूर्ण होती है तब मसीह की महिमा होती है। यही बात प्रभु भोज के लिए भी सच है।

7. एक सेवक को अपनी बाइबल और दूसरी अध्ययन की पुस्तकें और लेख पढ़ने लिए समय निकालना चाहिए। यह आपके संदेश को अधिक गहराई देगा। संदेशवाहक और संदेश की तैयारी में प्रार्थना और अध्ययन के लिए पर्याप्त समय दो। संदेशों और मुद्रित शिक्षा नोट्स में उपयोग किए गए साधनों और उद्धरणों को उचित रूप से स्वीकार किया जाना चाहिए।

8. एक कलीसिया के अगुवे को व्यक्तिगत लाभ या लोकप्रियता के लिए आत्मा के वरदानों को कभी भी काम में नहीं लाना चाहिए। उसे लोगों पर अधिकार पाने के लिए ज्ञान के वचन को या पैसा बनाने के लिए चंगाई के वरदान को कभी उपयोग नहीं करना चाहिए। न ही उसे अपने नाम को बढ़ावा देने या अपनी सेवा के लिए नाम बनाने के लिए विश्वास के वरदान या सामर्थ्य के काम के वरदान को उपयोग करना है।

9. जब सेवक परमेश्वर के सामर्थ्य में कार्य करता है तो उसे को दुगुना ध्यान देना है कि वह अपने शारीरिक व्यक्तित्व को बीच में लाकर परमेश्वर की पवित्रता को दूषित नहीं करे। हमें मूसा के समान नहीं होना है जो अपने क्रोध के भड़कने के कारण प्रतीज्ञा के प्रदेश में जाने से वंचित हुआ था (गिनती 20:7-12)।

10. एक कलीसिया के अगुवे को चाहिए कि वह उसकी भविष्यद्वाणियों के परखे जाने के लिए तैयार हो, और आत्मा के वरदानों के उपयोग में मानवीय भ्रम और अधिमिश्रण को स्वीकार करने के लिए तैयार हो। लोगों को भविष्यद्वाणी करके उनकी कलीसिया से अपनी कलीसिया में बुनाना न केवल अनैतिक है बल्कि ईश्वरीय न्याय का खतरा भी है (यिर्मयाह 5:31; 29:9)।

11. दुष्टात्माओं पर परमेश्वर के सामर्थ्य के प्रयोग के कारण गौरव, घमण्ड और खुश होना यीशु ने मना किया है। दुष्टात्माओं को निकालना कोई लोगों के देखने का खेल नहीं है, और दुष्टात्माओं की क्रियाओं को महत्त्व देना और "छुटकारों" को अधिक ध्यान देना परमेश्वर से अधिक शैतान की महिमा कर सकता है।

12. घमण्ड को उसे गिराने से रोकने के लिए, एक कलीसिया के सेवक को दूसरी सेवाओं को अपनी सेवा से बढ़कर मानना चाहिए (फिलि. 2:3)। दूसरे सवकों की लोगों के सामने आलोचना करना और उनका नाम लेकर यह कहना कि उसे एक "भविष्यद्वक्ता" के रूप में "पाप प्रकट" करने के लिए भेजा गया है, खतरों से भरा खेल है, जैसे कि घमण्ड, अहंकार, प्रतिशोध और आत्म-धामिकता।

13. एक कलीसिया के अगुवे को अपनी सीमाओं को पहचानना चाहिए और समय-समय पर अतिथि प्रचारकों को बुलाना चाहिए, विशेषकर उन्हें जिनकी सेवा उससे भिन्न है। अतिथि सेवाओं को सम्मान दिया जाना चाहिए। स्वच्छ और सुविधाजनक रहने का प्रबंध किया जाना चाहिए। उसके सफर के और दूसरे खर्चो को सम्भाल लिया जाए। सेवक के वर्तमान खर्चे के साधनों, कितनी बार वह सेवा करता है, कलीसिया की देने की क्षमता को ध्यान में रखकर एक उदार मानदेय दिया जाना चाहिए।

14. अतिथि प्रचारक का परिचय कलीसिया का अगुवा सरलता और शिष्टता से करे, बढ़ा-चढ़ाकर या शानदार तरीके से नहीं (प्रेरितों 12:22; 1 कुरिं. 3:5)। संदेश के अन्त में कलसिया का अगुवा, एक संक्षिप्त, हार्दिक अभिपुष्टि के अलावा, कोई टिप्पणी न करे।

अध्याय 5 – कलीसिया के अगुवे का कार्य

सेवक और उसके काम के विषय में दूसरों का जो चित्र है उसे समझना, और उसकी जिम्मेवारियों के प्रत्यक्षज्ञान, और जो अपेक्षा लोगों की उससे है उनका नियमित मूल्याँकन करना आवश्यक है। लोगों की जो कलीसिया के अगुवे से अपेक्षा है और जिस प्रकार का काम वह आप कर रहा है में अन्तर कलीसिया में बहुत व्यक्तिगत तनाव और झगड़ा पैदा करता है। जब एक व्यक्ति अपने जीवन पर परमेश्वर के बुलावे को उत्तर देता है, तो उसके मन में मसीह के एक सेवक के रूप में अपनी एक समझ होती है। उसके आध्यात्मिक अध्ययन उसकी इस समझ को मजबूत या पुनःपरिभाषित कर सकते हैं। परन्तु जब वह एक कलीसिया के अधिकार में होता है, तब लोगों की उसकी प्रत्यक्षज्ञान और अपेक्षाएँ उसके लिए बहुत संकट पैदा कर सकते हैं। असुरक्षा की भावनाएँ और आत्म-चित्र की समस्याएँ प्रकट हो सकती हैं।

जब उसका अपना मूल्याँकन लोगों के उसके और उसकी सेवा के विषय में अनुमान से मेल नहीं खाते तब व्यक्तिगत संकट और मण्डली के साथ झगड़ा हो सकता है।
एक सेवक तीन में से एक तरीके से प्रतिक्रिया दिखा सकता है:

1. उस चित्र को अपना ले जो लोगों का उसके विषय में है।
2. उनके चित्र का पूरी तरह इन्कार करे और उनकी अपेक्षाओं को अस्वीकार करे।
3. अपने कार्य से लोगों की अपेक्षाओं और अपने विचारों को समझने, और उनका सकारात्मक और रचनात्मक रूप से मेल करने का प्रयत्न करे।

"कार्य की अपेक्षाओं" के कारण इस तनाव का समाधान करने में असफलता का परिणाम सम्भवतः एक कुण्ठित अगुवा और एक हक्की-बक्की और निराश मण्डली होगी। यह हो सकता है कि किसी दूसरे कारण से अधिक इस कारण से बहुत लोग सेवा को छोड़ देते हैं। व्यक्ति के कार्य के चित्रण को स्पष्ट करना और उसे कलीसिया को बताना सेवा में सेवक की व्यक्तिगत वृद्धि के लिए एक सम्पूर्ण चुनौती है।
<u>स्पष्ट कार्य चित्रण और वास्तविक अपेक्षाएँ कलीसिया के अगुवे को योग्य करते हैं:</u>

1. ईमानदारी के साथ प्रतिक्रिया करने में,
2. कलीसिया के जीवन की निराशाओं को सम्भालने में,
3. अपनी सेवा पूरी करने में,
4. लोगों की उपयुक्त अपेक्षाओं को पूरा करने में, और
5. उसी समय परमेश्वर का एक सच्चा सेवक बनने में।

अध्याय 6 – संघर्ष की स्थिति में सेवक

सेवा की यह एक गम्भीर सच्चाई है कि कलीसिया के अगुवे और लोगों के बीच कभी-कभी भारी तनाव और शत्रुता भी उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए एक सेवक के लिए यह आवश्यक है कि इससे पहले हानि हो, इस प्रकार की स्थितियों को सम्भालने में सहायता माँगकर बुद्धिमानी और दीनता दिखाए।

1. कोई भी कलीसिया का अगुवा विवादों से उन्मुक्त नहीं है - वह तो इसकी अपेक्षा भी नहीं कर सकता है। भविष्यद्वाणी की आवाज प्रतिक्रिया उत्तेजित करेगी और स्थापित नमूनों को चुनौती देगी। यीशु ने कहा जिस प्रकार उसका विरोध हुआ था, हमारा भी होगा। परन्तु एक सेवक को स्पष्ट अनुभव होना चाहिए कि बदलाव धीमे धीमे लाना चाहिए। यदि गलतफहमियाँ पैदा हों, तो इन्हें सबके संतोष के लिए एक प्रेमी और समझौताकारी तरीकों से हल किया जा सकता है।
एक कलीसिया का नया अगुवा पाएगा कि यदि वह पहले लोगों में पर्याप्त भरोसा बनाता है, या बदलाव के कारणों को समय लेकर समझाता है ताकि लोगों का बदलाव का डर कुछ हद तक जीता जाए, तब बदलाव की ओर नाराजगी जीती जा सकती है।

2. जहाँ बदलाव की ओर सामान्य सहमति है, वहाँ भी सेवक अल्पसंख्यक वर्ग की देखभाल करने के लिए उत्तरदायी है जो बदलाव से चोट खाए या विस्थापित हो गए हों।

3. यदि कलीसिया में विवाद या विभाजन उत्पन्न होता है, तो कलीसिया के अगुवे को सब पक्षों का सद्भाव बनाए रखना है - तब भी जब संकट उसके और उसके परिवार पर केन्द्रित है। एक सेवक को आक्रमण और रक्षात्मिकता से बचना चाहिए, परन्तु अपने संघर्ष के प्रबंध में सन्तुलन लाने का प्रयत्न करना चाहिए जिससे वह कलीसिया को संघर्ष के बाइबल के समाधान में ला सके। संर्घषों को उत्तेजित करना या चरम स्थितियों को अपनाने से दलसम्बंधी भावनाएँ बढ़ सकती हैं और सम्भव है वे कलीसिया को विभाजन भी कर दें। एक मन्द आत्मा कलीसिया की बढ़त उत्पन्न कर सकती है। सेवकों को कलीसिया की भलाई के लिए उनके स्वार्थों को भूल जाना चाहिए। ऐसी आशा सदा की जानी चाहिए कि कलीसिया के लिए उनके कलीसिया के अगुवे और उसके परिवार की पास्तरीय देखभाल उनकी सबसे उच्चतम प्राथमिकता होनी चाहिए।

4. जब एक सेवक को अनुभव होता है कि कलीसिया का एक प्रभावशाली दल उसे गलत समझ रहा है या अनुचित रूप से आलोचना कर रहा है तब प्रतिक्रिया करने से पहले उसे असंतोष का स्तर और विस्तार सही-सही पता लगाना चाहिए। उसे कार्य करने से पहले लोगों और हालातों की ओर एक असम्बद्ध और वस्तुगत रवैया बनाए रखना चाहिए। परन्तु, यदि आलोचना का कारण अधिक लोगों की उचित चिन्ता दिखलाता है तो, कड़ी प्रतिक्रिया दिखाने का कोई भी प्रलोभन समस्या को हल नहीं करेगा या उसकी सेवा को बढ़ाएगा नहीं। यह एक बुद्धिमान कलीसिया का अगुवा है जिसने कुछ वरिष्ठ मित्र बनाए हैं जिनके पास वह ऐसे संकट के समयों में जो सकता है।

5. यदि एक सेवक को लोगों से मिल रहा सहयोग 60% से कम हो जाता है तो कलीसिया के अगुवे को प्रार्थनापूर्वक विचार करना अच्छा होगा कि क्या यह त्यागपत्र देने और नया पास्टर का काम खोजने का समय है। सेवक और उसका परिवार ऐसे समय में बहुत असुरक्षित हो जाते हैं। परन्तु एक ईमानदार कलीसिया का अगुवा जिसका एक सेवक का हृदय है यदि इसमें उन लोगों के साथ जिनका चरवाहा वह था, झगड़ा सम्मिलित है तो टिके रहने पर जोर नहीं देगा। कलीसिया टूटने से पहले यह सब के लिए अच्छा होगा कि वह चला जाए।

6. यदि एक कलीसिया में झगड़ा उत्पन्न होता है तो कलीसिया की प्रबंध-परिषद् झगड़े के आरम्भ में ही, इससे पहले कि स्थिति अस्थिर बने और "फूट पड़े", सब पक्षों के बीच मध्यस्थता करने के लिए उनके सम्प्रदाय में से किसी वरिष्ठ व्यक्ति को बुलाने का फैसला कर सकती है। वह अधिक असम्बद्ध होगा और इसलिए स्थिति को एक वस्तुगत दृष्टिकोण से जाँचने के लिए बेहतर स्थिति में होगा। उसे पक्षों में मेल-मिलाप लाने के लिए निष्पक्ष समझा जाएगा।
यदि यह प्रत्यक्ष होता है कि मेल-मिलाप सम्भव नहीं है तो, वरिष्ठ व्यक्ति कलीसिया के अगुवे को वास्तव में कितना सहयोग मिला हुआ है, उसका पता लगाने के लिए एक प्रक्रिया का सुझाव दे सकता है।

अ) यदि यह स्पष्ट होता है कि सेवक के पास मजबूत सहयोग है, तब वह उनको जो कलीसिया के अगुवे की आलोचना कर रहे थे प्रोत्साहित करने का प्रयास करेगा कि वे मसीह और उसकी देह की खातिर बहुमत के फैसले को स्वीकार करें। वह उनसे आग्रह करेगा कि वे सेवक के लिए प्रार्थना करें और उसके साथ मिलकर कार्य करें।

दूसरी ओर,

आ) यदि प्रभावशाली सेवा में बने रहने के लिए कलीसिया के अगुवे का सहयोग पर्याप्त नहीं है तो उसे शान और अनुग्रह के साथ कलीसिया का फैसला और वरिष्ठ व्यक्ति की सलाह स्वीकार करनी चाहिए और अपना त्यागपत्र दे देना चाहिए।

7. एक सेवक को शान्ति के समयों में झगड़ों का समाधान, क्षमा, क्रोध का प्रबंध और दूसरे अत्यावश्यक विषयों पर प्रचार करना और सिखाना चाहिए। झगड़े के समयों में इन विषयों पर सिखाने के प्रयास को बिरले ही समझा जाता है बल्कि सुरक्षा-प्रतिरक्षा की प्रतिक्रिया दिखाई जा सकती है, और इससे मण्डली में अधिक क्रोध और फूट फैल सकती है।

अध्याय 7 – कलीसिया के अगुवे की पत्नी

इस अध्याय की शिक्षा स्त्रीलिंग में पढ़ी जानी चाहिए। हमारी अनेक उत्तम स्त्री सेविकाओं के लिए, इसे पुल्लिंग में पढ़ा जाना चाहिए। कई सम्प्रदाय पुरुष या स्त्री की सेवा, पास्तरीय वरदानों और बुलावे को बराबर पहचानने की उनकी परम्परा के विषय में सही घमण्ड अनुभव करते हैं। परन्तु, एक सेवक की पत्नी की अनोखी और अत्यावश्यक (अकसर उपेक्षित) भूमिका है जो कभी-कभी बड़ी कठिनाई और कम प्रशंसा से भरी हुई होती है।

कलीसिया के अगुवे की पत्नी उसकी अपनी आन्तरिक मूल्य वाली एक अलग, अनोखी और लाभकर व्यक्ति है। कलीसिया के जीवन में जो उसे बहुत सारी भूमिकाएँ और कार्य करने पड़ते हैं, वे उसके बुलावे पर छा जाने या उसे दबाने लगते हैं। सेवा की कई माँगें, कलीसिया के लोगों की अपेक्षाएँ, और बहुत से जटिल सम्बंध जो सेवा के जीवन का एक अन्तर्निष्ठ भाग हैं, सेवक की पत्नी पर अक्सर असहनीय दबाव डालते हैं।

हर कलीसिया के अगुवे को उसकी पत्नी के कार्यों का ब्योरा लिख लेना चाहिए जिसकी अपेक्षा उससे की जा रही है ताकि पता चल सके कि क्या यह सब करना मानवीय रूप से मुमकिन है या नहीं। सेवक की जिम्मेवारी है:

- उन अत्यधिक दबावों से उसकी रक्षा करना जो सेवा में अकसर घटित होते हैं;
- लोगों की अपेक्षाओं को जो उससे हैं कम करना और वास्तविक स्तर तक लाना जो उसके अनोखे व्यक्तित्व, वरदान और बुलावे के लिए उपयुक्त है;
- उसे सहयोग देना, प्रोत्साहिक करना और सही समय पर उसे उस अनोखे बुलावे के लिए मुक्त करना जो परमेश्वर का उसके जीवन के लिए है।

1. कलीसिया के अगुवे की पत्नी को शालीनता के साथ:

अ) सार्वजनिक जीवन में एक व्यस्त पुरुष की पत्नी होने के साथ आनेवाली सामान्य जिम्मेवारियों को स्वीकार करना चाहिए: उनके बच्चों की सेवानिष्ठ माता होने, और अपने पति की कलीसिया में एक परिपक्व हो रही, संबद्ध स्त्री की जिम्मेवारियों को स्वीकार करना चाहिए; और

आ) यीशु मसीह के लिए अनोखी जिम्मेवारी और बलिदान को स्वीकार करना चाहिए जो उसे पता था उसका होगा जब उसने एक सेवक की पत्नी होने का फैसला किया था।

2. कलीसिया के अगुवे की पत्नी का उसके पति की सेवा और इनामों में हिस्सेदार होने का विशेषाधिकार और बुलावा है। उसे परमेश्वर ने उसके पति की सेवा पूरी करने, अपनी प्रार्थनाओं और उपस्थिति द्वारा उसे पूर्ण करने और सहयोग देने, और उसके दर्शन और लक्ष्यों में हिस्सेदार होने के लिए चुना और बुलाया और नियुक्त किया है। तब भी जब वह युद्ध की सीमाओं पर नहीं हो पाती है, उसे इस बात से अपनी हिम्मत बढ़ानी है कि वह उस विश्वासयोग्य सेवक के समान जो "सामान के साथ बैठा" था आशीष और परमेश्वर के इनाम में बराबर का भाग पाएगी। (1 शमूएल 30:24-25)

3. सेवक की पत्नी को उसके पति को सान्त्वना देना और शान्ति देना; अस्त-व्यस्त पंखों को शान्त करना, चकनाचूर हए अहम पर चंगाई डालना, और उसकी सहायता करना कि वह अपने आप को गम्भीरत से न ले सीखना है। एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है; और यदि वे सहमत हैं तो यीशु वहाँ होगा। (इफि. 4:9-12)

4. कलीसिया के अगुवे की पत्नी को एक ऐसे व्यक्ति के समान जो उसके पति को जानती और उससे प्रेम करती है, उसका ध्यान रखना चाहिए - उन खतरनाक फंदों से उसकी रक्षा करने और बचाने के लिए जो उसकी नज़र से छिपे होते हैं:

- वह उसे दूसरी स्त्रियों से बचाती है जो उसके व्यभिचार में पड़ने का कारण हो सकती हैं;

- वह उसे अधिकार की लालसा से बचाती है जो उसे घमण्ड से इतना फूलने देगा कि परमेश्वर को उसे खुले आप दीन करना पड़ेगा;
- वह उसे धन और सम्पत्ति के लोभ से बचाती है जो उसे लालची या कलीसिया की निधि के प्रबंध में बेइमान बना सकता है; और
- वह उसे एक महान सफलता बनने की स्वार्थी अभिलाषाओं से बचाती है जिससे वह अपने आप को धोखा दे सकता है कि उसका सारा कड़ा परिश्रम परमेश्वर के लिए है।

सेवका को पता होना चाहिए कि उसे उसकी इन क्षेत्रों में सहायता और सुरक्षा की आवश्यकता है, और उसे उसके अपने अन्धकार के क्षेत्रों में पर अधिकार लेने के लिए उसे मुक्त करना चाहिए।

5. कलीसिया के अगुवे की पत्नी को उसके पति के रूप में अकेले में और सबके सामने उसे उचित सम्मान और उसकी कलीसिया के सेवक के रूप में अतिरिक्त सम्मान देना चाहिए। वह सब बातों में प्रभु में उसके अधीन रहे (इफि. 5:24)।

6. कलीसिया के अगुवे की पत्नी को उनके घर को एक शान्ति का आश्रय बनाना चाहिए। उसे इसे अपने पति और बच्चों के लिए एक मन्दिर बनाने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि वह परिवार के हर सदस्य की आवश्यकताओं के विषय में जानकार और संवेदनशील है, उसका पति उसे बाहरी दबावों को सीमित करने का अधिकार दे जो सेवक के परिवार पर डाले जा सकते हैं।

7. कलीसिया के अगुवे की पत्नी जिसका अपने पति से भिन्न एक सेवा का बुलावा है, पहले अपने पति और अपने परिवार और कलीसिया की ओर अपनी जिम्मेवारियों को पूरा करे इससे पहले कि वह अपनी सेवा में जाए।

8. सेवक को सावधानी और सनेह के साथ अपनी पत्नी को बढ़ाना चाहिए। उसे अपनी पत्नी को परमेश्वर से एक सबसे बहुमूल्य वरदान के रूप में अपने हृदय में बनाए रखना चाहिए। उसे अपनी पत्नी के लिए उसकी सेवा के अवसर पैदा करके उसे मुक्त करना चाहिए। उसके विशेष वरदानों के प्रयोग में उसे सम्मान दो, और उसे स्वीकरण और प्रोत्साहन दो जिससे वह अपने जीवन में परमेश्वर के अनोखे उद्देश्य को पूरा कर सके।

9. कलीसिया के अगुवे को अपनी पत्नी से प्रेम करना और उसे बहुमूल्य जानने, स्वीकार करने, आँख की पुतली समझने और सम्मान करने की उसकी वचनबद्धता खुलेआम प्रकट करनी चाहिए। वह उसे कभी भी दूसरे लोगों या अपने बच्चों के सामने नीचा नहीं दिखाए। कभी भी (मजाक में भी नहीं) उसका अनादर मत करो, आलोचना मत करो, या कलीसिया की दूसरी स्त्रियों के साथ उसकी नकारात्मक तुलना मत करो। सेवक का उसकी पत्नी के साथ व्यवहार मसीह का उसकी दुलहिन के साथ व्यवहार भावपूर्ण से प्रदर्शित करता है।

अध्याय 8 – समाज में कलीसिया का अगुवा

हालाँकि उत्कृष्ट रूप से परमेश्वर का एक सेवक होने के आलावा, सेवक राज्य का एक नागरिक भी है जिसके कुछ कर्तव्य हैं। देश के नियमों का पालन करने का उसका प्रमुख अभिप्राय परमेश्वर के सम्मुख एक शुद्ध विवेक बनाए रखना है। उसे परमेश्वर द्वारा स्थापित हर वैद्य अधिकार के अधीन होना है। (रोमियों 13:1-7)

1. एक कलीसिया के अगुवे को नागरिकता की हर जिम्मेवारी को विश्वासयोग्यता के साथ निभाना चाहिए। यदि उसे ऐसा लगता है कि राज्य उससे उस चीज की माँग कर रहा है जो केवल परमेश्वर की है, तब उसे अपने सहयोगियों से प्रार्थनापूर्वक विचार-विर्मश करके फैसला करना चाहिए कि क्या करना उचित होगा।

2. एक सेवक समाज की क्रियाओं में एक सीमित भाग लेने के लिए स्वतन्त्र अनुभव करे। उसे अपने प्रमुख कार्यों को, अपने बुलावे की माँगों को और, सबसे आवश्यक, अपने परिवार की आवश्यकताओं को सदा अपने मन में रखना चाहिए।

3. एक कलीसिया के अगुवे को सार्वजनिक समारोहों में अपने बुलावे के उपयुक्त आचरण करना चाहिए। उसकी भरोसेमन्दी और समय पाबन्दी की एक नेकनामी होनी चाहिए। यदि वह कोई समारोह में उपस्थित नहीं हो सकता है या एक वादे को पूरा नहीं कर सकता है तो उसे पहले ही फोन कर देना चाहिए या तुरन्त एक लिखित क्षमायाचना भेज देनी चाहिए।

4. एक सेवक जब नई कलीसिया में कार्यभार सम्भालता है तो वह समाज के नेताओं से अपना परिचय कराए। ऐसे लोगों के साथ मित्रता के सम्बंध बनाए रखना अच्छा है। परन्तु प्रभावशाली लोगों के साथ इस प्रकार से सहबद्ध मत हो जाओ कि उनके नियंत्रण के लिए छेद्य हो जाओ। आपको परमेश्वर के सेवक बने रहना है। "...क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूँ? यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता" (गलातियों 1:10)।

5. जहाँ सरकार एक कलीसिया के अगुवे को विशेष विशेषाधिकार देती है (जैसे कि कोई कर, या सेना की सेवा की छूट), तब इन्हें स्वीकार किया जाना चाहिए परन्तु कभी भी इन्हें निश्चित नहीं समझना चाहिए।

6. एक सेवक जो समाज या सरकार से लाभ, इनाम या रिआयत स्वीकार करता है, उसे निश्चित करना है कि परमेश्वर के सेवक के रूप में उसकी स्थिति के साथ कोई समझौता नहीं हो रहा है या उसकी गवाही का दम नहीं घुट रहा है। उसे मसीह के राजदूत के रूप में अटल बने रहना है (2 कुरिं. 5:19-20)।

7. एक कलीसिया के अगुवे को नियमों का पालन करने के लिए उत्साही होना चाहिए। उसे कर पूरे और ईमानदारी के साथ देने चाहिए। उसे सड़क के नियमों और देश के नियमों का पालन करना चाहिए, और यदि उल्लंघन करते पकड़ा जाए तो अधिमान्य व्यवहार की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उसे अपने लोगों को सरकार के वैद्य प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जैसे कि मतदान करना, परन्तु अपनी व्यक्तिगत राजनीतिक पसन्द के अनुसार लोगों को प्रभावित नहीं करना चाहिए।

8. जब एक सेवक को लगता है कि उसे सामाजिक या राजनीतिक मामलों पर बोलना होगा, तब उसे पहले निश्चित कर लेना चाहिए कि उसके शब्दों और कार्यों का आधार स्पष्ट नैतिक, बाइबल के और आत्मिक सिद्धान्तों पर टिका है। यदि वह राजनीति के लिए मंच का उपयोग करता है तो वह अपने आप और अपने पेशे को हानि पहुँचा सकता है। साम्प्रदायिक राजनीतिक विचार व्यक्त मत करो, या न विवादास्पद मामलों में पक्ष लो जो ध्रवित करते हैं, परन्तु उनमें कोई भी अनन्त महत्त्व नहीं होता।

9. एक कलीसिया के अगुवे को जब वह सामाजिक मामलों के विषय में सार्वजनिक घोषणा करता है, उसे नीतिपरक जिम्मेवारियों की एक तीक्षण भावना बनाई रखनी चाहिए। जिस बात को वह अकसर कहता है उसका लोगों पर एक शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है। और, सेवक तात्कालिक चुनौती और जिरह के लिए सदा खुला नहीं होता है। उसे निश्चित करना चाहिए कि उसके सार्वजनिक वक्तव्य परमेश्वर के वचन और उत्तम उपलब्ध जानकारी से समर्थन पाए हुए हैं। उसे कभी भी अफवाहों, अविश्वसनीय साधनों या अस्पष्ट सामान्यीकरणों पर निर्भर नहीं होना है।

10. एक कलीसिया के अगुवे को परमेश्वर के वचन और जानकारी के विश्वसनीय साधनों से हमारे समय के नैतिक और सामाजिक मामलों की एक स्पष्ट समझ प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। वह जो स्थिति लेता है उसे साहस और स्पष्टता के साथ बचाव करने योग्य होना चाहिए, और इन मामलों से सम्बंधित बाइबल की सच्चाइयों को सिखाने और व्याख्या करने योग्य होना चाहिए।

अध्याय 9 – सेवक और दूसरे सेवक

एक कलीसिया का अगुवा सदा एक बड़े सेवकों के समूह का अंश है। उसे हर दूसरे सेवक के साथ जो परमेश्वर के राज्य का निर्माण कर रहा है अच्छे सम्बंध बनाने हैं। एक कलीसिया को एक सेवक के साथ उसकी कठिनाई, आक्रमण या निराशा के समयों में खड़े होने को एक विशेषाधिकार समझना चाहिए।

1. एक कलीसिया के अगुवे को एक भाई सेवक की ओर वफादार होना चाहिए, और उसके साथ असली खुलापन विकसित करने और सहयोग बनाए रखने का प्रयत्न करना चाहिए। उसे दूसरे कलीसिया के अगुवे की कभी भी सबके सामने आलोचना, नीचा दिखाना या निन्दा नहीं करनी चाहिए। उसे प्रभु के अपने सेवक के विषय में सबसे उत्तम सोचना - और सबसे उत्तम जो उसके लिए कर सकता है - करना चाहिए।

2. यदि एक सेवक एक अनैतिक तरीके से व्यवहार कर रहा है तो, दूसरा कलीसिया का अगुवा अकेले में और प्रार्थनापूर्वक उसे अच्छे और अधिक भक्त तरीकों में लौटा लाने के लिए उसके पास जाए। यीशु ने जो मत्ती 18:15-20 में सिखाया है उसे पढ़ो (नीतिशास्त्र के गम्भीर उल्लंघनों के लिए नीचे सूत्र 9 को देखो)। हम सब, यदि एक साथी सेवक किसी असफलता के कारण गिरता या बदनाम होता है, एक दूसरे की लज्जा में भागी होते हैं।

3. एक कलीसिया के अगुवे को अपनी और पड़ोसी कलीसियाओं में, सहभागिता बढ़ानी, और निरन्तर सहयोग का प्रयास करना चाहिए। उसे दूसरी कलीसिया के सदस्यों को अपनी कलीसिया में कभी भी लुभाना नहीं चाहिए। उसे दूसरी कलीसिया के करीब के क्षेत्र में प्रवेश नहीं करना चाहिए।

4. यदि कोई सदस्य आपकी कलीसिया से दूसरे स्थान में जाते हैं, तो जिस कलीसिया में अब वे जाते हैं वहाँ के पास्टर के लिए एक "बदली का पत्र" लिखो। उसी प्रकार, यदि एक सेवक को उसके क्षेत्र में आए नए लोगों के विषय में पता चलता है तो उसे उनके साथ अपने सम्पर्क के परिणामों के विषय में पहले पास्टर को जानकारी देनी चाहिए।

5. एक सेवक जो एक नई कलीसिया का कार्यभार सम्भालता है, उसे पूर्व पास्टर की कभी भी आलोचना नहीं करनी या नीचा नहीं दिखाना चाहिए। उसे दूसरों को भी आलोचना करने, या नए की पुराने से तुलना करने का अवसर या प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए।

6. एक कलीसिया के अगुवे को दूसरे सेवकों की ओर एक उदार हृदय बनाए रखना चाहिए और उन्हें उनके काम में आशीष देनी और प्रोत्साहित करना चाहिए - तब भी जब उनके विचार या सिद्धान्त थोड़े भिन्न हैं (मरकुस 9:38-40)।

7. एक सेवक को अपनी सामग्री के स्रोतों को स्वीकार करना, कॉपीराइट सामग्री के उपयोग के लिए यथानियम लिखित अनुमति माँगना, कॉपीराइट दायित्व खोजना, कॉपीराइट निबन्धनों और नियमों को मानना, और जो कुछ भी भुगतान करना हो करना चाहिए।

8. एक कलीसिया के अगुवे को पास्टर के काम के लिए दूसरे सेवकों के साथ जानबूझकर मुकाबला नहीं करना चाहिए। यदि दूसरे सेवकों ने इन्कार किया हो तो वह अपना नाम आगे आने दे सकता है। एक सेवक को उस कलीसिया के पास जाना, या उस कलीसिया से निमन्त्रण पर विचार नहीं करना चाहिए जिसके सेवक ने अभी त्यागपत्र नहीं दिया है। एक सेवक को दूसरी सेवा के दल के एक सहायक पास्टर के साथ गुप्त में निमन्त्रण की बातचीत पहले उस दल के वरिष्ठ सेवक से स्पष्ट किए बिना नहीं करनी चाहिए।

9. जहाँ दूसरे सेवक द्वारा सेवा के नीतिपरक के गम्भीर या पुनरावृत भंग निश्चित रूप से किए जा रहे हैं, तब उस सेवक की अपनी सम्प्रदाय से सहायता और निर्देश खोजने में प्रयास करो। यदि वह ऐसा करने से इन्कार करता है तो, इन मामलों को उचित निरीक्षण के ध्यान में लाना चाहिए, जिससे सम्पूर्ण सेवा को बदनाम होने से रोका जा सके।

अध्याय 10 – सेवक और उसकी अपनी सम्प्रदाय

जो सेवक परमेश्वर द्वारा उनके बुलावे के विषय में निश्चित हैं, उनके सम्प्रदायिक मण्डली या कलीसिया संस्था के संदर्भ में सेवा करेंगे। उस मण्डली ने उन्हें बढ़ाया और प्रशिक्षण दिया, सेवा करने का अवसर दिया, आवरक प्रदान किया, सेवा के प्रत्यायकों के साधनों द्वारा पहचान दी, और उन्हें सेवा प्रदान की है।

जबकि उनकी निष्ठा मुख्य रूप से यीशु मसीह की ओर है, उन्हें उनके सम्प्रदाय या कलीसिया संस्था की ओर भी एक स्पष्ट और दृढ़ वफ़ादारी भी व्यक्त करनी चाहिए।

1. एक सेवक के लिए उसकी अपनी सम्प्रदाय के उचित निर्देशों या माँगों को अनदेखा करना या आज्ञोल्लंघन करना अनैतिक है। उसे सामान्य दायित्वों को जैसे कि मत, देय का भुगतान. सम्प्रदायिक फैसलों और अधिसूचनाओं का सम्मान करना चाहिए।
एक कलीसिया के अगुवे के लिए दूसरे सेवकों या कलीसियाओं से इन सिद्धान्तों का उल्लंघन करने का आग्रह करना अनैतिक है - जब तक यह धर्मत्यागी प्रवृतियों या सिद्धान्तों के विरुद्ध विरोध प्रकट के रूप में न हो। ऐसे मामलों में, जब तक मन फिराव का प्रमाण नहीं मिलता सहयोग को रोकना उचित होगा।

2. अपने कलीसिया के सदस्यों को सहभागिता के बाइबल के स्तरों की ओर वफादार होने के लिए प्रोत्साहित करने से, एक सेवक उनकी पहचान की भावना को विकसित करने में सहायता करेगा। वह उनकी सामूहिक एकता को मजबूत करेगा और उनके आत्म-सम्मान को बढ़ाएगा। वह अपनी सम्प्रदाय, इसकी नीतियों या इसके अधिकारियों की अनुचित नकारात्मक आलोचना द्वारा परमेश्वर के काम को बढ़ाएगा नहीं।

3. सेवक बाइबल के विविध प्रकार के विषयों पर अपने विचारों में भिन्न हो सकते हैं। बाइबल के गैर-आवश्यक विषयों के विभिन्न अर्थों में दूसरे सेवकों की सहनशीलता को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ, युग के अन्त के सिद्धान्तों के विषय में बहुत अनावश्यक भेद प्रचलित हैं। भविष्य की चीजें आवश्यक सिद्धान्त नहीं हैं। जब पूर्व-स्वर्ण युग, पश्च-स्वर्ण युग और अ-स्वर्ण युग दृष्टिकोणों की बात होती है तो काफी विविधता हो सकती है। परन्तु हमें उस सम्प्रदायिक अगुआई के अधीन नहीं होना है जो उसे पवित्र कहती है जो पाप है। कुछ सम्प्रदाय समलिंगकामियों और स्त्रीसमलिंगकामियों को सुसमाचार के सेवक नियुक्त करते हैं। यदि आप ऐसे किसी सम्प्रदाय के अंग हैं तो इसका (और ऐसा ही कुछ और) आपको जोरदार विरोध करना चाहिए।
हमें आवश्यक सिद्धान्तों जैसे कि यीशु का कुँवारी से जन्म, विश्वास से यीशु के लहू द्वारा उद्धार, यीशु का पुनरुत्थान आदि के साथ समझौता कभी नहीं करना चाहिए।
पौलुस हमारे लिए एक अपरिवर्तनीय न्यूनतम सिद्धान्तीय वक्तव्य छोड़ गया है: "इसी कारण मैं ने सब से पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।" (1 कुरिं. 15:3-4)। इससे कुछ भी कम मसीही नहीं है - और सहयोग नहीं दिया जाना चाहिए। ऊपर के अतिरिक्त, हर कलीसिया के अगुवे की लोगों को सेवकों की विभिन्न सिद्धान्तीय महत्त्व और व्यवहारों को समझते हुए परिपक्व होने के लिए प्रोत्साहित करने की जिम्मेवारी है। यदि हम एक दूसरे के दृष्टिकोणों के सब पहलुओं से सहमत नहीं होते हैं, तो परिपक्वता की माँग है कि हम एक सम्मानजनक, अनुकूल आत्मा से असहमत हों। हमें एक दूसरे के भिन्न होने के अधिकार का सम्मान करना है, जब अन्तर विश्वास के आवश्यक क्षेत्रों, महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों और सच्चे मसीही आचरण के साथ समझौता नहीं करता।

4. सेवक का उसके सम्प्रदाय के अधिकारियों और अधीकक्षों की ओर आज्ञाकारी रवैया होना चाहिए। उन्हें एक सम्प्रदायिक ढाँचे के नियुक्त व्यक्तियों की नज़र से नहीं देखा जाना चाहिए, परन्तु वे बाइबल के अधिकार से नियुक्त सौंपे गए अधिकार हैं जिनके अधीन होना सही और उचित भी है। उनके अधीन होना प्रभु के अधीन होना है (मत्ती 8:9)।

5. स्थानीय स्वशासन और विवेक की स्वतन्त्रता एक सच्ची कलीसिया के बहुमूल्य और आवश्यक गुण हैं। परन्तु यह मुमकिन है कि ये अच्छी चीजें अनजाने में स्वाधीनता की आत्मा को स्थान दे दें जो अस्वस्थ्य प्रतियोगिता या असंगति में ले चले। परिपक्व पुरुष आनन्ददायक स्वतन्त्रता बनाने के लिए स्वशासन की उनकी अभिव्यक्ति को सीमित करेंगे, न कि छूट के लिए जगह बनाएँगे जो परिश्रम से पाई हुई स्वतन्त्रता के साथ एकता जिसा हम आनन्द लेते हैं नष्ट कर दे। हमारा केवल एक शत्रु है, और सब जो परमेश्वर के राज्य में हैं हमारी ओर हैं।

6. यदि एक कलीसिया का अगुवा अपने विचार बदलता है और उसकी सम्प्रदाय या कलीसिया की संस्था के मुख्य सिद्धान्तों पर अब नहीं चलता है, तो वह कलीसिया से त्याग-पत्र देने के लिए नैतिक रूप से बाध्य है। इससे कलीसिया और समिति सम्प्रदाय

के अधिकारियों के साथ अपने कार्य की नीति पर विचार करने के लिए स्वतन्त्र अनुभव कर सकते हैं। सेवक की ओर से कोई दूसरी क्रिया कलीसिया में फूट डाल सकती है और सेवा को बदनाम कर सकती है।

अध्याय 11 – कलीसिया का अगुवा और दूसरी सम्प्रदाएँ

अधिकाँश प्रोस्टेंट सम्प्रदाय दावा नहीं करती हैं कि वे ही यीशु मसीह का पृथ्वी पर प्रतिनिधित्व कर रही सच्ची कलीसियाएँ हैं। परमेशवर का राज्य किसी भी सम्प्रदाय या कलीसिया संस्था से बड़ा है। हर सेवक को हर दूसरी कलीसिया और हर कलीसिया के अगुवे को जो परमेश्वर के राज्य की खोज में है, उचित आदर, सम्मान और प्रोत्साहन देना चाहिए।

1. सेवकों को दूसरे सम्प्रदायों के सेवकों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए, और जहाँ कहीं मुमकिन हो संयुक्त कार्यक्रमों जैसे कि शहर में सुसमाचार प्रचार सभाएँ, संयुक्त कलीसियाएँ, प्रार्थना सभाएँ आदि में भाग लेना चाहिए। सम्भव है एक सेवक को कुछ कार्यक्रमों में भाग न लेने जैसा लगे, परन्तु इसे सदा अनुग्रह और दीनता के साथ किया जाना चाहिए (1 पतरस 2:17; 3:15)।

2. एक कलीसिया के अगुवे की एक स्थानीय सेवा के सहयोग में भाग लेने की तत्परता सद्भाव प्राप्त करेगी। प्राप्त की गई सहानुभूतियाँ और आनन्द ली गई संगति उसकी सेवा को बढ़ाएगी। इससे उसकी कलीसिया को समझने में सहायता मिलेगी कि क्यों वह अन्तर्सम्प्रदायिक सभाओं में भाग लेता है।

3. एक सेवक को जानबूझकर दूसरी कलीसियाओं में जा रहे सदस्यों को जीतने का प्रयास नहीं करना चाहिए (भेड़ों को चुराना मना है)। परन्तु, अपने सुसमाचार प्रचार के जोश के कारण वह उन सम्प्रदायों से सहयोग को अनदेखा कर सकता है जो उनके चेलों को शुद्ध, स्पष्ट, सरल सुसमाचार नहीं देते हैं। एक कलीसिया का अगुवा पाएगा कि उसे इस चीज के लिए गलत समझा जा रहा है। इसलिए, उसे आरम्भ से ही दूसरे सेवकों को यह स्पष्ट कर देना सहायक होगा कि जबकि वह दूसरी कलीसियाओं के सदस्यों से कलीसिया बनाने का प्रयास नहीं कर रहा है, फिर भी वह उन लोगों को जो किसी कलीसिया से जुड़े नहीं हैं और अविश्वासियों को मसीह में जीतने का जोरशोर से प्रयास करेगा।

4. यदि दूसरी सम्प्रदाय या कलीसिया संस्था से एक व्यक्ति सेवक के पास आकर पानी के बपतिस्मा की माँग करता है, कलीसिया में जुड़ने का निवेदन देता है या किसी प्रकार से सहायता माँगता है, तो कलीसिया के अगुवे को ध्यान देना है कि वह इसमें नैतिक तरीके से कार्य करे। जहाँ संबद्ध हो, उसे देखना है कि व्यक्ति ने उसके अपने सेवक को बताया है कि वह क्या करने जा रहा है। कुछ मामलों में, कलीसिया के अगुवे को महसूस हो कि उसे इस विनती के विषय में दूसरे सेवक को बताना चाहिए और, यदि आवश्यक हो तो उससे विचार-विमर्श भी करे। यदि वह व्यक्ति जिसने सहायता माँगी है अपनी बात पर अटल है तब दूसरी कलीसिया के अगुवे की सहमति के साथ या बिना आगे बढ़ना चाहिए। चालाकी के आरोप के लिए, या अपनी कलीसिया बनाने की खातिर परमेश्वर के राज्य को नष्ट करने के लिए कोई अवसर नहीं दिया जाना चाहिए। दूसरे सेवकों के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क (जब नैतिक रूप से कार्य करने की बात होती है), दूसरे सम्प्रदायों और उनके सेवकों की नज़र में लगभग सदा सेवक की विश्वासनीयता को बढ़ाता है। विशेष ध्यान देना आवश्यक होता है जब परिवार के विभिन्न सदस्य विभिन्न कलीसियाओं में जाते हैं।

5. <u>अपने क्षेत्र के दूसरे सेवकों और उनकी कलीसियाओं को आशीष दो और उनके लिए प्रार्थना करो।</u> अपने लोगों को भी ऐसा करना सिखाओ। अपने हृदय में एक प्रतियोगिता की आत्मा को जो डर (रक्षात्मकता, धमकी) या आक्रमण (निन्दा) पैदा करती है स्थान मत दो। यदि सब कलीसियाएँ सफल हो रही हैं तब आपकी भी होगी, क्योंकि समाज में परमेश्वर की जानकारी का सामान्य स्तर बढ़ रहा है।

6. यदि दूसरी कलीसिया के लोग उसकी कलीसिया में नियमित आने लगते हैं तो कलीसिया के अगुवे को दूसरे सेवक को बताना चाहिए। उसे उनके छोड़ने के कारण का पता लगाना चाहिए। यदि उन्होंने शान्ति से छोड़ा है तब उनके पास बदली का पत्र

होगा। परन्तु, यदि उन्होंने उनकी पिछली कलीसिया को अनुशासन के कारण या अनसुलझे सम्बंधों की समस्याओं के कारण छोड़ा है तब उसे उन्हें सलाह देनी चाहिए कि वे लौटें और उन मामलों को सुलझाएँ। यदि वे बाइबल के तरीके से इन समस्याओं को हल करने में सहायता स्वीकार नहीं करते हैं तो कलीसिया के अगुवे को उन्हें उसकी मण्डली में स्वीकार करने से इन्कार कर देना चाहिए।

अध्याय 12 – एक दल में सेवक

दल सेवाएँ बड़ी कलीसियाओं में सामान्य बात हैं। दल सेवाएँ बाइबल से हैं, कलीसिया के सदस्यों को बहुत प्रोत्साहित करती हैं, और एक-व्यक्ति सेवाओं से बहुत अधिक प्रभावशाली हो सकती हैं। दल के सेवकों में सम्बंधों पर सदा विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। आधिकारिक सम्पर्क से बढ़कर आपसी भरोसा, आदर और मित्रता मतभेदों और गलतफहमियों के विरुद्ध आवश्यक सुरक्षा हैं।
जैसे किसी भी करीबी सम्बंध में होता है, दल के सेवक इकट्ठे प्रार्थना करने के साथ-साथ खेल सकें, काम कर सकें, अध्ययन कर सकें, आराम और मजा भी कर सकें।

1. किसी भी दल सेवा का एक प्रमुख वरिष्ठ सेवक होता है। उसे अपने दल के सेवकों की ओर रवैये में सदा निष्पक्ष होना और किसी भी दल के सदस्य का पक्ष लेने से बचना चाहिए। पक्ष लेने से दल अकसर ध्रवित हो जाएगा।

2. वरिष्ठ सेवक अधिक प्रचार कर सकता है, परन्तु उसे अनुभूति होनी चाहिए कि दल के दूसरे सदस्य जिनका प्रचार करने का बुलावा है उन्हें भी उनके बुलावे को व्यक्त करने के अवसर मिलने चाहिए। इस बात में असंवेदनशीलता बहुत हतोत्साहित दल के सदस्य बनाएगा। कुछ दल की स्थितियों में सभाओं की अगुवाई प्रचार करनेवाले सदस्य से भिन्न सदस्य करता है।

3. वरिष्ट कलीसिया के अगुवे को उसके दल के हर सदस्य से सम्पूर्ण वफादारी की अपेक्षा करनी चाहिए, और बदले में भी वफादारी देनी चाहिए। असन्तुष्ट लोग यदि उन्हें लगता है कि जिस कलीसिया के अगुवे से वे असहमत हैं उसके विरुद्ध वे अपना उद्देश्य आगे बढ़ा पाएँगे, तो वे अपने आपको एक विशेष सेवक के साथ तुरन्त जोड़ लेंगे। इसे जीतने का तरीका यह है कि एक दल के रूप में एक संयुक्त अगाड़ी प्रस्तुत करें, और फिर उन मामलों को जो सदस्यों की एकता को गम्भीरता से जोखिम में डालती हैं उनकी खुल कर चर्चा की जाए। ऐसी एकता मण्डली के लिए एक प्रेरणा बन जाती है और दिखाती है कि कलीसिया परिवार की संगति में परमेश्वर की सेवा करना क्या होता है।

4. हर दल के सदस्य की प्रमुख जिम्मेवारी वरिष्ठ सेवक के साथ एक अच्छा, खुला, श्रद्धालु सम्बंध बनाए रखना है। उतना ही महत्त्वपूर्ण हर सदस्य के लिए दल के दूसरे सदस्यों के साथ सुव्यवस्थित काम का सम्बंध बनाए रखना भी है। "कौन महान है" के संघर्षों को जिससे चेलों ने यीशु के तंग किया था बचो।

5. प्रार्थना और विचार-विर्मश की नियमित कर्मचारी सभाएँ आवश्यक हैं। एकता, संगति और सम्बंधों के विषय के मामलों पर चर्चा की जानी चाहिए। इस प्रकार के संवेदनशील मामलों से निपटोः कलीसिया के लोग दल के सदस्यों के गुणों और कमजोरियों की तुलना कर रहे हैं। कुछ विशेष अगुवों से पहचान कर रहे हैं और विभिन्न सेवाओं की प्रभावकारिता की बातें कर रहे हैं। इससे दल के हर सदस्य को कैसा खतरा महसूस होता है?
इस प्रकार के प्रश्नों की रक्षात्मिकता के बिना खोज-बीन की जानी चाहिए। यह सरलता के साथ नहीं होगा, और एक दूसरे के बढ़ते हुए भरोसे, खुलापन, पारदर्शीता, परस्पर स्वीकृति और असली समर्थन की आवश्यकता पड़ेगी।

6. लिखित काम के ब्योरे जो स्पष्टता से कार्य की रूपरेखा प्रस्तुत करते, हर एक की जम्मेवारियों का वर्णन करते और उपयुक्त अधिकार बाँटते हैं सब दल के सदस्यों के साथ-साथ वरिष्ठ सेवक के लिए भी निर्णायक हैं। अपरिभाषित जिम्मेवारियाँ अधिकार में परस्परछादी और उलझन पैदा करती हैं। जहाँ एक दल के सदस्य को विशेष उद्देश्य प्राप्त करने के लिए स्पष्ट लक्ष्य नहीं

दिए गए हैं, वहाँ उद्देश्य और संतोष सेवा में से लुप्त हो जाते हैं। वरिष्ठ दल का अगुवा दल को अगुआई प्रदान करता है, परन्तु उसे इस तरीके से करना है जो दल के हर सदस्य के लिए निश्चित चुनौतियाँ और काम का संतोष उत्पन्न करता है।

7. हर व्यक्तित्व मण्डली में विशेष लोगों को आकर्षित नहीं करेगा। इससे चिन्ता नहीं होनी चाहिए यदि दल के दूसरे सदस्य की सेवा एक विशेष स्थिति में अधिक स्वीकार्य है। परमेश्वर का उद्देश्य पूर्ति है, प्रतियोगित नहीं। दल का हर सदस्य दूसरों के वरदानों और योग्यताओं को पूर्ण कर देता है। जब तक परमेश्वर के लोग असली पास्तरीय देखभाल पाते हैं, तो यह बात महत्त्व की नहीं कि दल के किस सदस्य को देखभाल देने के लिए उपयोग किया जाता है।

8. एक प्रभावशाली तरीके से कार्य कर रही दल सेवा इसके दल के सदस्यों को उनके वरदानों और सुविज्ञता में विकसित होते देखेगी। वरदानों और योग्यताओं में बढ़त का ध्यान रखने के लिए जिम्मेवारियों और कार्यों और काम के ब्योरों का नियमित पुनरीक्षण करो। एक दल का सदस्य कलीसिया के सदस्यों को उसकी अपनी सेवा की जिम्मेवारियों और कार्यों को करने के लिए तैयार करने में काफी समय लगाएगा। जैसे यह होता है तो यह दल का सदस्य दूसरी जिम्मेवारियों को लेने योग्य हो सकता है। जिम्मेवारियों में बदलाव वरिष्ठ सेवक और दूसरे दल के सदस्यों के साथ बातचीत करके ही किए जाने चाहिए। उस दल के सदस्य की भूमिका में बदलाव के कारण उसके कार्य के ब्योरे का पुनरीक्षण आवश्यक हो जाएगा। वह उन निश्चित सेवाओं से हट रहा होगा जिन्हें कलीसिया ने आरम्भ में उसे करने के लिए बुलाया होगा।

9. सेवा के दल के सदस्यों को जो दूसरे सदस्यों का है उससे लोकप्रियता प्राप्त करने के प्रलोभन का सामना करना चाहिए। (अबशालोम के पाप के सावधान रहो - 2 शमूएल 15)। न ही दल के सदस्यों को वरिष्ठ सेवक (या दूसरे सेवक) से ईर्ष्या या डाह करनी चाहिए। उसे विशेष वरदानों या उसकी सेवा के सार्वजनिक स्वभाव के कारण पहचान मिल रही होगी। दल के सदस्यों को दल के एक या सब सदस्यों पर परमेश्वर की आशीष और लोगों की स्वीकृति में आनन्दित होना चाहिए। दल के सदस्यों को देखना चाहिए कि उनकी सम्पूर्ण सेवा की प्रभावकारिता हर सदस्य के योगदान से बढ़ रही है। आनन्द मनाओ कि सब लोग सफलता का मिलकर लाभ पा रहे हैं (रोमियों 12:10; 1 तीमु. 5:17)।

10. जब एक वरिष्ठ सेवक की लोग प्रशंसा करते हैं - परन्तु उतना ही परिश्रम करनेवाले सदस्यों को पहचान नहीं मिलती रही है तब, वरिष्ठ सेवक को दूसरों के वरदानों और समर्पित योगदान को सबके सामने स्वीकार करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 12:22)।

11. हर कलीसिया के अगुवे की पत्नी को महसूस करना चाहिए कि वह सेवा के दल की एक बहुमूल्य सदस्य है। उसकी घर की प्राथमिकता को ध्यान में रखकर, उसके सम्मिलित होने का प्रबंध किया जाना चाहिए। कलीसिया को प्रचार और सिखाने के क्षेत्रों में एक सेवक की पत्नी के अनोखे योगदान पर जिसके जीवन पर परमेश्वर का बुलावा है, विचार करना चाहिए। उस बुलावे को सेवा के अवसर उत्पन्न करके और उसके काम के लिए उपयुक्त पुरस्कार देकर स्वीकार किया जाना चाहिए।

12. सब सेवक एक विस्तृत दल के सदस्य हैं। यह दल प्रबंध-परिषद् या कलीसिया के अगुवे के परिवार के सदस्यों से बनी हो सकती है। सुसमाचार का सेवक आजकल एक व्यक्ति की सेवा नहीं है। एक कलीसिया के अगुवे को दल के दूसरे सदस्यों को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है और उसके लिए उनकी सेवा को स्वीकार करने के लिए खुला रहना चाहिए। सेवकों को दल के हर सदस्य के लिए रोजाना, और एक दूसरे के साथ कम से कम सप्ताह में एक बार प्रार्थना करनी चाहिए।

13. प्रतियोगित का विनाश और विच्छेद पर अकसर और खुलेआम विचार किया जाना चाहिए, और उन्हें एक बीमारी के रूप में जो वे हैं, देखा और निपटा जाना चाहिए।

14. दल के सदस्यों के परिवारों को नियमित रूप से एक दूसरे से मिलने के प्रयास किए जाने चाहिए।

अध्याय 13 – सेवक का पास्टर का काम छोड़ना

एक कलीसिया के लोगों को जब उनका पास्टर घोषणा करता है कि उसकी सेवा का समय यहाँ पूरा हो गया है, समंजित होने में सहायता की आवश्यकता पड़ती है। अपने परिश्रम के फल को बनाए रखने के लिए, एक सेवक को बहुत नैतिक तरीके से वहाँ से निकलना चाहिए। आनेवाले अगुवे के लिए उसे कलीसिया को एक स्वस्थ्य स्थिति में छोड़ जाना चाहिए।

1. विशेष परिस्थितियों के सिवाय, एक सेवक को अपनी कलीसिया को उन दूसरी कलीसिया के लोगों के विषय में नहीं बताना चाहिए जो उसे बुला रहे हैं। इसका कलीसिया पर एक घबरा देनेवाला प्रभाव पड़ सकता है। परन्तु, यदि इसकी गम्भीरता से बातचीत चल रही हो तो कलीसिया का अगुवा कलीसिया के प्रबंध-परिषद् के साथ खुलकर (विश्वास में) बात करना चाहे। तब वे मिलकर अपने और कलीसिया के लिए परमेश्वर की इच्छा का पता लगा सकते हैं।

2. एक सेवक तब ही अपना त्यागपत्र दे जब उसे निश्चित हो गया हो कि कलीसिया को छोड़ना परमेश्वर की इच्छा है। उसे छोड़ने की धमकी को भावात्मिक उत्तोलक शक्ति लगाने के लिए उपयोग नहीं करना चाहिए। अच्छा होगा यदि वह बता सके कि वह कहाँ जानेवाला है। प्राथमिकता के रूप में, कलीसिया के अगुवे को सबसे पहले अपना त्याग-पत्र कलीसिया की प्रबंध-परिषद् को देना चाहिए। केवल तब ही जब परिषद् उसके त्याग-पत्र को स्वीकार करती है वह सारी कलीसिया को मंच से बता सकता है। केवल उसके बाद ही वह नैतिक रूप से अपने त्याग-पत्र के विषय में कलीसिया के सदस्यों या बाहरवालों को बताने के लिए स्वतन्त्र है। एक वरिष्ठ सेवक को तीन महिने की सूचना देनी चाहिए। एक सहायक कलीसिया का अगुवा कम समय की सूचना दे सकता है यदि इसे वरिष्ठ सेवक ने परिषद् के साथ सलाह करके अनुमति दी है।

3. एक कलीसिया के अगुवे को छोड़ने से पहले कलीसिया में अगुआई के पदों पर लोगों को नियुक्त करना बुद्धिमानी नहीं है। नए पास्टर को आवश्यक नियुक्तियाँ करनी चाहिए। कर्जे खड़े करना या बन्धन बनाना जो नए सेवक के लिए कठिनाई पैदा कर सकते हैं अनैतिक है। यदि सेवानिवृत्त हो रहे कलीसिया का अगुवा नए लक्ष्य बनाता है, कलीसिया के लिए दर्शन या दिशा का सुझाव देता है तो यह आनेवाले पास्टर के लिए कुछ और नहीं केवल उलझन पैदा करेगा। परमेश्वर के उद्देश्यों में बारम्बार यही होता है कि नया सेवक कलीसिया को एक भिन्न दिशा दे। इसलिए इन जिम्मेवारियों को उत्तराधिकारी के लिए छोड़ देना चाहिए।

4. अपने पास्टर के काम को छोड़ रहे कलीसिया के अगुवे को निश्चित करना चाहिए कि कलीसिया के अभिलेख, कलीसिया के सदस्यों के नाम, पते और फोन नम्बर पूर्ण और दिनाप्त हैं। नए सेवक के लिए सक्रिय सदस्यों और अवसरिक सम्पर्कों की सूची छोड़ना विवेकी होगा। पास्टर के रहने का घर, अन्दर और बाहर से, स्वच्छ और सुव्यवस्थित छोड़ा जाना चाहिए। स्थाई उपस्करों को घर से नहीं निकाला जाना चाहिए।

5. कलीसिया के लोगों के साथ सब आर्थिक लेन-देन समाप्त करो। कलीसिया के अगुवे के रूप में आपने जो जो भी आधिकारिक पद लिए हुए थे उनसे त्याग-पत्र दो। कोई भी विशेषाधिकार जो आपको पास हो छोड़ दो। कलीसिया के लोगों की ओर सब जिम्मेवारियों को समाप्त करो। अपनी पिछली कलीसिया के लोगों से किसी प्रकार की निधि माँगना अनैतिक है। यदि यह नए सेवक और समिति द्वारा स्थापित नई नीति नहीं है, तो अपनी पिछली कलीसिया के लोगों से आर्थिक सहायता लेते मत रहो।

6. एक कलीसिया के अगुवे, या सहायक सेवक को छोड़नेवाली कलीसिया के साथ सब बन्धनों और पास्तरीय सम्बंधों को काट देना चाहिए। यह और भी महत्त्वपूर्ण है जब वह उस क्षेत्र से बाहर नहीं जाता है। यदि सदस्य सलाह या काउंसल के लिए आपको लिखते हैं, तो उनके पत्रों को वापस या नए सेवक के पास भेज दो। न तो फोन स्वीकार करो और न ही सदस्यों को सम्पर्क करो। अपनी पिछली कलीसिया के सदस्यों से मिलने मत जाओ और न ही उनके साथ रहो। यदि आना अनिवार्य हो तो आने से पहले अपने उत्तराधिकारी को बता दिया जाए। कलीसिया के लोगों की सभा कभी भी आयोजित मत करो। कलीसिया के लोगों की सभा में कभी भी मत जाओ जब तक नया अगुवा संचालन नहीं करता।

7. नए सेवक के विषय में कोई भी टिप्पणी मत करो। उस व्यक्ति को जोर से डाँट दो जो कलीसिया के मामलों पर आपकी राय जानना चाहता है। आप दूसरे के सेवक का न्याय नहीं कर सकते, और न ही आपको दूसरी कलीसिया के अगुवे की आलोचना करनी है कि वह कलीसिया कैसे चलाता है।

8. आपने छोड़ दिया है - अब जाओ। उनके साथ भावात्मिक बन्धन तोड़ दो जो आपके "चेले" हो सकते हैं और नए सेवक का विरोध करें। तुलनाओं और आपकी ओर बनी हुई वफादारी की ओर असम्मति प्रकट करो। लौटकर विवाह, जयन्तियों या दफन क्रियाओं को संचालन करने के निमन्त्रणों की ओर असम्मति प्रकट करो। यदि यह अनिवार्य हो तो वर्तमान कलीसिया के अगुवे से आपको निमन्त्रित करने की विनती करनी चाहिए, और जो सेवा आपको करनी है उसके साथ मिलकर उसकी अगुआई में, उसके पहल में, संचालन करो, और किसी प्रकार के मानदेय (यदि लागू होता है) को उसके साथ बाँट लो। जब ऐसे विशेष अनुरोध किए

जाते हैं तो नया सेवक इन्कार करके कुछ भी प्राप्त नहीं करता है। एक अनुग्रकारी और समझदार रवैया दिखाकर, वह अपने लोगों का सम्मान और प्रेम जीत लेगा।

9. यदि आपको किसी कलीसिया के सदस्य से सम्पर्क करना है या कोई आवश्यक सूचना देनी है तो ऐसा पास्टर के द्वारा करो - उसकी पत्नी या सेक्रेटरी या सहायक नहीं। उनके नए अगुवे के साथ आपका उचित और नैतिक सम्बंध लोगों के लिए एक उत्तम आदर्श हो सकता है और दिखा सकता है कि एक परिपक्व विश्वासी के रूप में बदलाव कैसे स्वीकार किया जाना चाहिए। वे नए सम्बंध बनाना सीखेंगे और खुद एक नैतिक तरीके से कैसे व्यवहार करना है सीखेंगे।

10. एक सेवक और उसके पिछले कलीसिया के सदस्यों में मित्रता चलती रह सकती है। परन्तु कलीसिया के अगुवे को उन मित्रताओं में बहुत सावधान रहना चाहिए और उन्हें उत्सुकता के साथ आगे नहीं बढ़ाना है। अपने उत्तराधिकारी के काम में हस्तक्षेप मत करो। नए सेवक को पहचानना चाहिए कि ऐसी मित्रताएँ बनी रह सकती हैं, और उसे उनसे संदेही, ईर्ष्यालु या डरना नहीं है।

11. पते में परिवर्तन की सूचना स्थानीय पोस्ट आफिस, सम्प्रदाय के सेक्रेटरी और जन्म, मृत्यु और विवाह के रजिस्ट्रार के पास भेज देनी चाहिए। नए कलीसिया के अगुवे के पास नया पता छोड़ने से उसके लिए आपके पत्रों या दूसरी चीजों को आपके पास भेजना सरल हो जाता है।

12. एक नई कलीसिया में निमन्त्रण स्वीकार करने से पहले, प्रार्थनापूर्वक विचार कर लिया जाना चाहिए। जब आपको और उनको जो आपके निरीक्षक हैं सही जान पड़ता है कि दूसरी कलीसिया के विषय में विचार किया जाए, तब उस नई कलीसिया के विषय में स्पष्ट जानकारी प्राप्त की जाए। ऐसी चीजें जैसे कि वेतन, सेवानिवृत्त योजना, घर, कार और फोन भत्ता, छुट्टियों को लिखित में होना चाहिए। इन भत्तों का विवरण और कलीसिया की अपेक्षाओं को भर्ती करनेवाली कलीसिया निमन्त्रण के पत्र में लिख कर भेज दे। फिर कलीसिया की समिति के अधिकारियों से मिल कर इन चीजों को स्पष्ट और तय किया जाना चाहिए। एक बार जब कानूनी मामले तय हो गए हों तब सेवक पास्टर-लोग सम्बंधों को बनाने में लग सकता है।

निष्कर्ष

"यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह भले काम की इच्छा करता है। यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि-सत्कार करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो। पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो, वरन् कोमल हो, और न झगड़ालू, और न धन का लोभी हो। अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और अपने बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो। जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा? फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए। और बाहरवालों में भी उसका सुनाम हो, ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फँस जाए।" (1 तीमु. 3-1-7)

परिशिष्टः काउंसलिंग में नीतिशास्त्र

एक कलीसिया के अगुवे को पास्तरीय काउंसलिंग स्थितियों में निरन्तर बहुत ध्यान रखना चाहिए। आपको काउंसलिंग के लिए आए व्यक्ति के साथ सबसे नैतिक, दुरूस्त तरीके से पेश आना चाहिए (विशेषकर प्रतिजाति के साथ)। प्रचार की सेवा की सार्वजनिक प्रकृति साधारण लोगों से "व्यक्तिगत दूरी" की एक स्वाभाविक सुरक्षा प्रदान करती है। उसके उलटे, काउंसलिंग की स्थिति में वह सुरक्षा की दूरी नहीं रहती। काउंसलिंग की स्थिति में जहाँ एकान्तता, घनिष्ठता, व्यक्तिगत सम्पर्क और एक-से-एक सहानुभूति के तत्त्व होते हैं, अनुचित उलझाव सरलता से आरम्भ हो सकते हैं। काउंसलिंग में ही एक सच्चे परमेश्वर के सेवक का अनैतिक, व्यभिचारी व्यवहार के प्रलोभन में फँसने का सबसे बड़ा खतरा होता है। यह अकसर एक अनर्थकारी नैतिक पतन में ले जाता है।

व्यक्तिगत सीमाओं को बनाए रखना काउंसलिंग पा रहे व्यक्तियों के साथ अनैतिक उलझाव से बचने की कुंजी है।

निश्चित करो कि:

- शारीरिक सम्पर्क की सीमाएँ बनाए रखोगे;
- व्यक्तिगत घनिष्ठता की बातों को प्रकट करने की सीमाएँ बनाए रखोगे;
- काउंसलिंग के समय की सीमाएँ उनकी दीर्घता, बारम्बारता, तीव्रता, देरी और एकाकीपन को सीमित करके बनाए रखोगे।

इन सीमाओं को सोच-समझकर तय किया जाना चाहिए और लगातार बनाए रखा जाना चाहिए। आपकी पत्नी, कर्मचारी और समिति की विवेकी परन्तु सक्रिय सहायता आवश्यक है।

1. काउंसलर प्रतिजाति के काउंसली को, हाथ मिलाने या प्रार्थना के समय सिर पर हाथ रखने (यदि आपकी संस्कृति में यह किया जाता है तो) के सिवाय, न छूए। शारीरिक दूरी की सीमाओं को बनाए रखो और उस शरीर की भाषा या आँखों के सम्पर्क से दूर रहो जो मर्यादा की सीमाओं से बाहर जाते हैं। प्रतिजाति की एक दुखी काउंसली को शारीरिक आलिंगन के द्वारा कभी भी सान्त्वना मत दो। यदि इसकी आवश्यकता हो तो किसी स्त्री को ऐसा करने को कहो।

2. एक काउंसलर को अपनी जिज्ञासा मिटाने के लिए घनिष्ठ बातों को नहीं पूछना चाहिए। ध्यान में रखो कि जब आप घनिष्ठ चीजों में अनुचित रुचि दिखा रहे होते हो तो, दूसरे व्यक्ति की ओर बिना सोचे-समझे सम्मोहक होना सरल होता है।

3. एक काउंसलर को काउंसली के साथ भावात्मिक रूप से सम्मिलित होने, या एक काउंसली के साथ अनुचित भावात्मिक रूप से जुड़ने के असली खतरों को कम करने के सचेत कदम उठाने चाहिए। एक भावात्मिक रूप से सम्मिलित काउंसलर अपने को नैतिक खतरे में डालता है, विषयनिष्ठता खो देता है, निर्णय में पक्षपाती बन जाता है, या काउंसली और उसकी समस्याओं की अत्यधिक जिम्मेवारी लेता है। लोगों के लिए परमेश्वर मत बनो।

4. काउंसलर को एक उचित स्थान में काउंसलिंग करनी चाहिए। प्रतिजाति के सदस्य को काउंसलिंग करते समय सेवक को नीचे दी गई सतर्कता बरतनी चाहिए:

अ) एक सार्वजनिक स्थान में काउंसलिग करो। अपने आफिस का दरवाजा खुला रखो; अपने सेक्रेटरी से कहो कि वह बिता बताए अन्दर आ सकता है; कलीसिया के हॉल में काउंसलिंग करो।

आ) अपनी पत्नी को आपका एक स्त्री को काउंसलिग करने को निषेध करने का परम अधिकार दो, जिसमें उसे आप में अधिक रुचि होने का संदेह हो रहा हो।

इ) अपनी पत्नी या सेक्रेटरी को आप तक पहुँच की चौकसी करने और कुछ लोगों के साथ काउंसलिंग की बारम्बारता को सीमित करने दो, और उस स्त्री काउंसली की काउंसलिंग ले लेने दो जो आपके साथ अनुचित रूप से सम्मिलित हो रही हो।

ई) रात देर को, अकेले, एकान्त स्थानों में, या एक स्त्री काउंसली के घर में अकेले काउंसलिंग मत करो।

उ) काउंसलिंग के समय को एक घंटे या कम तक और काउंसलिंग के कुल सत्र पाँच से कम तक सीमित रखो।

5. व्यक्तिगत जानकारी और गुप्त की बातों को पवित्र भरोसे के रूप में रखो। जितना कम हो सके उतना लिखो। लिखित बातों को बन्द करके रखो और स्थिति के पूरे होते ही नष्ट कर दो। यदि आपको कलीसिया के दूसरे कार्यकर्त्ता को स्थिति की कुछ जानकारी देनी हो तो बोल कर समझाओ। जिस व्यक्ति को बताने की आवश्यकता हो उसे ही बताओ और उतना ही बताओ जितना बताने की आवश्यकता हो।

6. काउंसलर को अपनी सीमाएँ पहचाननी चीहिए। आपके पास काउंसली को दूसरे सहायकों या दूसरे पेशावरों के पास भेजने की दीनता हो, जब या यदि:

अ) आपको पता न हो कि सही काउंसल क्या है।

आ) व्यक्ति को वही समस्या है जिससे आप स्वयं संघर्ष कर रहे हो।

इ) काउंसली परमेश्वर की काउंसल लेने से इन्कार करता है और आपको उनकी समस्या में घसीटना चाहता है, या

ई)	घोर हानि होने की सम्भावना हो (उदाहरणार्थ, आत्महत्या, महापराध या मानवहत्या)। कोई भी काउंसली सब मामलों को सम्भालने के लिए योग्य नहीं है।

7.	दूसरे काउंसलर के साथ मिलकर काउंसलिंग करना, या कम से कम दूसरे काउंसलर को सहायता के लिए रखना बुद्धिमानी है, जब या यदि:

अ)	व्यक्ति को दुष्टात्मा से छुटकारे की आवश्यकता है,

आ)	व्यक्ति अभी भी समस्या वाली क्रियाओं में लगा हुआ है (उदाहरणार्थ, नशीले पदार्थ, चोरी, वेश्यावृति, कामविकृति, व्यभिचार जैसी अनैतिक क्रियाएँ या तलाक का विचार),

इ)	आप स्वयं उनकी समस्याओं के जाल में फँसने के खतरे में हैं या उसी पाप का प्रलोभन अनुभव कर रहे हैं।

(नोटः उस काउंसलर के लिए विशेष खतरे रहते हैं जिसके अपने पूर्व जीवन में यौन सम्बंधी पहचान में उलझन थी। ऐसे काउंसलरों को सलाह दी जाती है कि वे समलिंगकामियों या बाल-दुर्व्यवहार या कौटुम्बिक व्यभिचार के शिकार की काउंसलिंग न करें। अतिरिक्त सतर्कता बर्तें या व्यक्ति को दूसरे के पास भेज दो)।

8.	एक ऐसे काउंसली को लेना जो दूसरे काउंसलर के पास है, या जिसका एक डॉक्टर के पास इलाज चल रहा है, या मनोवैज्ञानिक काउंसलिंग ले रहा है अनैतिक है। ऐसी सलाह देना जो इलाज के दूसरे संबद्ध क्रम के विरुद्ध हो अनैतिक है।

9.	दूसरे काउंसलरों के साथ मुकाबला करना, उनकी आलोचना करना या उन्हें दोष देना, या पिछले काउंसलर का महत्त्व कम करना या बदनाम करना अनैतिक है। उसी प्रकार आपके पास काउंसलिंग ले रहे दूसरे लोगों की चर्चा करना, या दूसरे लोगों के नाम लेना या दूसरे तरीकों से उनका जिक्र करना जिससे उनका पता चले अनैतिक है।

10.	एक काउंसलर के लिए जो कलीसिया का अगुवा है एक काउंसली के साथ व्यक्तिगत उदाहरण उपयोग करना या अपनी गलतियाँ स्वीकार करना, या उन कठिनाइयों या समस्याओं के विषय में बताना जो वह अपने अन्दर अनुभव कर रहा है, या उसकी पत्नी या कलीसिया के लोगों के साथ सम्बंधों की समस्यों को बताना मूर्खता है।

आज के पास्तरीय विचारों और नए नियम के प्रेरित के कार्यों में अन्तर

वरिष्ठ पास्टर जो पास्टर के कार्य से प्रेरित के कार्य में बढ़ना चाहता है उसे इन दो अभिषेकों में अन्तर समझना चाहिए। जब तक हम पास्टर के अभिषेक और प्रेरित के अभिषेक के कार्यों में अन्तर न समझ लें, तब तक हम एक से दूसरे में नहीं बढ़ सकते हैं। दुर्भाग्यवश, आज के पास्टर के कार्य के बहुत से विचार जो कार्य कर रहे हैं नए नियम के नहीं जान पड़ते हैं। आज के बहुत से पास्टर के कार्य मानववादी और मनोवैज्ञानिक विचार हैं।

आओ हम पास्टर और प्रेरित की सेवाओं में भिन्नताओं पर नज़र डालें जिससे हम वरिष्ठ पास्टर का प्रेरित के कार्य में बढ़ने के लिए आवश्यक बदलाव कर सकें।

1. **आज का पास्टर का कार्य लोगों और उनकी आवश्यकताओं पर केन्द्रित होता है जबकि प्रेरित का कार्य लोगों को उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के बुलावे और उद्देश्य पर केन्द्रित करता है।**

प्रेरित का अभिषेक लोगों की आवश्यकता को अप्रत्यक्ष रूप से उनको परमेश्वर के बुलावा और उद्देश्य में आगे बढ़ते रहने के लिए उपदेश देने के द्वारा पूरा करता है। यह उन्हें विश्वासियों के अन्दर उनकी अपनी आवश्यकताओं को परमेश्वर में विश्वास के द्वारा पार करने के लिए एक आत्मिक गतिमात्रा बनाने देता है। प्रेरित के कार्य का बल इस बात में पाया जाता है कि परमेश्वर ने हमें अपने बहुमूल्य लहू के द्वारा मोल लिया और हमारा उद्धार किया ताकि हम उसके लिए फलदायक हों और अपने जीवनों में उसकी इच्छा पूरी करें। यह बल विश्वासियों को अपने आप से राज्य की जीवनशैली और प्राथमिकताओं की ओर खींचता है।

2. **आज का पास्टर का कार्य लोगों को पुष्टि देना है और वे मोटे हो जाते हैं जबकि प्रेरित का अभिषेक लोगों को प्रशिक्षण देने का प्रयास करना है ताकि उनकी मांसपेशियाँ बन जाएँ।**

प्रेरित का अभिषेक लोगों को उनकी सम्पूर्ण अन्तःशक्ति के अनुसार जीने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा साकार करने के लिए चुनौती देता है। जो लोग इस उपदेश को सुनते हैं बड़ी प्रभावकारिता और फलदायकता तक पहुँचते हैं। जैसे उनको परमेश्वर की योजना को पूरा करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है उनकी आत्मिक मांसपेशियाँ बनती जाती हैं। प्रेरित का अभिषेक प्रेम के विषय और आश्वासन से बढ़कर है। यह लोगों से हर मनुष्य को चेतावनी देते और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हुए कि वे मसीह में सिद्ध होकर उपसिथित हो, निपटता है (कुलु. 1:28-29)।

3. **आज का पास्टर का कार्य लोगों के लिए सभाएं चलाने की अपने ऊपर जिम्मेवारी लेता है जबकि प्रेरित का अभिषेक सन्तों से क्रिया की माँग करता है।**

प्रेरित का अभिषेक लोगों को उनके अपने जीवनों और आवश्यकताओं की जिम्मेवारी लेने की चुनौती देता है। लोगों को परमेश्वर के वचन का पालन करने का फैसला करके उनकी अपनी नियतियों को चुनना है। प्रेरित का अभिषेक लोगों को अपने लिए कुछ करने देता है। सन्त भी राज्य के लिए सेवा करना सीखते हैं जिससे वे क्रियाशील सदस्य बनते हैं।

4. **आज का पास्टर का कार्य अगुवे को लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह के प्रतिनिधि के रूप में सज्जित करता है जबकि प्रेरित का अभिषेक हर विश्वासी को सेवा के काम में प्रभावशाली रूप से कार्य करने लिए सज्जित करता है।**

प्रेरित का अभिषेक विश्वासी के काम करने के लिए "अनुग्रह का वचन" और वरदान और विश्वास प्रदान करता है। हाथ रखने के द्वारा प्रेरिताई भागदान इन समर्पित जीवनों में नए बीज बैठाने देता है। यह निपुणता, प्रवीणता और योग्यताओं को दूसरों तक अंतरित करने का मार्ग प्रदान करता है। प्रेरित का अभिषेक लोगों के जीवनों में प्रकटीकरण को अधिक प्रवाहित होने देता है, जिससे वे उसे करने में अधिक योग्य हो जाते हैं जिसे परमेश्वर उनके लिए चाहता है। फिलि. 2:13, "क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।"

5. **आज के पास्टर के काम का लक्ष्य अनुरक्षण है जबकि प्रेरित के अभिषेक का केन्द्र परिपक्वता है।**

प्रेरित पौलुस गलातियों की कलीसिया के लिए जच्चा की सी पीड़ाएँ सह रहा था ताकि उन में मसीह का रूप बन जाता (गला. 4:19)। उसकी इच्छा थी कि वह उन्हें मसीह में परिपक्वता और सम्पूर्ण प्रस्तुत करता। इस प्रकार, प्रेरित के अभिषेक का केन्द्र आलसी सन्तों के लिए झट-पट इलाज के बजाय काम है।

6. आज का पास्टर का कार्य विश्वासियों को मसीह में उनके स्थितीय मूल्य का आश्वासन देता है जबकि प्रेरित का अभिषेक विश्वासियों में मसीह की अनुभवात्मक वास्तविकता को स्थापित करने का प्रयास करता है।

प्रेरित की सेवा यहाँ इस बात पर जोर देती है कि परमेश्वर हमें एक सन्त होने से एक पुत्र होने में ले जाना चाहता है। प्रेरित के कार्य की इच्छा बाइबल की स्थितीय सच्चाइयों को करणीय बनाता है ताकि वे लोगों के जीवन में एक अनुभवात्मक वास्तविकता बन जाएँ।

7. आज के पास्टर का कार्य बाहरी आवश्यकताओं को पूरा करता है और विश्वासियों में सुख और छुटकारे की एक भावना लाना है जबकि प्रेरित का अभिषेक भीतरी आवश्यकताओं को पूरा करता है और गहन पूर्ति और पहचान की एक बड़ी भावना लाना है।

प्रेरित का अभिषेक मनुष्य की अभी की आवश्यकताओं से बढ़कर कार्य करता है। यह मनुष्यों की आत्माओं को झकझोरता है जिससे वे उठ खड़ी हों और मसीह में आत्मिक साधनों को लें और जूए तो तोड़ डालें (यशायाह 10:27)। जैसे लोग प्रभु को उनके विश्वास को उत्तर देते और उनकी आँखों के सामने चमत्कार करते देखते हैं, तो प्रेरित का अभिषेक लोगों को पूर्ति और पहचान के एक बड़े स्थान में लाता है।

8. आज का पास्टर का कार्य सन्तों की व्यवहारीय प्रणाली के महत्त्व पर जोर देता है जबकि प्रेरित का अभिषेक सन्तों की विश्वास की प्रणाली के महत्त्व पर जोर देता है।

आज की पास्तरीय सेवाएँ परमेश्वर के प्रकाशित वचन के प्रयोग के लिए सिद्धान्तों को सिखाने में रुचि रखती हैं ताकि विश्वासी का व्यवहार परमेश्वर के स्तर से मेल खाए।

प्रेरित का अभिषेक सन्तों के विचारों और विश्वास की प्रणाली से निपटता है जिससे उनके मन नए होते हैं और उनके जीवन परिवर्तित हो जाते हैं। लोगों के मन तब ही परिवर्तित होते हैं जब उनके मनों में विचार प्रकाशित ज्ञान के आने से नए होते हैं। प्रेरित का अभिषेक "शिक्षकों" के लिए सामान्य रूपरेखा बनाता है जिससे प्रकट किए गए सत्य के प्रयोग और दैनिक अभियास के लिए निश्चित सिद्धान्तों को लाया जा सके। प्रेरितों 2 में जिक्र किया गया प्रेरितों की शिक्षा उन मूल विचारों की बात कर रहा है जो मसीह के जीवन और राज्य के जीवन की नींव रखता है जो हर विश्वासी के जीवन में कार्य करने लगता है।

अगुआई के विश्वव्यापक सिद्धान्तः बाइबल का एक संदर्श

1 – ढक्कन का नियम

⇒ **अगुआई की योग्यता एक व्यक्ति के प्रभावकारिता के स्तर को निर्धारित करती है।**

अगुआई किसी भी मण्डली या संस्था पर एक ढक्कन है। सबकुछ अगुआई पर उठता या गिरता है। ढक्कन का नियम एक प्रभाव है।

उदाहरणः शाऊल और दाऊद
मूल-पाठः 2 शमूएल 5:6-23; 8:15-18
राजा शाऊल की अगुआई पर एक ढक्कन था जो दाऊद पर नहीं था। शाऊल अपने राजा के पद को एक करिश्मा पर आधारित न्यायाधीशपद से आगे नहीं ले जा सका था। वह एक सेनापति था परन्तु उसकी कोई वास्तविक स्थाई सेना नहीं थी। उसकी कोई व्यवस्थित सरकार नहीं थी और उसके पास अपनी अगुआई की प्राप्तियों को जमा करने के कोई साधन नहीं थे। दूसरी ओर दाऊद ने जब वह राजा हुआ तो उसने कई फैसले किए। उसने यरूशलेम को एक नई राजधानी के रूप में चुना (यरूशलेम को अभी तक इस्राएल के किसी भी वंश ने नहीं जीता था, यह अभी भी यबूसियों के अधीन था, 2 शमूएल 5:6-16)। उसने इस्राएल के शत्रु, पलिश्तियों के साथ युद्ध किया (2 शमूएल 5:17-23), वाचा का सन्दूक नई राजधानी के नगर को ले आया (2 शमूएल 6), और सरकार चलाने के लिए अधिकारियों को नियुक्त किया (2 शमूएल 8:15-18)। शाऊल दाऊद से चरित्र और अगुआई की योग्यताओं दोनों में निकृष्ट था। जबकि शाऊल अपने जीवन में अनेक ढक्कनों द्वारा सीमित था, दाऊद ने अपने जीवन और दूसरों के जीवनों पर से ढक्कनों को निकाला था। स्पष्टतया दाऊद इस नियम के कारण सफल था, और शाऊल इस नियम के कारण असफल रहा। यदि आप चाहते हैं आपकी सेवा बढ़े, तो आपकी अगुआई की क्षमता को बढ़ना है। यदि आप एक अगुवे के रूप में बढ़ेंगे, तब आपकी सेवा भी बढ़ेगी।

इस नियम पर टिप्पणियाँ....

ढक्कन जिन्होंने शाऊल को सीमित किया:

- **शाऊल डर के ढक्कन से सीमित था।** (1 **शमूएल** 10:21-22)
  उसने अपना शासन सामान के बीच छुपकर आरम्भ किया था। उसका डर आगे चलकर उसकी सेना का डर बन गया था।
  "फिर चिट्ठी कीश के पुत्र शाऊल के नाम निकली। और जब वह ढूँढा गया, तब न मिला। यहोवा ने कहा, सुनो, वह सामान के बीच में छिपा हुआ है।"

- **शाऊल अधीरता के ढक्कन से सीमित था।** (1 **शमूएल** 13:8-10)
  उसने शमूएल का इन्तज़ार नहीं किया, जो काम उसका नहीं था उसे अपने हाथ में लिया, और परमेश्वर का भय नहीं माना।
  "वह शमूएल के ठहराए हुए समय, अर्थात् सात दिन तक बाट जोहता रहा; परन्तु शमूएल गिलगाल में न आया, और लोग उसके पास से इधर-उधर होने लगे। तब शाऊल ने कहा, होमबलि और मेलबलि मेरे पास लाओ। तब उसने होमबलि को चढ़ाया।"

- **शाऊल प्रभाव के ढक्कन से सीमित था।** (1 **शमूएल** 13:11-12)
  वह अपनी सेना को शमूएल के आने तक प्रोत्साहित करने या प्रेरित करने में असफल रहा।
  " परन्तु शमूएल गिलगाल में न आया, और लोग उसके (शाऊल) पास से इधर-उधर होने लगे।"

- **शाऊल साधनों के ढक्कन से सीमित था।** (1 **शमूएल** 13:33)
  शाऊल की सेना के पास युद्ध के हथियार खत्म हो गए। उसके पास कारीगर भी नहीं थे।

"इसलिए युद्ध के दिन शाऊल और योनातान के साथियों में से किसी के पास न तो तलवार थी और न भाला, वे केवल शाऊल और उसके पुत्र योनातान के पास थे।"

- **शाऊल नकार के ढक्कन से सीमित था।** (1 **शमूएल** 13:13–14)
  शमूएल ने शाऊल को बताया कि उसे राजा होने से ठुकराया गया है, परन्तु वह ऐसे करता रहा जैसे कि सबकुछ ठीक है।
  "शमूएल ने शाऊल से कहा, तू ने मूर्खता का काम किया है; तू ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना....परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा; यहोवा ने अपने लिए एक ऐसे पुरुष को ढूँढ लिया है जो उसके मन के अनुसार है; और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान ठहराया है...।"

- **शाऊल आवेगिता के ढक्कन से सीमित था।** (1 **शमूएल** 14:43–44)
  उसने आवेग में आकर एक शपथ ली जिससे उसके पुत्र का जीवन लगभग नष्ट हो गया था। वह शब्दों के साथ भी उतावला था। सोचकर अपने फैसले नहीं करता था।
  "तब शाऊल ने योनातान से कहा, मुझे बता कि तू ने क्या किया है। योनातान ने बताया, और उसने कहा, मैं ने अपने छड़ी की नोक से थोड़ा-सा मधु चख लिया था....शाऊल ने कहा, परमेश्वर ऐसा ही करे, वरन् इससे भी अधिक करे; हे योनातान, तू निश्चय मारा जाएगा।"

- **शाऊल घमण्ड के ढक्कन से सीमित था।** (1 **शमूएल** 15:12)
  उसने अपने सम्मान में एक स्मारक खड़ा किया। वह अपने विषय में काफी बढ़कर सोचने लगा। पतन से पहले घमण्ड होता है।
  "शाऊल कर्मेल को आया था, और अपने लिए एक स्मारक खड़ा किया...।"

- **शाऊल आज्ञोल्लंघन के ढक्कन से सीमित था।** (1 **शमूएल** 15:17–19)
  उसने अमालेकियों को पूर्णतया नष्ट करने की आज्ञा को नहीं माना। फिर वह सफाई देने लगा।
  "फिर तू ने किस लिए यहोवा की यह बात टालकर लूट पर टूट के वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है? शाऊल ने शमूएल से कहा, निःसन्देह मैं ने यहोवा की बात मानकर...।"

- **शाऊल ईर्ष्या के ढक्कन से सीमित था।** (1 **शमूएल** 18:8–9)
  वह बहुत क्रोध से भर गया जब लोगों ने उसकी तुलना दाऊद से की, और अपनी ईर्ष्या भरी निगाह दाऊद पर बनाई रखी।
  "तब शाऊल अति क्रोधित हुआ, और यह बात उसको बुरी लगी; और वह कहने लगा, उन्होंने दाऊद के लिए तो लाखों और मेरे लिए हज़ारों ही ठहराया...।"

- **शाऊल शाऊल क्रोध के ढक्कन से सीमित था।** (1 **शमूएल** 18:10–11)
  जब दाऊद महल में उसके लिए वीणा बजा रहा था, तब उसने दाऊद को अपने भाले से मारने का प्रयास किया। "तब शाऊल ने यह सोचकर कि, मैं ऐसा मारूँगा कि भाला दाऊद को बेधकर भीत में धँस जाए।"

- **शाऊल कपट के ढक्कन से सीमित था।** (1 **शमूएल** 18:21–29)
  उसने दाऊद को अपनी बेटी विवाह में इस आशा से दी ताकि वह युद्ध में मारा जाए।
  "शाऊल तो सोचता था कि वह (मीकाल) उसके लिए फँदा हो, और पलिश्तियों का हाथ उस पर पड़े।"

आखिरकार, ढक्कन का नियम शाऊल के पतन का कारण बना। जब उसने एक स्वस्थ्य, और अधिक प्रभावशाली अगुवा बनने के लिए कुछ नहीं किया - शाऊल अपनी कमी को पूरा करने के लिए बाध्य हुआ। वह चंचल, भावात्मक, उतावला, आत्मगत और अविवेकी था।
इस्राएली (भजन 78): वे पवित्र आत्मा को सीमित करते थे।
उन्होंने परमेश्वर को सीमित किया: (1) कुड़ाकुड़ाकर और शिकायत करके

(2) बुरे रवैये से
(3) परमेश्वर की आशीषों को भूल गए (कृतज्ञता का हृदय होना)।

<u>**ढक्कन जिन्होंने दाऊद को उठाया...**</u>

- **दाऊद ने पहले अपना ढक्कन उठाया।** (1 **शमूएल** 17:34-37)
  उसने गोलियत से मिलने की तैयारी, जब उसका सामना एक शेर और भालू से हुआ था, तब अपनी अगुआई के ढक्कन को उठाकर की थी।
  "यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ची के हाथ से भी बचाएगा।"

- **दाऊद ने दूसरों के लिए भी ढक्कन उठाया।** (1 **शमूएल** 17:51-53)
  उसने इस्राएली सेना को पलिश्तियों पर एक "नामुमकिन" विजय प्राप्त करने में योग्य किया। अगुवे दूसरे लोगों के लिए ढक्कन उठाते हैं।
  "तब दाऊद दौड़कर पलिश्ती के ऊपर खड़ा हो गया...और उसका सिर उसी तलवार से काट डाला...इस पर इस्राएली और यहूदी पुरुष ललकार उठे, और गत और एक्रोन के फाटकों तक पलिश्तियों का पीछा करते गए।"

- **दाऊद ने सारे राष्ट्र का ढक्कन उठाया।** (1 **शमूएल** 18:5-7)
  उसने सारे राष्ट्र का विश्वास उठाया जिससे वे विश्वास करने लगे कि वे कुछ भी कर सकते हैं।
  अगुवों को वातावरण बनाना है। क्या आप कमरे का तापमान मापते हो या तापमान निर्धारित करते हो? आपके लोग आपके समान बनेंगे। आप जैसे हैं वैसा पैदा करेंगे।
  "और जहाँ कहीं शाऊल दाऊद को भेजता था वह जाकर बुद्धिमानी के साथ काम करता था; अतः शाऊल ने उसे योद्धाओं का प्रधान नियुक्त किया। और समस्त प्रजा के लोग और शाऊल के कर्मचारी उससे प्रसन्न थे।"

- **एक अधिकारी पद पाने से पहले दाऊद ने ढक्कन उठाया था।** (1 **शमूएल** 17:37)
  उसने अगुआई में बढ़ने और अभ्यास करने के लिए राजा होने की प्रतीक्षा नहीं की; उसने एक चरवाहे के रूप में कार्य किया। एक पद आपको अगुवा नहीं बनाता है, परन्तु एक अगुवा पद बनाता है।
  "यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ची के हाथ से भी बचाएगा।"

- **दाऊद ने दूसरों को उनके ढक्कन उन पर लगाते हुए अनुभव किया।** (1 **शमूएल** 16:11; 17:28; 17:33-39)
  शाऊल और उसके अपने भाइयों से उसे निरुत्साहित किया; उसके पिता तो उसे शमूएल को दिखाया तक नहीं।
  "शाऊल ने दाऊद से कहा, तू जाकर उस पलिश्ती से युद्ध नहीं कर सकता; क्योंकि तू तो लड़का ही है...।"

- **दाऊद ने योनातान में एक ढक्कन-उठानेवाला पाया।** (1 **शमूएल** 18:1-3)
  उसके पास आरम्भ में योनातान ही एक मात्र ढक्कन उठानेवाला था - जिसने उस पर सम्पूर्ण रूप से विश्वास किया।
  प्रश्नः आप किसे प्रोत्साहित कर रहे हो? किसमें जीवन लगा रहे हो? सहायता कर रहे हो?
  "...योनातान का मन दाऊद पर ऐसा लग गया, कि योनातान उसे अपने प्राण के समान प्यार करने लगा...तब योनातान ने दाऊद के साथ वाचा बाँधी, क्योंकि वह उसको अपने प्राण के समान प्यार करता था।"

- **लोग शाऊल के ढक्कन और दाऊद के ढक्कन में अन्तर पहचानते थे।** (1 **शमूएल** 13:7)
  दाऊद को शाऊल से एक श्रेष्ठ अगुवा और योद्धा माना जाता था - यह सब पर प्रकट था।
  "और वे स्त्रियाँ नाचती हुई एक दूसरे के साथ यह गाती गईं, शाऊल ने तो हज़ारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है।"

पवित्रशास्त्र में नियम...

"अतः उसने सब इस्राएलियों में से गुणी पुरुषों को चुनकर उन्हें हज़ार-हज़ार, सौ-सौ, पचास-पचास, दस-दस लोगों के ऊपर प्रधान ठहराया। और वे लोगों का न्याय करने लगे; जो मुकद्दमा कठिन होता उसे वे मूसा के पास ले आते थे, और सब छोटे मुकद्दमों का न्याय वे आप ही किया करते थे।" (निर्गमन 18:25-26)

2 – प्रभाव का नियम

⇒ **अगुआई का सच्चा माप प्रभाव है – न अधिक, न कम।**

जिसका अधिक प्रभाव है वही अगुआ है।

उदाहरणः यहोशू
मूल-पाठः गिनती 13-14

यहोशू और कालेब उन बारह भेदियों में से जो प्रतिज्ञा के प्रदेश में से लौटे थे, केवल दो ऐसे भेदिये थे जिन्होंने विश्वास किया कि इस्राएली प्रदेश को जीत सकते हैं। यहोशू लोगों को आगे बढ़ने के लिए बुलाने लगा, परन्तु हाय, वह उन्हें प्रभावित नहीं कर सका। अपने जीवन की इस कगार पर, यहोशू प्रभाव के स्थान के लिए अभी परिपक्व नहीं हुआ था। हालाँकि वह सही था, वह लोगों को अपने पीछे आने के लिए राजी नहीं कर सका। उन्होंने उसकी ओर नहीं देखा - वे दूसरे दस भेदियों के पीछे चले। बाद में उसकी सफलता उसकी अगुआई के अनुसार बढ़ती गई। उसके प्रभाव को गहरा करने के लिए समय की आवश्यकता थी। उसे मूसा ने तैयार किया, और अन्त में, (मूसा की मृत्यु के बाद), इस्राएलियों को प्रतिज्ञा के प्रदेश में ले जाने के लिए वह स्वभाविक अगुवा हुआ। तब लोग उसके पीछे चले और उसकी हर आज्ञा का पालन किया। (यहोशू 1:16-18)

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

- **मूसा के साथ सम्बंध के कारण यहोशू का प्रभाव बढ़ा। (व्यवस्था.** 31:1–8, 23)
  मूसा का यहोशू को सिखाने के बाद, वह न केवल अपने गुणों में चमकने लगा - परन्तु यहोशू को लोगों के सामने एक अगुवे के रूप में पेश किया गया। मूसा ने यहोशू को अधिकार प्रदान किया।
  "तब मूसा ने यहोशू को बुलाकर सब इस्राएलियों के सम्मुख कहा, "तू हियाब बाँध और दृढ़ हो जा; क्योंकि इन लोगों के संग उस देश में जिसे यहोवा ने इनके पूर्वजों से शपथ खाकर देने को कहा था तू जाएगा; और तू इनको उसका अधिकारी कर देगा।" (31:7)

- **समय और परिपक्वता के कारण यहोशू का प्रभाव बढ़ा। (गिनती** 14, **यहोशू** 18)
  यहोशू ने गिनती 14 में वहीं शब्द कहे थे जो उसने यहोशू 18 में कहे। अन्तर यह था कि ये शब्द बाद में - एक परिपक्व यहोशू द्वारा - एक नई पीढ़ी को कहे गए थे।
  "तब यहोशू ने इस्राएलियों से कहा, जो देश तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, उसे अपने अधिकार में कर लेने में तुम कब तक ढिलाई करते रहोगे?" (18:3)

- **समय के कारण यहोशू का प्रभाव बढ़ा। (यहोशू** 1:16–18)
  कभी-कभी एक अगुवे का तब तक कोई प्रभाव नहीं होता जब तक उनके अनुयायी कहीं जाना नहीं चाहते हैं। जब तक यहूदी जंगल के चक्कर काट-काटकर थक नहीं गए, वे यहोशू की बातें सुनने को तैयार नहीं थे।
  "तब उन्होंने यहोशू को उत्तर दिया, जो कुछ तू ने हमें करने की आज्ञा दी है वह हम करेंगे, और जहाँ कहीं तू हमें भेजे वहाँ हम जाएँगे।"

- **क्योंकि यहोशू के पास धीरज और सच्चाई थी, उसका प्रभाव बढ़ा। (यहोशू** 1:5–9)

गिनती 13 में लोगों का उसको शब्दों को अस्वीकार करने के बाद भी, यहोशू धीरज के साथ बढ़ता रहा। वह बड़ी संगति और विश्वासनीयता दिखाता रहा और तब लोग अन्त में उसके पीछे चलने के लिए तैयार हुए। उसने परमेश्वर को उसके जीवन में कार्य करने दिया।

"तेरे जीवन भर कोई तेरे सामने ठहर न सकेगा; जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे तेरे संग भी रहूँगा....इतना हो कि तू हियाब बाँधकर और बहुत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उन सब के अनुसार करने में चौकसी करना; और उस से न तो दाहिने मुड़ना और न बाएँ, तब जहाँ जहाँ तू जाएगा वहाँ वहाँ तेरा काम सफल होगा।" (1:5-7)। यदि तुम अपनी सच्चाई बनाए रखोगे तो परमेश्वर तुम्हारे भविष्य को सम्भाल लेगा।

- **यहोशू का प्रभाव बढ़ा क्योंकि वह सही था। (यहोशू** 23:1–11)

  यहोशू के शब्द समय की परीक्षा में सफल हुए। उसका संदेश बदला नहीं और आखिरकार सबने देखा कि वह सही था। जो उसने कहा था करके दिखाया।

  "इसके बहुत दिनों के बाद, जब यहोवा ने इस्राएलियों को उनके चारों ओर के शत्रुओं से विश्राम दिया, और यहोशू बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया, तब यहोशू सब इस्राएलियों को...बुलवाकर कहने लगा, मैं तो बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया हूँ, और तुम ने देखा है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे निमित्त इन सब जातियों से क्या क्या किया है...।" (23:1-3)

अगुआई और प्रभाव के विषय में कल्पित कथाएँ...

1. यहोशू और मैंनेजमेंट कल्पित कथा

अगुवे प्रबंध कर सकते हैं, परन्तु मैंनेजर अगुवे नहीं हैं।

एक भेदिए के रूप में भी जो प्रतिज्ञा के प्रदेश में गया था, यहोशू केवल एक मैनेजर ही नहीं था, वह एक अगुवा था। एक मैंनेजर यहूदियों की वर्तमान भूमि का केवल निरीक्षण करता, और एक सही तरीके से मन्ना बाँट देता। परन्तु यहोशू तो नए क्षेत्र को लेने के लिए तैयार था। वह और कालेब नई नीति बनाने और प्रगति के लिए दर्शन देने को तैयार थे। मैंनेजन चीजों को बढ़ा नहीं सकते हैं, केवल अगुवे ही बढ़ा सकते हैं। एक अगुवा सेवा को बढ़ा सकता है। मैंनेजर उसे लेते हैं जो पहले से है और उसका प्रबंध करते हैं। अगुवे चीजों को जो हैं नहीं अस्तित्व में लाते हैं और बनाते हैं। फिर भी अगुवे को चीजों का प्रबंध करना है।

2. यहोशू और उद्यमकर्ता कल्पित कथा

अगुवे उद्यमकर्ता हो सकते हैं, परन्तु उद्यमकर्ता आवश्यक नहीं अगुवे हों।

उद्यमकर्ता चाजों को बनाते हैं, परन्तु उनके कोई अनुयायी न हों।

यहोशू कोई स्वतन्त्र उद्यमकर्ता नहीं था, परन्तु एक अगुवा था। उसकी और मूसा की लोगों के साथ परेशानी के बावजूद, वह उनके बिना आगे नहीं बढ़ेगा। जबकि अकेले वह निश्चय ही तेजी से आगे बढ़ गया होता, परन्तु उसने नई पीढ़ी के तैयार होने की धीरज के साथ चालीस वर्ष प्रतीक्षा की, और तब उसने उनके साथ प्रदेश में किया।

3. यहोशू और अग्रेसर कल्पित कथा

अगुवे अग्रेसर हो सकते हैं, परन्तु अग्रेसर अकसर अगुवे नहीं होते।

यहोशू इस्राएल का पहला अगुवा नहीं था। वह एक अग्रेसर के साथ बढ़ा, उसे मूसा ने तैयार किया था। परन्तु वह दूसरी पीढ़ी का अगुवा था जो अग्रेसर के पीछे हो लिया था और अन्तर पहचानता था। पहला होने का अर्थ यह नहीं कि तुम लोगों को अपने साथ ले चलोगे। लोगों को जंगल में से ले चलने के लिए यहोशू पहला व्यक्ति नहीं था, परन्तु उसने ही इस काम को पूरा किया।

4. यहोशू और ज्ञान कल्पित कथा

अगुवे ज्ञान रखते हैं, परन्तु ज्ञान एक अगुवे को नहीं बनाता है।

निःसन्देह यहोशू में बहुत ज्ञान था, परन्तु उसकी अगुआई उसके हृदय न कि उसके मन से होती थी। उसके हृदय के साहस के कारण उसने जो सैनिक कारनामे दिखाए वे समझ से परे हैं। उसके हृदय की कृपा ने उसे एक हठी लोगों के साथ बने रहने दिया, जब तक वे समझ नहीं गए कि वे प्रतिज्ञा के प्रदेश को ले सकते हैं।

5. यहोशू और पद कल्पित कथा

अगुवे महत्वपूर्ण पद ले सकते हैं, परन्तु पद एक अगुवे को नहीं बनाता है।

हालाँकि उसे आखिरकार मूसा से इस्राएल का अगला अगुवा होने का अधिकार प्राप्त हुआ, परन्तु पद पाने के काफी पहले से वह अगुआई कर रहा था। क्योंकि उसने अपने कुल में अगुआई दिखाई थी, उसे भेदिया होने के लिए चुना गया था। क्योंकि उसने एक सैनिक के रूप में अगुआई दिखाई थी उसे इस्राएल की सेना का सेनापति होने के लिए चुना गया था। क्योंकि उसने मूसा के अधीन एक आश्रित के रूप में गुण प्रकट किए थे, उसे इस्राएल का अगुवा होने के लिए चुना गया था।

पवित्रशास्त्र में नियम...

"तुम पृथ्वी के नमक हो....तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें। (मत्ती 5:13-16)
"तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ।" (1 कुरिन्थियों 11:1)
"इसलिए प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं...।" (2 कुरिन्थियों 5:11)
<u>जब आप पद में हैं, परन्तु प्रभाव नहीं रखते तब प्रभावित करने वालों को प्रभावित करो।</u>

अधिकार-पद
अगुआई का सबसे निम्न स्तर

सम्बंध
उस सम्बंध के कारण जो लोगों का आपके साथ है, वे आपके पीछे चलने लगते हैं।

व्यक्तिगत विकास
लोग आपके पीछे चलते हैं क्योंकि आप उनके जीवन में व्यक्तिगत निवेश कर रहे हैं।

व्यक्ति
लोग आपके पीछे चलते हैं क्योंकि आपने कई वर्ष एक अगुवे के रूप में उनकी सेवा की है।

➔ जितना ऊपर जाएँगे, उतनी अधिक प्रभावशाली और शक्तिशाली आपकी अगुआई होगी।

उपयोगी प्रश्नः (1) क्या मेरे जीवन पर ढक्कन हैं ?
(2) क्या मैं अपनी अगुआई के प्रभाव में बढ़ रहा हूँ ?

एक प्रभावशाली अगुवा होने के लिए आपको लोगों के साथ अपने सम्बंध में बढ़ना है।

3 – प्रक्रिया का नियम

⇒ अगुआई रोजाना बढ़ती है, एक दिन में नहीं। अगुआई एक प्रक्रिया है।

उदाहरणः यूसुफ
मूल-पाठः उत्पत्ति 37-45

जब यूसुफ जवान था, उसने परमेश्वर से एक सपना देखा। परमेश्वर ने उस पर प्रकट किया कि एक दिन वह एक महत्त्वपूर्ण अगुआई के पद पर होगा। उसके भाई भी उसके अधीन होंगे। परन्तु, उसे तैयार करने के लिए वर्षों का प्रशिक्षण लगा था। उसका

पहले का घमण्ड और बचपना निकलना था और उसे उन सपनों के योग्य एक व्यक्ति बनना था। यूसुफ ने गड्ढे से जेल और जेल से महल तक प्रगति की - हर स्थान उसके लिए प्रक्रिया में एक बढ़त का कदम था। वह वैसा अगुवा बन रहा था जो परमेश्वर ने चाहा था वह बने। वह तीस वर्ष का था जब वह फिरौन का सहायक बना। गड्ढे से लेकर महल तक कम से कम तेइस वर्ष बीत चुके थे, जब उसके भाई उससे भोजन वस्तु लेने के लिए आए थे। वह एक बदला हुआ मनुष्य था। तैयारी एक घटना नहीं बल्कि एक प्रक्रिया थी। उसे एक पतीले में न कि 'माइक्रोवेव' में तैयार किया गया था। यह एक लम्बी दौड़ थी, थोड़ी दूर की तेज दौड़ नहीं।

नियम के विषय में टिप्पणियाँ...

- **यूसुफ को परिपक्व होने के लिए समय चाहिए था।**
  जब परमेश्वर ने यूसुफ पर अपना सपना प्रकट किया तब यूसुफ एक किशोर ही था। निःसन्देह उसमें अगुआई के गुण थे परन्तु वे कच्ची दशा में थे। उसे एक अगुवे के रूप में पक्का होने के लिए समय और अनुभव की आवश्यकता थी।

- **यूसुफ को उसके घमण्ड से निपटने के लिए परखने और टूटने की आवश्यकता थी।**
  यदि परमेश्वर चाहता है आप उसके स्थान में आएँ तो आपकी अपनी इच्छा-शक्ति टूटनी होगी। यूसुफ ने अपना सपना अपने भाइयों को बताने का फैसला किया जो उसके लिए मँहगा साबित हुआ। ऐसा जान पड़ता है कि उसे परखने और उसके घमण्ड को तोड़ने की आवश्यकता थी। परमेश्वर ने ऐसा उससे उसकी कृपापात्र की स्थिति लेकर और उसे मिस्र में एक दास के स्थान पर रखकर किया।
  दर्शन रुकावटों और विरोध द्वारा परखा जाएगा। आपके जीवन के लिए उसका दर्शन केवल उसके द्वारा ही पूरा किया जा सकता है।

- **यूसुफ जानता था कि आत्म-पदोन्नति ईश्वरीय पदोन्नति का स्थान नहीं ले सकती है।**
  यूसुफ ने आकिरकार जान लिया कि सच्ची प्रगति तब ही होती है जब इसके पीछे परमेश्वर होता है। उसने पोतीपर की विश्वासयोग्यता के साथ सेवा करने का फैसला किया, जब तक यह प्रकट न हो गया कि 'प्रभु उसके संग था'। हर बार जब उसने ऐसा किया, तो कृपापात्र की स्थिति उसके पास लौट आई। यूसुफ ने पदोन्नति के लिए परमेश्वर की ओर देखा।
  आपके साथ जो होता है वह नहीं, परन्तु आप में जो होता है मायने रखता है।

- **यूसुफ ने कठिन लोगों का मूल्य जाना और उनके साथ ईश्वरीय हथियारों के रूप में बर्ताव किया।**
  यूसुफ के पास लोगों के साथ कटु होने के अनेक अवसर थे, जैसे कि उसके भाई, दासों के व्यापारी, पोतीपर की पत्नी, कैद से छूटे कैदी जो उसे भूल गए। हर बार, उसने अपने संघर्षों में परमेश्वर को और लोगों को हथियारों के रूप में देखा। अपने आप से पूछो कि परमेश्वर आपको कठिन लोगों के द्वारा क्या सिखाने का प्रयास कर रहा है।

- **यूसुफ जानता था कि जब तक वह परखा और जाँचा नहीं जाता परमेश्वर उसे उपयोग नहीं कर पाएगा।**
  यूसुफ का मिस्र का अगुवा बनने का एक कारण यह था कि वह हर उस परीक्षा में से निकल चुका था जिसे जीवन ने उस पर फेंका था। फिरौन के अधीन काम करने तक उसकी अगुआई परखी गई थी। उसने तनाव और संकट झेला था और उसके अनुभवों ने उसे आवश्यक बुद्धि दी थी।

- **प्रक्रिया के नियम के कारण यूसुफ सपने में अपनी भूमिका देख सकता था।**
  यूसुफ जानता था कि परमेश्वर अगुआई के उसके सफर में उसे ले जा रहा है। जब उसने अपने भाइयों पर अपने आप को प्रकट किया, तब उसने कहा, "तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया था, परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया।" उसने बड़ी तस्वीर देखी और पहचाना कि एक प्रभावशाली अगुवा बनने के लिए प्रक्रिया आवश्यक थी।

<u>यूसुफ अगुआई के विकास की चार अवस्थाओं को चित्रित करता है:</u>

1. **पहली अवस्थाः मैं नहीं जानता जो मैं नहीं जानता।** (उत्पत्ति 37:1-11)

ज्ञान का भ्रम खतरनाक है।

जब यूसुफ सत्रह वर्ष का था, वह संदेश पाने लगा कि वह विशेष है, और कि परमेश्वर उसे एक असामान्य तरीके से उपयोग करने वाला है। उसका पिता उसे पसन्द करता था और उसे एक कोट दिया था। तब उसे उसकी भविष्य की अगुआई के विषय में सपना आया। उसने गलती से उन्हें अपने ईर्ष्यालु भाइयों को बताया। उन्हें अच्छा नहीं लगा और वे उसके विषय में कुड़कुड़ाने लगे। परन्तु क्या वह समझता था क्या हो रहा है? उसे कोई सुराग नहीं था। उसे दूसरा सपना आया और उसने इसे सारे परिवार को बताया। वे सब इसे समझ नहीं पाए, उसका पिता भी नहीं। यूसुफ अगुआई की तैयारी के मार्ग पर था, परन्तु जो वह जानता नहीं था उसके विषय में अनभिज्ञ था। जिन मानवीय मामलों का वह सामना कर रहा था उन्हें समझे बिना वह कुछ कर रहा और कह रहा था।

2. **दूसरी अवस्थाः मैं जानता हूँ जो मैं नहीं जानता। (उत्पत्ति** 39-40)

यूसुफ बाद में अपने आप को मिस्र में एक गुलाम के रूप में पाता है। पहले कुछ वर्षों में वह अगुआई के विकास की दूसरी अवस्था में पहुँचा। जो वह नहीं जानता था उसे वह जानने लगा, कि परमेश्वर उसके साथ है और जो कुछ भी उसने किया उसमें सफल रहा। परन्तु इस समय के दौरान ही उसे उसके साथी कर्मचारियों ने धोखा दिया। पोतीपर की पत्नी, राजा का पिलानेहारा और पकानेहारा सबने अपने असली रंग दिखलाए और यूसुफ ने मानवीय स्वभाव, सम्बंध और अगुआई के विषय में सबक सीखे। वह उनके कपट या भावशून्यता को समझ नहीं पाया। उसने प्रश्न किया कि उसके साथी कैदी कैसे भूल सकते हैं जिसकी उन्होंने प्रतीज्ञा की थी। फिर भी, उसने सबकुछ प्रभु के हाथ में सौंपा और भरोसा किया कि परमेश्वर सबकुछ अपनी महिमा के लिए उपयोग करेगा। वह कैद के इस समय में परिपक्व हुआ।

3. **तीसरी अवस्थाः मैं जानता और बढ़ता हूँ और यह दिखने लगता है। (उत्पत्ति** 41:14-37)

अगुआई की निपुणताओं को सीखना।

यूसुफ लगभग तीस वर्ष की उम्र में अगुआई के विकास की तीसरी अवस्था में प्रवेश करता है। उसे फिरौन के सपनों का अर्थ बताने के लिए बुलाया गया और यूसुफ ने ऐसा सूक्ष्मता के साथ किया। सपना सात वर्ष की बहुतायत और सात वर्ष के अकाल के विषय में था। यूसुफ सपने के उपयोग और समय को समझ गया था। उसने फिरौन को बताया कि बहुतायत के सात वर्षों के दौरान क्या करना है और कि उसे जमा किए अनाज पर एक बुद्धिमान और विवेकी अगुवे को अधिकारी ठहराना चाहिए। यूसुफ समझ गया था कि सारी पृथ्वी भर के लोग उनसे अनाज मोल लेने के लिए मिस्र में आएँगे (41:57)। इस अवस्था के दौरान फिरौन ने यूसुफ को सारे अनाज पर अधिकारी ठहराया, और वह अपनी अगुआई के कार्य में फलने-फूलने लगा।

4. **चौथी अवस्थाः मैं जो जानता हूँ उसके कारण मैं जाता हूँ। (उत्पत्ती** 50:18-21)

तुम जो जानते हो उसे लागू करो।

इस अवस्था तक, यूसुफ मध्य-जीवन में था। वह वर्षों की अगुआई की बुद्धि और अनुभव से कार्य करता रहा। उसका परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सम्बंध था और जीवन पर एक ईश्वरीय दृष्टिकोण उसके पास था। उसकी अगुआई प्रवाहित होती रही और अब उसके लिए दूसरा स्वभाव बन गई थी। असल में, जैसे वह पृथ्वी के सारे लोगों को अनाज बाँटता था, उसका अपना परिवार, न जानते हुए कि वह अधिकारी है, उसे देखने आए। जो सपना उसने उन्हें अपनी किशोरावस्था में बताया था पूरा हुआ। अब, जिन्होंने उस पर संदेह किया था, उसे पीटा था और उसे गुलामी में बेच दिया था, उसकी सहायता चाहते थे।

यूसुफ अपना रवैया सही रखा → विश्वासयोग्य रहा

→ प्रभु में भरोसा बनाए रखा

बदला लेने का यह उसका समय था। मिस्र में सब इसे समझते। परन्तु यूसुफ ने उन्हें क्षमा किया और भोजन की उनकी आवश्यकता पूरी की। क्यों? क्योंकि यह अब केवल यूसुफ ही नहीं थाः छोटा भाई यूसुफ - परन्तु यूसुफः अगुवा था। उसके कार्य उसके चरित्र से निकले और उसने वही किया जो सही था चाहे यह कठिन ही क्यों न था। उसका दृष्टिकोण ईश्वरीय थाः "यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं।"

अपनी परिस्थितियों को आपके जीवन को आदेश मत देने दो। अपने विश्वास और रवैये के कारण अपनी परिस्थितियों से ऊपर जीयो। वह समझ गया कि उसे एक अगुवा होने के लिए बुलाया गया है जो जीवन, चंगाई और उद्धार की सेवा करता है।

पवित्रशास्त्र में नियम...

"यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर; देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह...यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसकी प्रतीक्षा कर...मत कुढ़...क्योंकि कुकर्मी लोग काट डाले जाएँगे; और जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे...मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है।" (भजन 37:3-9, 23)
"अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ढण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएँगे।" (उत्पत्ती 8:22)
"देखो, किसान पृथ्वी की बहुमूल्य फसल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। तुम भी धीरज धरो; और अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है...हे भाइयो, जिन भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु के नाम से बातें कीं, उनको दुख उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श समझो। देखो, हम धीरज धरनेवालों को धन्य कहते हैं। तुम ने अय्यूब के धीरज के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है, जिससे प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रकट होती है।" (याकूब 5:7-11)
इब्रानियों 11: विश्वास की जीवनवार्षिकी। विश्वास से यूसुफ नेः स्पष्य जान लिया कि परमेश्वर अपने लोगों को प्रतीज्ञा के प्रदेश में लौटा ले जाएगा। यूसुफ विश्वास करता था कि परमेश्वर एक वाचा रखनेवाला परमेश्वर है।
परमेश्वर जिसने आपके हृदय में एक सपना, दर्शन, प्रतीज्ञा डाली है, उसे इस समय तैयार कर रहा है, और वह योग्य और विश्वासयोग्य है, उसे पूरा करने का इच्छुक भी है।

4 – संचालन का नियम

⇒ **कोई भी जहाज का परिचालन कर सकता है, परन्तु मार्ग की रूपरेखा एक अगुवा ही बना सकता है।**

सब कोई गाड़ी चला सकते हैं, परन्तु एक अगुवा ही बता सकता है कहाँ जाना है। अगुवे पैदा नहीं होते परन्तु एक प्रक्रिया के साथ बढ़ते जाते हैं।

उदाहरणः नहेम्याह
मूल-पाठः नहेम्याह 1-6

नहेम्याह जो एक विदेशी राजा का पियाऊ था, किसी प्रकार संचालन के इस नियम को समझता था। यरूशलेम की शहरपनाह वर्षों से टूटी पड़ी थी - परन्तु सही अगुवे के अधिकार में वे 52 दिनों में बनाई जा सकती (बनाई गई) थी। एक बार जब नहेम्याह ने कारीगरों को उचित स्थानों पर रखा, तब जब तक काम न हो गया उन सब ने सफलतापूर्वक परिश्रम किया। परन्तु उनके एक दल के रूप में सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए एक "विमान-चालक" की आवश्यकता पड़ी। कारीगर तो सदा से पर्याप्त थे। आवश्यकता एक अगुवे की थी जो मार्ग की रूपरेखा बना सकता। यरूशलेम के मन्दिर की पुनःस्थापना के लिए जरूब्बाबेल ने कदम बढ़ाया था। यरूशलेम की आराधना पुनःस्थापित करने में एज्रा ने कदम उठाया था। अब यरूशलेम की शहरपनाह को पुनःस्थापित करने के लिए एक नए संचालक की आवश्यकता थी। नहेम्याह ने वही किया जो कोई भी महान अगुवा करता। उसने आवश्यकता देखी (जिसे दूसरे भी देख सकते थे), परन्तु एक नीति बनाई और उसे कार्यान्वित करने के लिए एक दल भर्ती किया। और एक कीर्तिमान समय में, काम पूरा किया।

नहेम्याह का संचालन इन चरणों में से गुज़रा था:

1. **समस्या के साथ एकीकरण** (1:4)

नहेम्याह का पहला कदम यहूदियों की स्थिति और यरूशलेम की शहरपनाह के विषय में पता लगाना था। जब उसे खबर मिली कि शहरपनाह टूटी पड़ी है और परमेश्वर के नाम की निन्दा हो रही है तो वह रोया। यह पियाऊ दूर की समस्या से तादात्म्य स्थापित कर रहा था।

आगे बढ़ने से पहले, लोगों की आवश्यकताओं के साथ तादात्म्य स्थापित करो। क्या वे देख पा रहे हैं जो परमेश्वर देखता है।

"ये बातें सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कितने दिन तक विलाप करता, और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास करता और यह कहकर प्रार्थना करता रहा।"

2. **लोगों के लिए मध्यस्थता** (1:5-11)

उसका अगला कदम घुटनों पर होना और प्रार्थना करना था। उसने लोगों के लिए और जो आवश्यकता पूरी नहीं हुई थी उसके लिए प्रार्थना करने लगा। वह एक योजना के बिना आगे नहीं बढ़ने वाला था, जब तक वह पहले परमेश्वर के साथ सम्बंध स्थापित न कर लेता और उसकी बुद्धि और हस्तक्षेप के लिए आग्रह न कर लेता। इस कदम में उसे एक योजना मिली।

अगुवो अपने लोगों के लिए प्रार्थना करो।

"यह कहकर प्रार्थना करता रहा, हे, स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा... तू कान लगाए और आँखें खोले रह, कि जो प्रार्थना मैं तेरा दास इस समय तेरे दास इस्राएलियों के लिए दिन रात करता रहता हूँ, उसे तू सुन ले...।"

3. **प्रभावित करनेवालों के साथ मेलजोल** (2:1-6)

इसके बाद, नहेम्याह उन प्रमुख लोगों से मिला जो कुछ कर सकते थे। वह राजा से मिला और उससे वादा लिया कि वह दीवार बनाने के लिए धन देगा। उसने यरूशलेम के लिए यात्रा और वहाँ पहुँचने के लिए साधन सुरक्षित किए।

प्रभावित करनेवालों के साथ जो अन्तर ला सकते हैं तादात्म्य स्थापित करो।

"मैं ने राजा से कहा, राजा सदा जीवित रहे। जब वह नगर जिसमें मेरे पुरखाओं की कबरें हैं, उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं, तो मेरा मुँह क्यों न उतरे....यदि राजा को भाए, और तू अपने दास से प्रसन्न हो, तो मुझे यहूदा...भेज, ताकि मैं उसे बनाऊँ...।"

4. **सम्पत्ति की जाँच-पड़ताल** (2:11-16)

अपने अगले चरण में, उसने अपने सामने खड़ी चुनौती का सर्वेक्षण किया, और इसके आकार और विस्तार पर पकड़ प्राप्त की। इसी समय उसने निर्धारित किया कि उसे कितने कारीगरों की आवश्यकता होगी, उनके वरदान क्या क्या होने चाहिए और काम अच्छी तरह समाप्त करने के लिए वह उन्हें कैसे कैसे खड़ा करेगा।

"जब मैं यरूशलेम पहुँचा, तब वहाँ तीन दिन रहा... मैं रात को तराई के फाटक में होकर निकला... और कूड़ाफाटक के पास गया, और यरूशलेम की टूटी पड़ी शहरपनाह और जले फाटकों को देखा...।"

5. **उद्देश्य प्रदान करना** (2:17-18)

तब, नहेम्याह ने सम्भावित कारीगरों को इकट्ठे किया और दर्शन उनके सामने रखा। उसने कार्य की भावना प्रदान की और बताया कि यरूशलेम की दीवारों को बनाना क्यों इतना आवश्यक है। उन्होंने परियोजना की आत्मिक प्रशाखनों की झलक पाई और उसे ले लिया। उद्देश्य का सम्बंध कार्य और दर्शन से होता है।

"तब मैं ने उनसे कहा, तुम आप देखते हो कि हम कैसी दुर्दशा में हैं... फिर मैं ने उनको बतलाया, कि मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर कैसी हुई और राजा ने मुझ से क्या क्या बातें कहीं थीं। तब उन्होंने कहा, आओ, हम कमर बाँधकर बनाने लगें।"

6. **योजना का कार्यान्वयन** (3:1-32)

अन्त में, उसने पुरुषों और कार्यों को उचित ढंग से बाँट दिया, पुरुषों को उनके घरों के सामने काम करने के लिए लगाया - जहाँ अच्छा काम करने का उनकी प्रेरणा अधिक होगी। उसने जो योजना दो महिने पहले बनाई थी उसे कार्यान्वित किया।

सेवा के लिए एक योजना कार्यान्वित करो। दर्शन पूरा करने की एक नीति।

"तब एल्याशीब महायाजक ने अपने भाई याजकों समेत कमर बाँधकर भेड़फाटक को बनाया.... उसके आगे यरीहो के मनुष्यों ने बनाया, और इन से आगे इम्री के पुत्र जक्कूर ने बनाया।"

नहेम्याह ने इन सिद्धान्तों को संचालन करते समय उपयोग किया:

1. सरलीकरण का सिद्धान्त
   उसने मनुष्यों को स्वाभाविक दलों में बाँटाः परिवारों में।

2. भाग लेने का सिद्धान्त
   उसने उनके साथ तादात्म्य स्थापित किया और काम किया जो तैयार थे।

3. प्रतिनिधान का सिद्धान्त
   उसने कामों का कारीगरों के साथ ठीक ठीक मेल मिलाया।

4. प्रेरणा का सिद्धान्त
   इससे लोगों को उनके लाभ के लिए प्रेरणा मिली।
   उसने कारीगरों को उनके घरों के सामने खड़ा किया।

5. सहयोग का सिद्धान्त
   उसने उनमें सामूहिक कार्य और सहक्रिया को प्रोत्साहन दिया। एक साथ हम शक्तिशाली हैं।
6. अभिपुष्टि का सिद्धान्त
   उसने प्रशंसा और अभिज्ञान की शक्ति को प्रयोग किया।

पवित्रशास्त्र में नियम...

"जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं...।" (नीतिवचन 29:18)
"तुम में से कौन है जो गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की सामर्थ्य मेरे पास है कि नहीं? कहीं ऐसा न हो कि जब वह नींव डाल ले पर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें, यह मनुष्य बनाने तो लगा पर तैयार न कर सका।" (लूका 14:28-30)

<u>नए नियम की कलीसिया का सेवाकार्यः</u>

1. **आराधनाः** लोगों को एकत्र करने का एक स्थान जो परमेश्वर की आराधना उनके सारे हृदय से करते हैं और उनका सारा मूल्य उसे देते हैं। स्वर्ग में क्या चल रहा है? आराधना। यदि आप वह करें जो स्वर्ग में होता है, तब आप पृथ्वी पर स्वर्ग लाते हैं।

2. **संगतिः** संगति का एक स्थान, लोगों को एक दूसरे से प्रेम करने के लिए एकत्र होना हालाँकि वे एक दूसरे से भिन्न हैं। (यूहन्ना 17:23)। यदि तुम एक दूसरे से प्रेम करो तो इससे संसार जानेगा कि तुम मुझ से प्रेम करते हो। (नोटः आज्ञा / आदेशः "एक दूसरे से" नए नियम में 108 बार दिखाई देता है)। सबकुछ एक दूसरे के लिए। बड़े हो जाओ और दूसरों से प्रेम करना सीखो। बाइबल पर आधारित सम्बंध विकसित करो।

3. **शिष्यताः** एक चेला नौसिखिया है जो मसीह में परिपक्वता के कारण अपने आप को दूसरों में उत्पन्न करता है। परमेश्वर में दोबारा उत्पन्न करनेवाले विकसित करो।

4. **सुसमाचार प्रचारः** परमेश्वर के लिए खोए हुओं तक पहुँचो और उसका प्रेम और सामर्थ्य बाँटो।

कलीसिया के सेवाकार्य को समझो और तब दिशा निर्धारित करो।
दर्शनः दिखाता है कि अब से 3 से 5 वर्षों में कलीसिया कैसी दिखेगी। क्या आप देख सकते हो जो यह अब नहीं है?
यदि आपके पास कोई दर्शन नहीं है तो लोग एक दूसरे की कमियाँ खोजनेवाले बन जाते हैं। अपने लिए एक अगुवे के रूप में, अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर का दर्शन पता लगाओ और तब दिशा निर्धारित करो।

5 – ई. एफ. हटन का नियम

⇒ **जब असली अगुवा बोलता है, तो लोग सुनते हैं।**

उदाहरणः दानिय्येल
मूल-पाठः दानिय्येल 5 (प्रेरितों 27:9-11, 21-25, 30-44 में पौलुस)

दानिय्येल के जवानी के सारे समय में, वह एक बाहरी व्यक्ति था - बेबिलोन में रह रहा यहूदी। फिर भी, तीनों राजाओं ने उसे भविष्य की घटनाओं के विषय में आकर बातें करने के लिए बुलाया। हर बार जब दानिय्येल बोला तो उन्होंने बड़े ध्यान से सुना। अन्त में, जब दानिय्येल को राजा बेलशस्सर के सामने लाया गया, तो उस समय वह अधिकार के दायरे में से बाहर था। असल में, वह महल में "बुद्धिमान पुरुष" या सलाहकार के रूप में सेवा नहीं करता था। (बेलशस्सर को रानी द्वारा याद दिलाना पड़ा कि दानिय्येल विद्यमान है।) राजा ने दानिय्येल से एक सामर्थी मनुष्य के रूप में बातें कीं (आय. 13-16)। राजा उसे सुनने के लिए इतना भूखा था कि उसने उसे इनाम देने की चेष्टा की। दानिय्येल को कोई रुचि नहीं थी। उसकी इच्छा मनुष्यों को प्रसन्न करने की नहीं थी। प्रेरितों 27 में प्रेरित पौलुस के समान, दानिय्येल एक ऐसा पुरुष था जिसके शब्द मायने रखते थे हालाँकि वह बाहरी व्यक्ति था। (पौलुस एक जहाज पर कैदी था जब उसने इसकी दिशा का नियंत्रण लिया।) जब दानिय्येल बोला तब सबने सुना।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...
लोगों को हमें सुनने के लिए क्या विवश करता है ? जिन गुणों ने दानिय्येल के शब्दों को प्रभाव दिया वे हैं:

1. **सम्बंधः हम जिसे जानते हैं उसके कारण लोग हमें सुनते हैं।**
दानिय्येल नाम था कि वह इस्राएल के परमेश्वर को जानता है। इससे वह राजाओं का कृपापात्र था।

2. **बलिदानः हम ने जो दुख उठाया है उसके कारण लोग हमें सुनते हैं।**
उसने राजा का भोजन खाने का अधिकार छोड़ दिया था। उसने जो दुख सहा और बलिदान किया उसके द्वारा एक आदर्श जीवन जीया।

3. **चरित्रः लोग हमारी सच्चाई के कारण हमें सुनते हैं।**
वह निर्दोष और विश्वसनीय था, तब भी जब उसे राजाओं को फटकारना होता था। "विश्वसनीय" का अर्थ है अनिन्द्य।

4. **संबद्धताः लोग हमें सुनते हैं क्योंकि हम उनकी आवश्यकताओं के साथ तादात्म्य स्थापित करते हैं।**
वह बेबीलोन के लोगों के साथ रहता था और उनके संघर्षों के साथ तादात्म्य स्थापित किया था। उसने उनकी जीवन शैली को पहचाना था।

5. **अन्तर्दृष्टिः हम जो जानते हैं उसके कारण लोग हमें सुनते हैं।**
सपनों और दर्शनों के साथ उसे श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्त थी। उसे ही राजा उनके उलझन के समय पुकारते थे।

6. **छेद्यताः लोग हमें सुनते हैं क्योंकि हम सच्चाई से पारदर्शी हैं।**
उसका जीवन एक खुली पुस्तक थी; उसने अपने विश्वास से लेकर उत्कंठाओं तक कुछ नहीं छिपाया था। आप जो देखते थे वही पाते थे।

7. **अनुभवः लोग हमें सुनते हैं क्योंकि हम भूत में सफल रहे हैं।**
उसकी विश्वासनीयता विदेश में वर्षों से रहने से - और कठिनाई में अच्छा करने से आई थी।

8. **दीनताः लोग हमें सुनते हैं जब हम विनम्रता देहधारण करते हैं।**

वह अधिकारियों की ओर दीन और आज्ञाकारी था। वह सम्बंध स्थापित करता था क्योंकि वह मिथ्याभिमानी नहीं था।

9. योग्यताः लोग हमें हमारी योग्यताओं और सुविज्ञता के कारण सुनते हैं।
वह कुछ चीजें दूसरों से बेहतर कर सकता था। उसके पास योग्यताएँ थीं जिनकी माँग थी।

10. साहसः लोग हमें सुनते हैं जब हम दृढ़ विश्वास दिखाते हैं।
वह किसी की भी कठपुतली नहीं था। वह अपने दृढ़ विश्वास के लिए मरने को तैयार था।

पवित्रशास्त्र में नियम...
"धर्मी के वचनों से बहुतों का पालन-पोषण होता है, परन्तु मूढ़ लोग निर्बुद्धि होने के कारण मर जाते हैं।" (नीतिवचन 10:21)

6 – ठोस आधार का नियम

⇒ **<u>भरोसा अगुआई की नींव है।</u>**

उदाहरणः शिमशोन
मूल-पाठः न्यायियों 15:1-20

शिमशोन ने कठिन तरीके से सीखा कि सब असली अगुआई की नींव भरोसा होता है। वह एक खराब अगुवे का अच्छा उदाहरण है। वह अविवेकी, चंचल, कामुक, बदमिज़ाज, भावुक और बहुत तरंगी था। उसकी द्विशिर पेशियाँ मजबूत थीं परन्तु उसकी रीढ़ की हड्डी कमज़ोर थी। उसने इस नियम का महत्त्व इस का उल्लंघन करके दिखाया। इस परिच्छेद में, शिमशोन के इरादों पर पलिश्तियों ने, उसके ससुर ने, और यहूदा के लोगों ने भी संदेह किया। किसी को भी निश्चय नहीं था कि वे उस भरोसा कर सकते हैं। उसके अपने लोग अपनी जान बचाने के लिए उसे बाँधकर पलिश्तियों के हाथ सौंप देते हैं। अपनी अगुआई के इस मुकाम पर, वह अपने सामर्थ्य को नियंत्रण में नहीं रख सका था। वह कई स्त्रियों के साथ सोया था। उसने लोगों को धोखा दिया था। उसने क्रोध में आकर दूसरों को कत्ल किया था। परिणामस्वरूप, वह बिना देश का एक मनुष्य बना। आश्चर्य नहीं कि उसका पतन दलीला नामक एक स्त्री के द्वारा हुआ। उसने उसे उसकी कमज़ोरी के स्थान पर बहकाया और उससे उसकी शारीरिक शक्ति के रहस्य को प्रकट करवाया - जो रहस्य उसके और परमेश्वर के बीच था। उसने दलीला के साथ खेलते हुए, उसे कुछ बार धोखा दिया, परन्तु अन्त में उसने उसे उसके ही धोखे के खेल में हरा दिया। उसने प्रमाणित कर दिया कि स्वधर्मत्यागी बेकार के कोच बनते हैं। कोई भी उस पर भरोसा नहीं कर सकता था इसलिए कोई भी उसके पीछे नहीं चल रहा था।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

न्यायियों 14-16: शिमशोन हमारे लिए एक ऐसे अगुवे के चिन्ह देता है जो मुश्किल में है...

1. उन्होंने उनके चरित्र की स्पष्ट कमज़ोरियों को सम्भोदित नहीं किया है (न्यायियों 16:1)
सम्भव है कई वर्षों तक शिमशोन लौंगिक अशुद्धता के साथ संघर्ष करता रहा। सब जानते थे वह वेश्याओं के साथ सोता था। अपनी कामुकता को नियंत्रण करने में असफलता उसे दलीला के साथ निधन को ले गई।
"तब शिमशोन गाज़ा को गया, और वहाँ एक वेश्या को देखकर उसके पास गया।"

2. वे अपने को सुरक्षित करने के लिए धोखे का सहारा लेते हैं (न्यायियों 16:6-10)
शिमशोन यह देखने के लिए कि क्या वह दूसरों को चालाकी से मात दे सकता है, पहेलियों का उपयोग करता था। वह सम्पूर्ण रूप से खरा नहीं था (वह अकसर संदिग्ध था) जिससे बाद में यहूदियों में अविश्वास और विश्वासघात पैदा हुआ था।

"तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "मुझे बता कि तेरे बड़े बल का भेद क्या है, और किस रीति से कोई तुझे बाँधकर दबा रख सकता है।" शिमशोन ने उससे कहा, "यदि मैं सात ऐसी नई नई ताँतों से बाँधा जाऊँ जो सुखाई न गई हों, तो मेरा बल घट जाएगा...।"

3. वे उतावले होते हैं और एक तरंग और आवेग में कार्य करते हैं (न्यायियों 15:7-8)

शिमशोन का क्रोध और अस्थिर व्यवहार का कीर्तिमान था। उसकी आवेगी आत्मा भले के लिए (वह एक पूरी सेना को नष्ट कर सकता था) या बुरे के लिए (उसने समय से पहले विवाह किया) उपयोग की जा सकती थी।

"शिमशोन ने उनसे कहा, "तुम जो ऐसा काम करते हो, इसलिए मैं तुम से बदला लेकर ही चुप हूँगा।" तब उसने उनको अति निष्ठुरता के साथ बड़ी मार से मार डाला...।"

4. वे उनके प्रभाव के स्थान के साथ खेल खेलते हैं (न्यायियों 14:12-13)

दोबारा, शिमशोन पहेलियों को उपयोग करके, अपनी सम्पत्ति को दाँव पर लगाता था। परन्तु बाद में जब उसने दलीला के साथ खेल खेला तब यह निष्फल हो गया।

"शिमशोन ने उनसे कहा, "मैं तुम से एक पहेली कहता हूँ; यदि तुम इस भोज के सातों दिनों के भीतर उसे बूझकर अर्थ बता दो, तो मैं तुम को तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े दूँगा...।"

5. वे, विशेषकर उनके अन्ध-बिन्दुओं में धोखा खा सकते हैं (न्यायियों 16:15-17)

आखिरकार शिमशोन को सवा सेर मिला। व्यंग्यात्मक रूप से, कपट का कलाकार और दूसरों के साथ खेलनेवाला आप एक स्त्री से धोखा खा गया। स्त्रियाँ उसकी अॅकलीस एड़ी थीं।

"तब दलीला ने उससे कहा, "तेरा मन तो मुझे से नहीं लगा, फिर तू क्यों कहता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ? तू ने तीनों बार मुझ से छल किया, और मुझे नहीं बताया कि तेरे बड़े बल का भेद क्या है। इस प्रकार जब उसने हर दिन बातें करते करते उसको तंग किया और यहाँ तक हठ किया कि उसकी नाक में दम आ गया। तब उसने अपने मन का सारा भेद खोलकर उससे कहा...।"

6. वे उनके परमेश्वर द्वारा दिए वरदानों का दुरूपयोग करते हैं (न्यायियों 15:1-8)

शिमशोन अपने परमेश्वर के दिए हुए वरदान की परवाह नहीं करता था। जब उसकी पत्नी को दूसरे को दे दिया गया, तब उसने बदला लिया, जिसकी वजह से उसके ससुर और पत्नी की जान गई।

"और उसके ससुर ने कहा, "मैं सचमुच यह जानता था कि तू उससे बैर ही रखता है, इसलिए मैं ने उसका तेरे संगी से विवाह कर दिया...तब शिमशोन ने जाकर तीन सौ लोमिड़याँ पकड़ीं, और मशाल लेकर दो दो लोमिड़यों की पूँछ एक साथ बाँधी, और उनके बीच एक एक मशाल बाँधी। तब मशालों में आग लगाकर उस ने लोमिड़यों को पलिश्तियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया...तब पलिश्ती पूछने लगे, "यह किसने किया है?" लोगों ने कहा, "शिमशोन"। तब पलिश्तियों ने जाकर उस पत्नी और उसके पिता दोनों को आग में जला दिया।"

7. उन्हें इसकी अधिक चिन्ता है कि वे कैसे दिखते हैं न कि वे कौन हैं (न्यायियों 15:9-12)

शिमशोन की अधिकाँश अगुआई प्रतिक्रियात्मक थी। जब इस्राएलियों से उसे पकड़ा, तब उसने उनके हाथों मारे जाने के बजाय पलिश्तियों को दे दिया जाना बेहतर समझ क्योंकि वह अच्छा दिखना चाहता था।

"तब तीन हज़ार यहूदी पुरुष...जाकर शिमशोन से कहने लगे, "फिर तू ने हम से ऐसा क्यों किया है?" उसने उनसे कहा, "जैसा उन्होंने मुझे से किया था, वैसा ही मैं ने भी उनसे किया है।" उन्होंने उससे कहा, "हम तुझे बाँधकर पलिश्तियों के हाथ कर देने के लिए आए हैं।" शिमशोन ने उनसे कहा, "मुझ से यह शपथ खाओ कि तुम मुझ पर प्रहार न करोगे।"

8. उन्हें खरीदा जा सकता है (न्यायियों 16:17-18)

आखिरकार, दलीला ने उसकी कीमत पता लगा ली, और उसे खरीद लिया। उसने उसे बहका लिया और उसने उसे "अपने मन का सारा भेद" बता दिया, हालाँकि वह शत्रु के लिए काम कर रही थी।

"तब उसने अपने मन का सारा भेद खोलकर उससे कहा...।"

अनुयायी एक अगुवे में क्या चाहते हैं:

1. वे उनके अगुवे में चरित्र देखना चाहते हैं।
2. वे उनके अगुवे में योग्यता देखना चाहते हैं।
3. वे उनके अगुवे से करुणा अनुभव करना चाहते हैं।
4. वे उनके अगुवे में वचनबद्धता देखना चाहते हैं।
5. वे उनके अगुवे के साथ सम्बंध अनुभव करना चाहते हैं।
6. वे उनके अगुवे के साथ योगदान करना चाहते हैं।
7. वे उनके अगुवे में अनुताप देखना चाहते हैं।
8. वे उनके अगुवे में दृढ़ विश्वास देखना चाहते हैं।
9. वे उनके अगुवे के साथ एक उद्देश्य में जुड़ना चाहते हैं।
10. वे उनके अगुवे में संगति देखना चाहते हैं।
11. वे उनके अगुवे में भरोसा देखना चाहते हैं।
12. वे उनके अगुवे में साहस अनुभव करना चाहते हैं।

पवित्रशास्त्र में नियम...
"विवेक तुझे सुरक्षित रखेगा, और समझ तेरी रक्षक होगी।" (नीतिवचन 2:11)
"मैं लड़कपन से लेकर आज तक तुम्हारे सामने काम करता रहा हूँ। मैं उपस्थित हूँ; इसलिए तुम यहोवा के सामने, और उसके अभिषिक्त के सामने साक्षी दो, कि मैं ने किसका बैल ले लिया? या किस का गदहा ले लिया? या किस पर अन्धेर किया? या किस को पीसा? या किस के हाथ से अपनी आँखें बन्द करने के लिए घूस लिया? बताओ, और मैं वह तुम को फेर दूँगा?" (1 शमूएल 12:2-3)
"हमें अपने हृदय में जगह दो। हम ने न किसी के साथ अन्याय किया, न किसी को बिगाड़ा, और न किसी को ठगा।" (2 कुरिन्थियों 7:2)

7 – आदर का नियम

⇒ लोग अपने से शक्तिशाली अगुवे के पीछे स्वाभाविक रूप से चलते हैं।

उदाहरण: दाबोरा
मूल-पाठ: न्यायियों 4:4-16

दाबोरा आदर के नियम का एक आदर्श उदाहरण है क्योंकि उसके समय में बहुत कम स्त्रियों को अगुआई का पद दिया जाता था। पुरुष सामान्यतया स्त्रियों के पीछे नहीं चलते थे। फिर भी, उसने अपने अगुआई के वरदानों के कारण पुरुषों और स्त्रियों दोनों का आदर प्राप्त किया। बाराक ने भी जो इस्राएल के उत्तरी वंशों की सेना का सेनापति था, जब दाबोरा ने उसे कनान पर आक्रमण करने की चुनौती दी उसकी सहायता माँगी। असल में, उसने दाबोरा की चुनौती इस शर्त पर ही स्वीकार की कि वह उसके संग चलेगी। हालाँकि यदि उसने कनानियों को हराया तो स्त्री की सहायता के कारण उसे कोई सम्मान नहीं मिलेनावाला था - फिर भी उसे दाबोरा की आवश्यकता थी। मिलकर उन्होंने शत्रु को हरा दिया। न्यायियों 5:7 में, उसे इस्राएल में "माता" कहा गया है। उसमें दिलचस्पी और साहस दोनों थे जिससे उसने सबका आदर पाया था। स्पष्ट रूप से, दाबोरा ने आदर का नियम चित्रित किया - वह अपने समय की सबसे शक्तिशाली अगुवा थी। इस्राएल के दूसरे नामी अगुवे उसके पीछे हुए थे।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

- **अपने अनुयायियों के साथ सम्बंध (न्यायियों** 4:6-8)

दाबोरा ने बाराक को अपने पास बुलाया और उसे अपने साथ काम करने के लिए नियुक्त किया। उसने बाराक के साथ सम्बंध स्थापित किया जिसे उसके साथ काम करने की आवश्यकता थी। उसने केवल उसे युद्ध में भेज नहीं दिया - परन्तु वह उसके साथ गई। "उस ने कहा, "निःसन्देह मैं तेरे संग चलूँगी...।"

- **उसके अनुयायियों के लिए मार्गचित्र (न्यायियों** 4:6-7)
  उसने बाराक को यूँ ही युद्ध करने नहीं भेजा, परन्तु उसने आक्रमण के लिए एक योजना बनाई। उसे आदेश देने के साथ-साथ, उसने निर्धारित किया कि युद्ध कब होना चाहिए, कहाँ होना चाहिए और इसे कौन करेगा। "उसने...बाराक को...बुलाकर कहा, "क्या इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा नहीं दी कि तू जाकर ताबोर पहाड़ पर चढ़...तब मैं याबीन के सेनापति सीसरा को रथों और भीड़भाड़ समेत...ले आऊँगा और उसको तेरे हाथ में कर दूँगा।"

- **अपने अनुयायियों की ओर क्रियाशीलता (न्यायियों** 4:8-10)
  वह उनकी ओर बहुत क्रियाशील थी जिनमें वह अपना जीवन लगा रही थी। वह उनकी आवश्यकताओं को समझती थी। जब बाराक ने उसे बताया कि योजना को पूरा करने के लिए उसे किस चीज की आवश्यकता है - उसने इसे दे दिया। उसने केवल योजनाओं को बनाया ही नहीं बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए क्रिया भी की।
  "बाराक ने उससे कहा, "यदि तू मेरे संग चलेगी तो मैं जाऊँगी, नहीं तो नहीं जाऊँगा"...तब दाबोरा उठकर बाराक के संग केदेश को गई।"

- **अपने अनुयायियों के लिए सम्मान (न्यायियों** 4:14)
  पहले उसने उनके लिए सम्मान दिखाया जो उसके अधीन थे। सम्मान ,सदा दो तरीकों से कार्य करता है। सूचित आक्रमण के दिन उसने विश्वास के साथ कहाः "आज वह दिन है जिसमें यहोवा सीसरा को तेरे हाथ में कर देगा।" उसने उनको जो उसके लिए काम करते थे श्रेय और भरोसा दोनों दिया।
  "तब दाबोरा ने बाराक से कहा, "उठ, क्योंकि आज वह दिन है जिसमें यहोवा सीसरा को तेरे हाथ में कर देगा। क्या यहोवा तेरे आगे नहीं निकला है।"

- **अपने अनुयायियों के लिए साधन (न्यायियों** 4:6-7)
  जो काम वह दूसरों को करने के लिए बुला रही थी उसके लिए उसने आवश्यक औजार प्रदान किए। बाराक को युद्ध में जाने का आदेश देने के तुरन्त बाद उसने कहा कि वह उसे इस्राएल के दो वंशों में से 10,000 पुरुष दे रही है। बाराक के पास जीतने के लिए हर साधन था।
  "...और नप्तालियों और जबूलूनियों में के दस हज़ार पुरुषों को संग ले जा...(परमेश्वर) सीसरा को...तेरे हाथ में कर दूँगा।"

- **अपने अनुयायियों की ओर संकल्प (न्यायियों** 4:9, 14)
  वह साहसी थी और उनके जीवनों पर परमेश्वर के बुलावे से सम्बंधित दृढ़ विश्वास रखती थी। आदर पाने का एक कारण यह था कि उसने बाराक के साथ बड़ी सरलता से बाते कीं, और जैसा था वैसा उसे बताया। उसने बाराक को बताया कि यदि उसने युद्ध में सहायता ली तो उसे सम्मान बाँटना पड़ेगा।
  "उस ने कहा, "निःसन्देह मैं तेरे संग चलूँगी; तौभी इस यात्रा से तेरी कुछ बड़ाई न होगी, क्योंकि यहोवा सीसरा को एक स्त्री के अधीन कर देगा।"

पवित्रशास्त्र में नियम...

"...चुपचाप रहने और अपना-अपना कामकाज करने और अपने अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो; ताकि बाहरवालों से आदर प्राप्त करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो।" (1 थिस्सलुनीकियों 4:11-12)
"और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिसके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा।" (यहोशू 24:15)

8 – अन्तर्ज्ञान का नियम

⇒ **अगुवे हर चीज का मूल्याँकन एक अगुआई पूर्वग्रह के साथ करते हैं।**

उदाहरणः यित्रो
मूल-पाठः निर्गमन 18:17-27

मूसा अपने समय में इस्राएल का एक निर्विवाद अगुवा था, परन्तु जब उसके ससुर यित्रों ने उससे उसके तरीकों के विषय में बात की तब वह अन्तर्ज्ञान के नियम को उपयोग में नहीं ला रहा था। यित्रों ने परिस्थिति को एक अगुवे की नज़र से देखा और मूसा जिस तरीके से लोगों की आवश्यकताओं को पूरा कर रहा था उसे व्यवस्थित कर दिया। यदि मूसा सबकुछ आप करते रहता जैसा वह कर रहा था, तब यित्रो क्षितिज पर मूसा के लिए थकावट और लोगों के लिए परेशानी देख सकता था। यित्रों ने मूसा को उसके साथ काम करने के लिए "प्रचीनों" को चुनने और तैयार करने की सलाह दी। तब वह छोटे मामलों को उन्हें दे सकता था जिससे बड़े मामलों से निपटने के लिए उसके पास अधिक समय और शक्ति बची रहती। यित्रों ने अन्तर्ज्ञान से देखा कि जिस प्रकार मूसा कर रहा था कभी भी काम पूरा नहीं कर पाएगा। उसे बदलना था। यित्रो की अगुआई पूर्वग्रह ने सबको जीतने में सहायता की।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

अगुवे जो इस नियम को काम में लाते हैं उनके पास उसे "पढ़ने" की योग्यता होती है जो उनके आपपास हो रहा होता है:

1. यित्रो परिस्थितियों को पढ़ सकता था।

लाल समुद्र पार करने के बाद, उसकी पत्नी, बच्चे और ससुर उसके पास आए थे। मूल-पाठ के अनुसार, **दूसरे दिन** - यित्रो परिस्थिति की थाह ले रहा था और देख रहा था कि मूसा किस प्रकार इस्राएलियों की अगुआई कर रहा है। उसने पहचाना कि मूसा दक्षता से काम नहीं कर रहा है, और कहा:
"क्या कारण है कि तू अकेला बैठा रहता है, और लोग भोर से साँझ तक तेरे आसपास खड़े रहते हैं ? जो काम तू करता है, वह अच्छा नहीं।"

2. यित्रो प्रवृत्तियों को पढ़ सकता था।

यित्रो देख सकता था कि अगरचे मूसा अपने वर्तमान तरीके से काम चला भी ले, तो भी यह सदा चलता नहीं रहेगा। जनसंख्या बढ़ेगी - और उनकी परेशानियाँ भी बढ़ेंगी। यित्रो ने प्रवृत्तियों को पढ़ा, और देखा कि इससे पहले यह बेहतर हो यह खराब होती जाएगी। उसने कहा, "इससे तू क्या, वरन् ये लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय थक जाएँगे, क्योंकि यह काम तेरे लिए बहुत भारी है...।"

3. यित्रो साधनों को पढ़ सकता था।

जैसे यित्रो ने मूसा से बातें कीं, वह इस्राएलियों की विशाल संख्या को देख रहा था। उसने देखा होगा कि उन लोगों में बहुत से वरदान हैं जिन्हें छूआ नहीं गया है, क्योंकि उसने मूसा को उन में से अगुवों को चुनने के लिए कहा - और वे अधिकाँश झगड़ों से निपट सकते थे। उसने उपलब्ध निपुणता और साधनों को देखा, और उन्हें उपयोग में लाया।

4. यित्रो लोगों को पढ़ सकता था।

यित्रो ने लोगों की योग्यताओं को भी पढ़ा। वह उनके वरदानों और उनकी अगुआई के स्तर को पहचानता जान पड़ता था, क्योंकि उसने मूसा को चुने हुए अगुवों को हज़ार-हज़ार, सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस मनुष्यों पर रखने को कहा था। प्रकट है, यह वितरण उन अगुवों के वरदानों और निपुणताओं पर आधारित था। इस योजना ने काम किया क्योंकि काम बराबर नहीं बाँटा गया था परन्तु हर अगुवे की क्षमता के अनुसार था।

5. **यित्रो अगुवे को पढ़ सकता था।**

अधिकाँश मामलों में, इसका अर्थ अपने आप को पढ़ सकने की योग्यता है। यित्रो के मामले में, इसका अर्थ मूसा की अगुआई की योग्यता और शैली पढ़ सकने की योग्यता था। उसने मूसा की आवश्यकता के लिए सहायता पर आधारित योजना बनाई। उसने उन अगुवों की विशेषताओं और उनके काम के विवरण के विषय में भी बताया जिन्हें मूसा को चुनना था। तब, क्योंकि वह मूसा को जानता था, उसने कहा: "यदि तू यह उपाय करे, और परमेश्वर तुझ को ऐसी आज्ञा दे, तो तू ठहर सकेगा, और ये सब लोग अपने स्थान को कुशल से पहुँच सकेंगे।"

<u>यित्रो के जीवन में इस नियम का साराँश...</u>

1. **यित्रो सुधार लाया था क्योंकि वह मूसा से भिन्न देख सकता था। (निर्गमन** 18:17-18)
   "मूसा के ससुर ने उससे कहा, "जो काम तू करता है, वह अच्छा नहीं। इससे तू क्या, वरन् ये लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय थक जाएँगे, क्योंकि यह काम तेरे लिए बहुत भारी है; तू इसे अकेला नहीं कर सकता।"

2. **यित्रो ने दिशा प्रदान की क्योंकि वह मूसा से आगे देख सकता था। (निर्गमन** 18:19-20)
   "इसलिए अब मेरी सुन ले, मैं तुझ को सम्मति देता हूँ, और परमेश्वर तेरे संग रहे। तू इन लोगों के लिए परमेश्वर के सम्मुख जाया कर, और इनके मुकद्दमों को परमेश्वर के पास तू पहुँचा दिया कर। इन्हें विधि और व्यवस्था प्रगट कर करके, जिस मार्ग पर इन्हें चलना, और जो जो काम इन्हें करना हो, वह इनको जता दिया कर।"

3. **यित्रो ने ढाँचा प्रदान किया क्योंकि वह मूसा से स्पष्ट देख सकता था। (निर्गमन** 18:21-22)
   "फिर तू इन सब लोगों में से ऐसे पुरुषों को छाँट ले, जो गुणी, और परमेश्वर का भय मानने वाले, सच्चे, और अन्याय के लाभ से घृणा करने वाले हों; और उनको हज़ार-हज़ार, सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस मनुष्यों पर प्रधान नियुक्त कर दे...सब बड़े बड़े मुकद्दमों को तो तेरे पास ले आया करें, और छोटे छोटे मुकद्दमों का न्याय आप किया करें।"

4. **यित्रो ने सहयोग प्रदान किया क्योंकि वह मूसा से दूर तक देख सकता था। (निर्गमन** 18:23)
   "तब तेरा बोझ हलका होगा, क्योंकि इस बोझ को वे भी तेरे साथ उठाएँगे। यदि तू यह उपाय करे, और परमेश्वर तुझ को ऐसी आज्ञा दे, तो तू ठहर सकेगा, और ये सब लोग अपने स्थान को कुशल से पहुँच सकेंगे।"

5. **यित्रो ने विश्वास प्रदान किया क्योंकि वह मूसा से अधिक देख सकता था। (निर्गमन** 18:24-27)
   अपने ससुर की यह बात मानकर मूसा ने उसके सब वचनों के अनुसार किया। अतः उसने सब इस्राएलियों में से गुणी पुरुषों को चुनकर उन्हें...लोगों के ऊपर प्रधान ठहराया...तब मूसा ने अपने ससुर को विदा किया, और उसने अपने देश का मार्ग लिया।"

यह नियम माँग करता है कि अगुवा बने...

- एक कलाकार - उन्हें उनके अनुयायियों के भीतर चित्र बनाने चाहिए।
- एक भविष्यवादी - उन्हें भविष्य को अपने अनुयायियों से अधिक स्पष्ट देखना चाहिए।
- एक संवाददाता - उन्हें एक उद्देश्य के लिए जिसमें वे चाहते हैं दूसरे जुड़ें बोलना चाहिए।

पवित्रशास्त्र में नियम...

"इस्साकारियों में से जो समय को पहचानते थे कि इस्राएल को क्या करना उचित है...उनके सब भाई उनकी आज्ञा में रहते थे।"

9 – चुम्बकत्व का नियम

⇒ **<u>आप जैसे हो वैसे को आकर्षित करोगे।</u>**

उदाहरणः एल्लियाह
मूल-पाठः 2 राजा 2:1-14

एल्लियाह अपने समय का सबसे दृश्य भविष्यद्वक्ता था। वह अपने उत्साह के कारण बहुत प्रेम और घृणा किया जाता था। यह उचित था कि उसे एक आग का रथ उठा ले जाता - क्योंकि उसका सारा जीवन गतिशील और आग से भरा हुआ था। एल्लियाह ने चुम्बकत्व का जीवन जीया था। उसने जब कर्मेल पर्वत पर बाल के नबियों का सामना किया, तब उसने हज़ारों की भीड़ को आकर्षित किया था। उसने पुरुषों के एक दल को आकर्षित किया जो उसकी भविष्यद्वाणी की सेवा के विद्यार्थी बने। उसने इन स्थानापन्न पुरुषों से "भविष्यद्वक्ताओं का स्कूल" बनाया था (आय. 7)। अन्त में, उसने चेलों के एक छोटे झुँड को आकर्षित किया। उनमें से प्रमुख उसका आश्रित, एलीशा था - एल्लियाह के चुम्बकत्व का अन्तिम उदाहरण। एलीशा भी उसी कपड़े में से बना था जिसमें से एलिय्याह बना था - और भविष्यद्वक्ता के उठा लिए जाने से पहले एलीशा ने निवेदन किया कि एलिय्याह की आत्मा का दूना भाग उसे मिले। जैसे उसने उस स्थान से एल्लियाह की चादर उठाई - उसने उसी प्रकार का उत्तेजक प्रचार और चमत्कार करते हुए, वैसी ही सेवा आरम्भ की। एलिय्याह जो अगुवा था उसने अपने हृदय के अनुसार एक नौसिखिया को आकर्षित किया था।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

1. हर अगुवे में परिमाण के अनुसार चुम्बकत्व होता है।
2. एक अगुवे का चुम्बकत्व दूसरों को बौद्धिक, भावात्मिक या सांकल्पिक रूप से प्रभावित कर सकता है।
3. चुम्बकत्व अपने आप में न तो अच्छा और न बुरा है। एक अगुवा इससे क्या करता है यह उस पर निर्भर करता है।
4. एक अगुवे का चुम्बकत्व स्थायी नहीं है। इसे बढ़ाया, बनाया और परिपक्व किया जा सकता है।
5. एक अगुवे का चुम्बकत्व सम्मानार्थ और सदृश दोनों प्रकार के अनुयायियों को आकर्षित करेगा।

<u>एलिय्याह हमें सिखाता है कि कौन सी बातें चुम्बकीय सम्बंध बनाती हैं:</u>

1. **आपसी आकर्षण** (**2 राजा** 2:2, 4, 6)
   हम उन अगुवों की ओर आकर्षित होते हैं जिनके समान संदर्श होते हैं। जब हम किसी के समान होते हैं, तब हम उन्हें पसन्द करने लगते हैं। एलीशा एलिय्याह की ओर इतना आकर्षित था कि वह सब जगह उसके पीछे पीछे चलता था।
   "एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "यहोवा मुझे बेतेल तक भेजता है इसलिए तू यहीं ठहरा रह।" एलीशा ने कहा, "यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का।"

2. **आपसी दर्शन** (**1 राजा** 19:19-20)
   दोनो पुरुषों का इस्राएल को यहोवा के पास फेर लाने का सामान्य दर्शन था। जब एलिय्याह को उसका आश्रित मिला, उसे अपनी चादर उस पर डाल दी, और एलीशा अपने पशु छोड़ कर उसके पीछे चलने लगा।
   "तब वह वहाँ से चल दिया, और शापात का पुत्र एलीशा उसे मिला जो बारह जोड़ी बैल अपने आगे किए हुए स्वयं बारहवीं के साथ होकर हल जोत रहा था। उसके पास जाकर एलिय्याह ने अपनी चादर उस पर डाल दी। तब वह बैलों को छोड़कर एलिय्याह के पीछे दौड़ा और कहने लगा, "मुझे अपने माता-पिता को चूमने दे, तब मैं तेरे पीछे चलूँगा।"

3. **आपसी अपेक्षा** (**2 राजा** 2:9-10)
   अगुवे और चेले से आपसी पूर्वाभास, वचनबद्धता और उत्तरदायित्व अत्यावश्यक हैं। एलीशा में उस आत्मा का दुगुना भाग जो एलिय्याह में थी, पाने की इच्छा थी और उसने उसकी माँग भी की।
   "...एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "इस से पहले कि मैं तेरे पास से उठा लिया जाऊँ, जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिए करूँ वह माँग।" एलीशा ने कहा, "तुम में जो आत्मा है, उसका दूना भाग मुझे मिल जाए।"

4. **आपसी योगदान** (**1 राजा** 19:21)

दोनों पुरुष कुछ न कुछ लाए जिससे दूसरे की कीमत बढ़ी। एलिय्याह शिक्षक था, परन्तु एलीशा बलिदानपूर्वक उसके पीछे हो लिया, और उसके लिए सेवा के काम किए।
"तब वह उसके पीछे से लौट गया, और एक जोड़ी बाल लेकर बलि किए... तब वह कमर बाँधकर एलिय्याह के पीछे चला, और उसकी सेवा टहल करने लगा।"

5. **आपसी मेल-जोल** (2 **राजा** 2:11)
हम अगुवों के प्रति ईमानदार रहते हैं जब हमें अनुभव होता है कि हम में सम्मानार्थ व्यक्तित्व हैं। एलिय्याह और एलीशा दोनों भावपूर्ण क्रिया के पुरुष थे। हम इसे एलिय्याह के बवण्डर के साथ चले जाने में देखते हैं। "वे चलते चलते बातें कर रहे थे, कि अचानक एक अग्निमय रथ और अग्निमय घोड़ों ने उनको अलग अलग किया, और एलिय्याह बवंडर में होकर स्वर्ग पर चढ़ गया। और उसे एलीशा देखता और पुकारता रहा, "हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्राएल के रथ और सवारो!"

6. **आपसी प्रतिक्रियाशीलता** (2 **राजा** 2:9-14)
रवैया अतिआवश्यक है। क्या दोनों की ओर से दूसरे के लिए एक प्रतिक्रियाशील रवैया है?
दोनों पुरुषों ने निवेदन पर एक दूसरे की सेवा की: एलीशा ने अपनी सेवा दी, एलिय्याह ने अपनी चादर।
"...एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "इस से पहले कि मैं तेरे पास से उठा लिया जाऊँ, जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिए करूँ वह माँग।" एलीशा ने कहा, "तुम में जो आत्मा है, उसका दूना भाग मुझे मिल जाए।" एलिय्याह ने कहा, "तू ने कठिन बात माँगी है, तौभी यदि तू मुझे उठा लिए जाने के बाद देखने पाए तो तेरे लिए ऐसा ही होगा... फिर उसने एलिय्याह की चद्दर उठाई जो उस पर से गिरी थी, और वह लौट गया, और यरदन के तट पर खड़ा हुआ।"

पवित्रशास्त्र में नियम...

"उनके पार पहुँचने पर एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "इस से पहले कि मैं तेरे पास से उठा लिया जाऊँ, जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिए करूँ वह माँग।" एलीशा ने कहा, "तुम में जो आत्मा है, उसका दूना भाग मुझे मिल जाए।" (2 राजा 2:9)
"मुझे प्रभु यीशु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त भेजूँगा... क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे।" (फिलिप्पियों 2:19-20)

10 – संबंध का नियम

⇒ **इससे पहले वे हाथ माँगें अगुवे हृदय को छूते हैं।**

उदाहरण: रहूबियाम
मूल-पाठ: 1 राजा 12:1-16

जब सुलेमान मरा, रहूबियाम उसका उत्तराधिकारी होने के लिए कतार में था। यदि उसने संबंध के नियम का पालन किया होता तो वह सारे इस्राएल पर सफलतापूर्वक राज्य कर सकता था। परन्तु जब यारोबाम और सारा इस्राएल उससे आग्रह करने के लिए आए कि वह उनका बोझ हलका करे, वह उनसे कोई वास्त नहीं रखना चाहता था। वह अधिकार का भूखा था, और सोचता था कि नए राजा के रूप में, उसे अपना राजनीतिक पेशियाँ आकुंचन करना और सबको प्रभावित करना होगा। उसके पिता ने लोगों के जूए को यहाँ तक कठिन कर दिया था कि वे विद्रोह पर उतर आए थे। लोगों ने रहूबियाम के साथ समझौता करना चाहा और प्रतिज्ञा की कि यदि वह बोझ हलका करेगा तब वे सदा उसकी सेवा करेंगे। उसके सलाहकार भी इससे सहमत हुए कि ऐसा करना बुद्धिमानी होगा। परन्तु उसने उनकी सम्मति अस्वीकार की और लगभग सबको खो दिया। बारह में दल वंशों ने विद्रोह किया और यारोबाम के पीछे हो लिए, और राज्य का बँटवारा हो गया। रहूबियाम इसका स्पष्ट उदाहरण है कि किस प्रकार प्रेम और अधिकार को एक साथ चाहना नामुमकिन है। वह संबंध के नियम के पालन में असफल रहा।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

<u>रहूबियाम इस नियम का पालन करने में असफल क्यों रहा?</u>

1. **क्योंकि जब तक अगुवे लोगों को भावनाओं से न हिला लें वे उनको कार्य करने के लिए नहीं हिला सकते हैं।**
   रहूबियाम का तटस्थ और चिड़चिड़ा स्वभाव था। जब राजा सुलेमान के सलाहकारों ने उसे बोझ हलका करने की सलाह दी, उसने सुना नहीं। उसे ऐसे सलाहकारों की खोज थी जो उसे वह बात बताएँ जो वह सुनना चाहता था। वह लोगों की आवश्यकता समझ न सका या उनके कल्याण की ओर दिलचस्पी न दिखा सका।

2. **क्योंकि इससे पहले अगुवे दूसरों से देने की माँग करें, उन्हें पहले देना चाहिए।**
   रहूबियाम को महल के सलाहकारों ने इस प्रकार सलाह दी थी: "यदि तू अभी प्रजा के लोगों का दास बनकर उनके अधीन हो और उनसे मधुर बातें कहे, तो वे सदैव तेरे अधीन बने रहेंगे।" उसने स्वार्थीपन से इस बुद्धिमान, भक्त सलाह को सुनने से इन्कार किया।

3. **क्योंकि अगुवों को लोगों के साथ, एक बड़ी सभा में भी, एक-एक करके संबंध बनाना चाहिए।**
   रहूबियाम लोगों के साथ बड़ी सभा में ही बात करता था, और तब भी - कठोर शब्दों के साथ ही। उसने उनकी राजभक्ति पर दावा किया। उसने उन्हें अनुशासन की धमकी दी। उसकी बातें "भीड़" के लिए, न कि व्यक्तियों के लिए थीं। उसने किसी के साथ व्यक्तिगत संबंध नहीं बनाया।

4. **क्योंकि अगुवों को सिर से पहले हृदय को छूना चाहिए – संबंध परिणाम से पहले आता है।**
   जब यारोबाम और सारी सभा ने उससे उनका निवेदन सुनने का आग्रह किया, उसने उन्हें टाल दिया। उसने उन्हें तीन दिन बाद आने को कहा। उसने उन्हें फैसले के साथ संघर्ष करते देखने नहीं दिया। वह उनकी ओर कभी भी स्नेही, मानव या छेद्य नहीं था। वह एक ठण्डा मुर्गा था।

5. **क्योंकि अगुवों को दूसरों के साथ संबंध बनाने में पहल करनी चाहिए, उनके करने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए।**
   इस्राएल के साथ यह सारा सामना इसलिए हुआ क्योंकि यारोबाम और लोग मिस्र से आकर इसकी माँग करने लगे थे। रहूबियाम ने उनके साथ बातचीत की पहल नहीं की थी। वह बैठा और उनके आने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने पहल करने के बजाय प्रतिक्रिया की। और वह किसी के साथ भी संबंध नहीं बना सका।

<u>रहूबियाम में सात प्रमुख समस्याएँ थीं...</u>

1. सीख देने के बजाय, उसे सुनना चाहिए था।
2. लालच दिखाने के बजाय, उसे उदारता दिखानी चाहिए थी।
3. अपना नाम बचाने के बजाय, उसे अपनी सच्चाई बचानी चाहिए थी।
4. नियंत्रण दिखाने के बजाय, उसे करुणा दिखानी चाहिए थी।
5. एक स्वार्थी हृदय बनाने के बजाय, उसे एक सेवक का हृदय बनाना चाहिए था।
6. अपनी आँखों से देखने के बजाय, उसे दूसरों की आँखों से देखना चाहिए था।
7. अधिकार के साथ प्रेम करने के बजाय, उसे लोगों के साथ प्रेम करना चाहिए था।

पवित्रशास्त्र में नियम...
"...यद्यपि मुझे मसीह में बड़ा साहस है कि जो बात ठीक है, उसकी आज्ञा तुझे दूँ...यह और भी भला जान पड़ा कि प्रेम से विनती करूँ।" (फिलेमोन 8-9)

11 – भीतरी समुदाय का नियम

⇒ **एक अगुवे की अन्तःशक्ति जो उसके सबसे निकट हैं उनसे निर्धारित होती है।**

उदाहरणः दाऊद और उसके शूरवीर
मूल-पाठः 1 इतिहास 11:10-25, 12:16-22

राजा शाऊल के पीछे चलने के समय के दौरान, दाऊद ने अपने पास कई सैकड़ों पुरुषों को एकत्र किया था जो शूरवीर थे। वे उसके प्रति वफादार थे तब भी जब उन्हें उनके जीवनों की कीमत देनी पड़ती थी। एक अवसर पर, उसके भीतरी समुदाय के तीन पुरुषों ने बैतलहम में शत्रु की छावनी के पीछे स्थित एक कुएँ में से पानी लाने में अपनी जानें जोखिम में डालीं थीं। जब दाऊद प्यासा था, और एक विशेष स्थान से पानी पीना चाहता था - उसे मिल गया। जब वह शत्रु की सेना के खतरे में था - उसके कुछ प्रमुख शूरवीरों ने उसकी रक्षा करने के लिए हर एक ने 300 पुरुषों को मारा था। पक्षत्यागियों में से कई जो दाऊद के साथ जुड़ गए थे प्रधान थेः "इन्होंने लुटेरों के दल के विरुद्ध दाऊद की सहायता की, क्योंकि ये सब शूरवीर थे, और सेना के प्रधान भी बन गए।" निःसन्देह परमेश्वर राजा होने के लिए दाऊद के लिए परिस्थितियाँ पैदा कर रहा था। मनुष्य की दृष्टि से, दाऊद की सफलता उसके वफादार, समर्पित और प्रतिभाशाली "भीतरी समुदाय" के कारण थी।

अपना भीतरी समुदाय चुनते समय, नीचे दिए गए गुणों की खोज में रहोः

प्रभावशाली
प्रशिक्षण
नेटवर्कर
अधिकार देना
उपायकुशल
चरित्र
अन्तर्ज्ञानी
प्रतिक्रियाशील
सुयोग्य
वफादार
ओजस्वी

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

1. **राजा बनने से पहले दाऊद अपने कठिन समयों में अपना भीतरी समुदाय बनाने लगा था।**
   (1 **इतिहास** 12:1-2; 1 **शमूएल** 22:1-2)
   "जब दाऊद सिकलग में कीश के पुत्र शाऊल के कारण छिप रहा था, तब ये उसके पास वहाँ आए, और ये उन वीरों में से थे जो युद्ध में उसके सहायक थे।"
   "दाऊद वहाँ से चला, और बच कर अदुल्लाम की गुफा में पहुँच गया... और जितने संकट में पड़े थे, और जितने ऋणी थे, और जितने उदास थे, वे सब उसके पास इकट्ठे हुए; और वह उनका प्रधान हुआ।"

2. **दाऊद ने अपने भीतरी समुदाय के लिए बहु-गुणी और बहुमुखी अगुवों को चुना।** (1 **इतिहास** 12:2)
   "वे धनुर्धारी थे, जो दाहिने-बायें, दोनों हाथों से गोफन के पत्थर और धनुष के तीर चला सकते थे...।"

3. **दाऊद ने भीतरी समुदाय में उनके गुणों के अनुसार जिम्मेवारियाँ बाँट दी थीं।** (1 **इतिहास** 12:16-18)

"कई एक बिन्यामीनी और यहूदी भी दाऊद के पास गढ़ में आए...इसलिए दाऊद ने उनको रख लिया, और अपने दल के मुखिया ठहरा दिए।"

4. **दाऊद ऐसे पुरुषों की खोज में था जो अपवाद-स्वरूप साहसी थे।** (1 **इतिहास** 12:8, 15)
"तब ये गादी जो शूरवीर थे, और युद्ध विद्या सीखे हुए और ढाल और भाला काम में लानेवाले थे, और उनके मुँह सिंह के से और वे पहाड़ी मृग के समान वेग से दौड़नेवाले थे... ये ही वे हैं, जो पहले महिने में जब यरदन नदी सब किनारों के ऊपर ऊपर बहती थी, तब उसके पास उतरे; और पूर्व और पश्चिम दोनों ओर के सब तराई के रहनेवालों को भगा दिया।"

5. **दाऊद ने भीतरी समुदाय के लिए उन पुरुषों को चुना जो उसके उद्देश्य की ओर वफादार होंगे।**
(1 **इतिहास** 12:18)
"हे दाऊद हम तेरे हैं; हे यिशै के पुत्र, हम तेरी ओर के हैं, तेरा कुशल ही कुशल हो और तेरे सहायकों का कुशल हो, क्योंकि तेरा परमेश्वर तेरी सहायता किया करता है।"

6. **दाऊद ने अपने भीतरी समुदाय में उनको ही लिया जो असली में वहाँ होना चाहते थे।**
(1 **इतिहास** 12:38)
"ये सब युद्ध के लिए पाँति बाँधनेवाले दाऊद को सारे इस्राएल का राजा बनाने के लिए हेब्रोन में सच्चे मन से आए...।"

7. **दाऊद ने अपने भीतरी समुदाय की बलिदान-संबंधी सेवा का सम्मान किया और इसके लिए उनका आदर किया।**
(1 **इतिहास** 11:15-19)
"क्या मैं इन मनुष्यों का लहू पीऊँ जिन्होंने अपने प्राणों पर खेला है? ये तो अपने प्राण पर खेल कर उसे ले आए हैं। इसलिए उसने वह पानी पीने से इनकार किया। इन तीन वीरों ने ये ही काम किए।"

पवित्रशास्त्र में नियम...
"बुद्धिमानों की संगति कर, तब तू भी बुद्धिमान हो जाएगा, परन्तु मूर्खों का साथी नष्ट हो जाएगा।"
(नीतिवचन 13:20)
"बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।" (1 कुरिन्थियों 15:33)

12 – अधिकार देने का नियम

⇒ **केवल सुरक्षित अगुवे ही दूसरों को अधिकार देते हैं।**

अनेक अगुवे असुरक्षित अनुभव करते हैं और इसलिए दूसरों को बढ़ा, प्रशिक्षित या अधिकार नहीं दे पाते हैं। वे उद्धत होते हैं। जिनके साथ परमेश्वर ने आपको रखा है उनके साथ मेल करो।

उदाहरण: बरनबास
मूल-पाठ: प्रेरितों 9:26-31

जब तरसुस के शाऊल का धर्मान्तरण हुआ था, तब यरूशलेम के सब चेले उससे डरते थे। कोई भी खतरा मोल नहीं लेना और उसको सहयोग नहीं देना चाहता था। वे संदिग्ध थे। परन्तु बरनबास ने उसे स्वीकार किया और, उसके परिवर्तन की सच्चाई का आश्वासन देते हुए, उसे प्रेरितों के पास ले गया। यूनानी पाठ का अर्थ है कि "उसने शाऊल को हाथ से पकड़ा" और प्रेरितों के पास ले गया। बरनबास जो सम्भव है बारहवाँ प्रेरित चुने जाने के लिए हार गया था, पौलुस का सबसे बड़ा प्रोत्साहन अग्रणी था - और मिशनरी कलीसिया स्थापक के रूप में एक साथ काम करने तक उसका शिक्षक भी था। तब भी जब पौलुस अनुग्रह और

अधिकार में उससे आगे बढ़ गया - बरनबास उसे अधिकार देता और प्रोत्साहित करता रहा। इस सत्य का कितना स्पष्ट उदाहरण है कि केवल सुरक्षित अगुवे ही दूसरों को अधिकार दे सकते हैं। वह यूहन्ना मरकुस के साथ-साथ अन्ताकिया के दूसरे नौजवान अगुवों को भी अधिकार देता रहा। कलीसिया के इतिहास से जितना हम बता सकते हैं, सम्भवत: पौलुस के अतिरिक्त बरनबास ने सेवा के लिए अधिक पास्टरों और अगुवों को अधिकार दिया और तैयार किया।
जो अगुवे जानते हैं कि परमेश्वर उनका मूल्य निर्धारित करता है, वे दूसरों को नहीं परन्तु परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए जीएँगे।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

<u>बरनबास ने पौलुस को कैसे अधिकार दिया? उसने मूलतत्त्वों को ठीक से किया...</u>

1. **सुरक्षित सर्वसम्मति से पहले उसने पौलुस का विश्वास किया। (प्रेरितों** 9:26-27)
   बरनबास ने उस समय की प्रतीक्षा नहीं की जब पौलुस का विश्वास करना राजनीति के रूप से सही थी। किसी दूसरे के आगे बढ़कर खतरा मोल लेने से पहले उसने उसका विश्वास किया। उसने सीधे पौलुस से उसके भविष्य के विषय में स्वीकृति और विश्वास प्रकट किया, जिससे पौलुस को समूह में घुसने का अवसर मिला।
   "यरूशलेम में पहुँचकर उसने चेलों के साथ मिल जाने का प्रयत्न किया; सब उससे डरते थे, क्योंकि उनको विश्वास न होता था कि वह भी चेला है। परन्तु बरनबास ने उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उनको बताया...।"

2. **वह पौलुस को महत्त्वपूर्ण सम्पर्कों के सामने ले गया। (प्रेरितों** 9:27)
   एक वरदान जो उसने पौलुस को दिया वह था प्रेरितों के सामने उसका परिचय करवाना और उसका प्रतिनिधित्व करना। बरनबास ने तब भी उसे विश्वसनीयता प्रदान की जब वह आप इसे अपने लिए कमाने के लिए अधिक पुराना नहीं हुआ था। उसने पौलुस को उन अगुवों के साथ मिला दिया जो उसकी सहायता कर सकते थे।
   "बरनबास ने उसे...प्रेरितों के पास ले जाकर उनको बताया कि इसने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा, और उसने इससे बातें कीं; फिर दमिश्क में इसने कैसे हियाब से यीशु के नाम से प्रचार किया।"

3. **उसने कड़ी आलोचना के सामने पौलुस का बचाव किया। (प्रेरितों** 9:27)
   बरनबास ही एक मात्र व्यक्ति था जिसने पौलुस की रिपोर्ट पर विश्वास किया, और यरूशलेम में दूसरों के सामने उसके धर्मान्तरण का बचाव किया।जब दूसरे संदिग्ध और आलोचना कर रहे थे, उसने "बताया कि इसने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा, और उसने इससे बातें कीं; फिर दमिश्क में इसने कैसे हियाब से यीशु के नाम से प्रचार किया।"
   "...सब उससे डरते थे, क्योंकि उनको विश्वास न होता था कि वह भी चेला है...परन्तु बरनबास ने... उनको बताया कि इसने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा...फिर दमिश्क में इसने कैसे हियाब से यीशु के नाम से प्रचार किया।"

4. **उसने पौलुस को उसकी विशेष योग्यताओं, वरदानों और निपुणताओं में सेवा करने के लिए सज्जित किया। (प्रेरितों** 9:28-29)
   बरनबास ने पौलुस को यरूशलेम में स्वेच्छा से घूमने, और पवित्रशास्त्र की सच्चाई को सिखाने और वाद-विवाद करने दिया। पौलुस के वरदानों का शीघ्र की पता लगाया गया और उसे उन वरदानों को प्रयोग करने दिया गया - उसने मसीही आध्यात्मिक विद्या का कोई कोर्स अभी नहीं किया था। प्रकट है कि पौलुस के साहस के साथ, इतनी शीघ्रता से बोलने में बरनबास का हाथ था।
   "वह उनके साथ यरूशलेम में आता-जाता रहा और निधड़क होकर प्रभु के नाम से प्रचार करता था; और यूनानी भाषा बोलनेवाले यहूदियों के साथ बातचीत और वाद-विवाद करता था...।"

5. **उसने गम्भीर चुनौतियों के बीछ पौलुस को सहयोग दिया। (प्रेरितों** 9:29-30)
   चौथा वरदान जो बरनबास ने पौलुस को दिया वह आश्चर्यजनक अनुग्रह और सहयोग था। वह यरूशलेम में पौलुस का सबसे बड़ा प्रेमी बन गया। जब यरूशलेम में पौलुस के जीवन को खतरा था तब उसने उसे भाग जाने में सहायता की। जब वे अन्ताकिया से उनकी पहली मिशनरी यात्रा में निकले थे तो उसने उसकी सेवा और बुलावे को समर्थन दिया।

"और (पौलुस) यूनानी भाषा बोलनेवाले यहूदियों के साथ बातचीत और वाद-विवाद करता था; परन्तु वे उसे मार डालने का यत्न करने लगे। यह जानकर भाई उसे कैसरिया ले आए, और तरसुस को भेज दिया।"

बरनबास की अधिकार देने की सेवा पर टिप्पणियाँ:

1. **उसने नए विश्वासियों को अधिकार दिया, उन्हें विश्वास बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। प्रोत्साहन देनेवाला। (प्रेरितों** 11:23)
   "वह वहाँ पहुँचकर और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ, और सब को उपदेश दिया कि तुम मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो।"

2. **उसने कई लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए अधिकार दिया। (प्रेरितों** 11:24)
   "वह एक भला मनुष्य था, और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था; और अन्य बहुत से लोग प्रभु में आ मिले।"

3. **उसने यूहन्ना मरकुस की मिशनरी असफलता के बाद भी उसे अधिकार दिया। (प्रेरितों** 15:37-39)
   "तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का विचार किया। परन्तु पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उनसे अलग हो गया था, और काम पर उनके साथ न गया, साथ ले जाना अच्छा न समझा। अतः ऐसा विवाद उठा कि वे एक दूसरे से अलग हो गए; और बरनबास, मरकुस को साथ लेकर जहाज पर साइप्रस चला गया।" लोगों को दूसरा अवसर दो।

4. **उसने सारे साइप्रस और गलातिया में अन्य जातियों को मसीह की ओर फिरने के लिए अधिकार दिया। (प्रेरितों** 13)
   "अवश्य था कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता; परन्तु जब तुम उसे दूर हटाते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं। क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है, 'मैं ने तुझे अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराया है, ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो।'"

5. **उसने नई कलीसियाओं में एल्डर नियुक्त करके उन्हें अधिकार दिया। (प्रेरितों** 14:23)
   "और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिए प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्होंने विश्वास किया था।"

6. **उसने उनकी मिशन प्रयत्नों का विवरण देकर अपनी घरेलू कलीसिया को अधिकार दिया। (प्रेरितों** 14:27)
   "वहाँ पहुँचकर उन्होंने कलसिया इकट्ठी की और बताया कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे बड़े-बड़े काम किए, और अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया।"

7. **उसने पहली कलीसिया की समिति को यह समझने का अधिकार दिया कि परमेश्वर अन्यजातियों में क्या-क्या कर रहा है। (प्रेरितों** 15:12, *22*, *25*)
   "तब सारी सभा चुपचाप बरनबास और पौलुस को सुनने लगी, कि परमेश्वर ने उनके द्वारा अन्यजातियों में कैसे बड़े-बड़े चिन्ह, और अदभुत काम दिखाए।"

पवित्रशास्त्र में नियम...

"और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिए हम एक दूसरे की चिन्ता किया करें, और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो।" (इब्रानियों 10:24-25)

सफलताः (1) सफलता का अर्थ जीवन में मेरे बुलावे या उद्देश्य को जानना है। परमेश्वर ने जो मुझे करने के लिए बुलाया है।

(2) सफलता का अर्थ है परमेश्नर में मेरी अन्तःशक्ति की ओर पहुँचना। (फिलि. 3:13-14)

(3) सफलता का अर्थ है दूसरे लोगों में मेरा जीवन लगाना।

13 – पुनरुत्पादन का नियम

⇒ **एक अगुवे को एक अगुवा ही तैयार कर सकता है।**

उदाहरणः मूसा और यहोशू
मूल-पाठः गिनती 27:15-23

जितने भी अदभुत अगुआई के कार्य मूसा ने किए थे, उन सब में से यहोशू का प्रशिक्षण सबसे सामरिक महत्त्व का था। यहोशू वह अगुवा बना जिसने इस्राएलियों को प्रतिज्ञा के प्रदेश में ले जाने के कार्य को पूरा किया। यह सफल "अगुआई पुनरुत्पादन" मूसा का उदाहरण और सज्जित करना और यहोशू की भूख और गुण दोनों का परिणाम था। मूसा ने अपना अधिकार, अभिषेक और योग्यताएँ यहोशू को दे दी थीं। उसने यहोशू को अपना समय, अपनी अन्तर्दृष्टि, सीखने का एक वातावरण, अपने को प्रमाणित करने का एक अवसर और अपने भविष्य में एक शक्तिशाली विश्वास दिया। यदि वह आप एक अगुवा नहीं होता तब इन में हर एक यहोशू के आगे काम के लिए अपर्याप्त होते। क्योंकि मूसा ने अपने को यहोशू में पुनरुत्पादन के लिए समय दिया - प्रतिज्ञा के प्रदेश का उसका सपना साकार हुआ था हालाँकि वह आप उसे होता हुआ नहीं देख सका था।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

1. **मूसा ने यहोशू को सामर्थ्य और अधिकार दिया। (गिनती 27:20)**
   मूसा ने यहोशू पर अपने हाथ रखे और उसे लोगों के सामने नियुक्त किया। उसने यहोशू को "अपनी महिमा में से कुछ" दिया (गिनती 27:15-23)। यहोशू को सकारात्मक पहचानः एक अगुवे की मंजूरी और स्वीकृति मिली; और उसने मूसा का उसमें विश्वास की अभिव्यक्ति प्राप्त की।
   "यहोवा ने मूसा से कहा, "तू नून के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर हाथ रख... और उसको एलिआज़ार याजक और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके उनके सामने उसे आज्ञा दे और अपनी महिमा में से उसे कुछ दे, जिससे इस्राएलियों की सारी मण्डली उसकी माना करे।"

2. **मूसा ने यहोशू को प्रोत्साहन और उपयोग दिया। (गिनती 27:21–22)**
   यहोशू की शिक्षुता केवल प्रमस्तिष्कीय या निष्क्रीय नहीं थी। मूसा ने यहोशू को अपनी अगुआई एक भेदिए, एक सेनापति और अपने व्यक्तिगत सेवक के रूप में प्रमाणित करने दी थी।
   "...और वह इस्राएलियों की सारी मण्डली समेत उसके कहने से जाया करे और उसी के कहने से लौट भी आया करे"

3. **मूसा ने यहोशू को समर्थन और कृपा दी। (गिनती 27:23)**
   मूसा ने इस जवान आश्रित को कुछ विरल स्थानों में असाधारण साथ देकर समर्थन दिया। उनमें एक अनोखी घनिष्ठता थी, विशेषकर तब जब आप उनकी उम्र के अन्तर पर ध्यान दो तो। मूसा ने अपने शब्दों और कार्यों दोनों के द्वारा उसने अर्थपूर्ण प्रोत्साहन दिया था।
   "उस पर हाथ रखे, और उसको आज्ञा दी जैसा कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहा था।"
   "और यहोवा मूसा से इस प्रकार आमने-सामने बातें करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे। और मूसा तो छावनी में लौट आता था, पर यहोशू नामक एक जवान, जो नून का पुत्र और मूसा का सेवक था, वह तम्बू में से न निकलता था।" (निर्गमन 33:11)

पवित्रशास्त्र में नियम...

"चेला अपने गुरू से बड़ा नहीं होता... चेले का गुरू के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है।" (मत्ती 10:24-25)
"परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है; और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिए कि तुम हमारे प्रिय हो गए थे...जैसा पिता अपने बालकों के साथ व्यवहार करता है, वैसे ही हम भी तुम में से हर एक को उपदेश करते, शान्ति देते, और समझाते थे।" (1 थिस्स. 2:7-11)

जैसे जैसे आप इस नियम का पालन करोगे, आप एक PARENT बनोगे। अच्छे माता-पिता उनके बच्चों के पास आते हैं:

P - **उद्देश्य** (वे सत्य को संयोग से नहीं दे देते हैं। वे उनके बच्चों के साथ उद्देश्यपूर्ण होते हैं।)
A - **मूल्याँकन** (वे पता लगाते हैं कि उनके बच्चों को कहाँ बढ़ने की आवश्यकता है और वे कहाँ शक्तिशाली हैं।)
R - **सम्बंध** (वे स्नेही और मिलनसार होते हैं। वे प्रेम और सुरक्षित स्थान जुटाते हैं।)
E - **अधिकार देना** (वे उनके बच्चों को जिस विश्वास और योग्यता की आवश्यकता है प्रदान करते हैं।)
N - **संचालन** (वे उनके बच्चों को दिशा देते हैं और उनके लक्ष्य तक पहुँचने में सहायता करते हैं।)
T - **औज़ार** (वे जीवन में जीतने के लिए आवश्यक औज़ार उन्हें देते हैं। वे उन्हें सिखाते हैं।)

इफिसियों 4:11-15, एक पास्टर के कार्य का विवरण:

1) सेवा के कार्य के लिए परमेश्वर के लोगों को तैयार करना
2) लोगों को आत्मिक परिपक्वता में बढ़ना
3) कलीसिया की उन्नति होगी।

बाइबल सिखाती है:

(1) हर विश्वासी का एक सेवा का वरदान है।
(2) आपकी सेवा के वरदान क्या हैं पता लगाओ।
(3) हमें अपने वरदानों के लिए परमेश्वर को हिसाब देना होगा।

कभी भी सेवा अकेले मत करो। दूसरों को तैयार करो। दूसरों को प्रशिक्षित, तैयार और विकसित करो।

14 – स्वीकार करने का नियम

⇒ **लोग पहले अगुवे को स्वीकार करते हैं, तब दर्शन को।**

उदाहरण: गिदोन
मूल-पाठ: न्यायियों 6:33-35; 7:1-25

जब न्यायियों 6 में स्वर्गदूत गिदोन को मिद्यानियों के विरुद्ध युद्ध करने और बाल की वेदी को ढा देने के लिए कहता है, तब गिदोन अपनी अगुआई के विषय में आशंकित था। परन्तु अध्याय के अन्त तक वह कई यहूदी वंशों की राजभक्ति जीत लेता है। हालाँकि वह परिवार का "नाटा" था और इस्राएल के "नाटा" वंश का भाग था, शूरवीर लोग आक्रमण की योजना को जाने बिना उसके पीछे होने लगे थे। जब उसने उन्हें युद्ध में बुलाने के लिए तुरही फूँकी - वे सब जगह से उसके साथ होने के लिए निकल पड़े थे (न्यायियों 6:34-35)। परमेश्वर ने पहले अगुवे को बुलाया - ऐसा अगुवा जिसके पीछे लोग चलेंगे - तब उसने दर्शन स्पष्ट किया।

स्पष्ट है, लोगों ने इससे पहले वे समझते कि वे क्या करनेवाले हैं, गिदोन को स्वीकार किया था। गिदोन ने इतने सारे शूरवीरों को आकर्षित किया कि परमेश्वर को उनमें से अधिकाँश को लौटाना पड़ा था, कहीं वे ऐसा न सोचने लगें कि उनके कारण से उन्हें जीत मिली है।

इस नियम पर टिप्पणियाँ:

1. यदि लोग अगुवे को और दर्शन को स्वीकार नहीं करते हैं - तब नए अगुवे और नए दर्शन का समय आ गया है।
2. यदि लोग अगुवे को स्वीकार नहीं करते परन्तु दर्शन को करते हैं - तब नए अगुवे का समय आ गया है।
3. यदि लोग अगुवे को स्वीकार करते हैं परन्तु दर्शन को स्वीकार नहीं करते - तब नए दर्शन का समय आ गया है।
4. यदि लोग अगुवे को और दर्शन को भी स्वीकार करते हैं - तब अगुवे के पीछे हो लेने का समय आ गया है।

पहला कदम लोग योग्य उद्देश्यों के पीछे चलने का उठाते हैं। वे योग्य अगुवों के पीछे चलते हैं जो योग्य उद्देश्यों को समर्थन दे रहे हैं। लोग सदा प्रश्न पूछते हैं: "मैं तुम्हारे पीछे क्यों चलूँ?" अगुवे को समझना चाहिए कि इससे पहले वह दर्शन या कार्यक्रम को दिखा सके, वह आप दिखाई दे रहा होता है। एक बार जब लोग अगुवे में विश्वास जमा लेते हैं, वे दर्शन के विषय में विश्वास भी पाएँगे।

लोगों का गिदोन को स्वीकार करने का कारण क्या था?

1. गिदोन सच्चा था। इससे लोग उसके शब्दों को सुन सके थे। (न्यायियों 6:13-18)
उसने अपने डरों का सामना किया, और जो वह नहीं था बनने का ढोंग नहीं किया।
"गिदोन ने उससे कहा, "हे मेरे प्रभु, विनती सुन, यदि यहोवा हमारे संग होता, तो हम पर यह सब विपत्ति क्यों पड़तीं? और जितने आश्चर्यकर्मों का वर्णन हमारे पुर्खा...करते थे... वे कहाँ रहे?...उसने कहा, "हे मेरे प्रभु, विनती सुन, मैं इस्राएल को कैसे छुड़ाऊँ? देख, मेरा कुल मनश्शे में सब से कंगाल है, फिर मैं अपने पिता के घराने में सबसे छोटा हूँ"... गिदोन ने उससे कहा, "यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो मुझे इसका कोई चिन्ह दिखा कि तू ही मुझ से बातें कर रहा है।"

2. गिदोन अध्यवसायी था। इससे लोग उसके निर्णय पर भरोसा कर सके थे। (न्यायियों 6:19-24)
उसे मिद्यानियों को हराने की परमेश्वर की योजना का आश्वासन मिला था।
"तब गिदोन ने जाकर बकरी का बच्चा और एक एपा मैदे की अखमीरी रोटी तैयार की...बांझवृक्ष के तले उसके पास ले जाकर दिया। परमेश्वर के दूत ने उससे कहा, "मांस और अखमीरी रोटियों को लेकर इस चट्टान पर रख दे, और जूस को उण्डेल दे।" उसने ऐसा ही किया। तब यहोवा के दूत ने अपने हाथ की लाठी को बढ़ाकर मांस और अखमीरी रोटियों को छूआ; और चट्टान से आग निकली जिस से मांस और अखमीरी रोटियाँ भस्म हो गई; तब यहोवा का दूत उसकी दृष्टि से ओझल हो गया। जब गिदोन ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत था, तब गिदोन कहने लगा, "हाय, प्रभु यहोवा, मैं ने तो यहोवा के दूत को साक्षात् देखा है।""

3. गिदोन वचनबद्ध था। इससे लोग खतरे लेने के इच्छुक हुए थे। (न्यायियों 6:25-27)
उसने काम पूरा करने के लिए व्यक्तिगत बलिदान देने की योग्यता दिखाई थी।
"फिर उसी रात को यहोवा ने गिदोन से कहा, "अपने पिता का जवान बैल, अर्थात् दूसरा सात वर्ष का बैल ले, और बाल की जो वेदी तेरे पिता की है उसे गिरा दे, और जो अशेरा देवी उसके पास है उसे काट डाल, और उस दृढ़ स्थान की चोटी पर ठहराई हुई रीति से अपने परमेश्वर यहोवा की एक वेदी बना... तब गिदोन ने अपने संग दस दासों को लेकर यहोवा के वचन के अनुसार किया...।"

4. गिदोन आज्ञाकारी था। इससे लोग उसके काम में विश्वास कर सके थे। (न्यायियों 6:28-33)
गिदोन परमेश्वर की ओर आज्ञाकारी था और स्पष्ट किया कि उनका सामना आत्मिक चीज से हो रहा है।
"तब वे आपस में कहने लगे, "यह काम किसने किया है?" और पूछताछ और ढूँढ़-ढाढ़ करके वे कहने लहे, "यह योआश के पुत्र गिदोन का काम है।" तब नगर के मनुष्यों ने योआश से कहा, "अपने पुत्र को बाहर ले आ कि मार डाला जाए क्योंकि उसने बाल की वेदी को गिरा दिया है"... योआश ने...कहा, "क्या तुम बाल के लिए वाद-विवाद करोगे? क्या तुम उसे बचाओगे? यदि वह

परमेश्वर हो तो...उससे वह आप ही वाद-विवाद करे"... इसलिए उस दिन गिदोन का नाम यह कहकर यरूब्बाल रखा गया, कि इसने जो बाल की वेदी गिराई है तो इस पर बाल आप वाद-विवाद कर ले।"

5. **गिदोन उत्प्रेरक था। इससे लोग उसके दर्शन को अपना बना सके थे। (न्यायियों** 6:33-35)

उसने पहल की, और यदि उसे अकेले भी करना पड़ता उसने युद्ध करना तय कर लिया था।
"तब यहोवा का आत्मा गिदोन में समाया; और उसने नरसिंगा फूँका, तब अबीएजेरी उसकी सुनने के लिए इकट्ठे हुए। फिर उसने समस्त मनश्शे के पास अपने दूत भेजे; और वे भी उसके समीप इकट्ठे हुए। और उसने अशेर, जबूलून, और नप्ताली के पास भी दूत भेजे; तब वे भी उससे मिलने को चले आए।"

पवित्रशास्त्र में नियम...

> "ऐसे हैं, जो छितरा देते हैं, तौभी उनकी बढ़ती ही होती है... उदार प्राणी हृष्ट पुष्ट हो जाता है, और जो दूसरों की खेती सींचता है, उसकी भी सींची जाएगी।" (नीतिवचन 11:24-25)
> "अपनी रोटी जल के ऊपर डाल दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद तू उसे फिर पाएगा।" (सभोपदेशक 11:1)

15 – विजय का नियम

⇒ **<u>अगुवे दल के जीतने के लिए उपाय ढूँढ लेते हैं।</u>**

उदाहरणः योशिय्याह
मूल-पाठः 2 इतिहास 34-35

योशिय्याह का दादा और पिता भयानक, मूर्तिपूजक राजा थे। देश गतिहीन और एक आत्मिक उदासीनता की स्थिति में था। उनमें दर्शन और दृढ़ निश्चय की कमी थी। बचे हुए काम का मलवा हर जगह था। वे बाहरी आक्रमण, भीतरी विभाजन, और आर्थिक दबाव के शिकार हुए थे। तब योशिय्याह आया। न पहले और न उसके बाद ऐसा कोई राजा हुआ जो अपने पूरे मन से प्रभु की ओर फिरा और लोगों में बेदारी ले आया हो (2 राजा 23:25)। उसे अपने परिवार में और सारे देश में असफलता, पाप और हार के क्रम को तोड़ना था। उसका काम उसके सामने स्पष्ट था। योशिय्याह जानता था कि उनकी सामाजिक समस्याओं की असली कुंजी आत्मिक थी। वह आठ वर्ष की आयु में राजा बना था। सोलह वर्ष की आयु होते होते वह प्रभु को खोजने लगा था - और चार वर्ष बाद इस्राएल को सुधारने और अश्शूरियों और भीतरी मूर्तिपूजा से मुक्त करने में लग गया। जब वह पच्चीस वर्ष का हुआ, उसने मन्दिर की मरम्मत करने के आदेश दिए। इस बड़े काम ने वह जीत प्राप्त की जिसके पीछे वह पड़ा हुआ था। काम का अच्छा प्रबंध किया गया, अधिकार सौंपा गया और संचालन किया गया। उनके काम के दौरान, कारीगरों को सदियों से भूली हुई व्यवस्था की पुस्तक मिली। योशिय्याह ने उसे पढ़ कर सुनाने को कहा, और फिर लोगों को इकट्ठे किया। पुस्तक सबको पढ़ कर सुनाई गई जिससे लोगों में पश्चाताप होने लगा। योशिय्याह लोगों को वाचा की ओर उनके जीवन समर्पित करने में ले गया। पवित्रशास्त्र के अनुसार बेदारी फूट पड़ी, "उसके जीवन भर उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर के पीछे चलना न छोड़ा।"

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

योशिय्याह के लिए विजय चुनौतीपूर्ण थी क्योंकि उसके मार्ग में अनेक बाधाएँ खड़ी थीं:

1. उसका दादा और पिता राजाओं के रूप में बिलकुल असफल रहे थे।
2. उसके समय के लोगों ने परमेश्वर की आशीष या आत्मिक नवीकरण अनुभव नहीं की थी।
3. किसी भी जीवते ने किसी राजा को आज्ञापालन को आदर्श बनाते नहीं देखा था-सामान्यता नियम बना हुआ था।
4. मन्दिर खण्डहर बना हुआ था और इसकी मरम्मत की कोई अपेक्षा नहीं थी।
5. लोगों ने मान लिया था कि एक राजनीतिक समाधान उनकी समस्याओं को हल करेगा।

6. अपने शासन के पहले दशक में वह बच्चा ही था।

विजय अकसर एक भेदन के पहले आती है।

<u>योशिय्याह को भेदन प्राप्त हुआ क्योंकि...</u>

1. **उसने खुलापन और शिक्षणीयता को आदर्श बनाया था** (2 इतिहास 34:1-3)
"उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है... वह लड़का ही था, अर्थात् उसको गद्दी पर बैठे आठ वर्ष पूरे भी न हुए थे कि अपने मूलपुरुष दाऊद के परमेश्वर की खोज करने लगा...।"

2. **उसने परिवर्तन और नवीकरण के लिए भूख उत्पन्न की** (2 इतिहास 34:4-7)
"बालदेवताओं की वेदियाँ उसके सामने तोड़ डाली गईं, और सूर्य की प्रतिमाएँ जो उनके ऊंचे स्थानों पर थीं, उसने काट डालीं... खुदी और ढली हुई मूरतों को उसने तोड़ कर पीस डाला, और उनकी बुकनी उन लोगों की कबरों पर छितरा दीं, जो उनको बली चढ़ाते थे।"

3. **उसने सुधार प्रारंभ किए जो भेदन तक ले गए** (2 इतिहास 34:8-13)
"फिर अपने राज्य के अठारहवें वर्ष में जब वह देश और भवन दोनों को शुद्ध कर चुका, तब उसने शापान मासेयाह और योआह को अपने परमेश्वर के यहोवा के भवन की मरम्मत कराने के लिए भेजा। अत उन्होंने हिल्किय्याह महायाजक के पास जाकर जो रूपया परमेश्वर के भवन में लाया गया था, उसको सौंप दिया। अर्थात् उन्होंने उसे उन काम करनेवालों के हाथ सौंप दिया जो यहोवा के भवन के काम पर मुखिया थे...।"

4. **वह उन मूल बातों को समझ गया था जो विजय ला सकते थे** (2 इतिहास 34:14-21)
"जब वे उस रुपये को जो यहोवा के भवन में पहुँचाया गया था, निकाल रहे थे, तब हिल्किय्याह याजक को मूसा के द्वारा दी हुई यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक मिली...तब शापान उस पुस्तक को राजा के पास ले गया... तब शापान ने उसमें से राजा को पढ़कर सुनाया। व्यवस्था की वे बातें सुनकर राजा ने अपने वस्त्र फाड़े फिर राजा ने हिल्किय्याह... को आज्ञा दी, "तुम जाकर मेरी ओर से और इस्राएल और यहूदा में रहनेवालों की ओर से इस पाई हुई पुस्तक के वचनों के विषय यहोवा से पूछो; क्योंकि यहोवा की बड़ी ही जलजलाहट हम पर इसलिए भड़की है कि हमारे पुरखाओं ने यहोवा का वचन नहीं माना, और इस पुस्तक में लिखी हुई सब आज्ञाओं का पालन नहीं किया।"

5. **उसने काम पूरा करने के लिए वचनबद्धता दिखाई** (2 इतिहास 34:22-33)
"तब राजा ने अपने स्थान पर खड़े होकर, यहोवा से इस आशय की वाचा बाँधी कि मैं यहोवा के पीछे पीछे चलूँगा... फिर उसने उन सभों से जो यरूशलेम में और बिन्यामीन में थे वैसी ही वाचा बन्धाई; और यरूशलेम के निवासी, परमेश्वर जो उनके पितरों का परमेश्वर था, उसकी वाचा के अनुसार करने लगे। योशिय्याह ने इस्राएलियों के सब देशों में से सब घिनौनी वस्तुओं को दूर करके जितने इस्राएल में मिले, उन सभों से उपासना कराई; अर्थात् उनके परमेश्वर यहोवा की उपासना कराई। उसके जीवन भर उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना नहीं छोड़ा।"

पवित्रशास्त्र में नियम...

"जहाँ बुद्धि की युक्ति नहीं, वहाँ प्रजा विपत्ति में पड़ती है; परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।" (नीतिवचन 11:14)
"क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो कि जीतो।" (1 कुरिन्थियों 9:24)

16 – बड़ी गति का नियम

⇒ **गति अगुवे का सर्वोत्तम मित्र है।**

उदाहरणः सुलैमान
मूल-पाठः 1 राजा 3:6-14; 4:20-34

हालाँकि सुलैमान के पास जब उसने अपना शासन आरम्भ किया विशाल धन और बुद्धि दोनों थे, परन्तु उसका परम मित्र वह गति थी जो उसका पिता उसके लिए छोड़ गया था। अपने चालीस वर्षों के दौरान राजा दाऊद अपने बेटे के लिए बड़ी गति बना गया था। इस्राएल एक बड़ी सैनिक शक्ति के नाम से जाना जाता था; दूसरे राजा उनका सम्मान करते थे; लोगों ने एक ऐसा राजा देखा था जो परमेश्वर से प्रेम करता था और न्याय चाहता था; उसने मन्दिर के निर्माण के लिए लकड़ी इकट्ठी कर रखी थी; और, उसके पास सुलेमान की नई सरकार के लिए पर्याप्त धन था। इस गति ने शीबा की रानी को सुलैमान के शासनकाल में आकर्षित किया। सुलेमान ने इसे आगे बढ़ाया - और परमेश्वर से बुद्धि माँगी ताकि वह लोगों की समझ के साथ अगुआई करता रहे और गति बनाए रखे। वह वर्षों तक करता रहा। परन्तु, बड़ी गति को पोषण देना और बनाए रखना होता है। अपने शासनकाल के अन्त तक, सुलैमान का ध्यान भंग हो गया और उसने इसे खो दिया - और इब्री राज्य बँट गया।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

सुलैमान ने गति क्यों अनुभव की?

1. **क्योंकि उससे पहले दाऊद सफल रहा था।**
   "तब शमूएल ने अपना तेल का सींग लेकर उसके भाइयों के मध्य में उसका अभिषेक किया; और उस दिन से लेकर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता था।" (1 शमूएल 16:13)

2. **क्योंकि दाऊद उसके जीतने के लिए आवश्यक साधन और सम्मति छोड़ गया था।**
   "जब दाऊद के मरने का समय निकट आया, तब उसने अपने पुत्र सुलैमान से कहा, "इसलिए तू हियाब बाँधकर पुरुषार्थ दिखा। और जो कुछ तेरे यहोवा ने तुझे सौंपा है, उसकी रक्षा करके उसके मार्गो पर चला करना और जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसा ही उसकी विधियों तथा आज्ञाओं, और नियमों, और चितौनियों का पालन करते रहना; जिससे जो कुछ तू करे और जहाँ कहीं तू जाए, उसमें तू सफल होए।" (1 राजा 2:1-3)

3. **क्योंकि दाऊद ने उसे प्रारंभिक विजयों के लिए तैयार किया था (यानि, मन्दिर का निर्माण)।**
   "सोर के राजा सुलेमान ने अपने दूत सुलैमान के पास भेजे, क्योंकि उसने सुना था, कि वह अभिषिक्त होकर अपने पिता के स्थान पर राजा हुआ है : और दाऊद के जीवन भर हीराम उसका मित्र बना रहा। सुलैमान ने हीराम के पास यों कहला भेजा, "तुझे मालूम है, कि मेरा पिता दाऊद अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन इसलिए न बनवा सका कि वह चारों ओर लड़ाइयों में तब तक उलझा रहा, जब तक यहोवा ने उसके शत्रुओं को उसके पाँव तले न कर दिया। परन्तु अब मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे चारों ओर से विश्राम दिया है; अब न तो कोई विरोधी है, और न कुछ विपत्ति देख पड़ती है। मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनवाने की ठान रखी है... तब हीराम ने सुलैमान के पास यों कहला भेजा, "जो तू ने मेरे पास कहला भेजा है वह मेरी समझ में आ गया, देवदारू और सरोवर की लकड़ी के विषय जो कुछ तू चाहे, वही मैं करूँगा।" (1 राजा 5:1-8)

4. **क्योंकि दाऊद ने उसे लोगों के सामने आशीष और समर्थन दिया था।**
   "राजा ने उनसे कहा, "अपने प्रभु के कर्मचारियों को साथ लेकर मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निज खच्चर पर चढ़ाओ; और गिहोन को ले जाओ; और वहाँ सादोक याजक और नातान नबी इस्राएल का राजा होने को उसका अभिषेक करें; तब तुम सब नरसिंगा फूँककर कहना, 'राजा सुलैमान जीवित रहे।'" (1 राजा 4:7)

पवित्रशास्त्र में नियम...

"क्योंकि जिसके पास है, उसको दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।" (मरकुस 4:25)
"उसके स्वामी ने उससे कहा, 'धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊँगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।" (मत्ती 25:21)

17 – प्राथमिकताओं का नियम

⇒ **अगुवे समझते हैं कि क्रिया आवश्यक नहीं उपलब्धि हो।**

एक अगुवा सबकुछ नहीं कर सकता है, परन्तु उसे सबसे महत्त्वपूर्ण चीजें करनी चाहिए!

उदाहरणः पतरस
मूल-पाठः प्रेरितों 6:1-7

जैसे प्रारंभिक कलीसिया बढ़ने लगी, उनकी समस्याएँ भी बढ़ने लगीं। पतरस और दूसरे प्रेरित कुछ शिकायतों की अफवाहें सुनने लगे जो कुछ स्त्रियों की दूसरे जातीय समुदायों के विरुद्ध थीं। शिकायतें सेवा कैसे की जा रही है उसके विषय में थीं। इस परिच्छेद के अनुसार, पतरस को प्रार्थना करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ी। उसने कहा, "यह बात ठीक नहीं जान पड़ती कि हम अपनी प्राथमिकताओं को छोड़ कर खिलाने-पिलाने की सेवा में लगें।" पतरस यह नहीं कह रहा था कि खिलाने-पिलाने की सेवा आवश्यक नहीं है। वह केवल यह कह रहा था कि वह अपनी प्राथमिकताओं (प्रार्थना और वचन) को समझता है और खिलाने-पिलाने की सेवा कुछ डीकनों की प्राथमिकता होनी चाहिए। पतरस जानता था कि सबकुछ करने का प्रयत्न करने के बिना भी वह काफी व्यस्त था। वह क्रिया को उपलब्धि से उलझाने वाला नहीं था। उसने अपने लिए और डीकनों के लिए, व्यक्ति के गुणों, काम के महत्त्व और उचित लोगों को काम सौंपने की उसकी योग्यता पर आधारित प्राथमिकताओं को चुना।
समस्याएँ बड़े अवसर होते हैं।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

पतरस अपनी शक्तियों और प्राथमिकताओं पर केन्द्रित कैसे बना रहा? जब आवश्यकता आई...

1. **उसने एक सम्पूर्ण नई अगुआई के अवसर के अस्तित्व को पहचाना (आय.** 1)
   "उन दिनों में जब चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी, तब यूनानी भाषा बोलनेवाले इब्रानी भाषा बोलनेवालों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती।"

2. **उसने चेलों को यह विचार करने के लिए इकट्ठा किया कि क्या कदम उठाने चाहिए (आय.** 2)
   "तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, "यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में लगें।"

3. **उसने चुनाव की प्रक्रिया दूसरों को सौंप दी ताकि उसका ध्यान न हट जाए (आय.** 3-4)
   "इसलिए, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।"

4. **उसने इस कार्य से अपने हाथ हटा लिए और काम पूरा करने का अधिकार दिया (आय.** 5)

"यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस, और प्रुखुरुस, और नीकानोर, और तीमोन, और परमिनास, और अन्ताकियावासी नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया।"

5. **उसने चेलों के चुनाव का निरीक्षण किया** (**आय.** 6)
   "इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया...।"

6. **उसने साधारण अगुवों को लोगों के सामने अभिषेक करने और अधिकार देने के लिए समय लिया** (**आय.** 6)
   "... और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे।"

<u>80/20 सिद्धान्तः</u>

पतरस समझता था कि खिलाने-पिलाने की सेवा उसके समय का सही उपयोग नहीं होगा। अगुवों के रूप में हमें भी पतरस के समान प्राथमिकताओं को समझना चाहिए। "80/20 - सिद्धान्त" हमें सिखाता है कि सही प्राथमिकताओं के साथ, हमारे प्रयत्नों का 20% हमारे लिए 80% परिणाम लाएगा। परन्तु, गलत प्राथमिकताओं के साथ, हमारे 80% प्रयत्न हमारे लिए 20% परिणाम लाएँगे। उदाहरणार्थ, यदि आप अपने 20% सबसे प्रभावशाली लोगों को तैयार करने में अपना समय लगाएँगे - तो, जैसे आप उन्हें दूसरे 80% लोगों की सेवा करने भेजेंगे, आप अपनी सेवा करने की योग्यता को बढ़ा सकेंगे।
अपना अधिकाँश समय उन कुछ जरूरतमंद लोगों पर मत लगाओ जो सब समय आपके पास आते रहते हैं। यीशु ने अपना अधिकाँश समय 12 चेलों के साथ बिताया था, और अधिक समय पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ, परन्तु सबसे अधिक यूहन्ना के साथ बिताया था।

<u>10–80–10 प्रक्रियाः</u>

यह 80/20 सिद्धान्त का एक अतिरिक्त पहलू है। पतरस ने वह किया जो मैं सामान्यतः कार्यों के साथ करता हूँ: यह 10-80-10 प्रक्रिया है। मैं प्रक्रिया आरंभ करता हूँ, ताकि यह सही तरीके से आरंभ हो जाए (कार्य का 10%), तब मैं कार्य के अधिकाँश भाग के लिए इसे एक उपयुक्त गुणी व्यक्ति को सौंप देता हूँ (कार्य का 80%)। अन्त में, मैं आकर समाप्त कार्य को सँवारता हूँ (कार्य का अन्तिम 10%)।

प्रयोग के प्रश्नः

1. आपके 20% सबसे प्रबावशाली लोग कौन हैं जिनमें आपको अपना समय लगाना और उनको प्रशिक्षित करना चाहिए?
2. 20% सबसे उत्पादक क्रियाएँ या सेवाएँ कौन सी हैं जिन पर आपको ध्यान केन्द्रित करना चाहिए?
3. आपके दिन का 20% सबसे फलदायक समय कौन सा है कि आप उसे अपने सबसे महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं पर लगाएँ?

पवित्रशास्त्र में नियम...

"इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो : निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो। अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं। इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है।" (इफिसियों 5:15-16)

<u>आप अपनी प्राथमिकताओं को कैसे निधारित करते हो? इन प्रश्नों को पूछोः</u>

अ) मुझ से क्या अपेक्षित है? मुझे क्या करना चाहिए जो दूसरे नहीं कर सकते हैं? (स्पष्ट समझ लो कि दूसरों को सिखाया जा सकता है और इसलिए काम सौंपने के लिए तैयार रहो।)

आ) सेवा के लिए सबसे अधिक लाभ क्या लाएगा? दूसरों में गुणा करो।

इ) मुझे सबसे अधिक आनन्द क्या देता है? मुझे क्या सबसे अच्छा लगता है?

आपकी सफलता का रहस्य आपकी दैनिक सूची में है।

18 – बलिदान का नियम

⇒ **ऊपर चढ़ने के लिए एक अगुवे को कुछ छोड़ना पड़ता है।**

उदाहरणः मूसा
मूल-पाठः निर्गमन 2:10-15; इब्रानियों 11:24-27

मूसा इस अगुआई के नियम का एक आदर्श उदाहरण है। उसने अपना जीवन मिस्र के राजकुमार के रूप में आरंभ किया था। उसके पास वह सबकुछ था जिसकी एक नौजवान चाह कर सकता है। परन्तु यह जानने पर कि उसके इब्री भाई मिस्रियों के हाथों दुख उठा रहे हैं - इसके विषय में कुछ करने के लिए उसे विवश होना पड़ा। एक अत्याचारी मिस्री का कत्ल करने के बाद, उसे लगा कि महल में रहते हुए वह उसके लोगों का बदला ले सकेगा। जब उसे पता चला कि उसके अपराध के विषय में सबको पता चल चुका है (फिरौन को भी), वह जान गया कि उसे भागना पड़ेगा। जंगल के इस समय के दौरान मूसा ने इस नियम को सीखाः ऊपर चढ़ने के लिए एक अगुवे को कुछ छोड़ना पड़ता है। एक बार जब उसने उस सारी प्रतिष्ठा और अधिकार को जो मिस्र उसे दे सकता था समर्पित कर दिया - उसने परमेश्वर का अनुग्रह अनुभव किया और उसे काम पूरा करने के लिए बुलाया गया - परमेश्वर के तरीकों से, मनुष्य के तरीकों से नहीं। यदि मूसा ने अपनी राजसी स्थिति को न छोड़ा होता तो वह इस काम को कभी नहीं कर पाता।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

मूसा को त्यागना पड़ाः

1. घमण्ड
2. अधीरता
3. पैसा
4. स्थिति
5. नियंत्रण
6. आत्मनिर्भरता
7. लोकप्रियता
8. समय
9. सुख
10. पहचान
11. परिचित आस-पड़ोस
12. धन-सम्पत्ति

मूसा यह सब कैसे त्याग सका?

मूसा को इस नियम का पालन करने और अपने सुख और धन को त्यागने के लिए किसने समर्थ किया?

1. **वह परमेश्वर के साथ अकेला था (निर्गमन 2:15; 3:1-5)**
   परमेश्वर मूसा को उस सब से दूर ले गया जिसका सहारा वह सुरक्षा के लिए ले रहा था। उसने ध्यान भंग को निकाल दिया। "जब फिरौन ने यह बात सुनी तब मूसा को घात करने की युक्ति की। तब मूसा फिरौन के सामने से भागा, और मिद्यान देश में जाकर रहने लगा; और वहाँ एक कुएँ के पास बैठ गया... मूसा अपने ससुर यित्रो नामक मिद्यान के याजक की भेड़-बकरियों को चराता था... और परमेश्वर के एक दूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया...।"

2. **वह परमेश्वर के साथ ईमानदार था (निर्गमन 3:10-12)**
   जलती झाड़ी के पास, स्वयं-धार्मिकता का कोई चिन्ह नहीं है। मूसा कमजोर है और वह जानता है।
   "इसलिए आ, मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूँ कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।" परन्तु मूसा ने परमेश्वर से कहा, "मैं कौन हूँ जो फिरौन के पास जाऊँ, और इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आऊँ?" उसने कहा, "निश्चय मैं तेरे संग रहूँगा...।"

3. **वह परमेश्वर के लिए भूखा था (निर्गमन 3:13-14)**
   परमेश्वर को मूसा को एक भूख के स्थान पर लाना था। चालीस वर्ष के बाद, मूसा समर्पित होने के लिए तैयार था।

"मूसा ने परमेश्वर से कहा, "जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उनसे कहूँ, 'तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' तब यदि वे मुझ से पूछें, 'उसका नाम क्या है?' तब मैं उनको क्या बताऊँ?' परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं जो हूँ सो हूँ।" फिर उसने कहा, "तू इस्राएलियों से यह कहना, "जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।"

4. **उसे परमेश्वर ने तोड़ा था (निर्गमन 4:1-13)**

परमेश्वर आखिरकार उसे सब आत्मध्यानमग्नता और आत्मपदोन्नति से तोड़ देता है। वह अब समर्पित है।

"मूसा ने यहोवा से कहा, "हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में निपुण नहीं, न तो पहले था, और न जब से तू अपने दास से बातें करने लगा; मैं तो मुँह और जीभ का भद्दा हूँ।" यहोवा ने उससे कहा, "मनुष्य का मुँह किसने बनाया है? और मनुष्य को गूँगा, या बहिरा, या देखनेवाला, या अंधा, मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है? अब जा, मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊँगा।"

पवित्रशास्त्र में नियम...

"विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। इसलिए कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना अधिक उत्तम लगा। उसने मसीह के साथ आनन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा, क्योंकि उसकी आँखें फल पाने की ओर लगी थीं।" (इब्रानियों 11:24-26)

इस नियम का एक और उदाहरण...

अब्राहम - सबकुछ जिससे वह परिचित था छोड़कर, एक नई जाति आरंभ करने का इच्छुक था, फिर परमेश्वर की आज्ञा पर अपने पुत्र को बलिदान करने का इच्छुक था।

19 – समय का नियम

⇒ **<u>कब अगुआई करनी है उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना क्या करना और कहाँ जाना है।</u>**

उदाहरणः एस्तेर

मूल-पाठः एस्तेर 4:13-14

मोर्दकै ने रानी एस्तेर को शब्द भेजा कि हामान यहूदी जाति को मिटाने की षड्यंत्र रच रहा है। एस्तेर अनिच्छा से अपने गुरू की चेतावनी सुनती है - और जब वह उसे समय के नियम की याद दिलाता है वह कार्य करने का फैसला करती है। वह सुझाव देता है कि उसे अगुआई की स्थिति "ऐसे ही कठिन समय के लिए" दी गई थी (एस्तेर 4:14)। ऐसा था जैसे कि मोर्दकै समय की अत्यावश्यक बात को समझता था। उसने पहचाना कि यह समय था कि वे उनके लोगों के जीवन में अन्तर ला सकते हैं, और इस नियम के आधार पर उसने एस्तेर को मनवा लिया। एस्तेर ने, चाहे उसकी जान भी चली जाए, षड्यंत्र के विषय में कुछ करने का निश्चय किया। उसने बिना झिझके कार्य किया, और अपने लोगों को जातिसंहार से बचा लिया। उसने समय का लाभ उठाया, और परिणामस्वरूप समय के नियम को सीखा।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

<u>एस्तेर ने सीखा कि यदि उसने क्षण को पकड़ा नहीं तो...</u>

1. **उसकी नियति बाकी लोगों से भिन्न नहीं होगी (आय. 13)**

मोर्दकै उसे समझाने का प्रयास कर रहा था कि हालाँकि वह रानी है परन्तु यदि उसने अवसर का लाभ नहीं उठाया तो उसका भविष्य बाकी के यहूदियों से बेहतर नहीं होगा। कभी-कभी हमारे लिए इस धारणा में कि हम "विशेष" हैं और हमें वे खतरे नहीं

उठाने पड़ेंगे जिन्हें पहले के लोगों ने उठाया था, काम करना सरल होता है। हमें लगता है हम यथापूर्व स्थिति बनाए रख सकते हैं, और बाकी सब परमेश्वर संभाल लेगा; वह निश्चय करेगा कि हम काम पूरा करें। यह एक गलत धारणा है। यदि हम खतरे मोल नहीं लेते, तो हम कभी भी अवसर का लाभ उठा नहीं पाएँगे।
"तू मन ही मन यह विचार न कर कि मैं ही राजभवन में रहने के कारण और सब यहूदियों में से बची रहूँगी।"

2. **परमेश्वर किसी दूसरे को जो करेगा आशीष देगा (आय.** 14)

उसके बाद, मोर्दकै ने उसे प्रेरित करने का प्रयास किया कि परमेश्वर के उद्देश्य तो पूरे होंगे ही - तब भी जब वह किनारे बैठकर तमाशा देखती रहेगी। परमेश्वर उन्हें आशीष देने में वचनबद्ध है जिनके हृदय उसकी ओर हैं, और जो, जब खतरा हो तब भी, आगे बढ़ेंगे और आज्ञापालन करेंगे। वह गुणों को नहीं, इच्छा को देखता है; दु:साहसी स्वच्छन्दता के साथ आज्ञापालन करना।
"क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा...।"

3. **वह अवसर से अधिक खो सकती है (आय.** 14)

अब मोर्दकै एस्तेर को दूसरी बार याद दिलाता है कि यदि वह केवल बैठी रही और उसके सामने अवसर का कुछ नहीं किया तो वह अपनी जान खो सकती है। वह उसे सिखाता है कि वह परमेश्वर की आज्ञापालन से कुछ अधिक खो सकती है - वह अपना जीवन खो सकती है। आज्ञापालन खतरा है, परन्तु अवज्ञा आगे चलकर बड़ा खतरा बन सकता है।
"... परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नष्ट होगी।"

4. **वह अपने परमेश्वर द्वारा दिए कार्य से चूक सकती थी (आय.** 14)

अन्त में, मोर्दकै एस्तेर को "समय" के विषय में अन्तिम प्रश्न करता है। वह सोचता है कि यह अवसर बिलकुल वह कारण हो सकता है कि क्यों परमेश्वर ने उसे सबसे पहले यह राजसी स्थिति दी है। आगे, यदि वह आज्ञापालन से चूक गई, तो वह उसके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य से भी चूक सकती है। उसी प्रकार, हमारा कार्य भी बेकार बैठकर पूरा किया नहीं जा सकता है। यह तब होता है जब हम हर कदम पर जिसे हम जानते हैं, करते जाते हैं।
"क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिए राजपद मिल गया हो ?"

<u>हर बार जब एक अगुवा कार्य करता है, चार परिणाम निकल सकते हैं:</u>

1. गलत समय पर गलत कार्य घोर विपत्ति की ओर ले जा सकता है।
2. गलत समय पर सही कार्य विरोध लाता है।
3. सही समय पर गलत कार्य एक गलती है।
4. सही समय पर सही कार्य सफलता लाता है।

- **रानी वशती – गलत समय पर गलत कार्य करती है।**

वह रानी होने से हाथ धो बैठी। राजा क्षयर्ष ने उसे बुलाया था और उसने इन्कार कर दिया: उसने उसका पद घटा दिया और घोषणा की कि कहीं भी किसी भी स्त्री से इस प्रकार का व्यवहार सहन नहीं किया जाएगा। उसके कार्य ने न केवल उसके जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला, बल्कि इससे सारे राज्य भर में विवाहित स्त्रियों के लिए जीवन अधिक कठिन हो गया। (एस्तेर 1:10-22)

- **बिकतान और तेरेश – सही समय पर गलत कार्य करते हैं।**

राजा के दो अधिकारियों ने सही समय - यानि, मोर्दकै के लिए सही समय - पर गलत कार्य किया। जब उन्होंने राजा का कत्ल करने की युक्ति की, तब मोर्दकै को पता चल गया और उसने एस्तेर को बता दिया, एस्तेर ने राजा को बताया, और दो षड्यन्त्रकारियों को लटका दिया गया। (एस्तेर 2:21-23)

- **हामान – गलत समय पर गलत कार्य करता है।**

उसने उस समय मोर्दकै और यहूदियों के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा जब एस्तेर रानी थी - ऐसा स्थान जहाँ समय का नियम उसके विरुद्ध कार्य करेगा और विपत्ति लाएगा। (एस्तेर 3:5-15)

- **मोर्दकै – सही समय पर सही कार्य करता है।**

उसने एस्तेर से वह करने को कहा जो उस समय की विपत्ति के समय वही कर सकती थी। उसके शब्द उत्साह से भरे जान पड़ते हैं: "क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नष्ट होगी। क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिए राजपद मिल गया हो ?" (एस्तेर 4:14)

- **एस्तेर – सही समय पर सही काय करती है।**

उसने अपने बड़े क्षण की तैयारी उपवास, प्रार्थना और निश्चय के साथ की। "ऐसी ही दशा में मैं नियम के विरुद्ध राजा के पास जाऊँगी, और यदि नष्ट हो गई तो हो गई।" जब एस्तेर राजा की उपस्थिति में गई तो उसने प्रसन्न होकर सोने का राजदण्ड उसकी ओर बढ़ाया। (एस्तेर 5:1-2)
तब उसने, जब राजा से उसका जीवन और उसके लोगों के जीवन बक्ष देने को कहा, एक और सही कार्य किया। उसकी विनती ने हामान का कपट प्रकट किया और राजा ने उसे फाँसी देने का आदेश दिया। उसे उसी खम्बे पर जो उसने मोर्दकै के लिए तैयार कराया था, लटका दिया गया। (एस्तेर 7:3-10)
अन्त में, उसने, जब राजा से विनती की कि यहूदियों को नष्ट करने का आदेश पलट दिया जाए, एक और सही कार्य सही समय पर किया। (एस्तेर 8:5-6)

- **क्षयर्ष – सही समय पर सही कार्य करता है।**

उसने एक नया आदेश जारी किया जिसमें यहूदियों को अपने नष्ट करनेवालों का विरोध करने का अधिकार दिया गया था, और इस आदेश को वेग से चलनेवाले घोड़ों पर सवार होकर हरकारों द्वारा सारे राज्य भर में भिजवा दिया। (एस्तेर 8:7-14)

एस्तेर की अगुआई और उसके परिशुद्ध समय पर किए गए कार्य ने उसके लोगों के लिए एक बड़ी विजय प्राप्त की: "यहूदियों को आनन्द और हर्ष हुआ और उनकी बड़ी प्रतिष्ठा हुई। और जिस जिस प्रान्त, और जिस जिस नगर में, जहाँ कहीं राजा की आज्ञा और नियम पहुँचे, वहाँ वहाँ यहूदियों को आनन्द और हर्ष हुआ...और उस देश के लोगों में से बहुत लोग यहूदी बन गए, क्योंकि उनके मन में यहूदियों का डर समा गया था।" (एस्तेर 8:16-17)

पवित्रशास्त्र में नियम...

"हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है।" (सभोपदेशक 3:1)
"क्या तुम नहीं कहते, 'कटनी होने में अब भी चार महिने पड़े हैं ?' देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं।" (यूहन्ना 4:35)

20 – विस्फोटक वृद्धि का नियम

⇒ **वृद्धि के लिए, अनुयायियों की अगुआई करो – गुणा के लिए, अगुवों की अगुआई करो।**

उदाहरण: पौलुस
मूल-पाठ: 2 तीमुथियुस 2:2; प्रेरितों 19:8-10

एक अगुवा ही एक अगुवे तो तैयार कर सकता है - और एक महान अगुवा ही बहुत सारे अगुवों को तैयार कर सकता है। प्रेरित पौलुस से एशिया मायनर भर में कलीसियाएँ स्थापित की थीं, परन्तु एक ही तरीके से वह इस महान कार्य को कर सकता था - हर स्थान के लिए अगुवों को चुनना और तैयार करना। पौलुस एक आश्चर्यजनक धर्ममण्डक, प्रचारक और आश्चर्यकर्म करनेवाला व्यक्ति था। पवित्रशास्त्र लिखने के अलावा, प्रारंभिक कलीसिया को उसका सबसे बड़ा वरदान तीतुस, लूका, अपुल्लोस, तीमुथियुस, सीलास, प्रिस्किल्ला और अक्विला जैसे पास्टरों और कलीसिया के अगुवों को प्रशिक्षण देना था। विस्फोटक वृद्धि का उसका तरीका अगुआई का प्रशिक्षण था। प्रेरितों 19:10 कहता है कि इस तरीके से वह दो अल्प वर्षों में सारे एशिया में पहुँच सका था।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

पौलुस इस नियम में विशेषज्ञ था। पौलुस ने अपना समय किस काम में दिया था? उसके लक्ष्य इस प्रकार थे:

1. अगुवों को खोजना और प्रशिक्षण देना।
2. उन अगुवों को खोजना और प्रशिक्षण देना जो दूसरे अगुवों को प्रशिक्षण देंगे।
3. उन अगुवों को खोजना और प्रशिक्षण देना जो कलीसियाएँ स्थापित करने के लिए अगुवों को प्रशिक्षण देंगे।
4. उन अगुवों को खोजना और प्रशिक्षण देना जो न-पहुँचे हुए स्थानों में कलीसियाएँ स्थापित करने के लिए अगुवों को प्रशिक्षण देंगे।

उसने नीचे दिए कार्यों के लिए अपना उत्तम समय दिया:

अ. आराधनालयों में सुसमाचार प्रचार और चेले बनाना।

"फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था। पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उनके साथ वाद-विवाद किया; और उनका अर्थ खोल खोलकर समझाता था कि मसीह को दुख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना, अवश्य था... उनमें से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतों ने, और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए।" (प्रेरितों 17:1-4)

आ. उभड़ रहे अगुवों को सिखाना।

"परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा जाकर वहाँ से चला गया; और वह कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ सीरिया और किलिकिया से होते हुए निकला।" (प्रेरितों 15:40-41)

"फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया। वहाँ तीमुथियुस नाम का एक चेला था, जो किसी विश्वासी यहूदिनी का पुत्र था, परन्तु उसका पिता यूनानी था। वह लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में सुनाम था। पौलुस की इच्छा थी कि वह उसके साथ चले; और जो यहूदी लोग उन जगहों में थे उनके कारण उसने उसका खतना किया, क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यूनानी था।" (प्रेरितों 16:1-3)

"और जो बातें तू ने ...मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को सिखाने के योग्य हों।" (2 तीमुथियुस 2:2)

इ. नई कलीसियाएँ स्थापित करना।

"पौलुस की ओर से जो परमेश्वर का दास..है...तीतुस के नाम, जो विश्वास की सहभागिता के विचार से मेरा सच्चा पुत्र है: परमेश्वर पिता और हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। मैं इसलिए तुझे क्रेते में छोड़ आया था कि शेष बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों को नियुक्त करे।" (तीतुस 1:1-5)

"और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिए प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्होंने विश्वास किया था।" (प्रेरितों 14:23)

ई. मसीहियों को तैयार करने के लिए पत्रव्यवहार।

"क्योंकि, हे भाइयो, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो; हमने इसलिए रात दिन काम धन्धा करते हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया कि तुम में से किसी पर भार न हों। तुम आप ही गवाह हो, और परमेश्वर भी गवाह है कि तुम विश्वासियों के बीच में हमारा व्यवहार कैसा पवित्र और धार्मिक और निर्दोष रहा। तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ व्यवहार करता है, वैसे ही हम भी तुम में से हर एक को उपदेश करते, और शान्ति देते, और समझाते थे कि तुम्हारा चाल चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।" (1 थिस्सलुनीकियों 29-12)

विस्फोटक वृद्धि के नियम के विषय में सच्चाइयाँः

- यह योग के विषय में नहीं है परन्तु गुणा के विषय में है। यह धीमे आरम्भ होता है परन्तु अन्त में तीव्र वृद्धि करता है।
- यह चीजें सही करने के विषय में नहीं है, परन्तु सही चीजें करने के विषय में है। यह नीतिक होना है।
- यह अपनी सूची को प्राथमिकता देने के विषय में नहीं है परन्तु अपनी प्राथमिकताओं को सूचीबद्ध करने के विषय में है।
- यह कार्यक्रम करने के विषय में नहीं है परन्तु लोगों को विकसित करने के विषय में है। लोग आपका अनन्त धन हैं।
- यह संकट में प्रतिक्रिया करना नहीं है परन्तु पहले ही अगुवों में समय लगाने के विषय में है।
- यह सेवा करने से पूर्ति प्राप्त करने के विषय में नहीं है परन्तु अगुवों को अधिकार देने के विषय में है।
- यह एक कार्यक्रम के विषय में नहीं परन्तु एक आन्दोलन के विषय में है। कार्यक्रम बड़े रूप में आरम्भ होते हैं परन्तु फिर असफल हो जाते हैं। आन्दोलन छोटे आरम्भ होते हैं, परन्तु समय के साथ बहुत बड़े हो जाते हैं।

पवित्रशास्त्र में नियम...

> "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को सिखाने के योग्य हों।" (2 तीमुथियुस 2:2)
> "दो वर्ष तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया।" (प्रेरितों 19:10)

21 – बपौती का नियम

⇒ **<u>एक अगुवे का स्थायी मूल्य उत्तराधिकार से मापा जाता है।</u>**

आप कैसी सेवकाई बना रहे हैं? क्या यह बनी रहेगी? क्या आपके लोग चेले हैं?

उदाहरणः यीशु
मूल-पाठः मत्ती 4:19; मत्ती 28:19

यीशु का सबसे बड़ा चमत्कार तब नहीं हुआ जब वह पृथ्वी पर चला था। यह अपने बारह चेलों के लिए प्रशिक्षण और प्रतिरूपण के अनगिनत घंटों का परिणाम था - और उसके चले जाने के बाद हुआ था, और उन्हें जाने और मेंटरिंग और अगुआई की उसी कला का पालन करने का निर्देश दिया। चमत्कार यह था कि उसने उन लगभग असफल रहे पुरुषों में अपनी चमत्कारी सेवा को इस प्रकार दोहराया कि दो वर्ष के अन्दर वे सारे एशिया भर में पहुँच चुके थे (प्रेरितों 19:10)। यीशु ने अपना अधिकाँश समय बारहों के साथ - भीड़ के साथ नहीं - बिताया था। वह ऐसे पुरुषों को बनाने के लिए वचनबद्ध था जो कलीसिया को अगली पीढ़ी में ले जाएँगे - ऐसे पुरुष जिन पर आप और मैं ने अपना समय गँवाया होता। यीशु जानता था उसकी बपौती कहाँ पाई जाएगी। उसकी प्रतिभा उसके चमत्कारों में नहीं थी, न ही उसकी सीधी सेवा में थी। यह उसकी सुविचारित गुणा में पाई जाती है।

इस नियम पर टिप्पणियाँ...

<u>**शिष्यता और बपौती छोड़ने का यीशु का विचार** (IDEA):</u>

> I – **शिक्षा...** एक जीवन के संदर्भ में।
> "वह इस भीड़ को देखकर पहाड़ पर चढ़ गया, और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए। और वह अपना मुँह खोलकर उन्हें उपदेश देने लगा।" (मत्ती 5:1-2)
> "वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था। जब वह प्रार्थना कर चुका, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, 'हे प्रभु...प्रार्थना करना...सिखा दे।'" (लूका 11:1)

D – **निदर्शन...** एक जीवन के संदर्भ में।
"जब वह उनके पाँव धो चुका... तो उनसे कहने लगा, "क्या तुम समझे कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया? तुम मुझे गुरू और प्रभु कहते हो, और ठीक ही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ। यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए। क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिया है कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही करो।" (यूहन्ना 13:12-15)

E – **अनुभव...** एक जीवन के संदर्भ में।
"उसने बारहों को अपने पास बुलाया और उन्हें दो दो करके भेजने लगा; और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया।" (मरकुस 6:7)
"तब उसने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, और तोड़-तोड़कर चेलों को देता गया कि लोगों को परोसें।" (लूका 9:16)

A – **मूल्याँकन...** एक जीवन के संदर्भ में।
"तब यीशु ने दुष्टात्मा को डाँटा, और वह उसमें से निकल गई; और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया। तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा, "हम उसे क्यों नहीं निकाल सके?" उसने उनसे कहा, "अपने विश्वास की घटी के कारण... पर यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं निकलती।" (मत्ती 17:18-21)

<u>यीशु ने अपनी बपौती छोड़ जाने के लिए बारह तत्त्वों को काम में लाया था:</u>

1. **पहल-शक्ति (लूका** 6:12-13)
पहल करो और अपने लोगों में अन्तःशक्ति को खोजो।
वह पहाड़ पर प्रार्थना करने गया, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई। जब दिन हुआ तो उसने अपने चेलों को बुलाकर उनमें से बारह चुन लिए...।

2. **सन्निकटता (मरकुस** 3:14, **लूका** 8:1)
उसने बारह पुरुषों को नियुक्त किया कि वे उसके साथ साथ रहें...

3. **मित्रता (यूहन्ना** 15:15)
व्यक्तिगत सम्बंध के द्वारा शिष्यता।
मैं तुम्हें दास न कहूँगा... परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।

4. **उदाहरण (यूहन्ना** 13:15)
मैं ने तुम्हें नमूना दिया है कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही करो।

5. **वचनबद्धता (मत्ती** 16:24; **यूहन्ना** 13:1)
यीशु ने... अपने लोगों से जो जगत में थे जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा।
यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।

6. **जिम्मेवारी (मरकुस** 6:7)
उसने बारहों को अपने पास बुलाया और उन्हें दो दो करके भेजने लगा; और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया।

7. **ज्ञान (लूका** 8:9-10)
उसके चेलों ने उससे पूछा कि इस दृष्टान्त का अर्थ क्या है? उसने कहा, 'तुम को परमेश्वर के राज्य के भेदों की समझ दी गई है...।

8. **दर्शन (मत्ती** 4:19, **यूहन्ना** 4:35)

मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।
क्या तुम नहीं कहते, 'कटनी होने में अब भी चार महिने पड़े हैं ?' देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं।

9. **भरोसा** (**मत्ती** 10:1-8)
फिर उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की निर्बलताओं को दूर करें। और चलते चलते यह प्रचार करो...बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो। तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।

10. **मूल्याँकन** (**लूका** 10:17-24)
वे सत्तर आनन्द करते हुए लौटे और कहने लगे, "हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं।" उसने उनसे कहा, "मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। देखो, मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी। तौभी इससे आनन्दित मत हो...परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं।"

11. **अधिकार** (**यूहन्ना** 20:22; **प्रेरितों** 1:8)
यह कहकर उसने उन पर फूँका और उनसे कहा, "पवित्र आत्मा लो।"
परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।

12. **जलावतरण** (**मत्ती** 28:18-20)
पहल-शक्ति ने उन्हें सेवा में आरम्भ कर दिया।
स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ...

पवित्रशास्त्र में नियम...

"इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे साथ हूँ।" (मत्ती 28:19-20)
" मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।" (मत्ती 4:19)

उकाब मसीही – तनाव से बल की ओर

अपने तनाव को बल में बदलना। किसी चीज के बारे में सोचो जो महिमा और वैभव की सिद्ध तस्वीर को चित्रित करता है। मेरे लिए यह, अपने पंख फैलाए, आकाश में उड़ कर रहा महान उकाब है। उकाब परमेश्वर की एक गतिशील सृष्टि है जिसकी जाति में इस से कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है। अब अपने बारे में सोचो। क्या आप अपने आपको उकाब के स्तर पर देखते हो - एक ईश्वरीय निदेशित, अनुशासित परमेश्वर की बिना श्रेष्ठ गतिशील सृष्टि ? नहीं ? सम्भवत: उसके बदले आप अपने आपको एक चूज़ा या एक तुर्की के रूप में देखते हो। या एक टीसा - परन्तु उकाब कभी नहीं। ऐसा क्यों है ?

ईश्वरीय रूप से निदेशित चेले

यशायाह 40:31 कहता है, "परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे, वे उकाबों के समान उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।" इब्रानी भाषा में "बाट जोहने" का अर्थ है: "मरोड़कर एक साथ बाँधना" या "अपेक्षा करना"। इस प्रकार ऊपर दिए वचन का अर्थ है: "वे जो यीशु के साथ बँधे हुए हैं और जिनमें प्रतीक्षा की एक आत्मा है, वे नया बल प्राप्त करेंगे"। इस वचन में परमेश्वर अपने लोगों की तुलना उकाबों से करता है। वह हमें अपनी श्रेष्ठ सृष्टि के रूप में देखता है। हम उस तस्वीर को सामने क्यों नहीं ला पाते हैं ? बाइबल कहती है कि कुछ शारीरिक मसीही हैं जिनके काम लकड़ी,

घास और फूस के समान जल जाएँगे (1 कुरिं. 3:12-15)। हम में कोई भी ऐसा नहीं चाहता। मैं जानता हूँ मैं नहीं चाहता। परमेश्वर ने मुझे दिखाया है कि हम सब उकाब मसीही बन सकते हैं और यीशु के साथ उड़ सकते हैं। परन्तु पहले हमें राज्य को समझना है।

चूज़ों का स्वभाव

ऊपर के वचन में ध्यान दो कि प्रभु ने यह नहीं कहा, " वे चूज़ों के समान उड़ेंगे...।" यदि आप में से किसी ने चूज़े पाले हैं तो आप जानते होंगे कि वे सच में मूक प्राणी होते हैं। उनका एक मात्र उद्देश्य भोजन उत्पन्न करना ही है - चाहे अंडे देने के द्वारा या उनके जीवन देने के द्वारा। परन्तु वे यह अपने बारे में नहीं जानते हैं। उन्हें एक बाड़े में डाल दो और देखो। वे धूल में चुगते रहते, कुड़-कुड़ करते और मरने के लिए मोटे होते रहते हैं। यदि वे ऐसा कर सकें तो वे सोचते हैं कि जीवन अच्छा है। वे पेड़ों के ऊपर उड़ने के बारे में कुछ नहीं सोचते हैं। वे उनके धूल के ढेर से खुश हैं।

आज, हमारे पास "चूज़ों की मनोवृत्ति" वाले मसीही हैं। वे उकाबों के समान उड़ते नहीं हैं। मैं उन्हें "चूज़े मसीही" कहना पसन्द करता हूँ। वे सारा दिन धूल में चुगते हुए बिताते हैं। और जब वे धूल में नहीं चुग रहे होते हैं तो, वे कभी-कभी क्रुद्ध हो जाते हैं और एक दूसरे को नोचने लगते हैं। जीने का कितना दुखद तरीका है। कोई नियति नहीं, कोई योजना नहीं, सारे समय नोचना और कुड़ कुड़ाना।

उकाबों का स्वभाव

उकाब एक सुन्दर, कुलीन प्राणी है, इसकी जाति में सबसे समझदार। उकाब को ऊँची खड़ी चट्टानों में चुनौतियों और दुर्भाग्य से भरे एक कुछ-कुछ सादे और कठोर, अनुशासित जीवन में जीने के द्वारा उसकी सम्पूर्ण अन्तःशक्ति को प्राप्त करने के लिए बनाया गया है। बिना डर के तूफानी हवा का सामना करके, वह इस प्रतिकूल परिस्थिति को एक "ऊंची उड़ान" की जीवनशैली में परिवर्तित कर देता है। प्रतिकूल हवाओं के उग्र प्रवाह पर ऊँचे शिखरों तक ऊँचे उड़ने से, उकाब की तीक्ष्ण आँख "बड़ी तस्वीर" को देख सकती है। "ऊँचे पर उड़ने" के द्वारा, वे मीलों दूर तक देखकर स्वादिष्ट भोजन का पता लगा लेते हैं। इस प्रकार वे "मेरे सतानेवालों के सामने मेरे लिए मेज" का आनन्द लेते हैं। (भजन 23:5)।

एक उकाब ऊपर उठने के लिए प्रतिकूल, तूफानी हवाओं के बिना कभी भी "ऊँचा उड़" नहीं सकता है। और परमेश्वर ऐसे उकाब मसीहियों को चाहता है जिन्होंने इस ईश्वरीय निदेशित अनुशासन को परीक्षाओं के समयों के द्वारा सीखा हुआ है। यीशु ने कहा हम उसके चेले होंगे। चेलों को अनुशासित किया जाता है। यदि हमें अनुशासित नहीं किया जाता तो, हम असल में उसके चेले नहीं। हम केवल चूज़े हुए जो धूल में चुगते रहते हैं। शक्तिशाली मसीही बनने और अपनी अन्त-शक्ति की ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए, हमें परमेश्वर के अनुशासन को स्वीकार करना है।

एक उकाब मसीही बनने के छः भेद

1. तूफान में रहो

एक उकाब तूफान से भागता नहीं है। सबसे उग्र तूफानों में ही उकाब इसकी सबसे ऊँची उड़ान में पहुँचता है। वह सीधे हवा में घुसता है, और प्रवाह इसे ऊपर, और ऊपर उठा ले जाता है। क्या सबक है हमारे लिए! वही तूफान जो आपको तोड़ते और नष्ट करते जान पड़ते हैं, आपको परमेश्वर की उपस्थिति में ऊँचा उठा सकते हैं।

क्या आप जानते हैं उकाब ऊँचा क्यों उड़ता है? क्योंकि यदि यह बहुत नीचे उड़े तो, यह कौओं और बाजों और दूसरे पक्षियों द्वारा सताया जाता है जो पशुओं के शवों को खाते हैं। इसके विपरीत, उकाब अकसर जीवित शिकार करता है। उसी प्रकार, जब मसीही इस संसार के कौओं और बाजों के साथ नीचे उड़ते हैं तो, एक "शव मनोवृत्ति" से हमारा ध्यान भंग होने का खतरा रहता है। हम आलोचक, निन्दक और कड़ुवे बन जाते हैं, और हम नकारात्मक विचारों पर जैसे कि मृत्यु पर, जैसे माँस खानेवाले परभक्षी जो मरे माँस पर लगे होते हैं, ध्यान लगाने लगते हैं। यह समय है कि हम ऊँचाइयों पर उड़ना और ताज़ी हवा लेना सीख लें जहाँ परमेश्वर हमें जीने के लिए बुला रहा है। तूफान में रहो और इसके साथ ऊँचाई पर उड़ना सीखो।

2. हवा का सामना करो

जब जीवन के तूफान प्रचण्ड होते हैं - उनका सामने से सामना करो। जब एक उकाब हवा के सामने होता है तब यह उष्मीय झौंका पकड़ता है जो इसे एक ऊँचाई पर ले जाता है। यह कुछ मिनटों में ही जमीन से तीन किलोमीटर तक ऊपर जा सकता है। हालाँकि वे डेढ़ से ढाई किलो वजन के ही होते हैं, परन्तु एक उकाब के पंखों का फैलाव 8 से 14 फीट तक होता है और उनमें 1200 पंख

होते हैं। वे उग्र हवाओं से जो उन पर थपेड़े मारती हैं, अप्रभावित जान पड़ते हुए उड़ते हैं। उनकी उड़ान सरल और निश्चिन्त दिखती है, परन्तु ऐसा नहीं है।
उकाबों या मसीहियों के लिए परिस्थितियों के ऊपर उड़ना यूँ ही नहीं हो जाता है। इसके लिए:

1. साहस,
2. स्पष्ट सोच,
3. ताकत,
4. मानसिक प्रयत्न, और
5. अनुशासन लगता है।

संसार आप को इसके साँचे में न ढाल ले। परमेश्वर के लिए आगे बढ़ो। लड़ाई में हार मत मानो। अपने मन में श्रेष्ठता को लक्ष्य बनाओ और उड़ो। परमेश्वर बाइबल में उकाब के पंखों की बात करता है। वह कहता है, "तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ" (निर्गमन 19:4)। यीशु हमें अपने पंखों पर उठा लेगा, जिसकी ताकत और फैलाव को मापा नहीं जा सकता है। वह हमें पवित्र आत्मा की हवा के सामने होना सिखाएगा और वह हमें ऊँचाइयों पर ले चलेगा।
माता-पिता उकाब उनके बच्चों को उनकी पीठ पर उठाकर ऊँचाई पर ले जाते हैं जाकि वे उड़ना सीख सकें। यह जानना कितना अदभुत है कि हमारा परमेश्वर न केवल हमारा ध्यान रखता है बल्कि जैसे उपद्रव हमें नष्ट करने के लिए जोखिम में डालने लगता है और जब हम उड़ना सीखने के अनुभव में पृथ्वी की ओर गिरने लगते हैं, तब वह जानता भी है कि कब झपटकर नीचे आना है और हमें कोमलता से नीचे उतारना है।

3. वचन करो

जब उकाब का बच्चा पैदा होता है, तो वह अपने आप घोंसले में से निकलकर उड़ने नहीं लग जाता है। यह न केवल मूर्खता होगी बल्कि खतरनाक भी होगा। उसे अपने माता-पिता से स्वतन्त्र होने के लिए प्रकृति की एक प्रक्रिया पर चलना होता है। सबसे पहला काम जो एक उकाब अपने बच्चों के लिए करता है उन्हें खाना खिलाता है। परमेश्वर को तुम्हें खिलाने दो। उसमें और उसके वचन में बढ़ने के लिए उसके पास हमारे लिए पोषण है। आखिरकार, उकाब के बच्चे फुदकने लगते हैं। किसी को उन्हें बताने की आवश्यकता नहीं पड़ती कि कब उनके उड़ने का समय है। हालाँकि यह सफर छोटा ही होता है (अकसर दो मील से कम), वे धीरे-धीरे फासला बढ़ा लेते हैं परन्तु प्रक्रिया एक दिन में नहीं होती है।
परमेश्वर ने कलीसिया को एक उद्देश्य से बनाया है। यह एक ईश्वरीय, अनुकूल घोंसला है, उसके लोगों को पोषण देने और उसके द्वारा निर्धारित गति में उनके बढ़ने के लिए बनाई गई है। मसीहियों के रूप में, हमें परमेश्वर की सिद्ध इच्छा में प्रतीक्षा करना और विश्राम करना सीखना है, और उसके समय में,उसकी योजना पूरी होगी। हम उकाब के बच्चों के समान अकसर परेशान होने लगते हैं। भोजन की कमी हो सकती है, परन्तु भोजन की कमी ही भोजन खोजने के लिए उकाब मसीहियों को उनकी श्रेष्ठ योग्यता को विकसित करने में सहायता करती है। परमेश्वर कठिन समयों को हमें उसके राज्य के लिए शक्तिशाली बनने के लिए उपयोग करता है। आओ! वचन करो! विश्वास में बढ़ो!

4. बड़ी तस्वीर देखो

उकाब श्रेष्ठ आँखों की दृष्टि विकसित कर लेते हैं - आश्चर्यजनक 25 मील तक देख सकते हैं। वे बड़ी तस्वीर देख सकते हैं, जान लेते हैं कि उन्हें किस चीज पर केन्द्र होना और करना है। उसी प्रकार हमें भी बड़ी तस्वीर देखनी है, एक दर्शन पाना है और अपने सम्पूर्ण हृदयों से इसका पीछा करना है। वचन कहता है कि दर्शन के बिना लोग नष्ट हो जाते हैं (नीतिवचन 29:18)। क्या आप नष्ट हो रहे हो? तो ठीक है, एक दर्शन - परमेश्वर का दर्शन - ले लो - अपने जीवनों के लिए। परन्तु याद रखो, दर्शन पाने में जोखिम उठाना होगा - आत्मिक क्षेत्र में ऊँचाई पर उड़ने का जोखिम। नीचे रहकर, बैठे हुए, तुम्हें कोई दर्शन नहीं मिलेगा। यदि आप चीजों को भावनाओं या जीवन की परिस्थितियों में से देखोगे तो, सदा हार जाओगे।
हम चीजों को जैसे देखते हैं उससे हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व प्रभावित होता है, और होता है हमारा:

- अ. रवैया
- आ. विश्वास
- इ. क्षमता
- ई. निश्चय, और
- उ. उत्साह

जिसे परमेश्वर देखता है उसे देखो, और आप अलग तरीके से कार्य करोगे। बड़ी तस्वीर देखने का अर्थ, बड़ी तस्वीर के साथ बने रहना भी है। छोड़ देना सरल है और हमारे समाज में प्रचलित भी है, जैसे तलाक की दर दिखाता है। परन्तु परमेश्वर हमें छोड़ नहीं देता है। उसके साथ रहो।

5. दीनता का ऊँचा आधार खोजो

जब हम परमेश्वर के सामने दीन होते हैं तब वह हमें ऊपर उठाता है। परमेश्वर संसार को हिलाने, देश पर आक्रमण करने और जीतने और कब्जा करने के लिए "यहोशू पीढ़ी" तैयार कर रहा है। परन्तु इससे पहले यह हो, हमें अपने घुटनों पर होना है और अपने को दीन करना है और उसे खोजना है। तब हम फल लाने और मसीह के साथ उड़ने लगेंगे। कुछ मसीही उनके सारे जीवन सबको यह प्रमाणित करने में लगा देते हैं कि वे उकाब हैं, कि वे यीशु से प्रेम करते हैं। यदि आप वास्तव में पता लगाना चाहते कि वे करते हैं, तो उनके जीवनों में फल को देखो।

एक उकाब का घोंसला विशाल होता है, लगभग 3 मीटर गहरा और 2 मीटर चौड़ा। जब यह गन्दा होने लगता है तब वे इसे ऊँचा करने लगते हैं। आप कहेंगे, "परन्तु यदि वे इसे बड़ा करते रहे तब दूसरे उकाब भी इसमें घुसने लगेंगे।" सही है। मैं ने उकाब के घोंसले में चिड़ियों और दूसरे पक्षियों को देखा है, परन्तु उकाब परवाह नहीं करता। इसे खुशी होती है कि दूसरे इससे लाभ उठा रहे हैं। कुछ डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार कर रहे थे, परन्तु प्रेरित पौलुस फिर भी खुश था कि प्रचार तो हो रहा था (फिलि. 1:15-18)। वह किसी मनुष्य को "शरीर के अनुसार" नहीं देखता था। यदि मैं आपके अन्दर यीशु को देखता हूँ तो मेरे पास आपके लिए सदा कुछ अच्छा ही कहने के लिए होगा। ऐसे समय होते हैं जब लगता है कि आपके आस-पास सबकुछ ढह रहा है और गलत हो रहा है। उकाब के उदाहरण का अनुकरण करो। जब हलात कठोर दिखते हैं, तब दीनता के ऊँचे आधार पर जाओ।

6. अपनी चोंच से आवाज निकालो

क्या होता है जब आप थक जाते हो? जो प्रभु की बाट जोहते हैं (या जो प्रभु के साथ जुड़े हुए हैं) वे नया बल प्राप्त करेंगे। परन्तु मसीहियों / विश्वासियों के साथ क्या होता है जब उनका बल नया नहीं होता है? वे क्या कर रहे हैं? उन्होंने उकाब बनने से त्याग-पत्र दे दिया है और फैसला किया है कि टीसा, बाज और कौआ अच्छे मित्र बनते हैं। उन्होंने उनकी प्रतिष्ठा को एक शव मनोवृति होने के लिए दे दिया है। परमेश्वर के वचन में लिखा है, "तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा, और मैं तुझे देश के ऊँचे स्थानों पर चलने दूँगा" (यशायाह 58:14)। परमेश्वर में आनन्द करो और उसके चेले बनो।

<u>जब संकट आता है, तब उकाब के उदाहरण का अनुकरण करो। जब इसे नया बल पाना होता है तब यह नीचे दिए कदम उठाता है:</u>

यह चट्टान की दरार में छिपता है।
उकाब नया बल पाने के लिए चट्टान में चढ़ जाता है। परमेश्वर आपके छिपने का स्थान हो।

यह इसकी चोंच को साफ और तेज करता है।
उकाब को अपने पुराने पंखों को निकालना होता है। परन्तु यह ऐसा कर नहीं सकता है क्योंकि इसकी चोंच पपड़ी के कारण क्षय हो गई है। इसे नया होने की प्रक्रिया में अपनी चोंच से आवाज निकालनी है या अपने को चोट पहुँचानी है। इसलिए उकाब पपड़ी को निकालने के लिए अपनी चोंच चट्टान पर मारता और रगड़ता है। अपनी चट्टान - यीशु - के पास जाओ और कचड़ा साफ करो, वह पाप जो आपको नीचे गिराता है और आपके जीवन में परमेश्वर के वचन की सुस्पष्टता को मन्द कर देता है।

यह पुराने पंखों को निकाल देता है।
पुराने मनुष्यत्व को उतार दो। परमेश्वर जानता है कि अपनी ताकत में मैं इस संसार से नहीं निपट सकता हूँ जो झूठ बोलता और धोखा देता और ठगता है। मैं थक जाता हूँ और बदला लेना चाहता हूँ। परन्तु परमेश्वर कहता है, "ऐसा मत करो। चट्टान की दरार में छिप जाओ।" नया मनुष्यत्व, जो यीशु मसीह है, पहने लो।

यह झरने में नहाता और धूप सेंकता है।
परमेश्वर के सामने अपने को शुद्ध करो। उकाब अपनी सेवा करता है, तब नए पंख पाने के लिए धूप में बैठता है। अपने उद्धार के लिए सेवा करो। क्या मेरा प्रार्थना का जीवन सही है? क्या मैं वचन में हूँ? क्या मैं यीशु से प्रेम करता हूँ? क्या मुझ में सहनशक्ति है? क्या मैं धैर्यवान हूँ? तब, उसकी बाट जोहो।

यह दस दिन और तेल की प्रतीक्षा करता है जो उसके पंखों को चिकना कर सकता है।
उकाब को जब नए पंख मिल जाते हैं, वह तब भी उड़ता नहीं है। यह और दस दिन तेल की प्रतीक्षा करता है जो इसके पंखों को चिकना करने और जलसह बनाने के लिए आवश्यक है, क्योंकि अब जब यह तूफानों और विपत्तियों में पड़ेगा तब अभिषेक जूए को तोड़ेगा। अपने जीवन को अभिषेक करने के लिए पवित्र आत्मा का तेल खोजो।

युद्ध और युद्ध के हथियारों को जानना

शैतान जीवित है और अपना काम कर रहा है। वह आपको पकड़नेवाला है, और उसके विरुद्ध खड़े रहना परमेश्वर के वचन और सामर्थ्य के साथ ही हो सकता है। जैसे 2 कुरिन्थियों 10:3-5 कहता है, हमारे हथियार - परमेश्वर के हथियार - शैतान के गढ़ों को ढा देने के लिए सामर्थी हैं। जिन गढ़ों को शैतान ने आपके जीवन में बनाया हुआ है, उन्हें ढाना आरम्भ करो। स्थिर खड़े रहो और लड़ो। आप एक युद्ध में हो, और जब तक आप परमेश्वर की ओर से लड़ते रहोगे, जीतते रहोगे। हमारे मन शैतान के कार्य का अड्डा हैं। सबकुछ जो शत्रु ने किया है, या करेगा, आपके मन में आरम्भ होगा। वह आपके मन को बुरे विचारों से भरने की कोशिश करेगा जो, भविष्य में, आपको पापी कार्यों में ले जाएगा।
नीतिवचन 23:7 कहता है, "क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है।" आप जो सोचते हैं वही निर्धारित करेगा, आप क्या बनेंगे। अपने मन को परमेश्वर पर रखना आपका लक्ष्य है, और ऐसा करने के लिए हमें:

1. विश्लेषण करना है: परमेश्वर के सामने शान्त होने के लिए समय लगाओ।
2. व्यक्तिगत बना लेना है: हर वचन इस प्रकार पढ़ो जैसे यह आपके लिए लिखा गया था।
3. मन में स्पष्ट रूप से देखना है: परमेश्वर को आपके शत्रुओं को जीतते हुए देखो।

वैसा मसीही बनो जो परमेश्वर चाहता है आप इस संसार में बनो। योद्धा बनो, और ऊँचे उड़ो। एक उकाब मसीही बनने का साहस करो।

परमेश्वर की योजना के सुपुर्द हो जाओ

उकाब झुँड में नहीं उड़ते हैं। वे ऊँचा उड़ते हैं और अपनी अन्तःशक्ति प्राप्त करते हैं। वे चूज़े के समान कीड़े नहीं छानते या खरोंचते। वे जानते हैं वे कौन हैं और कौन नहीं हैं। वे "अति पक्षी" नहीं हैं। वे गलतियाँ और अशुद्ध गणना करते हैं, परन्तु वे वचनबद्ध और उत्तरदायी हैं।
हमें अपने मार्ग प्रभु को सौंप देने चाहिए और केवल उसी की ओर उत्तदायी होना चाहिए। उत्तरदायी होने का अर्थ है:

- 1. छेद्यता: चोट खाने की क्षमता होना।
- 2. शिक्षणीयता: सीखने की उत्सुकता होना।
- 3. अखंडता: चाहे कोई भी कीमत क्यों न हो, सत्य की ओर वचनबद्ध होना।

इन क्षेत्रों में परमेश्वर की ओर उत्तरदायी होना सीखो। उस पर भरोसा करो। उसकी ओर वचनबद्ध और उत्तरदायी बने रहने के लिए मजबूत चरित्रबल चाहिए। एक मजबूत चरित्रबल तब दिखता है जब सबकुछ उसके चरणों पर डाल दिया जाता है। हमें अर्पित करने हैं:

(क) व्यक्तिगत सम्बंध -
"यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और अपनी पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहिनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" (लूका 14:26)।

(ख) लक्ष्य -
"और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता" (लूका 14:27)।

(ग) धन-सम्पत्ति -
"इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सबकुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता" (लूका 14:33)।

वचनबद्धता, उत्तरदायित्व और चरित्र - इन चीजों की हमारे प्रभु को खोज है। उसके पीछे चलो। वह देखो जो परमेश्वर देखता है। परमेश्वर के साथ ऊँचे उड़ो और उसे देखने का साहस करो जो आपके लिए उसके पास होगा।
और अन्त में, उसकी योजना की ओर वचनबद्ध रहो। उकाब के पीछे चलो और एक उकाब मसीही के रूप में पहचाने जाओ।

तनाव कम करने के कुछ उपयोगी नुसखे

1. प्रार्थना करो।
2. समय पर सो जाओ, हो सके तो हर रात उसी समय।
3. समय पर जाग जाओ ताकि आपको उठ कर जल्दबाजी नहीं करनी पड़े।
4. उन परियोजनाओं को इन्कार करो जिनको करने के लिए आपके पास समय नहीं है या जिनके कारण आपकी मानसिक, आत्मिक या शारीरिक सेहत पर असर पड़ सकता है।
5. काम योग्य लोगों को सौंप दो।
6. अपने वादों और क्रियाओं को कम करो। अपने जीवन को सरल बनाओ।
7. काम करने और स्थानों पर पहुँचने के लिए पर्याप्त समय दो।
8. अपनी गति निर्धारित करो। बड़े और कठिन बदलावों और परियोजनाओं को फैला दो; कठिन चीजों को इकट्ठे नहीं रखकर "अड़चनों" से बचो।
9. एक समय में एक दिन जीओ।
10. चिन्ताओं को दिलचस्पियों से अलग करो। यदि एक स्थिति एक दिलचस्पी है तो, पता लगाओ कि परमेश्वर क्या चाहता है आप करें और बेचैनी को निकाल दो। यदि आप एक स्थिति के विषय में कुछ नहीं कर सकते हो तो, इसे भूल जाओ।
11. अपने बजट में जीओ। ऋण में मत फँसो।
12. बैक-अप और फोटो-कॉपियाँ रखो: अपने पर्स में एक अतिरिक्त कार या गाड़ी की चाबी; घर की एक अतिरिक्त चाबी कहीं छिपा रखो या किसी अच्छे मित्र के यहाँ रखो; महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों की फोटो-कापियाँ। महत्त्वपूर्ण फाइलों का सीडी पर बैक-अप लेकर रखो।
13. अपना मुँह बन्द रखो। यह छोटी सी सलाह आपको बड़ी मुसीबत से बचा सकती है।
14. जब आप एक कतार में खड़े हो, बस में सफर कर रहे हो या लम्बे सफर में हो तो, अपने साथ एक बाइबल या कोई दूसरा प्रेरणात्मक लेख रखो।
15. पर्याप्त व्यायाम, विश्राम और अवकाश पाओ। सन्तुलन बनाए रखना कुंजी है।
16. सही खाना खाओ, स्वास्थ्य का ध्यान रखो, दैनिक भोजन की मात्रा की सीमा बनाए रखो।
17. सुव्यवस्थित रहो, जिससे हर चीज अपनी जगह पर हो और आपको पता हो कौन सी चीज कहाँ मिलेगी - और उन्हें वैसा ही रखो।
18. कार चलाते समय, टेप या सीडी सुनो जो आपको आनन्दित रखे या आपके जीवन की विशेषता बढ़ाए।
19. एक डायरी या छोटी नोट-बुक साथ में रखो। विचार और प्रेरणाएँ जब आती हैं उन्हें लिख लो।
20. डायरी की अच्छी व्यवस्था करो, और अपने आप को अधिक बुक मत करो या अधिक वादे मत करो।
21. हर दिन एकान्त में होने और चिन्तन करने और अपने जीवन और क्रियाओं का मूल्याँकन करने के लिए समय निकालो।
22. समस्या है? उसी समय प्रार्थना में परमेश्वर की ओर फिरो। छोटी समस्याओं से उसी समय निपट लो; उनके बड़ा होने की प्रतीक्षा मत करो।
23. याद रखो कि निराशा और आशा के बीच सबसे छोटा पुल अकसर एक अच्छा "धन्यवाद यीशु" है।

24. हँसना और मुस्कुराना सीखो।

25. अपने काम को गम्भीरता से लो, परन्तु अपने को सदा गम्भीरता से मत लो।

26. एक क्षमा करनेवाला रवैया बनाओ (जान लो कि अधिकाँश लोग वह सब कर रहे हैं जो वे जानते हैं कैसे करना है)।

27. निर्दयी लोगों को दया दिखाओ (सम्भवत: उन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है)।

28. बात कम करो; सुनो अधिक।

29. कभी-कभार धीमे हो जाओ, और अपने को याद दिलाओ कि आप इस संसार के प्रधान मंत्री नहीं हो।

30. सुबह या शाम को सैर में जाने का प्रयत्न करो और परमेश्वर की सुन्दर सृष्टि के लिए उसका धन्यवाद करो।

31. अपने आस-पास के लोगों से - विशेषकर अपनी पत्नी और बच्चों से - कुछ प्रोत्साहन और प्रशंसा के शब्द कहो। इसकी कोई कीमत नहीं है और वे इसको अपने दिल में रखेंगे।

32. यदि यह आपके जीवन का आखिरी दिन हुआ तो आप क्या करोगे - अपनी पत्नी, बच्चों. मित्रों, माता-पिता, दूसरों के साथ क्या करोगे ? उसे आज करो।

33. थोड़ी और अधिक प्रार्थना करो।

सुसमाचार के सामर्थ्य से राष्ट्रों को बदला जा सकता है

'तब दानिय्येल ने स्वर्ग के परमेश्वर का यह कहकर धन्यवाद किया, "परमेश्वर का नाम युगानुयुग धन्य है; क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं। समयों और ऋतुओं को वही बदलता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है; बुद्धिमानों को बुद्धि और समझवालों को समझ भी वही देता है; वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रकट करता है; वह जानता है कि अन्धियारे में क्या है, और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है।"' (दानिय्येल 2:19-22)
परमेश्वर ने सारी सृष्टि की रचना की है। उसी के पास जो वह करना चाहता है करने की सामर्थ्य है, क्योंकि वही अपने सामर्थ्य के वचन से सबकुछ सम्भालता है। (इब्रा. 1:3)। उस ने क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा, यीशु मसीह में सब चीजों का अपने साथ मेलमिलाप किया है, चाहे वे पृथ्वी की हों चाहे स्वर्ग में की हों। (कुलु. 1:20)
परमेश्वर न केवल व्यक्तियों को छुड़ाता और बचाता है, परन्तु सारे राष्ट्रों का आत्मिक वातावरण भी बदलता है। इस समय भी परमेश्वर राष्ट्रों को बदल और परिवर्तित कर रहा है। वह चाहता है कि संसार के राष्ट्रों तक पहुँचने के लिए शहर और गाँव उसकी बेदारी और महिमा के गोता-तख्ता हों। वह असंख्य विश्वासियों की एक सेना बनाना चाहता है जो यीशु मसीह के सुसमाचार को मानवता के महासागर में ले जाएँगे जिन्होंने उद्धारकर्त्ता, यीशु मसीह के बारे में कभी नहीं सुना है।

जब एक व्यक्ति यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करता है, तब परमेश्वर की आशीष उसके जीवन में आती है और परमेश्वर चमत्कार करने लगता है। उसकी अलौकिक सामर्थ्य, जिसने यीशु को मरे हुओं में से जीवित किया था, व्यक्ति के जीवन में कार्य करने लगती है, उसे वह व्यक्ति बनाने लगती है जो परमेश्वर ने चाहा था वह बने। उसे एक बिलकुल नई पहचान मिलती है। वह उसके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना में प्रवेश करने लगता है और स्पष्ट अनुभव करने लगता है कि असली स्वतन्त्रता क्या है। वह देखने लगता है कि पाप और स्वार्थीपन ने उनकी पकड़ छोड़ दी है; उनका स्थान परमेश्वर के भरपूर जीवन और परिवाही आशीष ने ले लिया है, और अब वह दूसरों के लिए आशीष बना है। आप यीशु मसीह के द्वारा मुक्त किए गए हो, ताकि आप परमेश्वर का जीवन और सामर्थ्य उन लोगों के पास ले जाओ जिन्हें परमेश्वर से एक चमत्कार की आवश्यकता है। अदभुत बात तो यह है कि परमेश्वर जो इतना भला है कि वह उनके लिए करना चाहता है। यीशु बँधुओं को छुड़ाने आया था: "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।" (लूका 4:18-19)
यीशु स्वतन्त्रता और मुक्ति की बात करता है। जो सुसमाचार यीशु लाया था जीवन के हर क्षेत्र के लिए स्वतन्त्रता है। हमें इसका निडरता से, पूरा, विशुद्ध और अपरीक्षित प्रचार करना है। जब एक व्यक्ति मुक्त किया जाता है, तब उसके जीवन और वातावरण में स्वतन्त्रता अपने को व्यक्त करती है। उसकी मुक्ति उसकी आत्मा, प्राण और शरीर में असर डालती है। उसकी स्वतन्त्रता उसके परिवार, रुपये-पैसे, पड़ोस और उसके देश को प्रभावित करती है।

विश्वासी – देश के लिए परमेश्वर की आशीष के माध्यम

परमेश्वर चाहता है कि उसकी आशीष सारे देश में पहुँचे और उसे छूए। "जब धर्मियों का कल्याण होता है, तब नगर के लोग प्रसन्न होते हैं...सीधे लोगों के आशीर्वाद से नगर की बढ़ती होती है।" (नीतिवचन 11:10-11)। "जब धर्मी लोग शिरोमणी होते हैं, तब प्रजा आनन्दित होती है; परन्तु जब दुष्ट प्रभुता करता है तब प्रजा हाय-हाय करती है।" (नीतिवचन 29:2)। "जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है, परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है।" (नीतिवचन 14:34)। विश्वासी अपने वातावरण में यीशु मसीह की आशीष ले जाते हैं और जैसे वे अपने प्रभु के पीछे चलते हैं, वे उस देश में आशीष लाते हैं जिसमें वे रहते हैं।
एल्लियाह के दिनों में लोग अकाल से तड़प रहे थे। 1 राजा 16:30-34 वर्णन करता है कि किस प्रकार राजा अहाब और उसकी पत्नी मूर्तिपूजा में पड़ गए थे। 1 राजा 17:1 बताता है कि फलस्वरूप, "समय समय पर मेंह" (लैव्य. 26:4 देखो) की आवश्यक आशीष देश में नहीं रही थी। परिणाम अंगमारी, गरीबी, भुखमरी और तंगहाली था।
होशे 4:3 में प्रभु कहता है, "इस कारण यह देश विलाप करेगा, और मैदान के जीव-जन्तुओं, और आकाश के पक्षियों समेत उसके सब निवासी कुम्हला जाएँगे।" क्यों? "इस देश में न तो कुछ सच्चाई है, न कुछ करुणा और न कुछ परमेश्वर का ज्ञान ही है। यहाँ शाप देने, झूठ बोलने, वध करने, चुराने, और व्यभिचार करने को छोड़ कुछ नहीं होता; वे व्यवस्था की सीमा को लाँघकर कुकर्म करते हैं और खून ही खून होता रहता है।" (होशे 4:1-2)। सारे देश ने पाप और धर्मत्याग के परिणामों को महसूस किया था। जब अभक्ति देश का मानक बन जाता है, तब अधार्मिकता को बढ़ावा मिलता और कानूनी समर्थन मिलता है। जब सुसमाचार का

विरोध होता है और इसका अयथार्थ रूप प्रकट किया जाता है, और इसके प्रचारों की हँसी उड़ाई जाती, निन्दा की जाती और सताए जाते हैं, तब सारे देश में इसकी नकारात्मक प्रतिध्वनि का असर पड़ता है।
परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंश (जिसमें आज का हर विश्वासी है) को कहा, "जो तुझे आर्शीवाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।" (उत्प. 12:3)। हम इस वचन से समझते हैं कि जब अधिकारी और सत्ता सुसमाचार फैलाने के लिए विश्वासियों के लिए आसान करते हैं, तब उनका देश आशीष के रूप में इनाम पाता है। परमेश्वर का वचन बारम्बार कहता है कि इसके विश्वासियों के द्वारा परमेश्वर की आशीष देश पर आती है। इसलिए, यह अत्यावश्यक है कि मसीही सोएँ नहीं, बल्कि उनकी जिम्मेवारी को समझें। यदि सदोम में दस धर्मी भी होते तो परमेश्वर उसे छोड़ देता, और निश्चय ही आपके देश में दस धर्मियों से अधिक हैं। कम से कम हजारों तो हैं।

धार्मिकता – देश के लिए रक्षा

यह बहुत मायने रखता है जब आपको एहसास हो कि जो धार्मिकता आपको यीशु मसीह के द्वारा मिली है, आपके देश के लिए एक आशीष है। आप अपने देश के लिए रक्षा की एक ढाल बन गए हैं। शैतान आपको बताने न पाए कि आप कुछ नहीं हैं; कि आपके विचार अर्थहीन हैं, और आपकी प्रार्थनाएँ और क्रियाएँ समय की बर्बादी हैं। यह गलत है। 1 शमूएल 14:6-15 देखो, योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले ने पलिश्तियों को जीत लिया और उनमें बहुत गड़बड़ पैदा की, क्योंकि योनातान ने कहा था, "क्योंकि यहोवा के लिए कोई रुकावट नहीं, कि चाहे तो बहुत लोगों के द्वारा चाहे थोड़े लोगों के द्वारा छुटकारा दे।" आपकी प्रार्थनाएँ और क्रियाएँ महत्त्वहीन नहीं हैं। आप अपने देश के लिए आशीष हैं।

एक देश के आत्मिक वातावरण को बदलना परमेश्वर के लिए सौ प्रतिशत् मुमकिन है. एक देश के लिए शैतान के मार्गों पर चलने के बजाय परमेश्वर के मार्गों पर चलना बिलकुल मुमकिन है। कई विश्वासी इस तथ्य पर कुछ विश्वास नहीं करते, और शत्रु तो यही चाहता है। परन्तु - यदि आप विश्वास करें तो यह मुमकिन है। 2 इतिहास 7:14 कहता है, "यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूँगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूँगा।" परमेश्वर एक सारे देश को चंगा और पुनःस्थापित कर सकता है। उसके लोगों या देशों में से कोई कृपापात्र नहीं हैं, परन्तु उसके उनके लिए भिन्न विचार और योजनाएं अवश्य हैं। मुझे निश्चय है कि परमेश्वर मेरे देश के धन को विश्वासियों को भेजने के लिए उपयोग करना चाहता है जो हमारे सारे देश भर में और संसार के कई भागों में सम्पूर्ण सुसमाचार का प्रचार करेंगे और बेदारी की ज्वालाएँ फैलाएंगे।
इसी लिए हमें दीन होना है और अपने देश के लिए प्रार्थना करनी है, ताकि परमेश्वर का दर्शन - शैतान का नहीं - पूरा होगा। पौलुस हमें 1 तीमुथियुस 2:1-4 में आग्रह करता है कि सबसे पहले, कहने का अर्थ है, कि इससे पहले हम किसी और चीज के लिए प्रार्थना करें, हम राजाओं और ऊँचे पदवालों के निमित्त विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए करें, ताकि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिता सकें। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम प्रार्थना करें और फिर अपने घरों में चाय कॉफी पीते हुए बैठें और आराम करें। इसका अर्थ यह है कि हमें अधिकारियों और सत्ता वालों के लिए प्रार्थना करनी है कि उनकी क्रियाएँ मसीहियों को उनके विश्वास को कार्य में लाने से न रोकें। परमेश्वर चाहता है कि विश्वासी यीशु को प्रभु मानने और परमेश्वर के वचन के अनुसार जीने के लिए स्वतन्त्र हों। परमेश्वर चाहता है कि सुसमाचार बिना रोक-टोक फैलाया जाए, और हर मुमकिन साधन के द्वारा बिना रोक, अयथार्थ प्रकट किए, या सताव के घोषित किया जाए। क्यों ? क्योंकि वह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भाँति पहचान लें (आय. 4)।
जो अधिकार सुसमाचार को इसकी सारी सम्पूर्णता में प्रस्तुत करने की स्वतन्त्रता और अधिकार को रोकता और विरोध करता है, सबसे बुरे प्रकार का बन्धन पैदा करता है। वे आत्मिक बन्धन पैदा करते हैं क्योंकि उनके लोगों को स्वतन्त्रता नहीं मिलती और वे अनन्तकाल के लिए नष्ट हो जाते हैं। इस लिए यह इतना आवश्यक है कि आप जिम्मेवारी को समझें और सब अधिकार वालों के लिए प्रार्थना करें। यदि आप नहीं करते तो आप शैतान के लिए अधिकारियों का लाभ उठाने का द्वार खोलते हो कि वे उसके उद्देश्यों को पूरा करें - और इस सारे समय आप सो रहे हैं।
बाइबल कहती है कि हमें अधिकारियों के बारे में कुड़कुड़ाना और शिकायत नहीं करते रहना है परन्तु उन्हें आशीष देनी और उनके लिए प्रार्थना करनी है। हमें अपने शासकों को प्रार्थना में ऊपर उठाना है, ताकि वे बुद्धिमान और सही फैसले कर सकें, और यदि वे करने से इन्कार करें तो, प्रार्थना करनी है कि उन्हें उनसे बदल दिया जाए जो करेंगे। परमेश्वर ऐसे अधिकारियों को चाहता है जो उनके देश के लिए आशीष हों और सुसमाचार के लिए खुले हों। इसका अर्थ यह अवश्य नहीं है कि अधिकारी विश्वासी बन

जाएँगे परन्तु वे फिर भी व्यक्ति के अधिकारों और स्वतन्त्रता के मूल सत्य को स्वीकार करेंगे जिसका समर्थन सुसमाचार करता है। परमेश्वर ने ऐसे शासकों को अधिकार में लाने की जिम्मेवारी आपको दी है।

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 15 है

इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries.

(केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" प्राजक्ट का एक अंश)

==

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी, ए
ी. ओ. बॉक्स 19106,
वरली,
मुम्बई - 400 030

+ या ईमेल करें : mltc_ministries@yahoo.com